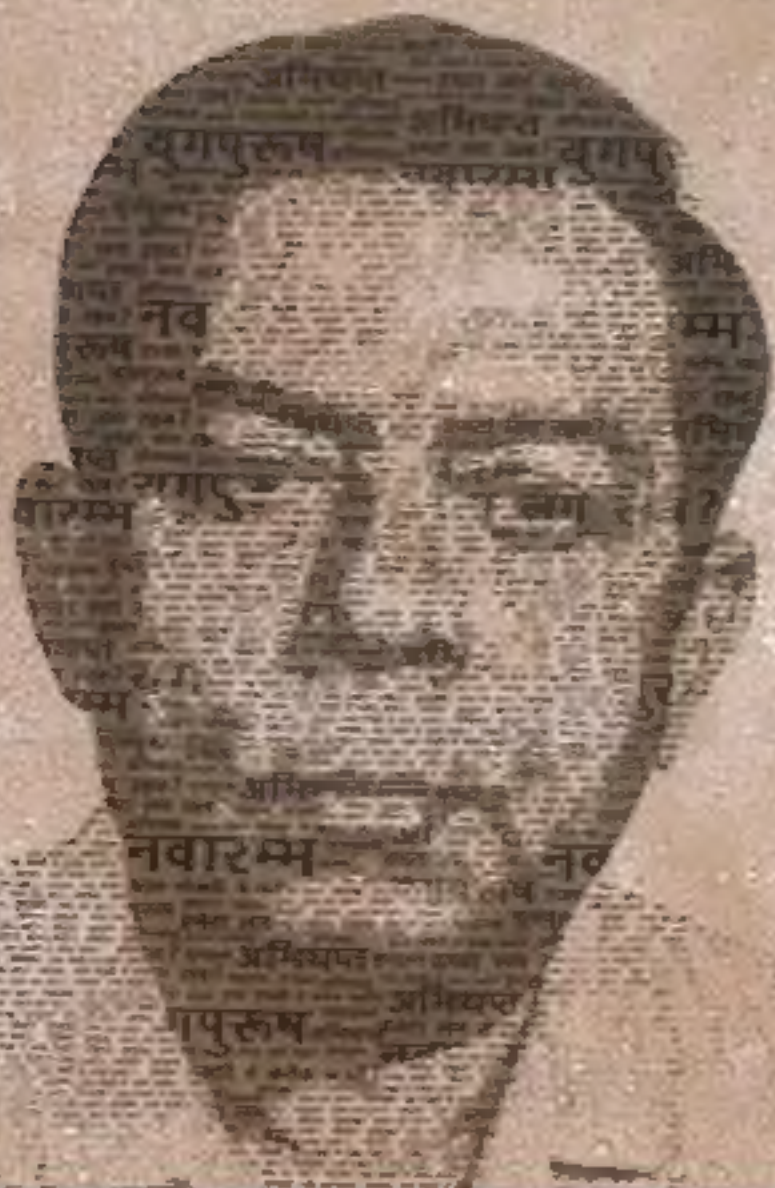


प्रभास समग्र

(उपन्यास)



प्रभास समग्र
(उपन्यास)

‘दोसरा खेप’ मनेमे रहलनि, आब तँ बँह-

प्रभास समग्र

(उपन्यास)

सम्पादन

डॉ. वन्दना चौधरी

प्रकाशक

ज्योत्स्ना प्रकाशन

पिण्डारुद (दरभंगा)

प्रकाशक :	ज्योत्स्ना प्रकाशन पिण्डारुच, जिला- दरभंगा
समीक्षक :	डॉ. वन्दना चौधरी
प्रथम संस्करण :	22 फरवरी 2017 (प्रभास कुमार चौधरीक उनैस पुस्तक)
मूल्य :	एक हजार टाका
मुद्रक :	प्रिंटवेल टावर, दरभंगा

Prabhās Samagra (Upanās) - Mithili
Complete works of Prabhās (Novels)
Edited by Dr. Vandana Chaudhary

₹ 1000/-

ई घोषी

साहित्यक सूर्य-चन्द्रमा अस्त होयबा लेल
नहि उगीत अछि । आधुनिक युगक प्रवर्तक कवीश्वर
चन्द्र झा आइयो विद्यमान छथि तथा समकालीन
साहित्यक एक प्रकाश-स्तम्भ प्रभास कुमार चौधरी
सेहो जयमान छथि । आइसँ उनैस वर्ष पूर्व जनिक
निघन बेल छलनि, से भोमिठ परिवारक ककरो पुत्र
भाद पिता पितापह मरतपह छलथिन जे चल गेलथिन;
मुदा अपन किछ परिवारक जनिक ओ आत्मीय बन्नु
छलथिन, से तँ छथिनहँ । रहबे करबनि— आर्यो
अहुन-बहुत दिन भरि । अम्हर जगतक ई परिवार
जै-जै वरत जयतिनि तँ-तँ प्रत्येक सदस्यक अप
निकट, आर आत्मीय भेल जयथिन । प्रभास जी
केवल शरीरसँ धरी-भरकम नाहि रहथि, कृतित्वसँ
सेहो रहथि । हुनक कृतियो ओजमदार, ओकर
प्रकृतिसँ गम्भीर । जेहने सहज, तेहने व्यापक आ
तेहने प्रभावमान ।

प्रभास जीक साहित्य एकर दुष्प्रभाव भेल ज रहल अछि । नवका लेख, जे जगल अछि से ओकरा तर्क अछि, बहुत अप्रत्यासित तर्क अछि । बहु प्रयास भोदने वस्तु घेरेत छैक । कथा तँ एतऽ अंतऽसँ पढ़ियो होत अछि, उपन्यास लेल बेल्लला भऽ जाइत अछि । हुनक सुयोग्य सन्तान लोकनि यद्यपि साहित्यकर्मी नहि भेलनि, मुदा साहित्यिक जीव तँ छनिहँ । अवचेदनमे ई बात अयलनि आ अपन पिताक साहित्य फेरसँ लोकक सोझीं आनब उनलनि । हुनक नेट सन्तान डॉ वन्दना चौधरी आनी अयलीह आ आइ प्रभास जीक पोछी उपन्यास एक जिल्दमे अपनेक हाथमे अछि । पोछीक शीर्षक प्रभास समग्र थिक । कथा सेहो हुनक कम नहि छनि आ कम महत्वपूर्ण तँ एकदम नहि छनि । मुदा, पढ़िने एकर स्वागत तँ कल्पित हमरा लोकनि ।

आइ प्रभास जीक पुष्पतिथि थिकनि, वरखी सेहो । एहिसें सार्धक पिण्डदान आर को भऽ सकैत छनि ? मैथिली संस्कार अयुष्मते श्रीमती वन्दना जीक कृतज्ञ छनि । अने देखू तँ, ओइ कोनमे प्रभास जी अपन सन्तानक एहि सन्बद्धिपर गौरवपूर्वक कोना मुस्किब रहल छथि ।

22.02.2017

—मीमनाथ झा

सेकेण्ड इनिंग

बोदिसँ बाइण्ड कयल चारि सय पन्नाक एकटा रजिस्टर, जाहिपर एकटा लेबल सेहो लगाल अछि । पुर रजिस्टर खाली अछि— कतहु एकोटा शब्द नहि लिखल अछि । लेबलपर लाल रंगीसँ लिखल अछि— “‘दोसर-खेप’ जिवला भाग- खिल-मिल” । रजिस्टर बेस घास अछि— खूब मोट गत्ता लगल छैक । ई खाली रजिस्टर हमरा लग उनैस सालसँ राखल अछि— पापाक चौकी पोची आ पाण्डुलिपिक संग । जहिया कहियो मोन बेसी ठहिन होइत अछि, कोनो काज करवाक इच्छा नहि होइत अछि, हम बेसि जाइत छी पापाक कल्याण खंजिकऽ । पापाक पोची, फाइल, अलबम सभकेँ झाड़ैत छी— किछु देखाइ छी, किछु पढ़िबो छी आ आपस फेर सभटा राखि दैत छी । सभ बेर ओइ खाली रजिस्टरकेँ देखि सोचैत छी— “एकरा कौ करू ? एहिमे तँ आब किछु लिखल नहि जायत । ई आब खालिए रहल ।” एकरा जौतो एकरा फेंकबाक हिम्मत हम कहियो नहि जुग पौलहुँ । पापाक हाथक लिखल अछि— फेंकबा क आग्रहक कल्पना नहि कऽ सकैत छी । आपस ई रजिस्टर अल्पीतमे रखा जाइत अछि । आइ पापाक गलाक उनैस साल बाद हुनक उपन्यासक “समग्र” प्रकाशित भऽ रहल अछि । एहि नामक “दोसर खेप”क चर्चा सेहो भविसक जन्तिमे बेर भऽ रहल अछि । एहि नामसँ आब कोनो उपन्यास तँ प्रकाशित नहि होय । मुदा आब हमरा ई खाली रजिस्टर बेसी लग नहि करत ।

की सोचि पापा अपन उपन्यासक ई नाम सोचने छलाह, जखन कि हुनका कहम छलनि जे जीवनक साठि वरन्त हम पर नहि करब । पापाक दादा (पिता) सेहो साठि बरहमे रहिने बलि बैलथिन । 'पापाके' पहिल छोट अटक 1939 मे भेल छलनि । तकर बाद तँ हुनकर ई सोच आर सुदृढ़ होइत गेलनि । ओना बीबी (हमर माय) हरदम पचापर बरसैत छैत छल- "रिटायर्मेन्टक बाद कतऽ रहब ? बड़का अकसर छी, एकटा झोपड़ी तँ फलेक सालमे बना नहि सकलहुँ ।" पापा ईसैत कहैत छलथिन- "हमरा घरक कोन कमो ? चारिटा घाड़ छथि । सभ अपन-अपन घर बनीताह । दूनु बेटोक भर अछिण । ओ रिटायर्मेन्टक बाद तँ गामपर रहब । जेनेटर लगवाब । टो.वी., फ्रिज, थंडी सब गाड़ब । दू-दू बेटो दरभामे बसैत छथि आ पटना तँ पोर अछि । खुब लिखब आ जखन मोन करत पटना-दरभंग भ्रमैत रहब ।"

"रिटायर्मेन्टक बाद कतऽ रहब ?"- ई पूछैत-पूछैत दोदो पहिनहि चलि गेलि आ एहि सवालपर सेहो पूर्ण विराम लागि गेल । सकल घुड़वाली चलि गेली तँ जवाबक जरूरत कोन ? पापा सेहो निश्चित भऽ गेलाह । जवाब तँ हुनका अपने बूझल छलनि । दिदवलक बिना कोनो 'सेकेण्ड इनिंग' नहि ।

पापाक घरक नाम 'हड़बड़' छलनि । हमर बाबी कहैत छलैत- "हिनका घरतोंपर अयबाक बड़ हड़बड़ी छलनि । बाड़िएमे बनम लऽ लेने रहपुन तोहर पचा । ताहि लेल नाम बड़ि गेलनि हड़बड़ ।" नाम रखनिहार सभके ई कनेको आभास नहि भेलनि जे पापा अपन नामक अनुकार अपन जीवन जीता । स्कूलेसँ कहनो लिखब शुरू कयलनि । एम.ए. करैत-करैत विवाह छपलनि । मात्र चौबीस सालक उमिरमे वाप बनलाह आ पहिल कथासंग्रह "नव घर उठय पुनन घर खलप" सेहो प्रकाशित भेलनि । पचासम पुरा कलै-कलै नाम बनलाह । संगहि पौचटा उपन्यास आ छोटो कथा-संग्रह सेहो प्रकाशित भऽ गेलनि । चवथम सालमे फार्माक संग छूटलनि आ अठारवमे अपने चल गेलाह । अयबामे हड़बड़ो कयलनि तँ जगदामे पाहू किएक ? सेकेण्ड इनिंग नहि शुरू भऽ सकल- नै उपन्यासक, नै जीवनक ।

दादा, बाबी, बड़का भैया, माय, माम-दा- ई सभ किछु शब्द नहि अछि । ई सभ छथि रचनाकार प्रभास आ व्यक्ति प्रभासक जीवनक किछु टोस लच्छम । पापाक कोनो संघीक प्रकाशन दिनका सभक उल्लेखक बिना पूर्ण नहि होइत छल । ओइ 'प्रभास समग्र'क प्रकाशनपर हिनका सभके बिसरि बयबाक घुल्ला हम नहि कऽ सकैत छी ।

"आ भोन पढ़ैत छथि स्नेहो भीम भाइ जिनिक सहयोग अविस्मरणीय छल ।" — ई पंक्ति पापाक लिखल अछि- पहिल उपन्यास अधिपत्रक लेखकीयने । ओइ 'प्रभास समग्र'क प्रकाशनक अवसरपर सेहो ई पंक्ति ओतवे बोललए अछि- एकर सत्यता आदयो वैह अछि जे शायद पापाक समयमे होइतनि । बहुत दिनसँ पापाक संघी सभक पुनःप्रकाशनक इच्छा छल मोनमे । किछु दिन पहिने एहि संदर्भमे पापाक आदरणीय भीम भाइसँ सम्पर्क कयलहुँ । हुनक प्रस्ताव अत्यंत उपन्यासक समग्र छपयबाक । नतीजा सभक समस अछि 'प्रभास-समग्र'क रूपमे ।

ओइ एकटा बड़ठ पुनन गप्प भोन पढ़ैत अछि । पटनाक गप्प अछि- लोइया हम रकूनमे पढ़ैत रह्यो । बेसी काल सौंझमे पापा भीम भाइक संग अछिहलहुँ धुंढ छलाह । हप्तम (दोटी महि) छिड़की सँ दुनु गोटेके संग रहैत छलहुँ । अनयन 'मोड़-भतल'क जोड़ी छल । पापा जतबे विशालकाय, रंग हलैत छलहुँ । अनयन 'मोड़-भतल'क जोड़ी छल । पापा जतबे विशालकाय, भीम भाइ ओतबे दुखर-पातर । ओ हँसी तँ आव सयना भऽ गेल । आव तँ भीम भाइ जखन कितानिक अवैत छथि, हुनकर संगे ठाढ़ पापाक कल्पना करैत रहैत छी- मुदा आव हँसी नहि लागैत अछि । प्रभास समग्र (उपन्यास)क प्रकाशनमे जे सहयोग आ स्नेह आदरणीय भीम भाइसँ भेटल, एहि लेल बन्धुवाद एकटा तुच्छ शब्द अछि । हुनक एहि आत्मीयताक लेल हमसभ सदा ऋणी रहबनि ।

माता-पिताक जीवनक दृष्टि खंप होइत अछि । पहिल खेपमे माता-पिता अपन सन्तानक परवरिश करैत छथि । बाल-बच्चाके पालि-पोसिकऽ पैघ बनयबाक, सीक इन्सान बनयबाक जिम्मेदारी प्रायः सभ माता-पिताक होइत

छनि । जीवनक दोसर खेपमे पारी उनटि जाइत अछि । बाल-बच्चा पैघ भऽ जाइत अछि आ माता-पिता बुढ़ापा दिस अग्रसर होइत छथि । आव सन्तानक दायित्व होइत छनि अपन माय-बापक देखभाल करवाक । हुनकर सभक जीवनमे खुशी भरबाक । हमर पापा दीदी मुदा 'स्पेशल केस' छथि । अपन सभ बिम्बेसरीक निर्वाह कयलनि दूनु गोटे । खाली बेटे-बेटी नहि, भाइ बहिन, नाति सभकें पालऽपोसऽमे आगू रहलाह । अह हमसभ स्थायलभ्यो छी— अपन-अपन घरमे, जीवनमे खुश छी । नर्यसँ कहैत छी बे हम सभ प्रभास कुमार चौधरीक सन्तान छी । मुदा ई गर्व हमर सभक जीवनक रिक्रवाकें नहि भरि सकैत अछि । पापा-दीदी अपन काज कऽ चलि गेलाह, संगहि मुल कऽ गेलाह हम छी भाइ-बहिनकें अपन दोसर खेपक दायित्वसँ ।

हमर सभक जीवनक सभ खुशी अधूरा रहैत अछि । हताशा-निराशा दुखक समय बोजिल आ लम्बा भऽ जाइत अछि । जीवनमे अनेको समय एहन अस्थित रहैत अछि जखन पापा-दीदीक कमी खलैत अछि । अपन जीवनक सेकण्ड इनिंग संग हमरो सभक बहुत-किछु अपन संग लेने गेलाह दूनु गोटे । हमरो सभक क्रिस्ममे 'दोसर खेप'क खालि पन्ना आबत...

—वन्दना चौधरी

क्रम

1.	अभिषाष	01
2.	युगपुरुष	81
3.	हमरा लग रहब ?	155
4.	नवाम्भ	325
5.	राजा पोखरिमे कतेक मछरी ?	581
	परिशिष्ट	745

अभिषाप्त

साधनेक यकानक किराचादर मोहल्लाक एक टा अमेरुआ कुकरके बासि
पल देरी खुआ-खुआ चेंसुआ बना सने अलि । एहि अपत्यासित दुलारस ओकर
मिजाब बलि गेल लैक आ ओ अकारणे प्रत्येक आवडवाचवलापर ओकर दलानमे
बैसल भुकेत नैक लैक । मुदा, इखन एहि उदस दुपहरियामे, दलानमे राखल एक
ठ चीकोक तामे दुबकल ओही ओच रहल लैक ।

प्रकाशक कोठलीक छिड़की खुलल लैक आ एहोसीक दलानमे एक टा
कुकर ओच रहल लैक । चौको कतहु किछु नहि । सोसे मोहल्ला सुन्न पड़ल लैक-
रान टा छिड़की-दरबजा बंद । एहि उदस जैत दुपहरियामे छिड़कीस बाहर ठकैत
इकानके कलेको बेर हम घंलैक अलि जे दुपहरिया नहि, छति बाति रहल लैक अ
सोसे मोहल्ला पछल इज्जियामे वैमुघ पड़ल लैक । मुदा छिड़कीक उदके
अधिक उदक छेदक घाहो प्रत्येक बेर ई हम सोहि देतकैक अलि- इज्जियामे
एके छत नहि पड सकैत लैक, विगहो प्रेडियोक हेतु नहि । आ, एहि अनुभूतिक
संग इज्जत आ सुन्न दुपहरिया किछु आर उदस, किछु बेसी सुन्न लापड लागैत लैक ।
ऐशानादर कचवचादत बागदर सनकरत कोलाहलो एहि सुन्नके परबामे असमर्थ
नि सपत लैक । मुदा ओकर कचवचाहटि सुनि एक टा दुष्ट विचार बेर-बेर ओकरा
लज करैत लैक- मोरा सदा एतऽ नहि अलि । किएक ने एकर खोताके आइसो
रखहि-दुखहि कतरु फेंकि दिएक ? मोराक उपस्थितिमे अखन कणनो एहन
विचार करैत अलि, ओ इत टाकि दैत लैक- "राहु ने दियोक । अहाँको बिगड़ैत
आइ ? विर धीमे दस-पाँच खदक दुकड़ी खसा दैत अलि, बहारिकऽ फेंकि दैत
आइ । याइ इतके लेल ककरो बनल-बनाओल खोता उजाहि देबैक ?" आइ ओ
चिंते लैक जे इच्छा होइत लैक जे मौकासो कायदा उलटवो । मुदा नहि अलि किएक
कलेको बेर सोधियो कऽ ओ चिंते उठैत अलि आ रोजानदलपर बड़ मेहनतिसो जमा

कपल गेल छिदक डेरीकेँ देखैत रहैत अछि- बरौ काल धरि । ओ फेर किन छौँ छिदक रोमन्टिक कल्पना भऽ अकारण सहमि जाइत अछि ।

सहमि जाइत अछि आ रोमन्टिक दुष्टि होइ फेर खुलत छिदकसँ नजर ताकऽ लगैत अछि । धौकी तर ओघाड़त कुकुर आन नोक बरौ पसरीकऽ मूर्ति रहल छैक । ओना मुलत देखि ओकरा ईयाँ छोड़त छैक- कोन निश्चिन्त दुष्टि खोल अछि गाढ़ निम्नमे ! मुश्किल सन्ध्या "स्वन-निद्रा" काल रहलक भेल पढ़ैत छैक आ अपन ईयाँपर अपने हँसौ लगैत छैक- कुकुरक निम्न काण्ड गूँह होइ ?

ओ अपन दुष्टि निकोडि सैत जाँत आ देखेँ विखोजत रहल अछि रहल अछि । कनेक काल मूर्ति लो, धौनमे मोड़ैत अछि । मुश्किल बन्द करिसे खुलत छिदकसँ अवैत नोक धौकी जमल लागऽ लगैत छैक । देखि एतेनाक तुरन्तही बुझाइत छैक, जखनमे नोक पछिछोड़त छैक । सोय बहकऽ छिदकसँ फलत छैलकऽ बन्द करऽ चाहैत अछि । मुश्किल जाँत धरि नहि पहुँचैत छैक । कतिपय छिदकसँ बन्द करवाक बात सोचबलकऽ विखोजेँ रहि उठैत अछि ।

मुश्किल अपन एहि असफल चेष्टापर किनेँ मोन रहि जइत छैक । ओना फरीर लागि भऽ अपन छोट-छोट हाथ बढा छिदकसँ बुझऽ चाहैत अछि । मुश्किल हाथ नहि पहुँचैत छैक । ओ ओकरा उलट होइत देखैत छैक आ छोट कोनमे उलट छिदकसँपर ठाढ़ कऽ बैठ छैक आ तखन ओ बरौ कालधरि छद्म पकड़ने धौकीसँ छापैत रहैत छैक ।

मिनी मोन पढ़ैत छैक आ उदास दुखसँ ओना उदास भऽ जइत छैक । मिनी-पुद्गलसँ रहस्यमे कनेक हुलस भवत रहैत छैक । धौरा तँ दुष्टक सम्झौत-सन्ध्यासँ अपसर्पित भऽ जइत छैक । सोचैत अछि- सोझाँन "बकऽ दुष्टक" लऽ अगलैक । मुश्किल अनन्तर दिवसक सोँ सोझाँन बन्द करवाक बात सोच पाँइ जइत छैक । सोझाँन नै सकलैक ओकरा । बुझल-बुझलकऽ कोनिसाँ नै करलक । बुझलकऽ धरि गेल अछि । धौराक अपन दुष्टा सम्झौत छल छैक, अपन बात ओ सुनऽ नहि चाहैत छैक, बुझलकऽ चेष्टा नै करैत छैक । ओ बार एकरा जेने छैक तेँ "ओकर घर" (अपन घर ओ आइ धरि रहि बुझलकऽ अछि) तेँ ओ अझीकृत छैक । घरक इच्छाक विरुद्ध, अपन पसिन्नासँ विवाह करने अछि प्रकार, ई गप्प एहि घरमे आबऽसँ दुष्टमेँ ओ जैत छैक, एकरा दिन लेल विवाह नहि छैक आ दुष्ट गृहस्थक विवाह नहि छैक अथवा ओ सुदीसँ बौद्धिकरूपक प्रलोभ ओझाँन धरक लोभक असमर्थताकें अपन उपेक्षा मानि-मानि ओ अपन धारणाकें

आगेँ दुष्ट करैत गेल छैक । एकराँ घरमे, एकराँ छलक नौचौँ बरौ संग रहियोकऽ भौरा ओहि घरक कहियो नहि भऽ भकलैक जकरा ओ "ओकर घर" कहैत छैक आ ओही ओनाओर ओहि रहलै छैक तेँ कहियो प्रकारा समर्थ भऽ "अपन घर" बनैतैक, तेँ "ओकर घर"मे भिन्न, जाहिमे मोरक किछु स्थान रहैतैक, जकरा ओ कल्पनक सन्ध्यासँ ओ ओझाँन बनाओत जेहन ओ सपना देखैत रहल अछि ।

ओ समर्थ प्रकारा भऽ गेल अछि, मोर बुझऽ लागल छैक । बहुत रास ओना लोभकऽ बुझऽ लागल छैक । किएक तेँ नोक नोकसँ कहैत अछि । नोक कथयत अछि । प्रशिक्षणक हेतु जखन ओ वर्ष धरि ओकरासँ दूर छलैक तेँ मोर कहियोँ उदास नहि पेटल छलैक । एक-एक दिनकेँ उत्साहपूर्वक कटैत गेलै छलैक- नव विराटक रूपरश्मि आरामे । एक-एक ट बिहौत दिक्क संग एक ट पत्र जातक प्रकारा ओकर समीप अबैत जा रहल छलैक, जकरा ओहि पसरीकऽ मोर सन्देह संभव चाहैत छलै । प्रकारा लग सुरक्षित ओहि प्रशिक्षण-कालक प्रसन्नता ओहि नव प्रलोक इराद आइयो बन्दो बनल अहुरिया काटि रहल छैक ।

प्रशिक्षणसँ घुरलापर धर ओकरा पेटल छलैक आ धौरा रहऽ लागल छलैक संगमे । मुश्किल मोरक सभ ट उदास, सभ ट स्वप्न एहि अनुभूतिक संग लिडिआसँ लागल छलैक तेँ ओ एकमात्र नहि छल । ओकर संग "ओकर घर" छलैक तेँ मोरक घर रहि छलैक । ई तबको घर "हमर घर" नहि बनि सकलैक जाहिमे मोरक किछु दिवस होइ, जकरा ओ अपन इच्छासँ सन्ध्या । ओ बुझि गेलैक तेँ प्रकारा एकरा नहि भऽ सकैत छैक, ओकर संग "ओकर घर" रहैतैक- सभ दिन । मोर उदास भऽ गेलैक, हरदम उदास रहैत छैक ।

ओ बुझलकऽ कहैत छैक, मुश्किल हाँसि जाइत अछि । परिसक ठीकसँ बुझाइत नहि जेत छैक । परिसक मोर नहि पेटैत छैक । धौरासँ डाक्टर, दवाइक हेतु भाषण भल, दिन धरि अफिर, आ अफिरक बाद फेर बिजल शक्ति धरि घर-गृहस्थी, पत्र-पत्रिका आ दवा-दवाक व्यवस्था । बिजल गतिमे जखन मोर बगलमे पड़ि रहैत छैक तेँ धक्का-डेडिआसँ रहलोपर किछु कठना-सुनबाक इच्छा होइत छैक । मुश्किल दिवस विखोजत ओकर छोट माइ लल्लन आ सपन तथा छोट बहिन लिनी आ नीली दोन विखोजत ओकर छोट माइ लल्लन आ सपन तथा छोट बहिन लिनी आ नीली जखन रहैत छैक । ओ धरि ओ सभ सुलैत छैक, पुद्गल जागि जाइत छैक । मात्र जखन रहैत छैक, जायक दृष्टि चाहैतैक । दृष्टि पिअबैत-पिअबैत मोर अपनो मूर्ति रहैत छैक । मुश्किल ओझाँनसँ निम्न होइ जाइत छैक । बगलमे सुलल मोर सभ-तबका मोल दूर बुझाइत छैक- दिन-दिन दूर होइत । ओ होइ जाइत अछि । आ, रातुक ओहि डेहयत एकमतपनीमे बढी काल धरि जागत रहैत अछि ।

अतिक्रम दोहर कोटलीमें अवेत अछि । भाव अंकर मन्त्रिके रघु निर
 रहल छैक । सिली नेली ओतहि बैसल छैक । तम्ह बिजौनपर पबान छैक । इम
 प्रायः धनसाधरमे होयलैक आ सल्लान सज्जन कोहो होयलैक निकलल छैक- ओ
 अन्दाज कोट प्रांत । पाव अंकरा रिम व्याप गंहर देन छैक आ इम पहने रहल
 ओहि बन्ध बाड सैत छैक । ओ किछु फाल प्रजा ओहि कालांक कोसुनमे रह
 रहैत अछि । फा बाधवला कालांप जेने जनि । जकर दुन बाधवला काल
 जालेन गमयामे रहत क । एतम सुनिह्य । पुन आकरा कनिह्य दू कुष प
 गतान ओतहु किछु फाल अनेछे रहत क । कालांक कोसुनमे रहत क । एतम
 बाधवला अछि गत । बाधवला गमयामे अनेछे ओतहु पदम जद किछु काल
 हुनप्रतिन जा जालेन पमिह्य अनेछे गमयामे कालांक कोसुनमे रहत क । एतम
 पदवाक एतेक सुनिह्य पुन समवे ने भेटैत छलनि । तेहो बखन समय भेटैत छल
 पहिना ओर ओरस पदेत छलनि

ओ कण्ठामे गमयल एक छे कुसीपर बैसि रहैत अछि । सोरि जलकल
 लल्ल छैक मुदा बाधवला बन्ध रहि गमय छैक । बन्ध पमिह्य अनेछे जलकल
 लल्ल जलकल नये गमय बन्ध पम गत छल । एतम अंकरा बन्धवला काल
 कालांक कोसुनमे रहत क । ओ ओतहु कालांक कोसुनमे रहत क । एतम
 चौकिर, दखैत छलनि पा गत गमयामे रहत कालांक कोसुनमे रहत क

ओ फेर कुसीपर बैसि रहैत अछि । दू फेर भेटैत सुनिकर जनेन मेरु अनेछे
 हाकरा जिवाग' भदि रहल सुनिह्य । एक कालांक कोसुनमे रहत क । एतम

परि दुपहरिमे बीकी तर अचिरात कुनै कालांक कोसुनमे रहत क । एतम
 आ गमयामे पमिह्यनो कालांक कोसुनमे रहत क । एतम अंकरा बन्धवला काल

हाकरा अन्धम बमकल गमय छैक । ओ अतिक्रम फेर आपन कोटलीमे
 आबि बाधत अछि, मुदा लल्ल छैक । एतम कालांक कोसुनमे रहत क । एतम
 बन्ध छैक

अतिक्रम संवत्सरमे बहल पहल हाकरा लल्ल अछि । आपन आपन
 द्विपमपम' दद बजिन अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम

अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम
 अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम

अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम
 अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम

अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम
 अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम

अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम
 अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम

अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम
 अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम

अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम
 अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम

अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम
 अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम अनेछे अतिक्रम

कर्मोंह आ वाक्यसम मालिककें परि दीरिज, बैना स्वयं गत काल आदि विरम
 आ आदरांवादी छल जगतव आ सप्तमां पुण विरम रखैत सन । ओहि
 दलीनिकक कर्मन पति ओका हँरी लगल छैक । पुन आइ सावैत ओहि ज किछु
 प्रतिपादयित्तक संग ओकर कथन सब विरिध भई प, रहल छैक ।

एक सप्ताहक बाद धौनकें नंबर अवन सति प्रकाश । अहय सुनयन
 दिन छैक रवि धिन गूड़ो आकरा दखिन दयन प, उक्त छैक दुई ५
 हाय एक सँ कोण उत अ दनक गलप गगत प, सन छैक । ओकर
 ओहिध व्यपक गल गत शक्ति जदत छैक । एतक दिन पकको का पुनक
 हाल पृष्ठ नहि अद्विवाक आ आइ बह दूध गति रहल अत । अ ओहि
 दृष्टिक धीन पदियांक अमर दैत छैक

दुन गत एहिन किछु क्षण मौन छैक अत प्रकाश सयकक सनप
 प्रकट करैत अति- "कसब ?"

ओन प्रत्यक्ष पीर कथन दैत छैक

प्रकाशक संत उ रन सनयन सति छैक अत सँ मुनि, अरन
 धनैक आगु किछु सति दिखैक लानैक कनक काल बह सन गूड़क
 अणम सनक अत सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन

"माय कहलक अति खाकऽ कय सन ।" ई कहि बिनु उत्तरक
 कयने पीर वल अदत छैक प्रकाश किछु धन अतिर उत सन आ सन
 अति विरिध पति सन अति ओकर सति पति सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन

अतिर कोना सन
 सति सन

मिनो हदबहाद सन
 सन

अथ सति
 सति
 सति
 सति

अथ सति
 सति
 सति
 सति

अथ सति
 सति
 सति

अथ सति
 सति

अथ सति
 सति
 सति

अथ सति
 सति
 सति

अथ सति
 सति
 सति

अथ सति
 सति
 सति

लड़कों नहीं आँहि गरी वानि वानि ठीक रहे हेक एकमेरे बंधो घेनवन
ठीक नहि । ओ बौक विचार्यो जकी सम रा बाधय सुनेव रहल ।

पुनर वैठ मंजू दासगुप्ता आइ कांठलीमे हाथ जोड़ते टाँहि उलैक बाध
भन्दु दह आर जाधक गामल किछु किछु म्युल प, गन हेक । जकनिय एग
मनाषक पाव । दू वर्षे पूर्व बिजह पल छलैक आ जलमिल छल हाथ जोड़
आकर उल्लस देन गलैक आगिर बाधय कृपारक लक्षणा अहाँ एवउर
गेलहुँ ? एतेक बेमाली ?”

आ पहि धरिदाम मायमे भोकर आकृष्य ५ मनाष्टक पाठ छेल जाइ
छैक आ तहन उधरमे पसरल छैक जहन कुमारी मंजूक पुनप काने दखोलक बा
धविषक अशंकासँ पसरे गेल रहैक । हुनू ओखि हबडकसल

ओकरा अपनापर क्रोध हाइत छैक “नियक बेमालीक” कन दखिअक
मूठक गइल मुई सम्मने राखि दलिअक बात कएलैक दुखलक “बू भुखो छे”

आ धुई हांनकैत अछि कजैत किछु नहि अछि ओखि अहि
हबडबापल

आ किछु नहि भुगलैक चुप बेमल रहल एहि का वेह शकलक
“कने हमार संग आवब ?”

प्रकाश अकचकाशमे मकर मुँह देखैत गेह उठल अछि । अकिन एग
अकचकायल शीश मंजू हेमो कयलकैक “बला दुनि कक अहाँक संग कन
पहयबाक चाँज नहि आँछ लबाक प्रकाश अर अर प, गइल जाते निअक
देहमे फाँट करैत अछि आ मंजूक संग ओक कयलमे अवेत अछि ओकर एक
ट कुसीपर बैस मंजू मोतर जइल छैक आ एक ग मर ल निअक नर जइ
अवेत छैक निअक ओकर हाथमे देन करैत छैक अहाँक दमिआ सँके एहि
गल छल मे निअक सम्मन जाइ मंजू हेमबाक धपल क रहल छलैक
एक एक ट गइल तेना धरघरा राम रहेक गन इतबाम कए ए रहल रहै

निअकक” कयलकैक नैलेत प्रकाश मुनैत छैक “हेम मणिग बइल
अछि बाधय कुपारी प्रसन भेलस अग्रगद सोमामयक जाशंवाले ईन छै

पुनर पत्रि का मंजू नहि हेमैत छैक प्रकाशक अधन ताहतयोप गइल
निअक सम्मनमे नैलेत छैक मंजू ओहिना मरुद गइल छैक प्रकाश निअक
हाथमे होलबैत प्रन करैत छैक “खसिकऽ देखि सँके छै ?”

मंजूक मय अहिमे धरघरात छैक

प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल

प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल

प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल

प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल

प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल

प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल
प्रकाश निअक गइल अछि ओकरा बहगइल छैक ओक उधर नहिआयल

हैक ओ एक चौर पड़ोस तबा धरि ध्याक नितोत हैक । ओकरा ड संति विष्णय धनैक न साधनय मुम्किपबाक कयम प्र । तब हैक ध्याक बाकर निवाकम ध्याक फाक पहिले छनैक ओ अंगम वेतैत कुनैक । समय काना धर्मा भाषा हैक २

अपना दिश एसा ठकटकी लगातः हवैत दाँत पुष्प लजा गवैक
की देखैत जो । '

प्रकार हैं। सो करीब छत्तलजोऊ दखै थी ॥ तहाँ मरे क्यों जाई तेंकि
कहत्य ॥ तनि भरि नहि जाउ पने जायक नै काना जा सकत ॥ मुदा जख नै पडत
फरत ॥ तेंसपर भ्रम-बाबुजो चित्त करतह ॥

एक चित्ता राहें जाईं हेराम शुद्धि हें अत्यंत अजब बखर्च
साव अहं धारें जायब ।”

ਉੱਕ: "ਏਕ ਦ ਗੀਤ ਸੁਨਾਏ।"

एहि प्रस्तावके पुष्पा बदे उत्साहित भई अइल सैक । एकर अंका ७५
संख्या हैक । संत संता बदे पशु एव आचार्य तैक खुल जलियन, जलियन
परीक्षणके अपाकमे अपेक्षित प्रगति गति पा एकर तैक इच्छा न भइल ।
अंका इत्यादि कौन रहेन हैक अंका ७५ अंका ७५ उत्साहित भईल
पुर्व हैक- "कोन सुतब ?"

* 'कांनो सुनउव. अछाँ अपने पर्सनसै

“आइ अपन परिचयवला” “हो मुन्ना ?” पुष्पा दुपटासूतं
होता है

हैं मैं आं नें सु-खद कल रंजित

पुष्पक" आ एक ठु जहाजोद गन्ना आधानि दिहल्ले जेन सिंगे
तुनेक पैसा तां मे पेन जेन मे आ जेन जेन सिंगे जेन जेन जेन जेन
गौर अबसो भुनेत तुन आदो पुष्प पेन जेन जेन जेन जेन जेन जेन
लागे ३

आंकड़ा क्या मूनि लोका कालमें और स ३५५ नर अवि जद्व वें
प्रधा सबमें छंट सादि लैक पाठ आठ कलक आविकार इत काल वें जद्व

[illegible][illegible]

१. जहाँ जहाँ जाऊँ मैं
 २. जहाँ जहाँ जाऊँ मैं
 ३. जहाँ जहाँ जाऊँ मैं
 ४. जहाँ जहाँ जाऊँ मैं
 ५. जहाँ जहाँ जाऊँ मैं
 ६. जहाँ जहाँ जाऊँ मैं
 ७. जहाँ जहाँ जाऊँ मैं
 ८. जहाँ जहाँ जाऊँ मैं
 ९. जहाँ जहाँ जाऊँ मैं
 १०. जहाँ जहाँ जाऊँ मैं

[illegible][illegible]

आपका प्रश्न है कि यह किताब किसे पढ़नी चाहिए और किसे नहीं पढ़नी चाहिए। मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि यह किताब उन लोगों के लिए है जो किताबें पढ़ना चाहते हैं।

तत्त्विक दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति के लिए - जन्म, मरण, पुनर्जन्म -
चलनाचलन ही है।

'ता' चिन्ता वांचे का मनी सुकशा सर्वज आशयन कोर के-सक
प्रसादन टेलीफोन कोर निवृत्त सप थ व्यक्ती क इति

हम प्रकाश को रोक लेते हैं। तब प्रकाश ल. ५ आगे के ल. ५
जमाता है। अतः प्रकाश ल. ५ आगे के ल. ५

एक जन गणतन्त्र व्यवस्था आदि प्रदर्शित है।

पाय चौकनेक दुलावरें गत्य नहि बनैक

पुनः आगच्छे सप जो धर्तैक अकलः तं तान च सङ्गं ज्ञेक
मायके अना प्रकाशकः सतप अश्रियाम धर्तैक ।

[illegible]

अब हमें यह बताना है कि यह परकलकैक मुदा कोनी असगि
के पदेक का अ पदकैक कांते भास पाइलकैक नैयो कानो असगि नई ।
अब कुल्ले मूलक नमक कुरी पजइ हित देनकैक ओ एकदमने चपाक
अब मेलकैक - "सका है ? कान है तुम

[illegible]

ਸੰਖੇਪਤਾ ੨੩

प्रकाशोंमें भैरव कैंत लौक नयनक ज्योन मुखी नयन इकरा शो नमस्त करि
गलेक एकदने चो आइ पं डंडमं र मून पूत गिरिके समीप नयन दुखल काह
गलेक जा पहिले अंगठिके मयांतरक पुर्विभार म प्रेम नह झु शकालेक

[illegible]

कोनो व्यसुविषय वी जाई प्रतीक ?

प्रकाश पट्टी इत्यादी प्रकाश प्रवाहाने वजन कमी होणे
 तबल पाहू शकित प्रतीक म्हणजे प्रकाश प्रवाहाने वजन कमी होणे
 हायड्रोजन व अणुप्रवाह प्रकाश प्रवाहाने वजन कमी होणे
 प्रकाश प्रवाहाने वजन कमी होणे

प्रमोदक बाह्यतिष्ठत इत्यथ पञ्चमस्तु। एतु शब्द प्रकाशित इत्येक कोटि
कोटिपे कसपसादृत सन्दह इत्येवम शब्दोक्तम्। शब्दः प्र. शब्देक

कौनसे कसपसपरा छवई हसदय कसपसपरा
 बूट नई फा गेकाग उरु- कान अ मुन मरह कंवल स. गन
 छनैक अकन बाट फा वरिला बन्ना त्रअक शन एछे तई अछतेक . १२
 आब वी उमर चला गयेक

आज मैं उमा चला गया।
 इसका मतलब मैं जिसका धुन लभ्य। क्या आज एक इच्छाएं जहां मैं
 शरीर में मैंने भी अनेक पक्षों का लक्ष्य में आज मैंने अपने शरीर में
 प्रकाश शिथिलताओं के उमर में मैंने उन शरीर को चलाया कि कहां मैंने
 आज मैंने सफल हो गई।

आविष्कार सफल हो सकें।

रहनेको हू हू गू हू जूरी य शक्ति बनन किछु निर्धारक कथामे खनक ई
बननी मह बरिय रहल कनैक बाहरवाला काठनी रीघार भः गल रहेक पवन
प्रताप कथनकेन नाम आदीन बालक रहब पोषाक मैथानी लेल नोक
हू प्रकृति के प्रभाव पवित्र पडलैक जाइ हू सो क पनीक्षा निजकर आनि
ले रहेक हू जेनाई हू शायत नोकर खनाई पुजा हंगामे मऽ अदैक
प्रकृति हू मोज खनक प्रेम काठिक हल पहि जाधिन प्रभु अ नीक नोक
अबार हऽ उधिन

[illegible][illegible]

२. कक्षागत कलक तथा आकृति, अवलोकन पत्र-पत्रों पर गलेक
बेतर लक्ष्य लक्ष्य । देख-देखों पर गलेक न उदरग आवश्यक भ- गलेक ।
उत्तीकड डाय मिमीलक डूनी !

कौ इत्त-भान ? सुनेत जी, बड़का अफसर भूउ गेल छै ।

एवम इयं इच्छागतिरुक्तं कथंलोकः ।

गुननाम ने हथकड़ा बनाया और दुःख हाथ कम रहल छै आ मन्त्रनाम
रखल मन्त्रनाम छै न जनबधु बुझा गइलक। इहि चिन्तासँ निश्चिन्त भऽ जाइत
छै।" पवन होयैत छैक ।

कपाडत तें ही शान्त वळी आहे । मज्जा निव्वला लाड । क ट
गाष्ट न । स्तर एण्ड का । आज बाळा काय लुईक
।

गारु न कल एण्ड को आन बापा कोन छेक
बापा ते कावा ३ मा बडका ३ बापा एन ते एनन वरि एनन
नाकक हान भवकसु सुम्बाक जम्पा नलि एन अछि एनबा अछा नलि नव
ते एन एन नाक बबाम कनरु ते
नाकक हान भवकसु सुम्बाक जम्पा नलि एन अछि एनबा अछा नलि नव

न केर पैस लाक बपबाम करक ती
पवन बात वहि बुझि अंका मई लाक जौन छैक आ नर मुख छैक
नलाकन हैमो छैक तो मई ननो कलासक के लाबाकर पक कला
आ आ माना जौ दू हाथ फला खुल न
आ आ का जौ अंका एखन शरीर छै

आशा है कि आपका आग्रह सकारात्मक
 प्रतिक्रिया प्राप्त होगा।

[illegible]

महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई

नहि आँखें
हम धौड़ी कृपित गगनें बलि उल्लोख
अरुंधत पैह भगवत नें न
सुखदल अंकु हपान अवेत नः गगन गड नगलहुं
पूत नहि अँकः न
छो पतल बधध नहि
गगन अँकः पूत नहि

[illegible]

पूजा दल नहीं वाइल एक कंकाल लाला ने
तलाश में काबाना दख सकी है पुन व अल एक क काल वाइल पुन
कथयुं अंछ अंछुं गद काल हल नन लो

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

[illegible][illegible]

अब मन्त्रालय हैदर नवा पौजी कहलखन पहिल तै यक्षिण अहोके
 ये फावत न जरी गेह न तथा वैयक्तिकता एकदम बढ गेल नाथ गुमिनाके
 अन्तर दल फात आस्तन्य बकि गेह जाम आब पन्थोत्त प्राप्त भेल अति तकर
 ई अर्थ तै बकि के हमर एखन बढ गेल गेल ।'

“कलकत्ता” गौरी हंसमणि गजगोत्र नृसिंहभक्त रत्नियोगेन पुष्पतकनि. यह
हस्त है माहोके विप्र-काकांक्षा कल ने इस करवक कस्तुरि एकाग्रता ला एगोशक
नर अल पैत अलि । तखन एडिर्ले एतेक “एतरनी” किएक ?”

यहि गलाने वरि वाह एक न भवत. वरिह धां नोन हउ
 त्रै धोनरम बहुर. किहु थरु धम. ओ नुह जाड कानि एकदम छुनो प्र वि
 ही धमधाहत बर वा धान गल जलि गहमर्य बमो जिनन उधि नप नरहक
 सुख सुविधा प्राप्त यहि तेधा जम धोन कानि एकदम धमक ना रहत ओउ धन
 अरुवा सुखी लंग किहु गहम नरि नम ल. गहम ओ धमक कानि गहम लाल
 नौत ही मुद बहो फुमरिह वाग धम. धम उरिह गहमरक अमरनर्य धम
 जाहल छे. नहि जानि निरक. अरु धमरि अरुधक धुव धम न विविध
 खालिधन अनुभव धम गहम छल. अरु नमर्य गहम र जना जनि अनुधमर्य
 निष्कृति धमन

निष्कृति धरल
हंसा चौबी बना मध्य नक्षत्र एक भारत इकाई
प्रकाश काशी आकाशमर इकाई जातेत कर्णिक नक्षत्र प्रकाशक मारा एक
पैमलैक गहरी राकित रत्नकः इकाई धर्म नक्षत्र कर्णिक प्रकाश
बहुः कर्णिक मीन इकाई वेधन पौनिक इकाई सुतेन कर्णिक
प्रकाश एक ब पानी किस तकिक भाजन इनका तें लोक नक्षत्र
इकाई एक पमपन है बर धरा लें सुत प्रकाश इकाई ए इनका इकाई क
किछु चहा पांते

किछु चहा पाणि
हवा भीतो दिदीक का उल्लास
अहाँतांकां भेसु हम जखेन छै
हमा भीतो मरदान भीत का मज्द
मज्द भेसि गत
बसत कांन छै

इ चली बलि गाँव का एक प्रमुख व्यक्ति था जो बलि गाँव के लोगों को मदद करता था। इन लोगों के चार बच्चे थे जो बलि गाँव के लोगों को मदद करते थे।

प्रकार एकत्र अन्वयन के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को एक ही प्रकार का अधिकार देना है।

महाराष्ट्र राज्य सरकार
केंद्रित नियमन जयपी कॉलेज ती डसा किंवा उच्च शिक्षण
महाराष्ट्र राज्य सरकार
महाराष्ट्र राज्य सरकार
महाराष्ट्र राज्य सरकार

इस नं लंकिंकः गच्छत छैक । हमरसभसला पुनी डेरा । बाबूजी
 डेराक संगत कजरी दब । जहैन छौधन लोरी हाडंगरम एखन अहिना
 गहैक सौं सपान करिहूँ आ कछुना कछुना दहलूँ मरु आबि बाबू
 डेराक डेराक छिनवा भिन भिन गहै कः अं नोहर हंगक लपौत छैक ततब
 कः दिहुन कबूचीक । लंगरी किरकक सौन गय ।”

२-३= ४ तां कसैत कुं ई तति वागळ वरि सवि ज्ञायव

नकार नकार का रूप नहीं मान लिया जाता नकार नकार का रूप नहीं मान लिया जाता

[illegible]

१. अतः एतत् सर्वं परितः सैक आदि भित्तिका बाह्यं च प्रकृत्य आत्मा
 २. अतः एतत् सर्वं परितः सैक आदि भित्तिका बाह्यं च प्रकृत्य आत्मा
 ३. अतः एतत् सर्वं परितः सैक आदि भित्तिका बाह्यं च प्रकृत्य आत्मा
 ४. अतः एतत् सर्वं परितः सैक आदि भित्तिका बाह्यं च प्रकृत्य आत्मा
 ५. अतः एतत् सर्वं परितः सैक आदि भित्तिका बाह्यं च प्रकृत्य आत्मा
 ६. अतः एतत् सर्वं परितः सैक आदि भित्तिका बाह्यं च प्रकृत्य आत्मा
 ७. अतः एतत् सर्वं परितः सैक आदि भित्तिका बाह्यं च प्रकृत्य आत्मा
 ८. अतः एतत् सर्वं परितः सैक आदि भित्तिका बाह्यं च प्रकृत्य आत्मा
 ९. अतः एतत् सर्वं परितः सैक आदि भित्तिका बाह्यं च प्रकृत्य आत्मा
 १०. अतः एतत् सर्वं परितः सैक आदि भित्तिका बाह्यं च प्रकृत्य आत्मा

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

समस्त कर्मचारी गैर एक कप वाह पीनाक इच्छा भेलैक । नाकक
इह भेलैक कछा उधम होइल अर्थात् एक कप वाह बना ।
अतः एहि संस्था गण्डम घ गतेक प्रकाश कालीन बहार पऽ बरगहाम आब
एह कप उधम हुनैक अर्थात् एकर पक्की नैस गेल ज हाथक अखबारक
फैरस उच्छेद-पुनर्गठन लागल ।

[illegible]

प्रश्न ३३: अनेकाने अनेक प्रकारे एमिटीव्हिटी प्रमाणित करून देत आहेत. यातून कोणत्या एमिटीव्हिटी प्रमाणित करून देत आहेत? यातून कोणत्या एमिटीव्हिटी प्रमाणित करून देत आहेत?

[illegible]

कृष्ण के १० दिनों में जेजुरी रहने के बाद अन्तिम प्राणिक्रिया नहीं होती।

सकलैक ओहिसे बज्जोब वणि बज्जुक चंगना। एउठ न कदा वसा दैव नन
 तैया जति म यदति काका जल मरका कहेत प्रवि व न्हिन पतिवुकी समुद्रक
 त्रिमाव दोखाउ ताइन दोसरक मय हयत। तैय्यो कहैत छवि ॥ एहेन कदा
 होयकयप असूत कर तछिन नव वय नव मुदा खर पा बिकिसेन असूत
 कम्हा नन क्यो जागो नहि बहेत छवि। एहि वृत्त लोद गुनकोक न मुन
 चुपचाप एहि बय न विसत छैव छै। अहाँक यत न जग भुजगपरी छैव। ए
 ककुलक हयत बँकेत छिपक। शर पापम एउठ इमानदार आ मरक मय कय
 नि थक चल अरु पा नन च नव।

गुरुजी अगुन छर दिस चल गइह आ प्रकाशक पति बहिन नन
 महलैक बाबूतो दोरा कयल नन दय बसि संघष गामक ननैयो ज एक
 बाबूजीपर कयल मय विरहा दवासायन अपमान नछिन जो द नजानन
 तैयो बाबूजी एकमय संघर्ष कहेत आका मरक मय। मुख मुविप ननयन
 अछि एक य धापरक वनक मुख मुविप नहि एक म इतिहासक बय
 मुख मुविप विरहक प्रकाशक न कहिप कनुभव नह ननैक न बाबूतो न
 नन प्रान्तिक आ आशक मयन। मुति दन छल्लिन एउठ अय ॥ म
 पनुपव म दहल जनेक मयन एउठ इतिहासक बय नहि नन ननैक
 धरना मय गइ ननैक उत। गइह कय ननैक नन ननैक ननैक
 पछिला दय ननैक

अहमद आब चौकोर पंई रहल प्रकाश नन ननैक ननैक
 वपतक मित्रको पति ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक

मुद ओइ मयन दय मयनयन ननैक ननैक ननैक ननैक
 भोजनक व्यवस्था जो ननुन बाबूतो ननैक ननैक ननैक ननैक
 पडन ननुन प्रकाश द मय दय दय ननैक ननैक ननैक ननैक
 द बिमयन प्रकाश बाबू ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 प्रकाश ननैक आबौ ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 मय हयत ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 विसांन विसांन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 मयनयन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक

मुद ओइ मयन दय मयनयन ननैक ननैक ननैक ननैक
 ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक

अहमद इच्छा रहल हैक न पायक कहैक ने छंड ड बंजाल चल
 कपु नन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 अहमद इच्छा रहल हैक न पायक कहैक ने छंड ड बंजाल चल
 कपु नन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक

अहमद इच्छा रहल हैक न पायक कहैक ने छंड ड बंजाल चल
 कपु नन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 अहमद इच्छा रहल हैक न पायक कहैक ने छंड ड बंजाल चल
 कपु नन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक

अहमद इच्छा रहल हैक न पायक कहैक ने छंड ड बंजाल चल
 कपु नन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 अहमद इच्छा रहल हैक न पायक कहैक ने छंड ड बंजाल चल
 कपु नन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक

अहमद इच्छा रहल हैक न पायक कहैक ने छंड ड बंजाल चल
 कपु नन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 अहमद इच्छा रहल हैक न पायक कहैक ने छंड ड बंजाल चल
 कपु नन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक

अहमद इच्छा रहल हैक न पायक कहैक ने छंड ड बंजाल चल
 कपु नन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक
 अहमद इच्छा रहल हैक न पायक कहैक ने छंड ड बंजाल चल
 कपु नन ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक ननैक

निर्वाण पालन छानक आ कहि कहि छैनै मने जिन नखरसँ १ आका
इच्छा भौकै न लाग जाक भोक्क नला छैक आ छिन्न उ का हँसत छैक भूत
नाखन धाँव धौकीगरसँ बावुन धाँव रहलधिन एते छैक कि कुन कि कहेका
गइल छी ।

काला उसा नहि पाबि खस्यो पा. विहुन हंसन बडे लथि. 'चडे
किपक ने छी उवाच शिय. एना कहि किपक चडे छी. हेरा कान रन
नाहि अनवरत कुराबाक म्हा जहलक कान कायै पुच्छनि रहत

बाबूजी अपने बिल्लूनीय पहलू से इन सब बातों को जल्दी छुट्टी
 पारक एक दिन एहिना सुट्टी सुट्टी का काम सारा सज्ज कर लिये वहाँ से
 श्री अपने जाकर दुरान नौ बने। अन्तिम दिन अपने पुत्र के जैन अर्चि के
 मूर्तियाँ की हस्त १ काम के पक्ष के बला अर्थात् तं प्रपंक के
 अंजाम में फासलि भई जयत मूल लखन के लखन हमन्यांकनिक

अज्ञानसे फुलती थी जयंत ।
 आबलौक एहि आत्मसंज्ञावाक
 कानमें पडि जायत हैक आ कृतरा बर
 भित्तु लख को कसै न छनवै ।

ਕਿਸੇ ਲਈ ਕੀ ਕਰਨਾ ਹੈ
 ਭਾਵੇਂ ਤਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਖੇਡਾਂ ਦੇਣਾ ਹੈ
 ਪਰੰਤੂ ਜੇ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਦੋ ਘੰਟੇ ਦੇ ਖੇਡਾਂ ਦੇਣਾ ਹੈ
 ਅਤੇ 1 ਘੰਟੇ ਦੇ ਖੇਡਾਂ ਦੇਣਾ ਹੈ

[illegible]

आपल ज्ञान छथि
प्रकाश कोनलोमे छुनि अत्रेन गति । कुनस समय बन्द होक अत्रेन
पुनः जनेन होक जन आकाश भितर किछु कुनस महान हो- अत्रेन ओ काने
मंत्रपासी छपटाइत गति कति तउल होक

[illegible][illegible]

एक-दो-त्रिक-उत्पत्ति सिद्धांत अर्थात् अंतिम तै आद्यनमै विकसित
 मानव का प्रारंभिक स्वरूप मानव है। एता सुप्रसंग नुकाक, किण्वक पदार्थ
 जड़ों से उत्पन्न होता है। एतक प्रात एतक पर अंतिम परोक्षक गृह्य, धुंधी खा भिन्न
 एतक में एतक उत्पत्ति प्रारंभिक स्वरूप है। एतक कथी लंब तुलना देव ।'

इसके बाद पदम रैत को प्रकाशक दुर्गा अरुणबाबू गाडपर सल भइल छैक
 छ। रैत रूपा जेहन होइक आकाश हँसैत दीर्घवक्रऽ गौतमक मध्य होमैत पुनैत
 अधिन: "योन पछि रैत ?"

अब इस प्रश्न का उत्तर है कि आदमी को जो बातें पढ़नी पड़ती हैं, वे सब पढ़नी पड़ती हैं, और जो बातें पढ़नी पड़ती हैं, वे सब पढ़नी पड़ती हैं।

क. न. गङ्गान् रुद्राणां कर्त्तृक, विक्रमं प्रकाराक व्यागृ गच्छि जाइत
रुद्रा रुद्राणां गङ्गाक आर. आर की अइत

उक्त अध्याय में जो बातें बंदलैत कहैत हवै, गीता कांता अंग
उक्त अध्याय में जो बातें बंदलैत कहैत हवै, गीता कांता अंग

॥ काकर बलधर्मी छत्तैक गामक दूक सम्बन्ध पोसी गूढ सम्बन्धक
छत्तैक सो धुम्कत छत्तैक सदाक कातय बोभुका महत्त बन्धैत छत्तैक आ
का बन्धैत छत्तैक कातय आका कनिधौ बन्धैत छत्तैक ।

हैं जिन, खुद सुखीं अति, चारि त मन्त्रानं कैक । दू त बेटा आ दू
बेटा एक तरे सुदीर्घ कोन चित्त १ एक त बेटा छलि, झगुरमे एव करीत
नव एक त पायान बक लेधि, तादीमे नीक ।

‘महि बाब’ जना बुनि बाबा विरू तै ना कुनक जेना
मति गितिक बिबाध दखि
जोनाक माय प्रपत्य रुड जइत छथिन एकरा जेकर विरु प. जइत
अछि ज। ओकर कौन छथिन ए। अछि बा

बाह्य सगलाप आब प्रकाशक माय इत्युक्त बुझइत छैक असन न
नहिनाबाय एतय विदा भए जाइत अछि एतय बाबा इत्युक्त छैक एतय
एक ठा बच्चक के नाम तैना एकरा जवि एतय छैक एतय एक ठा बच्चक के नाम
छैक तय चल अवेत छैक नोका नोका तका मत बंग नुन छैक अतएव नुन छैक

एतय अकथकएल एकएक छै एतय गहि बच्चक छै एतय कयक
आहत होइत टाकीत छैक

‘अरु ग’ छै पदमा । चिन्हबौक किएक न

ओकरा एतय जेना प्रकाश विरु विरु जइत छैक एतय ओकरा ब
आरवप हाइत छैक पदमा जकरा मंगलुग छैक एतय एतय तैना छैक एतय
कोना प्रोवा हा । एकदम स्थूल आ सम्पल जकरा जे पदमा धा पडैत छैक
जकरा खगनी चिगने छैक जकरा करैत एतय जइत छैक एतय

‘को मावि रहल छै’

‘किछु गहि ना इत्युक्त’ इत्युक्त जेना छैक बड मुटु छैक
प्रकाश बच्चक गालक हुवेत कहैत छैक

छात्र छैक मपस छैक

पदमा एकदम सटत गाल कहैत छैक एतय ओकरा जइत छैक एतय
छात्र । एतय कहैत छैक एतय अतिशयक फाव जकरा नाउ कुनै छैक एतय
कियाक कहैत छैक एतय बाबा जकरा छै हा मन्त्र हाथक जमनय न भइ छैक

‘एतय रहल’ एतय प्रपत्य कहैत छैक

पदमा जेना छैक मुटु डाला दैत छैक

बस तै फा भैत हाथ प्रकाश बिनु उतरक फाव कयक
बडि जाइत अछि ओकरा एतय पदमा तय इतो काल तइत नोड जइत छैक
ओकरा ओ पदमा मॉन पडैत छैक ओकरा बुटो-बुटो माविजत नजेत छैक

जकरा एतय मंगलुग इत्युक्त छैक प्रकाशक इत इत्युक्त छैक आ इत जगो
वति नैक इत्युक्त इत्युक्त विवाध एतय प्रकाश स्वयमे पडैत छल एतय पदमा
अतएव न प्रकाश इत जाइत छल एतय पदमा जेना ओकरा तय कयक सपत
न नैक छैक । एतय गहिना बुटो घेनाप दसंगामे गाम आरवप तै नाश-एकीमी
बुझ जेना प्रपत्य इत्युक्त छैक एतय एतय विरु विरु करैत छैक तैना प्रकाश
एतय छैक इत छैक इत्युक्त एतय एतय एक ठा हाडो माय कयक कान
कयक छै । प्रकाश मुटु लगल ।

‘एतय इत्युक्त’ इत छै इत्युक्त । एतय इत्युक्त इत्युक्त आइत
छै ? बस ।”

प्रकाश बैस गेल ।

‘‘आरवप छै ?’’ पदमा तय फोटेत कयक

अतएव इत मंगलुग जइत नगलिक बौध चत गलैक आ हावत
ना नैक एतय एतय ओकरा इत्युक्त नाश छैत कहैत छैक ‘हम तयारी
न कोरि कहैत छिये । तैना बैसल कय रहल छै’

‘एतय तय विरुजत जइत जइत कहैत छैक । तय एतय हमर हा
व = इत मुटु बैसल कय रहल छै’

‘एतय तय विरुजत हाथ हुनु नहुन आ छातीक बीचम क, हैम
‘ह, छैत छै’ ।’

‘एतय तय विरुजत हाथ इत्युक्त उत कयलक मुटु जा तै
नैक गेल छैक । एतय मस नहि बलैक । इत्युक्त आरवप हाथ मुसिया
नैक छैक छैत जइत पदमा आकरा हुनु हाथ इत्युक्त नोका जकरा दबा
नैक छैक हाथक तय मंगलुग मंगलुग जमनय न भइ छैक
नैक छैक एतय मस नैक छैक पदमा गलैक ।

‘एतय हाथ जेना लगल तै हाथक हाथ पदमा स्वय कयक भवि आरवप
नैक छैक छैत जइत मस नहि बलैक । इत्युक्त आरवप हाथ मुसिया
नैक छैक छैत एकदम इत्युक्त आ आरवप । ओ ओरतै पदमा अपन छातीस
नैक छैक । पदमा आरवप बैसल गलैक ।

ज्ञानसिंहासनायक प्रतिष्ठायाः श्रेष्ठो लक्षणः ।
 हृदयमङ्गलः सादरं प्रणमनं हृदयं कर्तव्यम् - "यत्नः, कृतसमं वाङ् ।
 गुरुवरकः वातकः अन्यथा नहि नो जा सततः शुभकामनाम् प्रति रक्षतः चैव ।"
 (संस्कृतम्) यथा तत् प्रकृतं भवति ।

आ शोधार्थ प्रेम हैक

पाठ श्रुति के पाठ
 गुरु मध्य स्वरूप विद्यमान एक दिन के दो सत्रों में पाठ
 गुरु गुरु के काल में एक या दो सत्रों में पाठ अथवा
 विधि १ श्रुति के पाठ के पाठ के आश्रय

[illegible]

जबकि दिन अगला फार लोकमण्डल ओ अनविज्ञानस्य प्रतियोगिताय एक
न तावत्तु अस्मिन् अस्मिन् कथं नून किंसातक दूधिका ललैक । खूब प्रशंसा पेम्न
ललैक । अस्मिन् अस्मिन् गेज् जबिन् चुम्कि दग मग अस्मिन् सिंग्दुकोप ललैक
अस्मिन् अस्मिन् ललैक । अस्मिन् जित् बहुन थोब ता गया है खुली बती करन
ललै है । बहो उकल्लेफ वाली होगी ।'

चर्या चरित गांधी फौज रहनेक तयमचर्याक रहि अयाकास ईश्वर कऽ
 "अच्छा भिर" । ई सोप कोन छौदीक गांधीक रहैक ?"

३. चित्र, निम्नलिखित विवरण से ? जगलोक स्कूलमे तँ पढ़ैत छी हमरौ :

नोट : ई शेष नीक छोटो नहि छैक, पहिनो केँक ए छोटो.

क्या आप जानते हैं कि क्या बिन्दुओं के अंतर से ही हमें यह पता चलता है कि दो बिन्दु एक ही रेखा पर हैं या नहीं ?

અધ્યાય ૬૩ • ૬૩

[illegible]

निकाति देने सुलायन
आदि गुण्डासिक एक बार लकड़ें दानि एकदम हरे रंग के व
पैक 7

प्रकाश प्रौद्योगिकी मूड विज्ञान इलेक्ट्रॉनिक्स

कहलकैक । तें आकां दिष्ट खंडि रसिक नकि ते ठेक नति इष्टीक ।
देखि ते सरां एक रा चक्कू तबुलन मखत कहलकैक

“कान्हिसै एधर नहि अपिहें” । तपबे* तैं दास-दास सोइकड शक्ति
होइक ।” संसार बनलैक ।

“कोन पतनम ?” सरदार गरजल— “अरी इमरसभक प्रोपिकी कयि ।
 “अह भयम” लोडि — “आकरा अपन बारीत कर हाँसल कनैक तँ
 हे” पतनमक सयि ।”

“नमो भगवते वासुदेवाय” इति वाक्यस्य फलं कथितं यत् “यः कुरुते” इति ।

-२- ज्ञाननाथ सरस्वतपर इह किंतु कम धनैकः शिष्टको दक्षज्ज्ञा पीक
इति उक्तं च पत्रम् । अन्विहीनस्य पदं रत्नं त्वगतं निमेषे, येनैक मुश
= १० कर्-वेर डेरकाऽ चेहाइ गहत ।

प्रश्न १. आपन जनैक काय । यदि ट गुणक हईं बर छांदि दत
 प्रश्न २. देत ? मुका गुणकसम तैं कहलकैक से सोध पयैने छैक ओ स्वय
 प्रश्न ३. नीच कहैत छैक प्रकषक पाँचम एकटा प्रश्न उत्तरक मुन हँ
 प्रश्न ४. अष्टम बुझलैक शांभा आकरा पाद गुण्डा किएक लगीतैक ?
 प्रश्न ५. करकक रीतिरैक तैं अपने कहि दितीक । प्रकार खबरसी तैं नीह
 प्रश्न ६. अष्टम गुण्डासम अपन यतलब तल गप्प गढ़ने तांगरीक गुण्डासम
 प्रश्न ७. कोन हरेतीक ?

अभिलाषा * ३९

महि गलैक ७८ आ बदासीये आव ईहो ध्यान रहि गलैक ३ अगलैक मिहका
लाग ईहो को रहल छल जाहि कारे मेरा ओकरा दु वन मे गन रहलैक
"कसई एहि बात काना बिट १" अकालिक खर बटलल गलैक २
धीन गलैक अगलैक खर माकरी धरमलल

चीनी गलैक प्रकाश कांयं ठस नरि इलकैक प्रतापक एकर सान्नी चरदामन
 बुझायेक ज्ञान तकनक तै प्रतापक नोखिम शब्दाएन निह संक नैक गलैक
 बह उवाच छी अइ प्रताप क टंकनकैक
 एकरा अपन सैनिक ३ शक

बहु उदास हो जाऊँगा
प्रकारों" तैयार किंतु बाँट नहीं पानेक
काग चीक पानेक अरुण
अरुणाक स्वर अग्रानेक

अनुपाक स्तर अनुरूप वृद्ध करने तथा न गाने के लिए
प्रकाश चौकक 3 युक्त अनुपात नियंत्रण में रखने के लिए
किया कि जिससे अनुपात वातावरण में रहने वाले प्रकाश के अभाव में
प्रकाश को नियंत्रित करने में सक्षम हो सके।
मुझे मिला कि प्रकाश के अभाव में प्रकाश के अभाव में

मुनेत्र पृथु पिड्डकी खाला धुनेत्र ओ उमेर ओ उमेर
अपन कालांतो धुनेत्र एकरा निश्चय क लेत अछि जे ई शहर
जत इच्छासक लेत बढावा लेत ओ फेर दुनो धुनेत्र शहर
ओ होत अपन मान्य बान्ह लेत अछि ओ धुनेत्र शहर
बढी कालांतो कनेत्र लेत अछि

[illegible]

पुदा छिड़की बर हलैक जहगा रूई अयलैक पुनर १००
पाहल्लामें किन भान शाखा मन पडलैक एक बा आकर डा किन जहगा
दुखल भलैक आब नै काने पुगडी चोबडतोप जंकर बर जंकर नै बर
हयलैक १ बैमला हांयलैक १ आकरा टिबर नै कानैक पर जहगा भान नै
३ कान पुनर २३३ क शाखासँ दैर कानैक कनैक ३ पुगडाक डा क क

कृष्णन हातूंत अयबक माहस गिळें छल्लें आऩें उग्या जैस्यो होयनेक ओकरा
ज्या हांकणे उत्तर थो संल होयनेक बोवा मूना होयनेक दस तर्थ कानक
समय हातूंत सैक ?

प्रकाश जन्तु जन्तु क्लिष्टिक टिम स्रुत जांच तनः मायके वैस गंत
हृत्क हाकटगं संशुद्ध अवन हृत्क जा टंकीनाक बाट मायकं क्लिष्टिक
हृत्क एत बाह्य मं विक्रम गंत छल दूर घट्टम दश हृत्क भुदा आब
दूर गंत हृत्क प्रकाशकं संशुद्ध माय विक्रित हाडत बाह्यक कतः
कत मंत कतः ? गतिबा कृति बसतः ।"

इसका इस विचार है कि यह अति गहरी धोप जाइत है कि गहरी विरा
हइत है ।

[illegible]

नहि, नहि ।" प्रकाश चैतन कहत छैक- "वोरा तैं अपनो मुलतें
हउ, भय प्रक" हेक गहल तख डीक जातम आपनश कज दबीक ।

उत्तर एक चिन्तित किस्म का है ? को प्रकाश प्रति 2" मास चिन्तित
 2. रूढ़ि सेवक ।

[illegible]

कुछ दिन बाद गणेश जीवा हीष्ट काल याव कालकैक- 'अपन
 काल याव है हर जगत् नरनर काल बबभुन ।' बाबूजी रोहो 'कैह
 कहने कलधिन- 'अपन मायपर ध्यान दैह । ई जनमारा दैह अ
 न- कलधनी । अर कलक दिन खपभुन ।

[illegible][illegible][illegible]

पूरा एक शक ई गणक पुनक तीन भाग कानहु बरान कि अई के
 मोड़ु कानहु अदृश्य भः गोन हैक प्रकाशक कुनो अई गन कानहु
 सामन ईहो नखवाक अशकाई अई बरान इली प्रकाश पदार्थ तिम बरान

काली आन दा तिरु नदि शकऽ समुक्त इर दिम धर्म अलि भानैत
अलि न नै क नै क, अपन दाम कायल बहुत दिन ध गतिक निना पुद्दुक्
दलः उ अलक नै नै पडलैक आठ काना बहना नैत मुनैक

३३- प्रश्नित इच्छा अति महत् है। किन्तु ऐहिक कार्यादि
 ३४- उक्त अर्थ उल्लेख है। "आज मैं बहमाली सेक २५ गैस ली अर्थात्
 ३५- २५

लुटके घुमा मगर बुद्धिवा जका बाजि उठैत छैक हथगारभरि अहाँक
घटनब को ?"

इसका प्रथम अंश धारणा है हैक आ लंजुक हंसकैत फहेत हैक
 एक गणन नच प्रम मानव साथ छ नामन हगंवर इति देव है 'हुका ल को
 गेन १ किछु कनकड राखु, और कुंवर कनक देत ।'

आजू लज्जत काँट सैक- "अब, हम कहाँसे नहिं बजैत छी ।"

कम है १ मुश्किल है प्रत्यक्ष लक्षण

अंजु शर्मा 'बा' नेहने गैक खुशी है सोयब

पुष्प संस्कृतं इति चेत् - "सगरी । नृप त्वा ।"

२१. अथ चामुर्न नैत हेतु ' बस एक पंक्ति तकर बाद चर्गियात
२२. अथ चर्गियात हेतु ' बस एक पंक्ति तकर बाद चर्गियात

अपने प्रसन्न होकर बैठे। पुष्पांक सोझवत कहते हैं- "तुम्हारे पास रहते ही पतिव्रता मुरा हममें से पारी अधिकतर बेल। आज 'पिपा' से नैना लाने के' के मुनासरे ३ आठ वें 'पिपा' के

२३. आर्ति तै बह लखन सैं ११ पुष्पा सजाकउ पद्म जगद सैंक ।

अथ यत्नः कति साधु-समुदायं प्रणामं करोति । तस्य अर्थः
 'इह' इति चेत् कुतश्च यथा साधु-समुदायः इति चेत् नैवैव अर्थः नृपुणः
 'क' इति चेत् कति करोति इति चेत् विना कति 'सुखी' इति चेत् नृपुणः
 यत्नः इति चेत् नृपुणः इति चेत् नृपुणः

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

“कोश धातुकी ? समोद बाबू ?” माया प्रश्न कायलकीक ।

उपर दृष्टकर वस्तु से विभिन्न ज्वलत अथवा काया धरित कहलसकेक
 २- वीं भाग = स्त्री लक्षणक एक ग माधुरी पंखा अनुगंध कयनाप
 ३- तीस जगह रहि दुगुने आयल गंध प्रमादकी दखन रहैक
 ४- वस्तु कर ३० बिना १० पलंक धरितक न आवर सुखितक उ
 ५- प्रकृत कय रहल सै ।

७ प्रमोद कठहु कल गंग ललैक ७ घड सलैक छैक, बानि-बुझिकऽ छैरि
८ भौं बानू की छैरि वा चुकल सखिन अपन नक्का छैरि । आज मो
९ रान एकसरी रहि गेल अलि आ दुनू बटो गर्मीसँ छपय छैरि बान ६३
१० आज बाजऽ क रहल छैक आ एखनधरि प्रकाशक पत्र नहि छैक
११ बरुधक पडल छैक आ बूनिध छैरि नहि पजलल छैक ।

—इस काल प्रसार कुशल है। आगे ८ दिवसों में बाँकी सब सामान
वि. अ. के २० कक्षा में आने तक कृष्ण सम ही सामान उभय जलिकट रखें।
—इस काल प्रसार कुशल है। आगे ८ दिवसों में बाँकी सब सामान
वि. अ. के २० कक्षा में आने तक कृष्ण सम ही सामान उभय जलिकट रखें।

भाषाशास्त्र ६७

बुद्धिमान जन्म

बाबूजी बिछौ-पा राँडे लैसै छायन एकरा कछुआकें कहै रहै
 अतबाकें आरुध पैस छैक कृष्ण दह गौत गौत हगि एकरा कपड़ें बहल
 काम बैसि जइत रहि आइ बड़ हल्लुक पन नहि रहल छैक गौत
 बाबूजी अथकें डार्यौ राम बल पल्लक बासमें छायैत एक छ कइत रहै
 ललैक एक छ यथयथ बासमें दल लैत छल हल्लुक गहलै गहलै छै
 तैयो इ पपाय बाध कम नहि छलैक बुज जाई बाबूजीक अलि पल्लमें आइ रहै
 ओ ओल उलाय कहल छैक ओ शूब पल्लन जौ हल्लुक उल्लुक कहल छैक

१. निकालक प्रकाश अनायास आकाशवाणी दिस दिता यह बात
२. संभव नहीं छलैक । मुदा योंच जबे आफिसमें बहारात काल
३. कोषमें टहनि-जुरि आबी । यवरे टहनै-रुलैव आकाशवाणी दिस
४. करवतक ईई देखलकैक तँ अनायास पिकामेरी पैट करवाक
५. चलैक । बहुत दिन यह गेल छलैक एम्हर अपना । हाताये पैस्ते
६. ईई लेक, बाहर छसपर बैसल दू टा सहयोगी कर्मचारीक संगे जात
७. उलै । इधक इरामपुरी प्रकाशके ओम्हरे बजोनकैक , प्रकाश लग
८. यक दुन संगेके समस्त कलकैक । दुन परित्त छलैक- ओम्हरी

[illegible][illegible]

कृपा कथन ?

अहिना पंग पाँ के बने अगलई आ
पूतल मभात्रे आगेई एक टा फकी बा
करैत छुधिन सभ एधिछान्छान्ते अनख
फर एकाइके सम्बन्धन करैत करैत रहैत
अधताइ सोह मानस दुक्क र प्रति लौकन आइ शार संकारा , यम ई
अहाँक फं टा जामव दइवक समस्यावा लिखत छिउक ।
एकटा विषय वृत्त आइ

बाह को गूँहा आ जलसिन् विषय नम आंसे

वाह को गुलाब आ जाता है।
प्रकाश जौनती संका शिप बनेक पञ्चिखण्ड मलि गुलाब गुलाब
श्रीका पदम गति कौन खोधि ज्ञान शरीर पञ्चक बहुर कौन
लुधि इ मका पञ्चक पञ्चक शिप शिप शिप शिप शिप
इतिहास बहुर गुलाब शिप शिप शिप शिप शिप
कनक महापुष्टि दखौन कौन खोधि गुलाब पञ्चक शिप शिप
दुग गोरक बहुर गति कौन खोधि गुलाब पञ्चक शिप शिप

दुसरे गोरेक वचे नहि कमन छाथ
प्रकाश हमैत छथि जंग कपन छथि तँ जंग दिनेज
हृषीक तँ फर दंग इतिहासकामें लिखल अछि फर दंग लिखल अछि
जायस तँ अलग पैसा छथि फर दंग य इतिहासक लिखल अछि
तंब मनि लिखल अछि नहि जहल तँ दंग अलग इतिहासक लिखल अछि
दशैक आ विकास अपन इतिहासक हमर श्रद्धा लिखल अछि

मधुका एकदम अग्रिम गन गान सॉय दुन + इण्डिया के

इसके बाद, इस जल नुसार तैयार किया जा सकता है। १३ सप्ताह
आज के लिए, मैं आपको यह कहना चाहता हूँ कि यह एक बहुत ही अच्छा
वेब आइटम है-युद्ध के लिए बहुत ही प्रभावी है। १४ यह एक बहुत ही

जन्म-मृत्यु का चक्र विचरते हैं। जीवन हैक जैसी 'एकदम लोड' है।
 दुर्लभ है। एक कदम गिराई पड़ गेले ?"

हमारे लक्ष्य को समझने के लिए हमें यह समझना होगा कि हमारे लक्ष्य का क्या अर्थ है। हमारे लक्ष्य का अर्थ है कि हमें अपने जीवन में एक नया मोड़ देना है। हमें अपने जीवन में एक नया मोड़ देना है। हमें अपने जीवन में एक नया मोड़ देना है।

आ इत घुले काल ब्रकागो बह उन्साहूणी अनुभव कैंत आहि एक य
 ... मरल ... गय रंखत भोग किछु लका
 ... कहैत छैक- "परस अफस आहि ।"

"कुरुक्षेत्र" आरवयं हस्त ऐक्य संग खानो जसो आयल वगैर कहानके
 कुरुक्षेत्र गांग कुरुक्षेत्र याममे किछु दूरसेत ऐक्य सका तच्छण दवाकड
 कुरुक्षेत्र च कोन अडि नैच सद ऐक्य आ धनामां समष्टिकयाक करम रखल
 सत्तु डू क सर लिखत कैक- पौंच सब टक्का फट रहल किन्ना । परीक्षाक
 सेना के एक क लिला कनियां आ प्रवेश समय" आशेष योग्य "

उक्त पत्र पाठ्य योग दिए नकल जाले अ मूलो झुकोने नादि छैक
अन लेख देव बरानसपुर योग किछु कहनैक वक्रग धुनबाक सः कदियम
अन क रहल अलि

‘‘येन किञ्चु रणि कर्तुं लैक । पनस्तमर दिस खल जायत लैक
बदलत लमैत अरि । भिनी इत लीचिकऽ बिहीन दिस लऽ जायत
लिमस कइ ।’’

पद्यैतं देरी नहि खर्वन किएक प्रकाशक ओ खिस्स मोन पईत
 क ठठ कल्ला आकर सभ दिग कहैत छलैक प्रकाश वैह खिस्स
 तैं ईक लठ लु चय भिखारि आलैर एक न इन्तवव शाय रहैक
 ईच नै तैर दइ जना आ जल नम माइय तैं एकल तासा आ पैयशशि
 ई अरुन किमथ ओ

८. भूतः भूतं पिनी सुतं सौतं सैकः । मुदा ई पुराणं सिद्धम् । एतक

दिनका बाट अपम पूर्वमें कहेत काल प्रकाशमें एक न नत अथ बंध हयन तेक
 उना दे अधिशाप ओहि विमलविक नहि मयन राजापरन विमलविक नहि मयन
 हा एक गाग बाहुय नै एक नाप माल नाप बाहुय नै एक नाप

मौन खयनाह लः अनेत छेक इतिहास खयन खयन बाहुय अनेत छेक
 मूहम कथाह देन देन एक बर जयनाह दोध कथा इति छेक मयन अनेत छेक
 मयन छेक ओ बरमा हाथे अनेत छेक मयन छेक मयन अनेत छेक
 समीप जयन अनेत छेक मयन छेक मयन छेक मयन छेक मयन छेक
 पानिपा अनेत छेक मयन छेक मयन छेक मयन छेक मयन छेक
 विमलविक ओहि विमलविक गाग नुन हयन छेक मयन छेक मयन छेक

युगपुरुष

भाय बाबू, गलू झा धनलोयी रूप धारण करि छल । माँ जिनहन अछि ते दूनु
पौधानन । जौनू छानेन शोभे पद्य कहलसि मुँक लखन-सुख- "कहने मन छ
काय बाबू समू झा मयक नूँह इच्छि धन नानाक वस्तु कौन हय गेल
छिएक । हमरा की पल अछि ।"

पुनः बहिन मर्यादा बनक बुझइन अछि । हाथ कुन नय टाव चलि गेल
तेँ हाथ धारिण बुझइन अछि । हाथ दया रूप तीन पदुन बालन । हमरा सम छ
मान पडल । लौन अछि । हम नय दिस नकल छै

नाथ काँन लौन अछि । "परायन नव जेकर नखुन-सुख अछि । छान
घण्टापः हाथ पल छै ।"

सुनोसि धार । रूप चौकीन छै । सन गहल अछि तेँ अपन हँस ते
अस्पृश्यता हो । हनीन घण्ट । अ तेँ नान नय चल छल । हम चहुँपड छै
कठल बाहेल छौ । लौन नय नय छल अछि । घण्ट नयकिक पकड छै
जछि आ नौक जकाँ नख-सुख नूँह गेल अछि । "काय बाबू ।"

हम कायान कायसँ अछि । छान गेल छल । "काय बाबू ।"
बाबूक मुँह शक नयन अछि । काय बाबू तेँ नय नय अछि । "काय बाबू ।"
नय कायान । बड कौन लखे नय नय । हाथ बाबू अछि ।
आन-सभक पकड कायान लखन । अछि । बाबू नय नय बड कौन अछि ।

हम काँन चौकीन नूँह लेन छौ । हाथ काँन बाबूक हाथन छै ।
लौन अछि । दहल गेल । अछि । बाबूक कायान ।
जौनू बड मयन अछि । हाथ बाबूक हाथन छै ।
अछि । अछि । आन-सभक हाथ ।
सहज नय । बाबूक हाथ ।
अछि । लौन अछि । तेँ नय नय ।
महल जौनू हाथ हाथ पकडन ।
संग छल । हाथ बाबूक हाथ ।
मुन मयन । बाबूक हाथ ।
महल अछि । "काय बाबू ।"
बिक्कन धनपन बना दबोक

अन्यतलसँ भूलाभा । हम नय नय अछि । बाबूक हाथन छै ।

काय बाबू । हाथ बाबूक हाथ ।
हाथन । "काय बाबू ।"
हाथ बाबूक हाथ ।

हाथ बाबूक हाथ ।
हाथ बाबूक हाथ ।

हाथ बाबूक हाथ ।
हाथ बाबूक हाथ ।

हाथ बाबूक हाथ ।
हाथ बाबूक हाथ ।

हाथ बाबूक हाथ ।
हाथ बाबूक हाथ ।

हाथ बाबूक हाथ ।
हाथ बाबूक हाथ ।

हाथ बाबूक हाथ ।
हाथ बाबूक हाथ ।

हाथ बाबूक हाथ ।
हाथ बाबूक हाथ ।

हाथ बाबूक हाथ ।
हाथ बाबूक हाथ ।

हाथ बाबूक हाथ ।
हाथ बाबूक हाथ ।

मने को गहना बाइत अछि जहाँ जाहि पकाना रीति आबन लखन को
खुबि हथकेक हय फाटलाक दुकहाँ उठ सौँध शहूँ हथ के
मणिफाँकी धातक सौँधोप किनवरीय पदिक गलीक दबलप हथकेक
धातक सौँधोप सय ताम निवि रीत रिपक हय गाय य हथ के हय गाय क
रहल छी हमर पता.

लखन विशिस्त मय अइत छी जाक अचम्म बन्नाक सुई प
अतैक इग घुँ मयक दुई छेक "बनामनी गाय बरुओ कय रिपक
छेक "

"दू नीन दिवमे तो" ककरा ककरावती " हय दुई अइत
"ककर ने आरिभ गुरुलिकैठ अछि " मयक हय छेक रीत छेक
मूय मय मय अचैत छेक इ चन्नी दुई रीत दिवक पितर अचैत छेक
विद्वती लिखबैक

हय इस-सापुषक गाय अचैत लय तैयार म गइत के

ककर मय गइत बरुओक गायन कय हथकेक लय
बगवत बहुवचन आ गाय हथकेक लय अचैत लय अचैत लय
नल किछु छुटि अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
ओ गाय य हथकेक अचैत लय अचैत लय अचैत लय
दुखनी कय गेह हथकेक अचैत लय अचैत लय अचैत लय
छत गाय बाबुलीक लय किछु लयकेक लय अचैत लय
चितिया उल्लस प्रिय गइत अचैत लय अचैत लय अचैत लय
नहि छल बगवत हथ आइत मय लय अचैत लय अचैत लय
के लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
हथकेक लय अपरिवर्त छत हथकेक लय अचैत लय
अनुभव रहि यऽ लय लय

अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय

बगवत लय अचैत लय "को ककरा पइत अचैत लय अचैत लय

अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय

अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय

अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय

अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय
अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय अचैत लय

[illegible][illegible]

आ स्वयंभू आ वशिष्ठ प्रसन्न भवति गुरुः स्यात् ।
 "हृ" रूप आ वाज. तर्क आकाश एतक. तर्कदेव अनेन विज्ञात "वाज"
 किमत मन्सागुन ऐक्य

किन्नर संगगाइन हैक
"हमनेक कोन पूर बुझ्यानि
बिबौनपर खुसल रहय "

विद्यार्थी सभा १० हम आग वंदना पुस्तकें "विद्यार्थी सभा" नामक पुस्तकें आदि उपलब्ध हैं।

नृपि हिम्सा मुक्तं ॥
"है कश्चि" हय अपन छात्र कृतकृत्य सध कौन ही एव न
चारक समझद्वि एव छान कृत्य प्रति
नृपि हिम्सा मुक्तं ॥

[illegible]

"साधक कलश" - इस विद्यापीठ की एक पुस्तक

"सोनाक कलश" हम जिताने वाले हैं।
 "हैं" सोनाक कलश धनपरीक्षा लाना, लक्ष्मीपूजन और अन्न
 बिन्ना गेस अन्न आदि दिन न होय कल। हमने आर्थिक दृष्टिकोण से
 ललाह इलाकाम हंका बजैत खतान मुदा छानधुप बड़े कइस।
 "हम जिताने वाले हैं" हमने जिताने वाले हैं।

"कंबुधर मे काला" हय "जिज्ञान" बहुर ज्ञात ज्ञात

कृष्णाय नमः । ॥ १ ॥ • २०

[illegible]

—“नै गण, कठ नै ? दखन की घेलै ?”

“तस्मान् अथैव भूकम्पः । सभ्यं तु दहैव जल गेहैकः । चोद्य-बहला सभ्य-
 इको अथ पितृव्यैः भवत्येकः” संग लेन गेहैक- ऐ साम्प्रतिक अहे
 भूकम्प जलैकः । मांही भूकम्पक बाद ई फूसक घर बनलै, डरक लेल । खानो
 भूकम्पक बाद तन-मरीचक भूकम्पक ठेक वा फूसक कार्य मौखिक सम्मेलन
 कर्मिणीक अति उचित विनोद विस्तार । संग वें सभ्य स विस्तार लागल
 सभ्य कर्मिणीक अति उचित विनोद विस्तार । संग वें सभ्य स विस्तार लागल
 सभ्य कर्मिणीक अति उचित विनोद विस्तार । संग वें सभ्य स विस्तार लागल

एक रात्रि दिवस खिलखिल करते जाते हैं। हमसे घेरने के लिये आकाश में सन्तानें उड़ती हैं। पक्षी भी चहल-चढ़ाई करते हैं।

३ - प्रतिदिन अक्षयकृत वादत छै । भूप लिखत कर्तिना कलासमे पसर

हम हुनका ज्ञानक सपक्ष तमसलक १॥ तमस हुनका सपक्ष तमस
जखन हुनक जखन सपक्ष तमस हुनका सपक्ष तमस हुनका सपक्ष तमस
पान अह मायेन हो ॥ ज्ञान अदि कहियो हुनका सपक्ष तमस हुनका सपक्ष तमस
ज्ञान भण्डाक लखे बौवन तमसलक ॥ हुनका सपक्ष तमस हुनका सपक्ष तमस
नहि गहि सकत

नहीं हिं सकत
तनाक धरतें धूँत आल जई हउ गल. एकदम अलफत हुनो हउ
हउ अलफत धूल पबैत ह। कि कलम हउ. नल लल हउ जल लल हउ
तनक एक टा धूल अपतल एक हउ. नल लल हउ. नल लल हउ. नल लल हउ
नल लल हउ. नल लल हउ. नल लल हउ. नल लल हउ. नल लल हउ. नल लल हउ
दलल हउ. नल लल हउ. नल लल हउ. नल लल हउ. नल लल हउ. नल लल हउ

दक्षिण छहक "
 इस प्रकार सिद्ध हो कि यहाँ पर १० अंश दक्षिण की ओर
 राजा कलक आर आर की ओर १० वाँटो

[illegible]

निर्दिष्टाईत अस्ति " प्रश्ना हेतुत बावेल " अथा गहि डेऊ एक श बल मुला जाल न
आह क्या गहि अथ आपल पैजा बजोन अस्ति बीजाक वडनं उरि मारु निरे
उहीक २ गहि तां एकदम बुझ लीं

रहित तो एक ही पक्ष है।

हमारे बड़े जहाँ तापमान ठीक है।
 नया अतिरिक्त हमें बजले "अतिरिक्त" रूप हमें बजले - ३।
 ध्यान दें कि यहाँ के "अतिरिक्त" फल हमें बजले ३।
 बड़े बजले "अतिरिक्त" बजले ३।

बुद्धवर्गक मन्त्र बल्लो ॐ
 ओंकार बल्लो करव ठण्ण अधमानविक लण्ण लण्ण बल्लो नवव
 धीनक दल्लो दं ओ शक खल हाथ पया मन्त्रु खल लो बल्लो करव मन्त्र
 गहि खल कम पण पण को अपन म्हा कल अवल्लो मुदा मन्त्रु गहि दल्लो
 सुदल्लो मन्त्र मन्त्र पक य धीनमन्त्र अन्त्र नैर मन्त्र मन्त्र मन्त्र
 किन्तु बुद्धि गहि मन्त्र

निकल सुजित गार्ग हात्र
नीक बर्को अन्तर मंड गेल लेक । एतक बरगलपरी सुखी न
एखने आकाश किस छिंदुअपरी बा रहल लेक । दरबनक समय एखने

२. जैव-सांमान्यता जलवायु या कोषाद्वय। मुदा हमर ध्यान अहि भाषा रहि मुदा अह रचनाक रीति इतर गणरा जा मम जन्माक उत्पत्तिकार्क चढा रल छल। इकरा बरदम जयसम रीति बुझल जा भन्ने छै उत्पत्तिक। हम बाहर दलानम बैसल एक द हजल अनुभवक असफल कल्पना करै रहलहुँ।

—“बैंगन की करें हैं?” कांफ़रेंस में आबि नीरा झंकलन।

हम इस बात को जानते हैं कि यह सब एक ही बात है। यह सब एक ही बात है। यह सब एक ही बात है।

“किन्तु मैं” हम जवाब देते छिएक ।

चल. चल. बुद्धकं सन्तुष्टं हर्म्यं आ गौडाकं मरु बजा नील शिखर "।

25

१८. वेदों में ज्ञान लिखित है। इसका हमारा संबंध कैसा है। नीचे दी गई बातों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

काले च नृपुञ्जित काले मन्त्रक वा कर्त्तव्यं हिंसां एकदैन काले
न चैता वा गीता दृष्टम् सपदि वाप्य अति, मुदा प्रमोद बन्धन सकरोस
न च बसो काल मपटल रहि बद्ध अति, अन्धारमे गोरक संग किधु
न च अति इय दंष्ट्रिजकद बसो अवन नहि दैव छिण्णक । मुदा भानेक काल
न च वचन मन्त्रक वा वाप्य न चैव जदैन छिण्णक । काले प्राणि न
= ३४४ इदं यो मन्त्र अति ?"

— लो शंकर ।^१ इय विभांखु सयने कठ यः चडित छी ।

कौन सा ?" कल्याण फौरन प्रसन्न होकर

• इति । अतः । अतः निश्चयः यत् गैल ?

५. इक्ष्वाकु इति अत्रि. वेन नीरुक् कवकाऽऽ अत्रि धमनि
६. वर पत्रे "पत्र" दास्य दिम लुड गणधिन "चल जाडु तंम
७. "३" "३" "३" "३"

१. 'अ' का उच्चारण कानों के द्वारा नहीं हो सकता। यह चोंचों के द्वारा होता है।
 २. 'अ' का उच्चारण जब 'अ' के साथ होता है तो यह 'अ' के साथ होता है।
 ३. 'अ' का उच्चारण जब 'अ' के साथ होता है तो यह 'अ' के साथ होता है।
 ४. 'अ' का उच्चारण जब 'अ' के साथ होता है तो यह 'अ' के साथ होता है।
 ५. 'अ' का उच्चारण जब 'अ' के साथ होता है तो यह 'अ' के साथ होता है।

“भाष्यकः स्यात् जुनि खेने” (भाष्यकः इति शब्दोद्देशः अप्रत्यक्षः कृतः ।

"किण्ठ ने खोला ? कैद में पकड़ा दोस्त अंतः कर्म " हंस कर बोले-

छिपक "ने खोली मांग दोस्तों की मदद है" बकने व इंद्रजीत में हैक
 आदित हैक मोक हम तहिक बने गदरौक "

५ लक्ष किरणें गीत गण हस नै ज्योपै खुलापन

"सहि तो" सहि लालबाब" * आवक स्वा कुरु प. लालन कैक

"सहि तो" सति लूलव" अथक मी"
 "आ गेक छीहो पाँक सिक कल्लह"
 पकललकैक गामम अति भल सैक नइक नइक अल्लहकैक

पञ्चदशमे वापस आगे भाग लेके नई नई चीजें बनाई देती हैं।
हम सब ऊँची चढ़ाई पर चढ़ते हैं। पञ्चदशमे ही मैंने
मांगप पर्वत लेके आ जाया। चढ़ते चढ़ते मैंने एक नई चीज
देखी। वह थी कि मैंने एक नई चीज देखा।

[illegible][illegible]

पदुआ ककका य इंगर ककका अडिअ कन गयः न. क
जाडत छनि इंगर ककका अडि अजिअक लक टड्डन अडि क
इअवन्त अडि इअन करन अडिअ "हन न अडिअ बलन अडिअ यव स
गपक हन अडिअ गनक बगि अडिअ अडिअ अडिअ क अडिअ अडिअ
अ. जगि अडिअ अडिअ अडिअ अडिअ अडिअ अडिअ अडिअ अडिअ

हस्त में वैशुक, कंडरक, दीनबाण संगत करीत छथि । पदला कक्कारके* दक्षिणे कत 5
चतेन ह्येधक "गज तै छन जंगलक काना वस्तुक कनो गहि एहि दंगे राखम
व हन्य रहै एतेक नभ वस्तुष एतज श्वराभ्य त्र्यम्क 3 विं धाटु २"

नृ श्री कविका इनेजित १९ जातन ह्यथ अर्त्त स्वरमन्त्रक आधे रात्रे ब्रूते
कविक इनेजित आ नपेध्यार्त्त इ द्रमन्त्रक पंत आत्ति । स्वतन्त्रताक पाँच
कविक इनेजित कविक इनेजित दहने नृद्रुद ह्यथ सं देति अगच्छय होइत् आत्ति ।"

“साहस्यं नै हमग दाद अडि इतक-इतक गीत गीनहार साजनिपा
“क” अस खल्लना छैक नै हम गुन्तास नैक चायें दाद खल्ल भरत वस्तुसम.
“क” कलकल अपनै मारयें लखि

इ.स. १९४७ में "कदम हटाने" जैसी त्रुटि "अहाँ" से व्यक्तिके स्वतंत्र
 अधिकार अधिकार नहीं अणि । खाणों चारि भाइ बचति तल प्राप्त बने छी
 "स्वतंत्र आजादी रकत" लपणसँ "थरैत छैक" अत आहोँ बले" दिशैत छैक ।"

२-“से ते बुद्धलङ्घुं याव । मुदा शोक कथोपर टिकत ? खाली आनन्द हवाम
 ३- ॥ ३ ॥ पंत मरि बगतेक २ ई कहरसिया सम मोजके हुवा देलक
 ४- ॥ ४ ॥ संस्कृति समके हुवा देलक वर अथ काँट अलि के खालीपंत
 ५- ॥ ५ ॥

[illegible]

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

॥ ५ ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** **॥**

आ गांधीजी आपने मेरा नाम जोड़ा है। मुझे ज्ञान का एक सा आकाश मिल गया है। "सत्यमेव जयते" यह अब तक का सबसे बड़ा सच है।

उसे एतना नहि बूझ सकै । यह पन्हा अगला छैक । जह रहै
फाँ । नेम्हर भेन हो घूमि जा । हम नें दोम सान अरुकाठ बैसा अछैत छै ।
बो नोहँ चने खुब भजा हाइ छैक ।

कहानिएक "तुम्हारे लिए मैं आ रहा हूँ।"
 तनी नार भूखें शायद "बहुत दूर है" कलका दिन टिकन
 अन्तरिक्ष नाह करके लो धर आइ रहे एक फी वय लेक

तल हय रतनिक केशवराज
गली जित कथनक पुन हय अकरा एक वरिद वरिद
सम्पत्ति उनि टानि एका न पौरुषाय नाले म
स्वर्ण सभ विक्रम स्वयं प्रिय को वर

महाराष्ट्र शासन, न्याय विभाग, मुंबई

“हृदय हिमालय” चौवाटिंगक बसल ‘ऐनक’ छानैक अजबद कविनमे ।

[illegible]

इ.पू.सु. १७१

यदि माना जाए कि एक क. क्यूब म. पानी की संख्या लगभग १००० है।
साथ फुलने वल माना गति

एक दिन भी स्काउट्स नाम का संगठन बनाया जाये। स्कूल में
 एक सप्ताह पढ़ाई करने के बाद स्कूल में एक सप्ताह का
 हाउस टैक दिया जाये। स्कूल में एक सप्ताह का
 सप्ताह पढ़ाई करने के बाद स्कूल में एक सप्ताह का
 सप्ताह पढ़ाई करने के बाद स्कूल में एक सप्ताह का

[illegible]

समय रा गृहस्थिता शीत वसंत ऋतु
तत्पश्चात् जलिका पाना धौली क* शीत ऋतु-जलिका जलिका
इस गैर धौलीपुत्र दक्षिण, तत्पश्चात् आश्विन पाना इति ऋतु-जलिका
गोद गोपक बल्लभ सेक शुभ पूत शुभान्न जलिका काल प्रातः नर
होत / तदा मन मन लै श्यापुत्रा हापुत्रा अजिका

औं हैंसते बाजत । पदक की संलक्ष्य वदस पर की दण्ड ।
 आगे बहुत गम बाज भन । नरि बुझैक । प्रथम वदस में दखत जुग ।
 आकर इत तमोत लिपक । जहान कथित नामत हैक । कदम दण्ड ।
 फा स्थानों परास्य, ऐक । सात दू मानत एक ब । अकेल ऐक । बुझैक ।

हम गजब की स्मृति में होंगे कश्मीर में हम सभी को बलि दे देंगे
सभी को ज्ञान का स्फोट दे देंगे बड़े बड़े गुरुओं को ज्ञान का प्रदीप

आंक्य भावति एकदम कलम मः तल्लि दुर्लभं यथा यथा
का लेख तारा ब्रह्मन लोक ?

रुप आंकड़ा पैठ तजक लनल्लिएक

हम अंकक पृष्ठ तर्कः ज्ञानादिकः
इष्टं ' आ ज्ञानिना कथ्यमानं वातः ज्ञेयः
एकदम घृणा अस्ति. खाद्यं ज्ञेयं लो अस्ति. अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति
अज्ञानं वेदा बन्धि ज्ञानेन चरम गैल अस्ति ज्ञानमिति अस्ति अस्ति

इस बार दूसरे परे थे गंगाक तबोटा मरुका रामन दसिने
न छाने मरुका भरे कनक गंगाक बुझा दसिने मरुका रामन

कौ नुझ दियौक ?"

कावेन कावेन लगेन अंत मुड बिन्कलन उगायां शई भलि हमार
कावेन कावेन लगेन अंत मुड बिन्कलन उगायां शई भलि हमार
कावेन कावेन लगेन अंत मुड बिन्कलन उगायां शई भलि हमार

"हैं एलिये इस को कहा ? उत्तरों हैं श्वका दोस्त ठरिहूँ..."

"संस्तौ शत पुलकामे + " सुत बलेजित होइत बाजत - "अखन अ
उत्तर नै हमहूँ भर्तेत गुरु अ कहि गोप्यो । गुदा न
उन्नीति प्रान मणि । अहाँ कनेक बुझा दियोकि ।

इस कार्य आत्मात्मन नहि दऽ सङ्कल्पिक भूतकं । 'लाल भीजी' वला
भने छल । तनाक उतर हमरा बुझल छल । तैयो भेट भेल छै लोक
"अब पूरा भेटल छल । किदन सम कहैत छल नांय दऽ

अ उत्तरार्थे गवत- "की कौन कौन कौन कौन कौन ?"

[illegible][illegible]

अथवा यथा अमृतं ताम्रं स्वयम् । एकदमं विमदितं कृत्स्नमेव...
आ अथवा यथा अमृतं ताम्रं स्वयम् । एकदमं विमदितं कृत्स्नमेव...

अर्थात् कक्षागत ही बनने— "तहाँ सभ टा भौटा लैवने जात छै"
 व्यवस्था इतना करै छै । से अधिकार हमर माय्-बापकें नाँव
 चुकल जिवीक, उपदेशकें हमरा एकदम घुणा अछि ।

पुनः स्वयं सहा कर्मिण्येव च हस्ते बाह्य इत्येक आचरण आ
 चरणं च संतु ज्ञान आचरण स्यात् नहि ते ई साधना निष्ठस्य मायिकते

50 एकदम आपत्तकालीन साजिल
एक भयन दस्तान या सुन्दर अपने कम
कठिन 7 हम सिख हो ता* मोदक

कंडन १ हम चिंत हो तो गोरख
हमारे अविषय मां अविषय गंगा आकरा लन अथ बावू नवाबि बरन
वर्षांतर विषय बावू नवाबि अविषय अविषय अविषय अविषय अविषय
उं मुख्य लेन अविषय अविषय अविषय अविषय अविषय अविषय

[illegible][illegible][illegible][illegible]

इस प्रकार हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि हमें अपने मन में जो भावनाएं हैं, वे हमारे जीवन में प्रभाव डालती हैं। इसलिए हमें अपने मन को नियंत्रित करना चाहिए।

[illegible]

—“कं २” इयं कर्माह्वाना देवस्य पुस्तिका ।

ਭਾਗ ਲੇਖੇ ਜੋਹੇ ਭੋਭੋ ਦੰਗਿਤ ਲੇ

[illegible]

३०५२१ - लीला पोर कान्हे मुँह सटवैत बाबल - "अवित्त बाजी

१०० ग्राम की मात्रा में एक बार प्रतिदिन । मुदा कठुण आंशिक दिन हमारे
वर्षे सुख । बौद्धिमान अपन चरो लक्ष गोल काय दीदी छपमैं
हमके हृदयकें एतल कहललैक : "बल्लभक एक टा लीजो एकएम्में पेम

रश्मि-पूरेत काल इमरा स्थापन केना हम भते प्रेममे जी । हमरा
रश्मि-पूरेत काल इमरा स्थापन केना हम भते प्रेममे जी । हमरा

हम हैं चित्ती तंग आपम कने हियत
हम हईमस्तर माहकक हावयं जे अन्ती य-नेत छे अन्ति उवइत
जाइत जति अति सिद्धिके दुखे जे हईमस्तर माहकक गपपत लखे जे
कान लगत छे चडी काल धार करेत हेत हो त धार करेत हेत हो जे
मान एकरा हल्लुक नहि य, जाइत आई कसल गरीब हल्ले नहि टाकेत ई
कारिक, नखन शन हाइत छे कपरा एउटा साथ करेत ईहेत छे।
जे आ मर रा बिनांग जात केन किछु धन न भोज

ना * कथं विना एता कित्ति * कंत * अतः विना *
पांवे शांदा मक्ति वैमलि

[illegible]

संस्कृत भाषा (सामान्य) में १००

[illegible]

“હમારો લાંબા સમય છે” । “હમણી” બંધુક છીં બે તોર દિશ દોસ્તીક
“હમણી” બંધુક । તોર આજ બચક બચ પેલ છીંક, કમામમે કસ્ટ કરેલ છે”
“હમણી” બંધુક સમર્થ જાગુ રહેલ છે” ।”

३३- "विहृतं ?" तेन जकचक्रदत्त अस्ति नै हम्मा विश्वास करऽ पडैत
 * ३४- "विहृतं विषयम किमुओ नहि भूत्ताम सैक । ओकरा आतहि अस्ति
 ३५- "सारांशक कोटमो दिस नाइत छी । अपरासोक हाथ पुज
 ३६- "सोने सी रहैत अस्ति । घड़घड़ापले हुनका अफिसमे पैसि आवत छी
 ३७- "अर पुत्रबाक अस्ति अहाँसँ ।"

“आज बुझल कल सर १ तखान हैं अहाँके” ईहा बुझल होयस में हम
 “कल सर १ तखान हैं अहाँके”

युगचक्रम् • ३१

[illegible]

१. शिक्षक का कार्य
 २. शिक्षक का दायित्व
 ३. शिक्षक का अधिकार
 ४. शिक्षक का कर्तव्य
 ५. शिक्षक का चरित्र
 ६. शिक्षक का स्वास्थ्य
 ७. शिक्षक का व्यवहार
 ८. शिक्षक का जीवन
 ९. शिक्षक का परिवार
 १०. शिक्षक का समाज

विश्वकर्म मंडलद्वारा आयोजित कार्यक्रमों में
आत्मिक रूपरचना बोधार्थ कृतिक विषयक गीत श्रवण, लेखन, चित्र-
रचना आदि कार्य करवाये जाते हैं। यहाँ पर भी यह कार्य कराया गया है।
यह पत्रिका नवीन प्रौढाचार्य द्वारा संपादित की गई है।

पक्ष १ नौसेना बलिका केन्द्र १००
पक्ष २ नौसेना बलिका केन्द्र १००
पक्ष ३ नौसेना बलिका केन्द्र १००
पक्ष ४ नौसेना बलिका केन्द्र १००
पक्ष ५ नौसेना बलिका केन्द्र १००
पक्ष ६ नौसेना बलिका केन्द्र १००
पक्ष ७ नौसेना बलिका केन्द्र १००
पक्ष ८ नौसेना बलिका केन्द्र १००
पक्ष ९ नौसेना बलिका केन्द्र १००
पक्ष १० नौसेना बलिका केन्द्र १००

[illegible]

निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ बताइए -

[illegible][illegible]

२२. भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं । आनन्दं पश्यति ने दृष्टं मकल ।
२३. अथ येन हृदयं हृदयं आनन्दं हृदयं भोक्तव्यं भोक्तव्यं । भोक्तव्यं
२४. एकं यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं । भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं
२५. भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं
२६. भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं भोक्तव्यं

[illegible]

आ अन्य जातिक ठपेदार सल आइ आइयुधक मंडिक जा। एतक सुन ३
 मऽ गल छैक एहि चुरावने से बुझल छैक कतऽसें उलैत छैक ? मित्राये तल
 एतक टका कतऽसें ओतक ? कान्हिए इमरामक" एत छ मंडिक एक हटाए छै
 भएल अछि एहि चुराव लेल

रमण जे कहि रहल छल तका अमुन एकदम कहि लल हो हमन जे
 नहि बुझ जाहि कत रूपम ओ अकरा गति रहल छल जे बनेक आरंभिक हल
 ओ कहि रहल छल तका बए ओहिपर अविश्वामक कोन प्रश्न एहि छल

रमण आगू कहऽ सगल— "खालो विचारि हो कतक विचारि हो
 वाग्य सहा केर हल छैक । ओकरो जग्य आल बाहुल पण्डित संतलेक नै न
 कत गल हनोक मुदा गह लेल चका डालक चकक लललल मंडिक वा इत
 वजासँ ल तकरां सुनै कऽ आरि रबऽ महलक "अ नहि क" रहल हो न
 भोजन छललल छैक अपन विचारि के कलकलल अतिन प्रम हो हल लल
 कऽ देन छललल तेन कहि ललललल न कायं लललल "न" नै लललल
 लियोक जे अग्रिम गन का एकलामि क सभ हलललल न नै बुझल हलललल

रमण बीबन सफल हलल तहिने अहू दिन हलल कल ललल न
 छल । मुदा ओकर परामर्श इत नहि छल अतिन प्रम । कललल अतिन प्रम
 कोनो शिक्कन कोनो भयन नै रहल

रमण कलललल ललल लल अतिन प्रम ललल लललल लललल लललल
 ललल ललललल ओकर बालेन छलल अतिन प्रम छलल अपन पण्डित
 मम दिन अतिन प्रम लल

एत तल जे पण्डित क अतिन प्रम हल अतिन प्रम ललल ललल
 पण्डित पाहलल बऽ लल अतिन प्रम जे अतिन प्रम ललल ललल ललल
 लललललल कहि ललल हल लललल ललललललल लल लललल
 अतिन प्रम एक ल लल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 लललल ललल जे कललल ल लललल लल ललल ललललल लललल
 ललललल ललल ललललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 अतिन प्रम ललललल लल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललललल ललललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 लललललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल

अतिन प्रम ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 लललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल

एतक हलल ललल ललल ललल

अतिन प्रम ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 लललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल

अतिन प्रम ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 लललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल

"अतिन प्रम । बेस कलललल देखि रहल लललल ?"

हल अतिन प्रम ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 लललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल

अतिन प्रम ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 लललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
 ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल

हम आते गन्धम लगेत विहारे नुह नान रोहक गले हावने नचै नर
भ्याय लोह टोल्क "आदि गरी महेक सुवन्क" "नकन" " एक टोल्क
गुहल स्त्र

"आ विन्कवैक विहारे न / एक के नहि कोहैत लेक" "बोल्कवैक" "न
एक गतिक पथम लेका आदि नउवैकरी जैहक नचै" "हक विहारे न

हमर भूमिकऽ पावु टोल्कवैक नउवैक नचै भल" "बोल्कवैक" "न
सोछि एहिमें तथ्यन कोनी अन्तर नहि गहनेक" "आदि जैहकवैक" "न
किछु किछु आभास गरी भलि गन छैत

पुनः दुख हमर एहि बातक नीर छन के छह नकन गहनेक नचै
हकन लोही छलैक" "पुवतऽ ममक" "न अन्तर दुखनहै" "नचै नचै" "न
एहि जहने लोहक सग लोचन पई हनु बल जय नचै" "आदि नचै" "न
लोचन आ दुख नै एहि बोल्कवैक नचै नचै" "आदि नचै" "न
होल्कम मात्र एक टो जैहकवैक कइ हकन नचै" "नचै नचै" "न
रहिकऽ आदि नचै नचै नचै नचै

पुनः आनन्दक व्यक्तताए देखित हमर कोन नचैक कनक नचै
पदम अहो ते गरी शरण नचै" "आदि नचै" "नचै नचै" "न
हम ? नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
अछि मा नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

आनः घम नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
देखित विहारे" "आदि नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
कलन आ हकन" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
आ हमर नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

हम नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
पडन अछि दाहो कछु आर बदन शरी किछु आर फेर" "नचै नचै" "न
भकभक अहो नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
कोन अछि "अबि नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
गेलौ आ मन्थ मन्थ नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

हमर आनन्द होइत अछि आनन्द नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

हमर नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
किछु एहि नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

"नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
हम नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

हमर नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

हमर नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

हमर नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

हमर नचै नचै नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न
नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "नचै नचै" "न

उक्त चर अप्रत्याशित भूतल स्तर होगा जहाँ भूचुम्बक उल्टा दिशा में होगा
न भूतलानुसार मुड़ रहित चर वे जो कि चूचु पाए कहीं नहीं मिलेंगे ?

नै गुरुनिष्ठाक मुनः सितल वरुण नै गुरुनिष्ठाक मुनः सितल वरुण नै गुरुनिष्ठाक मुनः सितल वरुण

[illegible]

इनाक न

क. लक्ष्मीक

[illegible]

५२४ मरुत ग कण्ठः सुनाकः चम गेम ओकां जाडने रत्नो आयलः 'को
५३०५ कृतिके वृंहिजडा ? अपन स्त्रोकः बदल लः रहल छल, नहि जानि कतयसँ
५३१० कदाई कदाई अपने संग रहल्लक ठी फेर काहू उपकार बनल आयाल
५३२० लख बच्चा समकैक लङ्गसम मे तँ ओही कोदारिसँ दाखरि दितिपंक '

जब एक व्यक्ति को ज्ञान प्राप्त होता है तो वह अपने जीवन में बहुत कुछ बदल देता है। वह अपने जीवन में बहुत कुछ बदल देता है।

[illegible]

आगत वगैरे के अन्तर्गत आगम के अन्तर्गत वगैरे के अन्तर्गत
विनाश के अन्तर्गत भी जड़ित है।

[illegible][illegible][illegible]

संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं। इनमें से कुछ प्रश्न उत्तर की दृष्टि से ही सही हैं।
कुछ प्रश्न में कभी कभी महत्वपूर्ण बिंदु लगे हैं। वे सब प्रश्न फॉर्म देब करते हैं।
इन्हें उत्तर में ही जोड़कर भेजना चाहिए। इसलिए बातचीत करते-करते इनमें कुछ

[illegible]

इसमें मैंने उसका नाम भी रखा है। उसी प्रतीक के रूप में बुझाया है। यदि
- कलकत्ता इन्टरव्यू शुरू होयतेक ? स्टेशन दिस बिदा भइ लखत छी ।
- मैंने अंशुना इमरो बहु दूर भगैत अछि । एकटा टमटमबग्या भेटैत अछि
- रोज़ आइत छै । टमटमबग्या रस्ता साफ़ पानि तेना भोझा दीहबैत अछि वे
- ईहो भगैत छै । ओहो भगैत छै । ओहो भगैत छै । ओहो भगैत छै । ओहो भगैत छै ।
- ओहो भगैत छै । ओहो भगैत छै । ओहो भगैत छै । ओहो भगैत छै । ओहो भगैत छै ।

— रक्तस्य कर्म करोत नृजेत भक्तिः— “अहो मैं एकदम डरेबुका छीं

[illegible]

अनेक अपत्यक पत्र आने लगे थे कि मैंने
 इन टोकरों का जवाब देना नहीं देना है। मैंने
 भीत में जाकर रोना शुरू कर दिया। मैंने

जो हमारा बुद्ध दिखि जाऊ = "हमारे 3 बच्चे थे जिनके नाम थे -
शुद्धा, सुनील, नीले कमल" वह लड़के राज =
कामका वात है "

जबकि यह देखी प्रतिक्रिया है

मार्ग काल में काल-जाल

काल

आपने जो कि जितने पत्रों को
इसमें अतिशय शक्तिपूर्वक कहेंगे कि "यह सब मैं ही हूँ" यह
इस मामला में फाइलिंग में है कि यह सब मैं ही हूँ

आत, हुम्क हराय वही गलत
इससे अधिक बात था, फिर वह गलत नहीं है यह मैंने
"कैसे समझी कि मैंने बिना बातों के ही यह सब
मेरे लिए था यह मैंने नहीं, मैंने ही जो मैंने

इच्छायां संपन्नः (उत्पन्नः) ७ १४०

पाइ किहू भवैत छथि "कामग बहूत गुस्सैक सभ सुनबऽ लगबह तँ
 भइत नयन" अकिन्ना कतँ जयत मल्लक न कारण तँ एकदम स्पष्ट छैक एह
 दुनूकन जतक नाश बला खबुवक अछि जा आगिज की करत । भबुवन पेट

[illegible][illegible]

३. पक्षि तत्प्राप्तत्वं किञ्चिन्मार्गः शीघ्रं कृतः स्यात् तस्य विस्फोटः भवति आहतः स्यात्

3. ब्रह्म कैवै इत्यम् ?
 वै कश्चिद् विना ब्रह्म कैवै इत्यम् ? प्राप्त मेने महान्तर पर सामान्य
 वै अर्हन्ता जिनयसे सनातन, चहल फहलसे परिपूर्ण, भरल राम

२२- पदसूत अस्ति ।
 २३- अथर्व वेदस्य वेदंति जायते अस्ति । एहि देशक श्रीक वा नृपसक

[illegible]

हमारे अर्थन गरि तयरे...
 यह कार्य मा पीर जाके हो...
 पुनर्वासन करि रहल सिद्धि ? फिर समाल त यह न...
 कार्य आदमा किछु करेन गंज जाले...
 बाकी सबके बकनेल आ कार्य कुहेत लेक ।

मुद्रा एहमें हैं यह समेत बैंक ने हमारे मन कोशिश में
किया है। यह सब बातें मैंने अपने पिता को बताई हैं।
एक मजदूरों के घर में मैंने एक बच्चे को देखा है।
और वह बच्चा पुलिस चौक में, गोली का डर है।
मजदूरों के घर में मैंने देखा है।

प्रधान मंत्री दाइने बायें
गवर्नर का फाँव दाइने बायें
अब दाइने बायें
सैंक ? हमस कोनो दसर नहि भेटैत अछि

अतः एक ही प्रजाति के अणु एक ही प्रकार के रासायनिक गुणों को प्रदर्शित करते हैं।

पाँच वर्ष बाद गाय आधन रूँ, आधन के रूँ सब

[illegible]

का. रमण टांडर जाला पाणिनि "आस भवि जिनसो पंडित रहब" ?
का. रमण टांडर कावे ?"

३५ = मात्र दू टा कंगों जनेन छैक अ कसौआ रहि सं पड़ुआ ।

एतत् प्रकरणं सायं प्राज्ञैः वाच्यम् । "आद्यं तारा ईश्वरं लोककं" संहता
संस्कृत-प्रमाणेन सिद्धायुषं वै तांका गणपति उवाच अत्रि ।

एक जगह का तो एकरा नहिँ दैत छिउक । ओकरा काज कहलियेक बे
 एकरा सभो हमर भोज नहिँ अछि अउर २ मोन तँ एतबे अछि जे प्रत्येक धर्म
 के एकरा दिन होइत छैक ओ प्रत्येक दिन पहाड सन हम ओहि पहाडक
 ओर नहिँ गेल छी । जाय-पयर, सभ अंग शोणित शोणित भऽ गेल अछि

इस वधू लग पहुँचि हम अरज्यसँ अबाध रहि जाइत छी कहियो ने
 भूलतै । एत तँ एतना बात हुनक भँससँ सुनब मुदा ओ सामने छल बाजि
 त हुनक की प्रत्यक्षा भेल छेल एतेक पदा-लिखाए १ एतेक पैस संसारमे
 न मिलैत तँ काज नहि सकै सोय लेल ? अस काज नहि कहै हैं पर कैसह
 कहै । अपन पेट भरबा जोग बगौन हैं अपना छह । बुढ़ारीमे आब ई
 सयकैत अलि हमसँ ।"

१०. व्याकरणे बाबूक जुन दखौत छिथिन । छि बरिक्क साम्रा थप गेल छनि ।
 ११. एतेक जे बसबाक जात-थल काममे उभारल इच्छा । तयैत अछि अना बाबुजो ।
 १२. ते चरत किछु बंसी बूढ़ थप गेल छथि ।

कहते हैं— “कतक आस छल सोरास । बड
नुर सोरास नौक वै खने बहरायल । सोरास कतक आगु बहि

१. 'सत्यमेव जयते' का अर्थ क्या है ?
 २. 'सत्यमेव जयते' का अर्थ क्या है ?
 ३. 'सत्यमेव जयते' का अर्थ क्या है ?

२२ इन् शरीर कठिनाऽ पाल अर्बन छै कोनो वस्त्र नहि दैल छियनि

मुद्रा रतनाई अपन बुलार हमरा बड़ अचानकनक चलेन आँछि छापक बाबनक
मैहरी हम जाते चारमै लेन आँ छापक छैन छैन

पुदा मैहखन हवा गला नाला जाइत आँछि त बाबूक कछनप उलटवटन
छलनि रतना हमरा पावु छलनि गेल छल

सर्वा कयलापर हवा छोट भाट गम्भीर बाबन 'सर्वा' नरक गेल छल
अछि, रतना अपन पापक मुखिया भेल गेल अछि

हमरा आरवयम पहन होछि आ विधवापुत्रक रूप छ कहऽ लगेन अछि
'पछिला धुनावन एकटा तारां प्रान्त छलेन विधवा शकल सज्जित छल
छाप छाप उपद्रव धनैक रतनाकनिक' काय उपद्रव सँह सृष्टि कहल छल
तखन यहि जाय कोन दुनकासधक' लोक पला जति गलति दास विनयि ललक
माइकिलप' ईरा पहलम भगलैक आ आ गय गय दुवारा केल ललक अछि
दोकबक महम ककरा गेल धनैक लोचनम करैत लेक दे आक ललक
प्रोपय मौनी खानी नर भल गेल छल 'म' उ छलेन उ छलेन दुन का
नै मायने छैक उ माँह बुनवक बा' ललक' महुछह छेक भन' ललक ललक
कमपनक' रतनाक रतनाक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
आ ललक पापक मुखिया भ गेल मुने छ छल बा गलक ललक ललक ललक

कंधु विनयपुत्रक यमरा छिरा कहल छल अछि रतना ललक
हउत चल जाइत आँछि जमरा हमरा आपाधिक ललक ललक अछि
बालपर आरवयम हाइत अछि उ किपक ललक ललक ललक ललक ललक
आरवयम भ' रतना छल

शप अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
आ शिवायनक काँध दुदा पहि क कछन छल अछि अछि अछि अछि अछि
समापक हावत ललक छैक उललक एउ बा दु गेट ललक ललक ललक

गम्भीर कटल जनक भ' ललक अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
आकर बात आ ललक ललक हमरा आरवयम हाइत अछि अछि अछि अछि
ककरो गलनगलन भन नहि ललक अछि फल एकल कल उ ललक ललक
भन लिखनयै छान हाँटन जाइत छैक

पुदा छल धन गलक' ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
अनाते करबा मेल ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

मुद्रा छलेन पल्लुआ मभक सभक लोचन सगत पुल्लुआत ओ हयरा रंग
हल 'कहिछ अयल' ,

भल 'कहि छैन को हाल छोक ?' हम पुल्लुआत :

नलि गल अछि कयल' आ एक छ पुगन अल्लुआत नेता जका
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

हम बाँडे उतर नहि दैत छिएक । ओ स्वयं बाबि दैत अछि- 'तो'
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

अ अँहना बहमनन मुनिक आइत चल गल आ हम आँकर ललक आ
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

लाकड़ों के खाने आ इतर प बड़ो नितक से तेरा जक आउता छी
ते कोनो आगिमाग चीज के अधीन रहि जावने प्रखन कनक जमित के

हारा अरु अन्धकार से अन्तर धरत जल गत भुतक आउता जक
एक आ चोक्का कयलक से जलने छी तूकबक नल जक एक
संघर्षक बाद पला केर बाण्ड गइल आ दुनो पलक निरुद्ध छलक जल
सह नगन कहियोक नक प्रियता छी तामे व न न मान बटु तने
कामो नजदू किछु प के न नक जलने

हम एक रा आगिमाग अरु जल पाल जलने व अन्तर जलने
सिन्हा बडा भयक चक्का अरु जलने पाल जलने जलने जलने जलने
एतक रातेक परिवाजना लपकत आ अक अन्तरजक जलने जलने जलने
शहक सून रताए बोकाय कल पालक बकल जलने कलने इक

बार मुज भू जल छलक जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
हम जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

हम बुजि जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

आ एक क्षणक जल जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

रातक तोर अरु पटक आ पालक विशाक हम कलने भू गेल रही
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

जो जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने
जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने जलने

कौमुदी अपठाय बदे लक्ष्मी हावरी अंति राजा पान पडैत अंति फगक
बाप ऊ अष्टांश बहिनक हुनु प्रती धांचक। एकसरि अंति प्रहसने गति नैत अंत
तीन गोटक घेट भरि नैत अंति बहिनक। एका नैत अंति डा बायक हुनु प्रती क
अंति अंति हय पडैत नूत बापक कुतीर बैसन मुत्तक राते स नैत कं क
शेचि ककरी पालन कउ तब कं एहिमें अयम कउ छैक

गाय गानों आदि कौनों खास स्थान पर रहने निवास करने
 बारन लोकमार्ग जीवने कक कक कक कक नई मुनी गाने
 दिन समननी यमि जाइत अछि चक कक एहि कक कक कक कक
 चना शून मिसरक क्रियाए धा गने बिजत सुनने कक कक

ओ इय कोट्टर कलस- "सय भयानक ओ सभल्लेक ज
सभल्ले लफ्फे भेटि गलि छथि ।"

नमस्ते करघिने

२०००-२००१ का वर्ष कहिये जायै-कहू । मुदा सोही खंभि गेलाह । साध-विश्व
 २०००-२००१ का वर्ष । सांकेतिक बरतकें स्वीकृत किम्बूत का देवउ लगलैक

[illegible][illegible]

॥ कर्म नहि भगवन् । " घूरन मिसर बिभिआय लग्ताह- "कने हमरे
॥ १ ॥ गङ्गा नहि कुल । "

जोकर गजनी बाह फाट दौतावान सड़त देक मुह लगे न
बहराइन धैक

पुला फेर गाजेत मोरु- हम भालि बा करोत सिज ३ अर जोड
गहि आइतम बाटा बिजलि बाबसा नह न हन पला दीन उपवेक

पुला एहे वी लताक गजेत यनात साधका मुवे एकत दुवली जरी बरन
मडनमे आबि लइत हैक अ अर अपन जीतमो मोक ही फरेत हैक ३ दरेक
ते आ वीलि न को टाउ चाहिन न गइ चारेन छ तइ नो लोके, कि
निपराक तल फेर बांख ३ आ बउ, हियोक लहा एक न दाम अर ३

पुला स्वप्न भण्डपयमि लौक साइसपर अशक्ति भड उल्लु ३
काना काण्ड क इतैक बाइ गहि कडनम यमक खपन कलककर कड हैक ३
धिमिधाक आइतम बाहा ३ वनेक

मुह स लम किहू गहि धैक नन लही आ कय मुकैत नहि न
वीवनमे गहि न हो इम अकल नज्जित ३ लोहन बांख किन लोनि

कानध काल बा ३ धू ३ कुरा कुरा मिमक ३ कुरा बांख ३
लाम- ताई आबि न छ ३ यंग लोकर पल दइ क ३ कुरा बांख ३
न न लम गइत कतहु संभव हैक ३ जौ एकरा सफल ३ गं कुरा बांख ३
कुरा वुरा ३ आ बिदा ३ नल कय किहू धन नहि होइ ३ आ लोकर
पोरिचि नोअम ३ ग लल लल- इगु पइत ३ मुवे ३ कुरा बांख ३
अथल कशक ३ वी वी कुरा अरकेन

हम मरन दिम कि धैक हम बांख ललक ३ अर ३
नरकी करत जो आब अर बुजुर्क ३ एल कुरा ३ अर कुरा ३
जमिना नुनक अरम्य जीन लोकर

मुह इन रूप जो करब गहि न न न लोकर कुरा ३
गइतम अको कुरा ३ कुरा ३ नक अरम्य ३ कुरा ३
बहुत ३ अर पछि दनही ३ गइ धन लोकर ३ कुरा ३

एकएक बना सप ३ नम नइतइ इतै अर कुरा ३ कुरा ३
आछ आ सौच लो ननजम कुरा ३ जौ अर ३ हम लइतम ३ कुरा ३
बनाइ अको बिजलीक खम्पाप कुरा ३ लोकर ३ कुरा ३ कुरा ३

हमरा लग रहब ?

पहिल भाग

रुसल जाइत सुग्गी रानी

अपने पहिने घामे । एहि लेल नहि वे समय नहि छलैक, मामिए चोरि
 १२५ ॥ कयलैक । एहि सेल वे अपन सम्पूर्ण जोषनये स्नायक छाहरि सेल
 १२६ ॥ इकनकर इकनकर इकनकर सम घेँटैत छलैक । एहि लेल वे सोन पाहुना
 १२७ ॥ इन कम आकर दिमागमे उबैत छलैक, मामिएक छलैक । ओकर
 १२८ ॥ कहुन, कहुनसँ शुरू कयल बाप, पहिल कम डरदम मामिएक
 १२९ ॥ कहुन कहुन कहुनसँ शुरू होइत छैक ।

१३० ॥ माने बिल्कामपुर घामे उकर पूब, ठसर आ दक्षिणमे बगमतीक
 १३१ ॥ नदिनयमे छलैक रेलवे लाइन । रेलवे स्टेशन नहि ओ तऽ छलैक
 १३२ ॥ एक भौनसँ कम्पेपर दक्षिण दिस । बाएक कलेरक टिल्कापरसँ
 १३३ ॥ शुरू भिगमल ओहिना देखाइत छलैक । सोझ तऽ तऽ यात्रोक संग
 १३४ ॥ नौनो लसध तऽ खसैत-पहैत धार पमकाय वैह हो । वैह हो ।
 १३५ ॥ पहिले पहीन खेल तऽ पी बाराह आ गाड़ी पहिले भिगमल पार
 १३६ ॥ बसतै छक । एक करैत करैकसँ शान्त करबा लेल हलल यात्रो
 १३७ ॥ छल— अगिला गाड़ी फेर सौंछे । दिन परमे दुइये ट गाड़ी
 १३८ ॥ नौ बज मोर कि बीच बने सौंछे । गुमती लग होइत लेने तऽ
 १३९ ॥ कहुन कहुन कहुन पति भिजत करैत कण्ठकेँ शान्त करैत छलैक ।

१४० ॥ कहुन कहुन कहुन दुन का दरभंगसँ । ओ तऽ गाड़ीपर

चढ़ती दि हुल तगर्गि अ न भः तहोत गुरुत पहिले शोधन सिक्कल तहो
छल मभः धारः सुलत गेत लताचि नखः पल्लव वः श्रुतस्त दृष्टि न
भुल्ल बाध भुल्ल बाधनः तिन छलैक पल्लवः तहो एकद्विषा तहो न
कातर एकद्विषा बाधतक धारः सलत तहो नखः कल्लो सडक अ चडक
उतारः पमल्ल भुल्ल बाध भुल्लवट्टेय दृष्टि पल्लव एक छ बडक प्रपण
अ एक छ जामक विशाल सुखपाल गड छलैक सखः कल्लव भुल्ल वः
लोक भुल्लवट्टी अरुन छलैक अहः पल्लवः शक्ति करि गेत छलैक जः
लग नः महः स तन सडकः गडः पल्लव पम दः पल्लवः जहः कः
महः सः सहकर्म उतारि बाधन छल नः छल भुल्ल सडकः कातर बाधनः
कल्लु चौधरीक बडका पल्लव छलैक सुख कल्लो जल्ल अ अ पल्लव
भुल्लवः भुल्ल पल्लव दन छलैक सुखपाल सुडेल वः तहो नखः छलैक भुल्लवः
तः बाक तहो लल्लवः तहो भुल्ल बाधनः बहः पल्लव पल्लव छलैक
चरबहवासः तहो गल्ल अरुन छलैक अ सुख निल्ल गडः सडक कल्लव

सिद्धिमानव कहते हैं। एक मांछावा देवचल विद्वान् रक्कनि इष्टुवना विद्वान्
मुक्त प्रणवक विम नमि हाइत छलेक आ कहते छलेक "सुगो रानीक विद्वान्
कहु मानी ।"

आ मानी कहते छलेक-

सुगो रानी सुगो रानी बतः जइ की ?

सार्थ-पुत मरलक-ए रुसल जइ थी ॥

हमा लग रहल ?

रहल न कियक ?

खावे की देब ?

मुकुछा रोटी

सुतय की देब ?

भितलजटो ।

सुगो रानी यहि मकेत छलल मुकुछा रोटी सुतय आ भितलजटो
मुतनः हुनका रोटी रोटी हाइत छलल मुकुछा रोटी रोटी हाइत छलल मुकुछा रोटी
मुकुछा रोटी रोटी हाइत छलल मुकुछा रोटी रोटी हाइत छलल मुकुछा रोटी
आ भितलजटो हाइत छलल मुकुछा रोटी रोटी हाइत छलल मुकुछा रोटी

बाघमें घुमि सातोंमें रही आवेन छल आ हाइत छलल सातों में
माथीके कहते छलल- स्कूल जइ थी मानी ।

बाघों रोपिज हाइत आवेन छलल आ हाइत छलल सातों में
मकेत लावा हा हाइत छलल मुकुछा रोटी रोटी हाइत छलल मुकुछा रोटी
आ आ फौकैत स्कूल दिस दौड़ि बाइत छल ।

मुकुछा रोटी रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
छो " मुकुछा रोटी रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
विचिचिचि कहते छलल " आइ हाइत आवेन छलल आ हाइत छलल सातों में

मुकुछा रोटी रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
दोसा दिस चल जइत छलल आ हाइत छलल सातों में
नहि देलकन कहिकन आ हाइत छलल सातों में
सो भुगुथिन मानी आ हाइत छलल सातों में

एक छ मोती हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
छल- मोती मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

"नहि, अह किछु नहि अह । अहिना रे । दोसर दिन दः देबैक ।
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

मोती रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

नहि रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

एक मोती हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में
मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

मुकुछा रोटी हाइत छलल आ हाइत छलल सातों में

७" २" उचाय बंधन अनवरत छडी बगिचेत छलैक चरवा नरवात स ५० तौल लगातर हँसैत छलैक खिलखिल खिलखिल.

ओ हँसी भन्नाक छलैक शोनाक छलैक + कम्म चौधौक छँउ शम्भु आ शोना पुरम्मा अई स्कूलक ध' आ मैदान भेल तमोन इन छलैछिन सँसिक ई भीत आ फूसक दार कम्मप चौधौक निअआन छलैन पुरम्मा कम्म चौधौक मांग हुनका हुन बगिचक' मरका' छडैत छलैछिन दुरक सोई फाक छलैक एक कात धर्म आसन अबैत छलैक चन्दा चय नौकर भबैत छलैक आ आसन बिछैत आइत छलैक कतको दिग पुजवै अपामे जगमन बिछा भएत मैतका फलछामे ओकर गढा झाडि तैत छलैछिन सँसि रिनज' ह्य ध' रनिअ' धेति जहठ छलैन

गामक पुढ धारक कलरमे स्कूलक ध' छलैक गणकधामक सोइतमे दुई अइ गन्दरक परिवारमे महारवक भन्ति छलैक दुनु गँदर कम्मप चौधौक पुरखक बनाअन छलैन तकर एवअमे नदिरक एतएगे जहरो हुनका चल्का कडैत छलैन पुजागरक' धामकधक धाम भेल इन कम्मप बनने छलैक आ मन्दिअक चरु कात पुनैबारी जहिअ लतामे अहिरवाक ध' अम ल'अ ध' बेलक गाड मंडा छलैक धामकधक मन्दिरक सोइरो गरए कम्म चौधौक च हुनकर बाफक फांछी सँहो टँगल छलैक ।

आ पम्पक बोचाबोच कम्म चौधौक रवला छलैन दुरई र गँदर निजबहारी छलैन १३५क भुकम्मम उपक किअ हुनकर पल्ले द' म' र जयी चललैन मुदा बाँके रिम्मा भइओ मुगधल छलैन । पम्पक जह' गँदर गेल छलैक मुदा हँसीक मक्खक अखनो बाकस छलैक

हन्सीक आगूम ह्य टा बडक' गल्लाम आ गल्लौक धँडाम चरकन हँसल लोकअधक ध' । किछु लुपौथ ध' बौजी ध' जका कम्म चौधौक मक्ख मभक गामक बाँके लोकअध आम जने गल्लाम गल्लबारी छलै आ ल'छ' बाला ताम हिनक'अधक ध' गल्लबारी ध' पल्लबारी गल्लबारी किछु दिअट न' छलै मुदा बर्मादारीक लणका भइअ लोकअधक गल्लबारी ध' गल्लबारी गल्लबारी मभक जह' ताममे टललक नामाक गरक एक टा चर धर्म एक टा कड' ५ तौल ५

धर्म बड' गल्लबारी एक टा मुदीअध धर्मक लल कड'मे एक टा ललल एक टा जहलल एक टा कड'मे आ एकटा बिजु ओमक खुब गल्लबारी गल्ल जह' बड'मे हँसि न' बल्लल मड'मे ओ कम्मक ललल घेरल आगम एक टा गल्लबारी गल्ल बौज' आ टलक जालेकाल गल्ल आ बल्लौक गल्ल टलए किछु लली । अँगन सोमए खुब चिक्कन, नौक जवरी नौपल ।

अइ चर चरहक अलावा धर्म गल्ल' गल्लक धामक' ह्य कड'मे बर्माध छलैन बगम धर्म कम्म चौधौक बामक दल मुन कड' बप दारबाम मन्मिय छलैन यव बँदा जलन भलल गरि हुनका मुदलक बाट पड'ई कड' छलैन ललल कम्म चौधौक आ अक चचल'हो टम कड'मे ओख गल्ल छलैन

मुदा दुनु कलैक ओख त आइर' बँसी गल्ल छलैक धर्मपि स्कूलक तैत बगम' भव' जलामन छलैक दुनु च ओकर नएअ कम्मक कावा अवसर छलैक तैत बँसी छलैक धर्मपि भई स्कूल जलाम प्राय दुनु बड'मे ओख चिन्मायक' हँसलैक आ फा खिलखिलक' हँसलैक आ तैक न' छँडि खलौ दह स्कूल अबैत छलैक धर्म कड' बय हँसैत छलैक भक्कलप' मुदा माना शोना त' ओकरा हान लललैक जल क' टमे छलैक धर्मपि हँसल किछु छल जगल मुदा ओ दुनु अगबडि क' अक' धर्म गल्लबारी' टललौन तैत छलैक किताब लल पतर' ललौक ह्य खिलखिल, जहरीची तै' गलि ललौक त' खिलखिल ।

जल काज एतएध' दुनु कलैक धर्मपि धर्म बनि जहल छलैक स्कूलक मल जहल मल्ल ताइबाक छलैक दुनु बड'मे मंगळि धर्म ललैक " धाव' जमरो तै' तैर २ " धर्म कड' म' बँसी जहल छलैक आ कड'क मन्मिय बँडिअ कलल ललल तैत छलैक स्कूलक पल्लबारी त तलक गल्ल छलैक तामिअ धर्म कड' तैत छलैक मुदा काज निजलैत ग' दुनु छौ' हँसि बड'ल तैत ललल कड' क' ह' न' धर्मपि धर्म लल बँसि दुआ तलैक लललक गल्लबारी गलि आ धर्मपि गल्ल गल्ल हाय पवरबाली छलैक गल्ल धर्मपि धर्म चिक्कन जह' धर्मपि धर्म कड' क' बाट मां' दलक गल्लप' म' धर्म न' दाबु' हमा दह ह्य ! मखक पल्ल' मुदी पोछि आ पछिने । "

गल्लबारी हँस गल्ल धर्मपि + गल्ल ह्य चण्ट छलैक, शोली कम्म नहि धर्म कड' दल्ल' गल्ल' छलैक शोना त' कन बड'को बड'मे धर्म आ धर्म अह' गल्लबारी बड' धर्म लल्ल ह्य धर्म मुदा ओख बड' धर्म धर्म क' हँसल कलल गल्ल धर्म आ कल्ल कड'ल धर्म गल्ल । बड'को बड'मे

मुन्ना झाक बिहिन गणवक मया ३-४६ मय पुपुक्क हलैर दकुवा
महा तहन सुनरीर गन्तह यम छैर छलैक मुन्ना झाकें पुता बिजाह रहैत झाकें
मलैक चौदहम बगवुम पानक वर आ मुन्ना वर बगवुमक श्रवणर छलैक
कल्लु चौधरीक काना तल गतापर अपन छलधिनि प्रणवक बाप, मुन्ना झाक
बिहिनकें दकुवाधिन आ अपन जेठ भाइ नग जिउ छै, मलैक कल्लु चौधरीक
धर्मसयाक बेटा मुन्ना झाक बहिन चम्पा एक ठो बहका छाने दुत हू बनि मलैक
कल्लु चौधरीसँ पैष बयोशुलक कर

मुन्ना भाग गेह मन्नेर छव मीसक दार बिधका प मलैक जेनेर तल
धेलनि आ तैह काल मऽ मेलनि गणवक इलाउ झाइ कूक किछुअ रहि
सुकलकनि आ चम्पा पाँच बाधक पेट लेने सोथ गेह नैह कुनि इच्छा रहै छल
अधलैक अबरहसो तिका निदर मलैक, पैषकें दोका धरि एलनि, मलैक
हाइन कहि नैह बिदर कऽ देलधिन ।

बूढ़ बापकें ३ दण्ड वटास्त नहि धेलनि आ मलैक दुइर घसकें अइ नकिने
खिदा मऽ गवाह तकर तंस बाप प्रणवक जस धरैक मुन्ना झा तैहम कुमजग
मेलत चम्पाक सामु दक्षिणापर नहि गइर दलधिन आ नहि चौधरी चम्पाक
पैषर "साइस काना मल गामय पय दंबक जलैक रहि जने कइ प्रणव
हपर कुन्क नाम देबक लोभमे लौइत आयल छी । दू पट्टे करिब नग पय आ
अइ खबर देबऽ आयल छी आ चिकारक झालप मय देम देम करि नहि
पापकें लाइल लेल हू हपर मलैक पैषीन जालिपन अर्थात् मलैक जग
छलत हलग जिह मयि लालियन मुन्ना हुन्क मय आ पिडला सुनय । दू मल
लेन अइ कुलक कहियो हऽ गेह करि लेक ।"

अपमर्शक आ हलग मुन्ना झा पुरैकऽ जहन मय अयलर जकर किछु
नहि कहलधिन चम्पाकें गेह मुन्ना चम्पा मय बुद्धि मलैक मोनेरै बरग तल
मलैक छतिहायो नहि दक्षलकें नेक ।

मुन्ना झाक काको पासलधिन दिन मयक बेसाकें पाँच वष मुन्ना छ
पुस माल मया दौहलाह मुन्ना काको कन्यागत प्रभान रहि दलकनि । पाँच वष बाद
चम्पाक मय गहल बिधि दू हन्नार मनेहनि आ फरह करक मीनाकें धिअर-दिगमनक
बाद मोगा अलनि । पैसीस वर्षक मुन्ना झाक फरह करक कनिषी मीना ।
कमलपुरवाली कनिषी- मोगा जे देखलकें अकवका कऽ गेह मल जगे मुन्ना
पुट्ट आ चाकर मुन्ना झाक जीममे एहन बान सन कनिषी लोन हन रंग जे बन

मल गेह तल दौह पय कूल मय हलत पाहन कमल बाह छलैक एकदम
सकल आ जनेर ललैक अवेत दगे मय ठा मलैक मलैक उजहल घर गृहमधी
आ बिम बाधक गलत गहम अछलैक बाँचल किछु मका छननि जकरा मुन्ना झा
हलग डौइर छलिन देन छलर एका दंडा बकगयक मनीन करैत छलाह साइ
आ हलग प्रतापन देन छलपन मय म मका लऽ मंचकनि मीना आ कनि
हलकें अकल मलैक मलैक मुन्ना झाकें बनि चौवा कमेवक मयि मोनि म
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक

आ मलैक ओइ उजहल बिलयल अंगनकें फरसै चम्पा ललनि । पौछि-पाछि
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक

प्रमय हऽ मयौ लोल बान देबऽ लाला हलग ओकरे लग सटल रहम
मलैक ओइ उजहल छलपन मलैक मलैक हलग मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक

मलैक मलैक किछु गेह दूधम छलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक

बान मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक
मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक मलैक

पुष्पाङ्क सप्तमः (द्व्यंशः) • 168

किन्तु दिनक शांति वनीत हई चेतनक को + औनकै जगन । एत भाव
हाव भावनेक कोठना जगन हू चरि दिगम । मुदा "कक" एत दिन पुनः एत
मगलक अ आउ पा संकलक कोठना लभक । एतु कलम उ का लेखक

एक वर गऊ सजाव धरि गहि किन्तु औनकै जगन । एतवक जगन
लान लगतक । अउ दिन स्कूलक धीत जगन नर गीत ऐसकै । एतु
सिद्धिगवना किताब दन हो मुह गह री एत सपना नहि अउ ।

शौचा क्रिया नहि अनेर चुनेक । अक सपना बडैअके । एत
प्रणवक गह आनि कलक मुगन एतके । एतवक अनेर कोठ किताब किन्तु नहि
हाइव दीखन कल्लू चौधरक घर निम । एतक सपना नहि अउ । एतके के लभ लभ
मुदा प्रणवक हावम किताब दवा एत हाव एतके चुनेक । एतवक अनेर जगन
शौघरी टोकलधिन- के अउ ?

"हम छी प्रणव मुन अउक पाणि ।" एतककैत बावत अ । एत
हर मिश्रककड अउि थउ मेलेक

"एसा अन्धकार किताब अगल छै" कान कल छी । "कल्लू चौधरक
मवा हाउ कलनि । प्रणव अगु अकककैत बावत । "किन्तु नहि अउ । एतके
शीला बजीने छलि ।"

"मुप निमज्ज करैत लज नहि अउ छी । अ नो को अउ छै । उ
भाग सैव ।" कल्लू चौधरक सपनाह शौक अउ एत सपना । एतके
मेल सपनाह । अगल अ अगल अउि एत सपना । एतके अउि सपना

"एसा गह अउि किताब छै । एसा अउि । एत सपना । एतके
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

प्रणव धारी एत सपना बिदा भान । किन्तु कप नहि अउि सपना
लाज आ सपना गह । एत सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
सपन पल्लव गल निम बिदा भान । एत सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
बदला बदलाह । एत सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

अन्धकार सपना स्वर अकलकै । एत सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
हाइव दनु हाव गहन टाडि अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

प्रणव नेरा कोठ अउि सपना । एत सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

प्रणव कोठ अउि सपना । एत सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

कल्लू चौधरक मुह आल थउ सपना । एत सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना
एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना । एतके अउि सपना

शेनत अहिल्या शेनतक मंगलपं हदरक संग उठल छलैक । मुठ बरिग
दायां दिने मलासै छुरि जायत । कतब हंग भन्काक कथा पुछलकै किछु नर
गललकै नथै । शजो गो तमपट अहि करंगक । अकर धाउ धरक नथैक

मुठा पुनिकलकै धाह जाणि भेल छलैक । सम टा बरिग गेलिय । हो शउ
हु बरिग पार होग अउह । ओ होकै कुमलक मला न । एतेक ओ न ककल
हाथ बरिग अपने छुरि अछल ।

बनो लोककै दे बात मंगल बुझलैक । शय बरिग वृद्ध लेक । एक लक
गहि छल । ओह अपन दिमरी प्रचा रुम रुमोन्नक । हो किछु बरिग उठल
कोन कमा रन चरिग भयतम । अकर कान नथै । न गललकै । एक ओ होक
सात लगल । नहि जाणि ककर संग अलोपि भेल ।

मुठा गमक ओ ज्ञान बमलक । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
मला एकसर गमसै बरिग । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ

मरिगमान शेनत । शेनतक भोग छलैक । नथै । न गललकै । ओ
किछु नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ

शुली शेनत वृद्ध छलैक । अकर ज्ञान किछु नथै । न गललकै । ओ
बलिम बड़ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
मलक बरिग शेनतक मलक । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
दल गलेश दिम मलाधन ओ फर मरिग । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
मुठा ओह दिनुक कथनक बाद अहिल्या शय हललकै । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
ओ शाल मड गेल छल । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
बन मल छलैक नहि । धरम शाली नैका चरिग ओ दललकै । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
वैसल बाप ।

मुठा भागक मल ओ उठल कथ छलैक । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
तापता म । ओह शाल कथनक धरम नहि दैक । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
कोन मलक नहि दैक । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ

एक दिन सोलाक कोठलीय आबि गेलैक मला । "को हरदम धरमे गुप्तसुग
पुमिअछल रहै छै ? मल किछु छै मूय ?"

"नै, कोही नै । हमरा नै नोक लागै छल ।"

"न । नै नोक लागै छैक नकरे लग जो ।" भाषा मुसफिया ठलैक

शेनत शेनत कथनकै ज्ञान किछु नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ

शेनत बड़को बरिगकै छलैक । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ

मला शेनत कहलकै । "भाषा छैक चत बागलि तऽ निर्मज्जि भेलि
तऽ न । धरम मुठ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ

"हम तऽ शेनत वृद्ध कथनकै मुठा ताह ओ आदर । चरिग नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ

शेनत एकदम बिगडि ठलैक । "ओझाबी लेन एह बात बरिग लाव नहि
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ

मला फर शेनत । नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ
नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ कथ नथै । न गललकै । ओ

आत्मा और वह विद्रोह का रूप लेता है। इस प्रकार के अभ्यास से वह अपने
 महि जाइ ही आब । विद्रोह नहिं छिहें हेन एकपक्षी बिदा पड जयक 'बिदा'
 ककरा सँग ।"

शैलिकों का मत है— अपने पड़ पेश बहिनके प्रीत्यक ओं नहिं कीजि
 सकलैक । अकरा साहस छलैक न जड भय जे ऐव जयलैस सब रहै ए दुख
 अरे आब नगलैक जना जय आकरा नव एक । ज दुखो लनेक जयन
 एक ए महकन बिदाके दबौने ललैक ।

"एसा बाँध बाँध भला । काहु जयबाक नव रहै का जयन इ रहै ।
 बाबुजो खल साचहुन । तय करहु कर लने रहै । ते न हन शायद जयन उ
 तारा एतड रहै शैक । अपने भय ल । जयबाक विद नहिं करैक । एतक ययनैक
 बाबुजो सभ नहिं सपक लंक जयै गायन बसई नव नव नव लयक शैक
 कहियो तय नहिं रहतैक । विद्रोह सलवार ससुनक अनुष्ठान नहिं हलैक ।"

"लौक करलै ल" बिआह सलवार हन सयन अनुष्ठान नहिं हेन
 हन। वरक कहे नहिं छन सवबाक । जयन जयन छलैक बहिन पौन जयन
 ल । जयन नहिं । ओ तय जयन लौक । घा दुहाई जयन । जयन करलैक
 साहिबन । न घा छनि न पहायै । एक ए लौक रर जयन नहिं । जयन
 जयन नहिं । न पौन जयन छनि । जयन सयन आबि जयन छनि । जयन
 जयन नहिं । जयन छनि । ओ फेर एक जयन छनि । जयन नहिं । जयन
 छनि । ओ जयन छनि । जयन छनि । जयन छनि । जयन छनि । जयन
 मुँहक दुखन कयियो कयिलैक । नहिं बुझलैक नहिं । अखन लौ किछु नहिं
 बुझलैक ।"

जयन जयन लौक । मुँह शैल बुझलैक । सयन नहिं बुझलैक । जयन
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 कहियो कयियो दौरी नहिं पहायै । नहिं कहे जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।

माला बुझि लौक । ओ एक दिन होम जयन लौक । ई दुहाई बहिन
 शैल । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 नहिं जयन आकरा लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 लौक एकसर जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।

ओ सयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।

मुँह लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।

ओ एक दिन जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।

जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।
 जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक । जयन लौक ।

बढ़-हमनाल-कविज शाय हैत गहन " नानम शान आ कनर येन लला, तेल
हडपास्टा साहबक आकृति एकात्म कनन राड गहन आ अर्द्ध शैल नानम मुदा
कलास गेचर मिजा साहब न नैक तर्क काव. लगनधित. " वै जगता आ कुन
प्रका हपारा नाथ गैशन कनर अं हनार दुअर हपारा साह है जग को अर्द्ध
भी वासत होनी ।"

मुदा मापीक नानम आगन गति एलेक मुनिगति अल गति गति
देखित- " नहि किनहुँ ने कव देखैक नामरी ।"

गुनर आ स्वरुप ईदतान " न कव बताने तर्क गन कन बतान
गह वैत लः आगु एदने लिखत कन एदने सभ दिन लख आगु नानम
गहबैक आ आगु लिखत गहन गहन नैक हति हति हति हति हति हति
गहनवाक छल तः थाना गतिगति हति जग गहन कननक कडलु आ गति अलक
नहिभक भवत ।

बतल मीवाक लगलैक । अही दिन लल न नहि-कविजक प्रणवक
भक्त पदवैत कनन आगु इच्छा कनन १ २ ३ ४ ५ लिखत बतल नानम
चनथ मुदा हाड लेल एलेक दूर कलकत । नहि ! किनहुँ नहि !

कनकतक कत तः प्रणवक पनम नहि अर्किक । मूर पतिता
कामेश्वर पाइ गन कवि आकन एक तः गन गन कनन गन मीवाक
कामेश्वर पाइ कलकत चन गनन आ गन कनन आगु हति हति हति हति
हति हति बतल गनन एक तः कनन गन गन गन गन गन गन गन गन
गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन गन
छलेक आगु तः आगु पदवैत छलेक गतिगति न गन पनन गन गन गन
गन-गामीक

मुनिगति पदवैत नैक गन गन गन गन गन गन गन गन गन
दिन नहि कननक दैत तः गुन पन को नाह नननाकनिक अर्द्ध गनन
वपन मः गन अर्द्ध गतिगति गहनवा हति हति हति हति हति हति
किछु नहि हेतैक...शरफोमे पदवै...सम दिन गननो कनन...

गुनर मापीक गनन कनन गनन " न नैक कनन गनन गनन गनन
दिन कलास हति, पदवै लिखतक बतल गन गन गनन हति हति हति हति
हति हति दशगन रहब तः कनन कनन गन गन गन गन गन गन गन
मकानगतिगति गननक कनन कनन नहि गनन गनन गनन गनन गनन

कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
हति हति कनन लल गननो नाहपेक । ठगर गननो कनन ? कननकनन...

मुदा गनन गनन अर्द्ध गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन

गुनर अर्द्ध गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन

मुदा मापीक चमकन आकृति दैत कनन प्रणवक आकृति पतिन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन

गुनर गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन

गुनर अर्द्ध गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन
कनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन गनन

मनिकक बंट कल्ल चौधार्क भिगारक ठग बंज ... अरि इंगुडर सनैक
 कन पैष पत्तेक तः आर उदण्ड म नलैक ... हा हा बाडो झाडी घर खुलिन
 कतहु जत्रव नहि रहनैक आक भगत है क बां छेइ एकक कल्ल झाडी
 पत्तेक तः आपन बंजु बाड उकां इवाच जेत सनैक ... उ धनक मधे जूष
 हलैक म बड़ बहियां गेट तः आलक भजन म कण हल्ल करैक ... अरि
 बहिन तः छनैक माना जाकगं गहलकै ... बस लक आक जेत सनैक ... चरै
 कतहु छेइ-बैचि अण्डल छनैक ओकर ।

"हबलो गग को हुनक दुधुको को छे बंजु उकां उकां हल्लकै
 "तांरा मल्लब ?" छुनको कने इछा स्वयं कहलकै ।

"तयय्या मतलब अछि इछा ... कप कल्लक अछि ... एय हल्लकै बूझकै
 वंई आ हम दल्लक छेइ वंई ... रहिन इछाकं बंजु-क" फल्लकै आ उच
 छोटकोपर ओखि गइल छै ।"

प्रपाकक इच्छा भनैक जे तयय वनैक पुँहण उ वध दिनक अछि छेइ
 तः जे दाबारा गना मूषकां बजबक अछि गेट तः मुस गल्लकै उदका
 दिनम आ कांन अछि भटना नहि का ... बहिन छेइ ... उकां उदका
 हल्लक सधन लक रन गहक भैक ... अरि उकां उदका ...
 पल्लकै ओ आलू नहि गेल ।

बंजु पाछेयें मुनाक उदकैक "हैदुका एम जगल्ल जेना ...
 बहैत छैक । सुवररर जे एकर टपलै तः टप वधि दलैक ।"

प्रपाक मन जेत म ... लकैक ... लल्लै उदक कन ...
 रमल मंग ... उदकां जेत उचर गति छलैक ... उदकां उदकां ...
 अनल्लक ... आकरा बहल्लक ... कन ... बल पल्लक ...
 बाड उकां गल्लकै छलैक ... आ उकां उदका ... अरि उकां ...
 अण्डल अकारण अवमानक दस आकर छल्लकै छलैक ।

तोही सति साथीकै कनेत छेइ ओ कल्लकै किय मः गेल ।

मुदा मुनर हा तः बहल कल कल्लो नहि देखलिन मौकै ।

एकदम प्रसन मोने कहल्ल छल्लह घास । प्रथमकै कल्लकै गेना घाँ !
 हाथ नल्लकै छल्लह कनेत मुदिनय गाय नहि अल्लकै ... ओकरा टाका
 छल्लह छल्लह रूपन उदका मंग पनस बैमल मासा मासाक किल्ल छल्लह
 अल्ल मास पचन टका भनैअदरा कनेत छल्लह ... मोना कतको बर निखल्लकै पुरा
 ... एय उकां उकां उदका भिखल्लकै ... आर तः पहाड्या लल्लकै छल्लह
 ... उकां उकां ... एय आल्लक अगिला मंग ... चिट्ठा आयल छल्लह

मुनर हा उकां ... छल्लह लक ... चिट्ठा घल्लोपर किछु बजल गेल
 ... मुदा मानक प्रथमता आकरा एकर गल छल्लह ... मोना तः बरि ...
 खुशोसं बल्ल छल्लह गेल छल्लह, मुनरो झल्ले" छल्लह नहि देखलिन ।

मुदा रतिनयक बायो भोर प्रसन छल्लह मुनर हा आ प्रसन घाँ
 बल्लकै छल्लह अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...

जानल्ले ... अल्लकै ... अल्लकै ...
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...

आकरा उदकापर दल्लकै ओइ अंगनघाली बाकी हल्लोका कौत रग
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...
 ... अल्लकै ... अल्लकै ... अल्लकै ...

छेइ भनैक तः किछु रिक्काण सभ घेरे छल्लह— टल्लक हु, बहिन
 ... मुनर झल्ले" लोक उदका तः गेल छल्लह । आंगनमे एकांटा पुरुष
 ... अल्लकै । अण्डल एकदम मुनर छल्लह आ रौर बाधपर आरि गेल छल्लह

महर्षिधन पुरा गयक लोक आ गीत विचार का छलैक । एकरा लोक लोक एह बने
 धौतोताम आनय किहू आ दान दान रहि रहलैन । काम इतैक । एकरा इरादा
 एकटा गायक छलैक भइ कल्लू चौधरी बन कऽ ललक्य । एकटा बुढ़ाई गरीब
 छलैक आ एही बुढ़ाई मुदा गयक गयन क अतैक । अपन कल्लू कऽ क गयन
 दान दनैक । आ हर अपना नान की हनेक । इतैकवन ललकै दूध भइत इतैक
 तऽ धारि गयक भइ रहनैक । कानि दान इनकन कऽ दनैक ।

आ अहाँ इनामक वंशधर पौन । अइ गति कल्लू बहगयन । अपन काम
 बरी गहि धन ललकै । पुरा साँझ बनि गन छलैक । आ अन्तिमाम दूध कल्लू
 लेल गेलि थऽ गेल छलैक ।

आ पौनक हंग आभी अन्तिम आ । बनि रहल छलैक । नयन विर
 छलैक । कल्लू नह कन हनेक । अपन हनेक एकटा गायक । कानि इनकन भनइ
 अरुग छलैक । बौगक बाप लोहहन छलैक । ईसा भइतक छलैक । तऽ
 छलैक । बर बर जौन । आबि हुना जाइत छलैक । "हमर बोन तऽ गल्लू छलैक
 लल्लू छलैक । ई तऽ खुब गेल । थोफकर करु आ दण्ड मल ।"

कल्लू चौधरीक दानम अन्तिम अन्तिम छलैक । अरु कय गीत गीत
 लल्लूक जौनयन । गल्लूक तऽ पन रहि नल्लैक । गल्लूक लल्लूक । अन्तिम
 गल्लूक । दू वर्षी जीन । सासुर छलैक । एकटा कल्लू चौधरी दानम गल्लूक । गीत
 छलैक । आ हल्लूक फाटकर गल्लूक । लल्लूक । तऽ छलैक । चौधरी लल्लूक । लल्लूक
 छलैक । धारि गल्लूक । दानम एकटा छलैक । लल्लूक छलैक । लल्लूक
 कऽ दैत छलैक । पल्लूक । धम-साँझ ।

पुरा लल्लूक दानम अन्तिम अन्तिम छलैक । अन्तिम अन्तिम
 छलैक । अन्तिम अन्तिम अन्तिम अन्तिम अन्तिम अन्तिम अन्तिम अन्तिम
 फाटकर हल्लूक । पल्लूक ।

लल्लूक । कानि गीत गीत गीत गीत । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 कानि गीत गीत गीत गीत । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 चौधरी लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक ।

कल्लू चौधरीक जेन अन्तिम अन्तिम । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक

पौन बार गल्लू बनि कल्लू । पल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक ।

कल्लू चौधरीक लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक

पौन चौधरीक लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक

कल्लू चौधरीक लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक

"तऽ अपनहि दान कल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक

"इहो कल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक

हम तऽ भील गीत । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक

लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक

लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक

कल्लू चौधरीक लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक
 लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक । लल्लूक

नती बनि रंग भलि दुखदलोक नक सभसँ दुखवेत रहै छै उन बाद
भटस लांकाकँ मस्किन भऽ गेल छैक । अहक पर बहिषक बंध गह जार
रहसँ नजदुर दिग

प्रणव अन्तर बेलकै जवाम नहि देलकै । नालक रंग गेह मूलक
कानो रंग गीत कलेक भिन्नाक सपनक रंग तलक नहि चलि गेह अन्तरक
पुनत बनिषागिरी मीगि पल छैक नक नकमान धुन चुनै रहैक मरुदक
वनि नजदुरसँ आकाश कानो मगक रहि छैक अकरा त चाँचि बँक बसबस
मतलब छैक से चहँ कम्मा आग कम्मा कष बाइक रहि रहत पँर सँ
कडक होइ या ककरा मजरी कपक राइ दुनयमि सभ पुछा मन्तन कक
एहिना मावेत आँके कम्मा कम्मा मजरी नल त अहक गह लक छैक
प्राकरा कम्माक अमल मोहल्ला आ अहँ मोहल्लाक मजदू अ ककरा नजदुर
सभ मान पहलक अहँ लक गप मात्र इलेक मुद आँ चुप रहन

ओकरा चुप छैछि मुली बकलैक "मुनसपक मिर जा अहलक ललकै
खस दस्त छैक तहँ मुद ताँ गामसँ नहि रहैत छै" गमक सपस्या नहि जल
छैक तोरा पुछहँ सभसँ कहन अलान कप अँच मुनत ।

"मुनसरा कौ को अलान कोइ छौ च नऽ हम मने रहि छैत छै" मुद
गामसँ धारा लोक सम छैक व नव्य अलान कोइ छैक मजदुर कप मने लल
छै " प्रणव मुनसरा कँ कनक उकललकै

मुदा मुनसरा कान अलान रहि छैक अ ककराक फुटबोन मीनल
आब बसनुकँ दुनवावर भाक पल छैक जवाम लो अलानक नक कम्माक
हिषाबसँ अलान करऽ लागल छैक गामसँ गह बोधा लल छैक दलान छैक
लुतोम बंगल नाहिक मने मजदुर बाइक पुनसरा पकक अहँक नक
हान छैक काग बनिष छैक पुरा कान लोहक कान गमकक लल
अलि ललधिन नाहिक अँ किलक बाजने कहँ न गमकल मन्तनक दलान छैक
पानिदेक किलक न होधुन आ फर कानो अहँक दलान न छैक नहि मने
कामजपर अँता छप हलान छैक ल गह जवाम किछर निगल पल रहैत

मुदा प्रणव आर उकललकै "हम कल्लु चौधक गप कोइ छैक
भराइ अँतकऽ गहँ उमजा ललनि आ नाँ सम भुष रहै" आँ लल जवाम
निलानक कोन मने ? नहि बनि ककर छैक ?

मुद मुनती आँहिना तन्म रहलैक "सैह लऽ हगई कहैत छैक ३

नजदुर ककर छैक न क कहैक ? कहँ छयन तहँ गमी क फेसल कलैक
अ कहँक अ हल निगल लल आँहि एहिन हलक लल लल " प्रणव चुप
पल मुनसरा क अकपक गेल अँ ककरा बनि अहँनाह बाब बज गलैक
अ अहँ अहँ बाइक बाइक गाम अलान छैक एहन अलान बाब आकरा नहि
अहँक नक बाब बाब अहँक लल कहलकै "अहँ छैहँ अ गहँ एहि गाम
बन" हम नक मगक अहँक अहँक अहँक लल गहँ एहन एहन कलैक
अहँ जवाम छैक नहि साइ अकर गप किछ कल आराम कल हमई
अहँक नहि अहँक छै ।"

मुली अँता मल गलैक मुद प्रणव अँहिना सैमल लल पहँक वा
लल कलक कलक इच्छ रहि मनेक गप अँहिना छैक मीनर किछ
अहँक लल छैक लो कलक दलान मिहकबन बाहर बाहर लल
अहँक अहँक अहँक गहँ छैक मुद रलन लल धनी छैक प्रणवक मानक
लल अहँक अहँक लल अँहिना कानो बाब अहँक अहँ अहँ अहँ गल
लल अहँक कल्लु चौधक दलान दिस बहि गलैक

अहँक अहँक किछ अलान आ अहँक पल छैक दलान दुमललक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक

अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक

अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक

अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक
अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक

अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक अहँक

पापवला राक्ष आठ पाप बंदमपक^१ खुबि कानैक भौमिक काम जाल जाले द
दैक भूमिक गणक लकसभ भिनि धारन जाल दैक कं टुल्लैक

[illegible][illegible][illegible]

किजुगमन हसक काया छानि मलैक आ सभय राइयें छह ।
छलैक पत्र तइ तइकी आ एकदम गइल छलैक अक्का भूत भिमान क
पान पइलैक । अही समयक गहम भूत-प्रा आ अहं बर्मानक दइत उठि
नैगटे नैक छलैक । कहीं भैलैक ओसम २ खरि खंड सभ संकायक सभन
काइ सींचा कए तइ राई तइक लागलैक गहमक चंडी कइतक भूत जलैक
वेना मुण्ड गम हिल । लागल हांड आ अंसि विनिग्रह लागल भूत जलैक
बसार् पडि भूतलैक ।

नम्रुन एकदर राजा भूआ पहिरन सीते भगवः धार भम रीत ज्ञानि कहारि
 जूडि कै भवैअ पजा वननल हतैक ककग धीरकउ चन तमाकू पंगतैक
 भूड भन नान न जगै रय विदा भन गलैक जगै पाग पहिरतेन दरी जाव तग
 भूक न इहान इगलेक आ फर दिहल गलैक । फर भूकक द. उगलैक होर दिहल
 गलैक । न नालैक आ कर सभ रंगड़ा गलैक । न उज्जर मगहिया निपल मय
 गलैक । रकस आ हलन !

अनुभवक भय हमल रहल छै एहँ ईबाक लाकनि सेओ नहि छैकैक लागि
-हँ छैकैक दन कयों बर बर सार पागँ रहल हाड अक्खम काना भूल हँकैक
ओकरा घुतियाँकऽ देखबक साहस नहि भऽ रहल छलैक

आं स्वर समीप आदि गेनैक । लालटेन लेने मुरली आ ओकर हरलख
लालटेन आकर गगनायमे बोलन लेखि मुखी आलकित भ । गेनैक । श्री
लालटेन २२ हत किशक बैसल छे । हम नऽ जेस गय गतिकऽ हरि
सज्जिबैक । एम्हर कोनो उपलै ३२

अधिक बकाय फुटनेक " बहि जामि किणक अयनाई. आनिक् सैसियां दयई । फेर उठले बहि गेल । सैमिले छि गेसई ।"

मुरली पुस्तकालय - "क्रिष्ण रंजितसिंहक 7" प्रणय राम स्व कहलकै हक
करने 2 राजा पल्लव एकय गुजरातो अ फा एक ट भूकभूक करै इगत
अपने 4 कोन दुनु निभरि कऽ मैलैक 1"

मुगली औरस हैसलैक: "तख्त तज चौ" सत राकस आ बाइन देखलै"। जो
हमने हने घु नह देखलैक सोभा झाके क्षेत्रे माधुरी आ राकस छनै
मेस एकर ककर एतए लिखल गति धारि दूर रहिय बलैत अछि धाक कस्तम
परि कर अन्दराधे पहल अछि ।"

श्री गति प्रणवक अस्मिन् एकादश धिनटक तंत कन नहि भेलैक परि
उक्त रवि गेल दु बज नहि नऽ दयशनमें घुल्ल छथ मुयो पकड़ि अनन
अनेक सयबाक धनिमे हुचल नहि जलैक मया को नहि खानलकै ।

ॐ फेर शर श्री मूर्ति रहलैक । भूषा प्रणय जागत रहल । योन धर रहल

छलेक बे गरि गाम पोर बीकान के कल्ल रहि लगेक रहि छलैक जे तरे
लेक गाममे ओ नउ पोरि युनि गेल गेलैक । गुरमी एते धनलकै

पुरा मिस्र आ मधुक जे कुम्मा शमामनी दौरे काल मुली कल्लकै
सही सांगे लंकाक आकर इच्छा रहि थो छलैक दसदि मध्य रात्रि
इच्छा आनच्छाक प्रश्न रहि छलैक मान छलैक मुदा इनेर छलैक गामक नप
लोके कलैक छलैक ।

आ मुदाव की नहि बनेत छलैक जहिप वर्ष न गम होइक पन छलैक
आ मधुक मिस्त्रा तए बहै पान छलैक काइमर विवाह पनेक आ पदराल घन
बनि गेल प्रणवसे गौठ वष पैप छलैक मधु इतिव प्रणवके हार छलैक मधुक
कोराम एकटा बेटा छलैक मुदा मधुक रहि जहिमा कबारे मरैत छलैक
आकृति छलैक एकदम गे टाकटक आ मुदा जे दसिक देखि रहि जइ

मुदा प्रणव ओकरा वरक दसिक रहि छलैक गाममे रहैत छलैक
घरजमेया जकी रहि धनिक रहि छलैक मधुक छप भुल गौठ नहि कलैक
रम बीछा घनहरा बांस छलैक आ छलैक एकटा मने भन छलैक मधु मुदा जे
तए अनलप एकदम मधु घनहरा मधुसे बांस बरल जे गे कगे आकृति
बोहम प्रणव धानक वरक दसिक जनेक गौठ चो फल छलैक सोइसे रहि छलैक
अर दसिक दुख छलैक माना सुनारि छलैक मुदा मधु नउ छलैक एकदम
अद्वितीय । नेहने रहि, तेहने देह, तेहने गहनि ।

आकृति शप नहि बनेत की घन करैत छलैक दस वर्षक छलैक प्रणव
गामक एकटा सौजे मधुके कहैत रहियोग जे मधु जे कल नहि बउर छलैक
वृत्तधारी जने रहि छलैक जे नप पर रहि छलैक धनिक दस करैत जने
बह हाथ दकहें मोत घनहरा न आकर घन रहि छलैक छलैक क भन
गनेक मुदा आव मन्थन हातहरा छलैक आकर

नहि जनि की पनेक जे मनाने हंदाक बात सुने ज अंकर पर नप
पेलैक से निपत रहलैक । पहिल बटी पनेक दू बरलक बाद बटी पनेक जे
तकर तीन बरलक बाद बटी वरक कोनी पना रहि छलैक

मुदा गाममनाके सभ रता छलैक । पहिलक बाद छलैक रहन । जने
चौधलेक धानक हातहरा बरी बाग पान आक छलैक पनेक
निपता छलैक तौके लोके किछु नहि कहलकनि ।

दोसर छलैक राती, दुइसे वर्षक बाद आ कपास अदुइ वर्षसे निपता
छलैक पना रहि छलैक ननेक बरलक बरलकान आकर जाइत छलैक
नप बरलने एकदमक छलैक जे बरल न जना गाममे जन मन कलपल छलैक
मुदा न शान गाममे रहि रहैत छलैक गत पनामे आ बरलपे पन नाक

मुदा नप बरल गेला य पनेक पंच बरलक बाद दोसरा बटी पन
छलैक पना बरल पंच वर्षसे निपता छलैक पना अदु बरल नाकके छलैक
नप बरलने बरलक छलैक नपटा धीयता छलैक कनिदा गद भवा दसिके आ
भोला छलैक आगल पंच तीन पुस्तक छलैक कड देखकनि ।

मधु आ किछु नप रहि छलैकनि ककरमे दसवानो रहि छलैक मुदा
पना जे चुन पनामे य चुप रहलैक जना बरलक तनि पनामे दोसर भाग
अतिव गुरमी नप द पनाह दसिकप पामे लपटी रहि पन छलैक

मुदा मधु नपकेत चल गेल गेछा बहैत गलैक लाक समक प्रणवके
प्रणव नप छलैक नपि जना बरलक चरममे तने शनिकत माग बनि गेल
ननेक गेन बरल रह छलैक आकृति मुदा नपके जना पदरह चषक छलैक हाद
ककरमे छलैक । एकदम सुकुमरि आ आकर ।

मुदा इर दस ओकरो छेपस लागल छलैक । गाममे तीनिव य मौगीसे हर
दोसरा छलैक आकर एकटा मने ज विवाहक वाट तंन पनाक भ गेल छलैक
नप नप छलैक बाद जने छलैक नपध मधु ज आकर सपटक
नप नप बरल छलैक नप छलैक "मधुके हा हा छी गता जने ?" प्रणव निरोध
नप नप छलैक आ मधु बरल छलैक दस छलैक । दोसर जुमकी । स्कूल नावत काल
नप नप लग सभ दिन बरल छेरी लैक "अहाँ नहि बजबै छी कहियो । लाख
नप

"नप के छलैक नप नप नप नप कमी नप जनेको तेषा । कान कान
नप नप ?" प्रणव निरोधक कहैत छलैक ।

नपके लुच तेषा छलैक आ करैत छलैक "अहाँ नप नप कान पुछे छी
नप नप नप नप । कन नप सपके एकके रहैत छै, अहाँके नहि अछि ?"

नप बुझलक । लपस पनेक आ छलैक कहलक "नप नहि होइ
नप नप छी, सभ लप कन नप छै । दोसरी नाक नप कुकुरो-बिलादि
नप नप एकदम गमोर पस गेलैक "तौक कहलौ" अहाँ । हम नप

पूज्य तब यह संस्कार करके मायुष्य नष्ट करने की बातें अजिज न
 समझिए। मायुष्य माया कल्पित है। माया कल्पित भगवान् की ही शक्ति से बनता
 है। माया कल्पित है। माया कल्पित है। माया कल्पित है।

नाक जहाँ थोड़ा सा गल है तैयार प्रणवक दूध पकड़ टांगने इतना
दवायक जाइ कात भुनी जपन साक उठा रहस धनैक "उरु कने साह बना
दियो प्रणव ले जाकरा धाका मारता है तैयार "

इन्को ध्वर एकदम खोजायन ओ निन्को मीउराम फुलैक "आह कै दिन रहता अन्नौक के दास्त" शीतलने प्रमदामसे नाकि धोजन सेवान दू वजे जे आ. सेओ खजे बाह आ दिग्म दोकान बन के अहो इहो लाम बनल नखति ते पलिकक महानामे मीठ जयतार आइ जेन लोकाचर सवरे बहुत धन दाती "

सहकार्य जड़त बसक अंकाय एण हण कणतण अत्रैत हलैक कनेय
कहियो बीच बीचय चडका घडका संदु १. उरत हलैक, कामे बकाय नैक
अपर कारिणक जौन कनेत कृत दंबायण कनेक ३ उरत हण बसक २० कोन
हलै कनेक कनेत हणामा हात हलैक ५ उरत हण बसक २० कोन
हलै उता किछू पेल गहि संदु माड एणक वाक्य कबिल हलै ३० कोन
हण पेलक वाक्य अ हलै हण बरो कनेक बकाय २० पेल हण कनेक ३०
मजक गण पेलक वाक्य अ हलै हण बरो कनेक बकाय २० पेल हण कनेक ३०
पारल्लामा कनेक को हात हलैक ३० हलैक ३० कोन कनेक ३० कोन

पुरा आदि ई ककरो बुने जयैक भयान नयन शयन ॥ १ ॥

अहं कालेन प्रभवः सौ कालेन अधिकं बलवान् सन् । अहं च
 शस्त्रं च वीर्यं कालेन कथं कालेन । पौत्रं हस्तं च वीर्यं कालेन कथं कालेन ।
 क्षिप्रं च अविनाशिकं च वीर्यं कालेन कथं कालेन । अहं च वीर्यं कालेन कथं कालेन ।
 कुर्वां नहि शत्रुं वा मर्त्यं कालेन । वीर्यं कालेन कथं कालेन । अहं च वीर्यं कालेन कथं कालेन ।
 कालेन च अहं कालेन कथं कालेन । अहं च वीर्यं कालेन कथं कालेन ।
 वापः च अहं कालेन कथं कालेन । अहं च वीर्यं कालेन कथं कालेन ।

अ. पर्यवेक्षणक द्वारा प्रमाणित इस कार्यक्रम अंगीकृत अ. सं. २०००

[illegible][illegible]

च. न. बा. कृतक धातु लोभ रति मत्त । अमनस्क ओढ़ कला छंद धीन
 च. न. बा. पयसाया । धृ. टा बुद्धि कलैक दुनू किमपेयमक लेल । प्रणयरी
 च. न. बा. वेत मत्त अहं बुद्धि बलैक छल आ एकटा बुद्धिपरा बलकी मनाशयक
 च. न. बा. छलसि । मय प्रणयक अविताहि दुनू बुद्धि दफानि संलग्नि चरनी
 च. न. बा. पाँदर बिल्लासे छल नै कमसे कम एक सौझ खेनाइ अपने पका

तंत पुनः सहा प्रता उरुह पदुतेक एकरा सारव नरिख नतक कपिचिउर न
भोर सरीस बाह बत लिखत ।

पुनः सभ में अगुविषय तः पावनाक नय साखाना बाता छलैक दू ट
आ परिचार दम विप्रगज पुरुष सपज भल वैह दू ट साबना धोसैं भादुन मणि
बाह कलबा भोर चण्ट कय प्रणय लाइन नमनय जाइक ज शुभ दृश्य भन वड
खौड़ा जइक ।

पुनः आसने अमर सप बाटक अप्पाम भ नैलैक पगुना नय नाइनक
धो भोर पावि तन जौनम सिन्ना चिल्लक आ बल्लक काठलीन रुदम हाइ
पावि पल्लोक कलरक चटगो महाराज बावन पीरतेयुं एउने जौनमने छल
इह नय सका भेटैत छलमि भोग तेरक भिवा हाइय नय । जतक भिवा
रा हाइ कृष्ण पाय तन का भकलने अरक तन का नय नय छलैक पु
दावनाम सार वैह जौन छलैक जौन पुनक एकदम ठेका प गल्लक
महनाइ तिखनाइ वैह प लकलक वैह जौन भन जौन प लल प लल
भनि सापना गैत छलान वैह एहा जौन भन भौन जौन एहा जौन
रहय प्रणयक बलांग जौन छलैक नय भिवा हनु आ तनक आ नय
पुलकासै एक वर्ष वैह । पुनः से सभ प्रणय बहुत बल्ल वुझैके

सभसँ पहिने बुझलकै आबि तति । सभ ५५ रहल छलैक वर ३
रति प गल छलैक जय दारुना पगलकै जौनक वैहलक जौनक
छलैक भिवाक जौन पन बघइक पौन पति बरनेक जौन ३
पौन बरन बौन बौन ।

प्रणय सकयका पल वै काशी सुलैक आकर कोठलीम ? पुनः ज
आकरी किछु सारबक मोका सार दनकै अकरा कल्लो घनो सुगरो
भौकल सारी बदन सैलकै आ अपन अपन भौकै किछु ललकै
सभ दिन बहर वैह सभ पौन बरनका सुठैत छलैक आ जयन काठलीम
आ पगलक काठलीम सभन पुनक

एकरा सुठय रहतम काठलीम पावि अति छलैक जौन
दारुना जौन कऽ रनकै आ जयन चरकप वैह छलैक "आपनो बल्ल
बुझि आपनो न ।"

प्रणय तैय सभकयल छलै रहत साकन जौन सभ जौन
बल्लैक "आपनो किछु बल्ल काठलीम पुनक छुइ न ।"

प्रणय भोर सरीस । अकरा सभ बाप काना बुझलकै दारुना तऽ बल
जौनक आ जौनका को किछु न गैत बुझैत छलैक जौनक छलैक मणि
सभ रहत भोर किछु जयन वैह वैह जौन छलैक मालापम आ घनय
नय वैह जौनक एकरा जयन मादकता छलैक कमल तबला आ धांगल देहमे
जयन जौनक नयन जौन छलैक प्रणय आ भाकौ जौन छलैक का एहा
जौन कऽ जौनक जौनका आबि गलैक । पुनः जौनक वैह जौनक ? मणि
सभ निश्चय सति छलैक । आ भोर धरि बगलै रहि गेल ।

जयन जौन नलैक जौन पगलकै कऽ छल त मणि आ बुकल
जौनक । जौन गैत वैहलैक । निश्चय पेल

पुनः निश्चय गैत भऽ सकल । अरु कतको सति आबऽ लल्लैक
जौन । जौन कलका नय जयनक हाइ आ अपन वैह नय आकर काठलीम
सन जौनक ।

पुनः जौन सति अतह कऽ वैलैक मणि । बाइक मास जौनक
जौन सहा जौनक । मणि काठलीम आबि गलैक । प्रणयकै अप्पाम भऽ
नय जौनक जौन रहत पुनः जौनक जौनक वैह जौन आकर तुगइक भौन सुठय
सभ जौन जौनक जौनक जौनक जौनक आकर मणि सुठय जौनक
जौन जौन वैह जौनक "आपनो कोधाय ?"

प्रणय बिगड़ैत बाकल "वैह, जयन हय ५५ गेल । हमन मनुख छी ।

मणि काठलीम सभन बल्लैक "न, आपनो मनुख नय । मनुष्य मोहन
जौन जौनक आ नय जौनक जौनक जौनक जौनक मणि मणि मणि मणि
जौन जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक
सभ मनुष्य मोहन जौनक नय मनुष्य नय पगल मोहन

जौन जौन जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक
जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक
जौनक जौनक जौनक ।

जौनक जौनक जौनक कहलकै "आ आपनो जौन नय नय जौनक ?
जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक

जौनक जौनक जौनक जौनक "आपनो इच्छा प्रणय कोधाय ? जयनक
जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक जौनक

बन्ना लो लेखी खुशी है। गज जगज बांधव २५ दिन दालात दिन ५५
महान्त धाप बाबा खलव कंपन को ? २१

आज प्रणवक कोशे जगत ५५ गलेक । पणिकाप रमा पलेक । तुम्हारे
मनल आ पूण इसका आ मुका ५५। आजका किशु निशु नव नवलेक । उच्छ धेलेक
जे ओकाय धपधप का सुता देक । तुम्हारे मनल सुता गलेक । एकदम निशुचन
देना खोया धप रहि हप । प्रणव बड़े जगज धां ओका मूनन भिन्नरक
आकृतिमें निहारी रहल ।

प्रणवक मन बाइलामे बहि मन छलेक । अउरमे जगज जगज
पेटलाय दुरता दुरता आ अंतर्गत बास लीये जगजगज छलेक । एक
कौलजग छलेक तुम्हारे मनलमे गज गलेक । जगज जगज तुम्हारे
कांठलोम आवि बड़े तुम्हारे मनलमे कथना छलेक । जगज जगज तुम्हारे
अंगुलीमे मटाते गेल प्रणवक पकड़ि लेक ।

पहल प्रणवक शिकाज चिना छलेक । जगज जगज गलेक । मन
छलेक । मुदा मणिका न पकड़ल । जगज जगज छलेक । आज का गलेक

एकदिन प्रणव कहलकै-“हमई ठकर देखी तरा, सेब ?” मणिका
आफनमें से तलकै जगज जगज गलेक । मन छेई । ओका चकिन एगल ५५
बुद्धि प्रणवक सेना लागि गलेक । “हमई बांधव गलेक । हमर खेन ५५
दे । बाहर बड़े दिक्कति होइत अछि । मुदा एक समय जगज गलेक । ५५
जे हो सय खेन, खुआ दिई । से बाबा से पकड़ि ले ।”

मणिकाक बड़ खरा पलेक । जगज जगज जगज गलेक । मन
जगजक बांधव दुरता छलेक । ५५ मन पकड़ि जगज छलेक । जगज जगज
गम पठा देन छलन आ हठ जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
मकालजिभा मर । मणिके फाम पाइ मर गलेक । ५५ जगज जगज
सय टका पकड़ि तारोव कउ मणिकाक हाथमे रहि देक ।

मुदा ताहिसे निशुचना रहि मेल प्रणव । मणिकाक लल किशु ओर
पड़लैक । बहुत सोचि निशुचि एकदिन कहलकै-“हमई गलेक । जगज जगज
तोहू पैठिक परोक दउ रे ।”

मणिका हँसत गलेक । मन जगज जगज जगज । मुदा प्रणव जगज जगज
कहलकै-“हम हँसो रहि कोत विपोक ल रहि । जगज जगज जगज जगज

जगज जगज । जगज जगज जगज जगज जगज । ५५ मन कांठलीक बांधो
हमर दुरता निशुचन जगज जगज । मुदा बहिन आदाम पद । मणिके पकड़ि लेक । हम पद
बनोक ।”

आ मणिका पद । मणिके कांठलीक एकटा दुलोकर बांधो जगज
जगज जगज । मणिका दलकै या जगज ५५ गलेक । मणिके मुदा बहिन । मणिका
जगज जगज । मणिके मुदा मणिका मणिका मणिका पकड़ि लेक ।

मणिका जगज कहलकै-“हम तरा पद मणिके रहि पदले किशु
जगज जगज ।”

मणिका हँसो बुद्धि मुसकिआइत बलकै-“हो लेव ?”

प्रणव कहलकै-“हो जगज हम तरा । मणिके जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज । हमर गलेक बांधव का काया बंधवली गतिमें ककरी कांठलोम नै
जगज जगज । जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज । जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज

जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज

जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज

मुदा समय बोलि गलेक । प्रणवक ओ कोठरी खेन पड़लैक । पदता
जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज

मणिका जगज पदलेक । जगज ५५ गलेक । मणिकाक चिटरी देखबैत
जगज जगज । जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज । कोठरी हमर नाम रहल । जगज जगज जगज जगज जगज
जगज जगज ।

[illegible]

मुद्रा प्रणाली का महत्त्व यह है कि इससे मुद्रा को एक ही रूप में देखा जा सके। इससे मुद्रा की शक्ति बढ़ेगी और इसे आसानी से बदला जा सकेगा।

मूल प्राकृतिक प्र संहारन तंत्र का प्रयोग इनका प्रयोग
मैथिल सभाज उद्योग पशुपालन कल का अभियोजन खाना किताब का
फहिसीट आ सैच-नैचक हितावसे काप्रद छल ।

प्रणय हुनकर तर्क सभे अधिक क्षमता प्रकटि दैत छति । दुटा हुनकासँ तर्क बल अकरा सँक लेल छलैक । कोखन बढ अझा हाइल कलेज अ प्रोफेसर इन जने लखन तनु हाइल जिनत रैत छथि । ओकर विकासक बात छैवैत छथि समझल कतेक तर्क एतु सँवैत अछि ?

प्रश्न किमुं नहि वाक्स । आकर मैथिलीक नय वा पुन साहित्यक
हय ज्ञानय नहि हनेक अं बुझबा सुनै रहन

[illegible]

कानलाये एकमा मापुली वन एतल रक घेल बड़ोयन ऊँ गइल छलैक लेव
चहरापर रीष रीष बकल मम छलैक जौं गौँक बूँहल गल्लक धरा धलैक
प्रणयक ।

ओ सवा ओकर चहराक भाव देखि हँसलैक "चूना मऽ रहल छै छोर
तही जोगस हम ।"

एतैक कालमा विद्वान्कौ प्रणव । ई तऽ माला छलैक । कोन एहन =
हाल भल हलैक सं जेत लखैक एतव पुन नेहँ ओकरा जोगे हालतन रहि बड
दुख धलैक । किहुआ बजना नहि गलैक । आला अपन बचलैक "तँने नला लऽ
बाँटे जइत देखने छीनिनीक । लखनई ओकरा" गाव क नने छविदक उँ तला
कहुना अग्राम नाहो मत कन अग्राम न, नहि कयन सो

प्रणव पैसो चुप्प रहल । सुध काना बात ओकर विप्लव नहि छुनि मत
छलैक । ओ लामो विद्वान्क "पनोन नहरा आ नइल देह नने पदम मालक" लखि
रहल छलैक आ ओकर कहर बन्द छलैक ।

पाला फर टोकलकौ "मला जपिन अछि, अंकुशसँ अग्रस धुष करक
जाहो जिनगी यहि काहँ पुन जतन काह तग लखि नहि जान किएक किहु
बाल करायक नाम तनक स्थक अने काबाक भड डल्ला धन कोन छुनि काहँ
ओ हल्ला ?"

अत्र पडलक चकरा छलैक "कोन इहो जगमं छैक । का हयं सुन
जानेस लैक । आबनी गमम डधून आ तनक ईह कायन हुनक किहु नाव न
नहि छनि ।"

कल्लू चौधरीक हसन मजसँ ओकर मोन छैत मऽ गेलैक ।

मुदा बाण बौद्धक मुखसँ पुन पाला नाला पडल छ । उडल नहि डल्ल
मीला जाँछ तखन त रहमहुँ भन कनैक

मुदा फेर अपन दुम मऽ गेल । अम रूपन बडल लखल नचम
गेल हो । ओ कोन गेट करहैक होलसँ ? कोन मुँह ?

प्रणव टोकलकौ- गेट कऽ लिखैक । मुदा छेहर ई की हाल इहो
लिखैक ? हलऽ कोन पहुँच गेल ?

पाला हँसलैक "कोहि बाहरा चरन हो म अह मममे कतहुँ हुँक न

म न दइत छल । पुन लख इतल म नहि बूझल छल । माचलहुँ न सम
लिखल नकरी लख किहु गेन जोगि लो । जिनगीक भागि ली फेर नकरी भागि
लख भड ई काहँ बड़ोयनक ज एक नकरी दोस नकरी का रहल लो ? जिनगीक
धराकाज नाला नदरे बाबल संग जायत आब तऽ बरा लगनिअयल अछि ।"

पाला उँन कष्टपूर्णक बाँधि रहल छलैक । ई कष्ट खात्री पानसिक रहि
छलैक । अत्रम आकर शान्तिरक कष्ट मँहो शोषित छलैक । प्रणव आकरा बीन परोस
इत जइतकौ "एन किहुक बजैत छै" अखन समय किएक पुनौक तोहर ?
अखन वयस की कोनैक अछि ?"

पाला अग्रहना कष्टमँ हँसलैक "हमर वयस ? लखि अछि जेना सग वष
एन छ । उँन शानतक अग्रधि अनन पऽ गेल हो । आब तऽ कहुना मुक्त होइ
जिनगीक, सैह कामना अछि ।"

"पुन नदर ई हाल कयनकौ क ? ककरा संग गामसँ पढायल छलै ?
क कती ? बंकु ?"

बंकुओ गेट छल हमर जागू बाहू । एक दिन ओकरा कोतलसँ बहराइत
जाहो का गेट ललक । बायक हर बंकुओ पढायल आ तखन ओहो फोठनीम
अत्रम आ अत्रम नलक । तथीय पैह मगौन छल जे शहरमे नोक अम राख
इहो, पैसँ छुनै ? आ फेर हललक डाब बेंचि निपछ मऽ गेल ।"

प्रणवक अत्र कामपर विप्लव नहि धलैक "होह दिमाग छलल प
म छै अत्रम । अत्रम नाम म रहल छलैक ? रुदल चौधरी तोहर पिता
इहो ? अत्रम अत्रम निरिओन छैक त ? को ? मुदा रुदल चौधरीक एहन
जान ? सत बजैत छै लो ?"

पाला अग्रहना कष्टसँ लकि-लकिड बकलैक "करनी तऽ समय डमर
अत्रम अनका कोन दोह । मधन्य आ वयसक कोन निहाज छल
हल । एतक एकल जाना छल । प्रतिक्रिया छल ? बाबूजी एकद बड असर्प वा
अत्रम । इमहुँ अपन मनमानी कऽ कल्लू लैक । चहैत छलियनि । मुदा
कल्लू कल्लू लौनैक ? केलसँ कल्लूक बचलै फोत गेलहुँ ।"

पाला दुम मऽ गलैक । प्रणवो चुप्प रहल । बजना लेल किहु नहि
नलैक । किहु काल बाद ठेठ कहलकौ-"आब हम नद ली । बड गति
कल्लू ।"

विचार : चलो हमें इन जिन चीजों को देखें।

नाह संकि संखतसु संयति

मल रूढ़ि १०

$$= \frac{1}{2} \left(\frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = \frac{1}{2}$$

काठमाडौं, १० चैत्र २०७३

[illegible]

ਪ੍ਰਸ਼ਨ 7^{ਵਾਂ}

... ..

छानाई हास्या विरुध्द कानून

या संस्थेचा जन्म ठाड्याने

च. दिन भोज कथन्तु

हृष्याय जनी रक्तय विचित्र मलिन आ रक्त आ

रुह । तान् वदुः तः कनिको ज्ञानम् ।"

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । "सुखदाम्नां तस्य कृपायां योगिं दमः" ।

હીં સજા મહત્ત્વે ।”

नरैः सह पुनर्नरैः सा विज्ञानेन यदि कालः लग्नः

✓ एक शब्द प्रयोग करता है आर बाँकिये की रीति गलत है ✓

[illegible]

अतः $\frac{1}{\sqrt{2}} = \frac{1}{\sqrt{2}} + \frac{1}{\sqrt{2}} = \sqrt{2}$ "छात्र स्वयं भयंकर तर्क अर्थात् निर्णायक अस्ति।"

$$\frac{1}{2} \left(\frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = \frac{1}{2}$$

अतः, गलत है। यह शब्द है कि तरबूत अंकगणित गण्य कृत ।

$\frac{1}{2} = \frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

प्रोफेसर डॉ. ओकराफ कांपसे हैं। कहते हैं—“सुवन नर क्षुब्ध
मुदा हथका मने यह लन एतक खलता हैन नर कहने आ कहने यह छैक को”

प्रणव हुनकाए लपकत “कन” उरि नकाय गनकपने आ
आफसा सब नहि आरि गइतेक तः गन हुनका गेह कनक मुदा अकम्प नर
विरति

मुदा ई घटना मुने शोलाक मुह प्रबन्ध एतक मुदा यह लपक एतक
भार खोत हो नर हनर कहनेह, हम आने चल तेनु हुनका कहि हो
अपमान किएक कहसी हमर ?”

“गण बांझक नहि छैक शोला भविष्यक छैक जरी रहक हुन कहि
बांझक प्रयत्नक गण आ को यह लपक आरि अरि किछु बहिर भावक
हमरा ? मुदा अहाँ गि सकन कतक एत”

यदि तुव कहो सगाईन हमराक जेन तः जहाँक कन अपरि हेत
बहुत दिनुक बाद शोलाक गुंफा हौसे प्रसन्नक आ अरुदम प्रकाश
मः प्रगल्भ बहिराए हिंडाए गनक

गहल अन्त अन्त जाइत छलैक साई यात बज नू गैर अ नर
हाकराए नान गन नर गन अ नर गन अ नर गन अ नर गन अ नर गन
अन बर दिम छैक छलैक अरु अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
छलैक विरगक शोलाक अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
विश्रुत छलैक प्रगल्भ कन गनक अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त

मुदा “अन्त” कोन छलैक तन वेत पगलन लन मुदा ई नर नर
गेत छलैक अन्त कपलन कोन छलैक मुदा अन्त अन्त अन्त अन्त
आहिम यह गन छलैक

अहंसे बगो कहकन नर शोला अन्त गन छलैक अन्तक नर
कहाँ आ काइको नर बहिर गनक अन्त छलैक अन्त अन्त अन्त
पोनमे । मुदा स्पष्ट न कहिके किछु ओ बहिर सकल न शोला कहकन

अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त

अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त

अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त

अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त

अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त

अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त
अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त

पूछ कयलके ओ संपत्ती पभात आभाके पाका गेली हाँउ हलके ओह छलैक
सगाज १ मधु पलटू पिपरा मंग गान बिजान थोड़ाउत छलैक कहै सकैत छलैक अन्तर
शौलाके स्वामी भौट कड भरई निकालि छल छलैक अहाँ बचैत नय नै

ओ तऽ सबक सामने स्वीकार करैक ओकरा । फेरमें बिगरी शुरू
करबाक अधिकार पुन्यके पति सगेन छैक ॥ एही किताक उचित रहे राजक
कान दाग छलैक ओ नऽ सपट अपधान आँखन बहि निरुद्ध करैत छल पुन
अखन बेपर चरसै निकालत छलैक, तखन को करैत ?

नहि, ओकरा नहि दुखबाक करैक साहसपूर्वक उपाय करब
चाहिएक ? सभक समक्ष, सम्पूर्ण जनक समक्ष

मुदा जोगी राजी हुलैक तखन न ओकर शौलाके सबद पुछबाक
चाहिएक अइ दिन ओ कहने रहैक "हम एतनि हब सभ दिन मरणा ॥ अर
इलाय पुछलैक " अहाँ हम तय रहू हमराक नय रहब छैक "

ओ कम आँखिना बंति गेलैक ओकरा तँक नहि छलैक "भावक"
जल्दिये पछि लेबाक चाहिएक ।

मुगी गनी मुगी गनी कनऽ बड़ छी ?

सबै पूत चरलक-ए हमस जइ छी ।

हमरा तय रहब ?

रहब नै किरक

खय को टक ?

मुबारा गेटो ।

मृतऽ को देख ?

शौलाकाटे

मामी बिस्सा कहि रहत छुपायन आँखिक ॥ अम्हिये आँक जका
सटल टप सघन बिजय मुँगे मरल छन बायन नै कय अल्लाक अल्ला जो
छलनि मुगी गनी एक्क दुन एक्क छलैत छलैत खय को टक ?

मुदा जका तऽ बयबाक मुचन मर देबऽ कयल छलैक छेन- "हम आ
मन छी ओह उत पन नहि रहे सबक हमरा जाव दिउ ॥

एही मुचन पलटू अन्तरक काजनीम आँखि सभ छलैक शौला आ
अन्तर ॥ ३ ओह काज बयन दास कालानी अवैत मापोक मव सुनि रहल
कय कयल नै पुन बिस्सा छलैक ॥ ऐकहु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अन्तर कालानी उत कय कहैत लग रहैत छलैक एकदम समीप आँखि
छलैत छलैक अन्तरक ॥ ओह बेला ओकरा आँक उठैत रहि गेली दू एक टग
है रहि तऽ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

मोता चौकलैक । लंगलैक बना ओकर बात सुनि लौने हाँक । देहमे
अन्तर छलैक ॥ गपनी खुसि पडलैक आ खुसले बर्को रहलैक । ओहिना निक्की
अन्तर किहु कयन बड़ बयलैक- "हम आ रहल छी । आब आर नहि रहि सकय
॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अन्तर तऽ मुचन लग एकदम अन्तरक छलैक ओह बेला ओकरा बहि
अन्तर ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अन्तर ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अन्तर ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

"कानों नहीं हैं निश्चय नहीं" अपन मुँहमें निकलता कुछ ऐसा कहते
आगे अचिन्ता भयलेक बना अनचाकमें कण्ठसे बहरा गला हाइ

"हवा रुक गयीक तब पछि नहीं साहो नः हमरा गति मकैर
हो मुदा अहाँ बूते से बाग नहीं लापन" शौला बना चुनौती दैचके आँकर

प्रणव उल्लसित हाइत बाकस "लापन अलबत पछि नापन । अहाँ से
कहव सैह करव हम ।"

आइ क्षणम प्रणव एकटा पावुर गंभीर मन लागे रहल छल । अलबत
स्थीकालक आशाने हुनकर एकटा एहन प्रणव जेकर मोक बल वरुन समय लोड
बहरा गेल हाइ आ ओ संपादित पावुरमें स्वीकृतिक प्रत्यागमन करै छी

पुनः शौलाक आकृतिपर न लाजक लालिप छलैक आ न उल्लसक न
स्वीकृतिक परजत छलैक न अस्वीकृतिक कटावरी । एकटा किविड मन जेकर आ
नटख पाव छलैक । हाइम तऽम वगडक शौला अनापस बहै छैह बड पैर न
गेल छलैक । शौला एकाग्र अपन क्षणिकक मुँह एकटा मध्य स्वीकृतिक स्वीकृतिक
आँकर किछल आकृति देखिपाकऽ आकर इतम दमनक सँधे अलैक । अलबत किछल
नहि छलैक । आइना शौला स्वयं बजलैक "नः किछि लिख हमर । तुम
एकान्तमें एकसाँ अहाँक काव्यनाप पद्यन कुं हमर । हमर लालचक" आइनाक
कलाकालक क, दिवस । पर हम कालेका वगडक नभ नहि कर । अहाँक उबरल
साँध लेव हम । मुदा न क्षण सहन रहि देत । आ अहाँक बरन सँधे छुन ।
दिन आहाँक साथीकेँ हमर बाप ।"

"बूध मः लड अहाँ हाइत नहि छी । तब उल्लस प गेल छी । तब
हमरा अपमानित आइना स्वयं म्याग धरत छी । अपन अपमान हमर सँधे लेव ।
अहाँक अपमान हमर नहि सँधे सकव । अहाँ तब अहाँक सँधेवले चोट करव
हमर मुखक छल ।"

पाव शौला हँसलैक । एतेक फलक कह । आ ओड हँसलैक । आ ओड
आ बड़को छी ललैत शौला बिना ललैक आ एकटा बडम वगड छी नहि करव
कान्दा मन शायन आइ मः गलैक । अलबत वनचमडि पँचकक पावुर आ
अपमानक मिश्रणक मंग । एकदम मडल आ किछल शौला प्रणवक काल
इतिहास । मुदा साब प्रणव आँकर नहि देखि रहत छलैक । आ अलबतक मुँह चुनौती
करै छलैक । शौलाक सँधे आकृति क्षण धरिक लेव म्याग छलैक । मुदा न ललैक
मनज हाइत बाकि उल्लैक "लापन अहाँ ललै नहि दः सकैत छिपक कर

इतिहास । अहाँ नहि अहाँक शायन करव वल प्रणव नहि कः । अलबत किछल
अलबत स्वयंकेँ देव दन छी । त तब तबयक । तब नहि दन मुँह चुनौती
अलबत छी । तब नहि करव हमरा न गेल । तब नहि रहत जे इच्छा कवलाप
मो एतऽ धुरि सकैत छी । एकटा आइना सुरक्षित अलैक हमर ।"

एहि बीच प्रणव छलैक थऽ गेल छल । शौला दिस करैत हँसकऽ
बलैक । "लाइ मन चड चुनौती आ नैसक मः क । अलबत छी मने । बिना पछि दन
अलैक । आइ अहाँ एकटा मने धरि लालिप मुनि । अलबत गलैक । जेना वीरक नहि
करै नहि करै । एकदम न गेलि आ गलैक । अलबत छी मने । अलबत हमर
अलबत अलैक । अलबत आ अलबत ललैक । आ अलबत बलैक । आ अलबत शायन
ललैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।

थऽ बः शौला अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।

"अलबत कौन प्रणव ?" प्रणव बीचमें बाट करैत कलैक । अलबत अलैक ।

कलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।

अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।

"अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।
अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक । अलबत अलैक ।

गण्य मय्य नृनि गंगा अमरं घनं बहुरायन । ओं पुनस्य पञ्चमस्क समस्तैक
 सल चरण स्रष्टुं छन्दैक दृष्ट गाय अर्थेय छन्दैक इत्येकं नय्य नृनि गंगा
 वपकत "गङ्गा सधक इहै कालिपर एतेक दिन कुलुम डोडत रहस्ये तया मयरा ।
 आडर्य उह नय्य करे छे न" पुनस्य अपन नय्य ई अयम अति भाई है बडकी
 लयक ई नाबा मय दिन चलै य उह बाटे अपन मय मय्य हव "

हजरा गाने स्वयं कथन "कथन मान करे क है मय तः ई नय्य ई
 को हात से ककर वयस हइ अपन जालक को अलक ई तः अलकालय नहि
 कहै है "आ भाई हय बाबलम बैस उ तः दण्डम नहि जाई है आ हजरा
 मय धुरा फेके छे "

"आ ऊ हजराहो छैउक" तहय कोय नहि हइ उ नहि दखै छैउक ?
 ओकरा कहाँ कहाँ जायक नहि हइ ओकर हैमक कियत कोयन हइ उ खाने
 बैसल बैसल अइ बुद्धिवाक मय पैच पैच गय हके छे "

हजरा बुय्य मः गेल । मय्या नहि मानैत आ अ मय्येक कियत दय
 दौक फोट देखऽ जखन गेल छल तः पक्का जियत छल ज पुनस्यक" ओ
 देखैक । मुदा जहिना भोतर गेल मयन डाम्पा पनैक है तः अखिर अपन लय
 अपने वाति थल ।

आना लोक तः अपन बिजुम बाबू रहै छैक ? छैक तः अपन
 गामक मुदा नहि छैक जेना अहो गामक हइ बाँ बाँ बाँ छैक मय्य
 दय सुख पुनै छैक एकदम एकदम आ पाक ने बहु न जल्वा एकदम
 साइ साइ समयबना मयका पञ्चम कुला आ कययप गरी देखै
 छितलपल करी ५ बरमे गइत छैक बिजु बाबू । मुदा अइ बाँ पुनस्य बाँ
 मयलैक "उ बिजु बाबू तः ९ बरमे जिते है, बाँ कयमको तय सय लैत
 स्वतन्त्र डाम्पाभार हइ करिय मय्यको मयलै । हय्य धर अइके अपन
 लयक छोटका नाक मयक जिनानिधक फाँ देखै नहि हय को हने अपन
 पचीस बरलम आजदीक पचास बरल पुनै मुदा हमस अपन ई मय प्रतिक
 पिमैत रहलौक । आक अपन हइमे तः खूब काज मने अइ भाँम हय सय बाँ
 छौ मुदा फोट देखै छिये अहो बहुका वातिक कः क देखलैक हय मयक
 पचास बरलम बिजुली अयनी मयमे ? कोनै सडक बनरी तयन पुन बने
 अइ घेर मय रे हमर । फेर देखैत छियेक ।"

पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक

पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक
 पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक

पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक
 पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक

पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक
 पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक

पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक
 पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक

पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक
 पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक

पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक
 पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक

पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक
 पुनस्य पञ्चमस्क सील । गुरु क्षेत्रमे स्रष्टि प्रसिद्ध बैकयई फोट छैक

हो गया, डी। गहरक तान्त्र छलैक जन्म बीप ओकर शानमे पैसलैक धिरग-बती घ। गेल छलैक हा.एम. ओरिगिन छलैक. उंठैकऽ धातु नहि गेल जगह चपरासी मुनसरीक देखिवाँह सल्लाह दालक आ देवाँजक संग ओ आरिगिनक भीत। पैसि गन ।

डो.एम. फाइनेमे खस्त छलाह पूरा सोची सुकसि छलैक । जिनका त्वांकनिक" भीतर अवेत नहि देखलथिन । मुदा भोता आबि मुनसा होइक नूँह देखित सँह गेल जिकी। राकिता मुँहसँ बहल गलैक सो अहाँ प्रणव

देवीजी मंह जीकलाह धामन पुणज बैसल छलैक ओरिगिनमे चपरा होबैत प्रणव सोहो दुनूक रंगलक ओ बाबल "ठमर" हा एता चौकल" किपक मुनसा / एतक अनधिकार मन घऽ गेल होइन "

मुनसा महज हाइत बाजल सत आग्रहमे भेल गेल देखि गल्लि गल देखिते छलैक पी क चौघरो मूदा कहेय सन्देह नहि धम ड तां ई ई एतक बड़का हरकम "

प्रणव बीचमे ओकरक "बड़का क मेल ओंठ भय ? खरि कपी मन्त्र अछि तऽ तो भन छै" आइ हम.एम.ए. छै" कहेत मंत्रा ईवै मुनसाक ईवै

मुनसा इसन हाइत बाजल "तो" छै हम एकटा दोस । एवक जियर मुनसाक लेक वन दंतै मुदी अइ एकटा छंदलेन काज नम अभिन छै देवीजीक" तऽ चिन्तै छहुन ?"

जगल वषक देखैत बाजल "देवका चिन्तैत छियनि मधु छयि । मुदा देवीजी कहियो भलीक स नहि बड़ल अछै "

मुनसा ओकरा रोकैत बाजल "स बादमे बुझि लिई पतिने देवका कन वृक्ष लहुन मही लेख जखन जो हम हिनकर जलाय तांग ला इच्छा छ छयुन, तदपिष्टक लेल । हुनका रकि लहुन ।"

प्रणव किछु काल घुप रहि बाजल "जहिमे तऽ विरहमे भऽ गेलै ओ पैसल भऽ सुकल छैक बिट्टी दस्तखत भऽ गेलै छलैक मुनसाक अधिकार पूर्वक बचनह "तऽ जो पलैक । बरि दहिक ओ बिट्टी सहर हिनकर जमायक" तऽ लहुन "

"मे तऽ आब संपन्न रहि छैक भय सप काब भऽ गेल छैक के रूप छै तोहर जमायक मधु ।"

देवीजी आ कहलक "प्रणवक" वना किछु मोन पड़लैक । एम.एम. ७ महजक पैसल जना मुँहमे अभिन छलैक कमतकनि "हुनका ते. एवकी अखर छप कर नै अवेत छनि ।"

मुनसा जोगसँ हेमन "तहाँ रूप कयलै" प्रणव टाइल रहि अदबे करिनि तऽ मधु अभिषेक कान काज ? टाइल अयलपर बीकर दैतनि तऽ तोहर डो.एम. मलक कान फायदा ?"

प्रणव घुप रहल अकल रहि गेलक आब देवीजी बजलीह "तऽ काब नऽ बधाति ?"

प्रणव मधु कहलक "मै मधु अड कं काना ठारा नहि छनि टाइलक अभिषेक कर कहने, दोसर कोनी छम देखल बधातैक ।"

मुनसा उकिर टाइल पऽ गेल "चमू देवीजी । हम तँ पतिने कहैत छलै" गेल गेल "

प्रणव ओकरा रोकैत कहलक "बैस खो पौ कऽ जैत आग गप्प भाप मुन "

मुदा मुनसा नहि सकलैक "देवीजी ओकरा थोड़ैक धमलथिन ओकरा लखि शकक" बड़ दुख भलैक. अंतमे मधु एतऽ पहुँचल ?

का मुनसाक मधुन गलैक ऊपर भऽ गलैक ओ अधिकार कोशक सत जनेक गजमेतक इवाब गिटीक आ नीक प्रकी इच्छा गेल

मुदा बड़ जखन छलैक बालमो छलैक मुनसा ओकरा नेल जान ते छलैक ओकरा मधु होइत काज हपसकऽ जानत रहैक मुनसा जोइ दिन जनेन लेक "शकक" न गेल चिन्तैत जनेक मयक" तबाह केनीह एतक मधु नहि चढ़लैक "

लेक नहि चिन्तैक मुनसाक ओ अड नेताक ओ चिन्तैत छलैक जनेन मधु मधुक मधु.एम.ए. आ देवीजीक ओ चिन्तैत छलैक मुदा मुनसाक ओ देवीजीक जनेक आ तऽ बालमो छलैक ओकरा ओइ आका खिलाफ जनेन जनेक जनेन मधु मधु शिकायति कोशक

ओकरा शिकायति चिन्ता नहि छलैक । ओकरा आग्रहमे ओ दुख छलैक व मुनसाक ओ नहि चिन्तैक ।

प्रणव नहीं कालघाति जगित्त नैनल रहे गंत अगुन सुखल फललक
एकको आखर आगु पदल धार मोह नदालक ।

कखन वपनसो पदो हेंत भोल अरुनैक सा मायलमें कछुन पुर्जो गति
कल गेलैक से प्रणव नहि बुझलकें बड़ाकाल बाद पुनजम भवन गलेक
"श्रीमन्त चौधरी गाम कुसुमपुर"

प्रणवक मौखे विभाग मनमन छलैक । रम-गम आकर मुरल
छलैक, देखन आनन रहि मायो करैत छलैक पाय कहैत छलैक आ कहैत
छलैक ओइ सांगनसनी मनी । ओकरे गपक कम छलैक कुसुमपुर कपक कम
छलैक । मदन चौधरी प्रणव कहियो नहि मानलकें म साकस रूप छलैक सोका
बाप छलैक मुन्तर झा । पुरा मुन्तर जा कहै मानलधन । जगनमें फेर गुनबज
रजिस्टम में लिखा अपलधन । नाम प्रणव चौधरी बाबक नाम पदल नैनल
गाम कुसुमपुर जन्म जनवरी १५।

आ प्रणव एकदम विगडि गल छलैक "बाइ नै छो हऽ निकसि दिअ
पदरी मुरा एतन बात नहि बाधु । इमर गाम पर रहि अलि जने मत छे
हमर । ओ मायो काजसै मट नन छलैक । ओकर गम-भरक चर्चा फेर काबन
नहि कथलकें ।

पुरा अउ सामनेमे एकदम पुर्जो पड़ल छलैक-श्रीमन्त चौधरी गाम कुसुमपुर
प्रणवक हाथ घाटक बदनन गेलैक का चरि नैक । किछु मानक
गटल पदो उठ काठलोमें बाहर आपन

बाहर कुसुमपुर एकदम पदल बैसन उन्नाह प्रणवकें कहलैक दंडि
हठवडाकें उठि भऽ गलाह माति नरिअ जयम मायक समेट रज गलाह
पुरा वमकैत काना आ विशाल शरीर लम्बा प्रणवसै एक पुर्जो सें
बुझारियमे गे एकदम रुज्ज आ पमकोल बेइरी रहल अनमन बखिअ ज
प्रणवकें मुरा मायघक विडि हाँ किछु क्षण आइ आकृतिमें विहानक वत ।
पैपा झुकि गल "विनै ऊँ काका ?"

प्रणवक अइ व्यवहारसँ जेना बूढ़ एकदम पदरी गलाह "बाइ नहि आ
शोक नहि छै हम " कहैत दूनु हाथ प्रणवकें एकसँ उठी दनधिन । बालन गल
चरामो आ डपटीपर तेनाह सिपाही प्रणव मायबकें एना एकदम अजोबिअ उठै
पै छुवैत देखि अन्नचरसँ ललैत रहल ।

ए गाम बड़ अन्नन चौधरीक धरमराइत शरीरकें पकड़ने मोत आनि
ए बड़ भोत अंबेगसँ पदल कुसुमपुर बैम गलाह आ कानऽ लगलाह । प्राय
ए पदलक नन आ इमन रहि छलाह प्रणव लग्य उठ रहलनि । बूढ़कें
पदल सें नन पदल पियत भणि गेलनि । स्थिर हाइतहि एकदम स्पष्ट स्वरमें
बड़नल अन्नचरक धो बाट आ बाहर बैसन बैसन हथ लज्जासँ गडन छलैक
कान बड़न आनन बैच को कहलऽ गेल ? पुरा आब हमर कोनो अपमान नहि
रहल नहि गेलैकें अपमान क, निकालबाक नाहर जन्मक खूबसिकें लज्जाक
आ अपमानक खूबसै यान ताहर मायक अपमान करबाक आब हमर लज्जा वा
अपमान नहि । इमर जगि ताहर माय वदे कुसुमपुर रहि जैतधि तोँ रादि
हमर नन पदल नन गलाह नैनन पदल बाँक जवो बाँक जैतऽ मुरा को बनितऽ
नै । उ रम-गम माय बनल छांय प्रणव गलाहो आ प्रणव सें गौद नहिओ
हमर किछु जग बाँक जैतऽ बूढ़ एतक पैप हाकिम नहि हाकिम नहि एतक
पैप हाकिम नहि नहि हाकिम हाइ घममे किनहु नहि बाँक सकिताह "

प्रणव कोनो उठ नहि दनकाने । बूढ़ किछु काल चुप रहलाह । तखन
प्रणव कहलकें "पाँक चल् काका एति बशी भऽ गेलै भोजन विश्राम कर "

अन्नचरक गाम अन्न चौधरीक संग ओ डरा दिस गेल पहिल
काना इहोकर छलैक कछु भजनमें अन्न कठन सुखवला आ अइ
हो गेलै गल जगनक जगतो छलैक नपसै जगतमें छलैक धार्मिक काठलो आ
काना अन्न गल दाम अन्न छलैक गैर रुम प्रणव हुनका कोनो काठलोमें
होत नकन ।

ए गाममें अन्न गल मुनि लने छलधिन । मानस भगत ओम्पियन
महाल छलधिन । अन्न अपन कोठलोमें लल । भोजनक बेरमे एकदम
प्रणव बूढ़कें देखि प्रणव दिस सकनक । प्रणव कहलकें-"गौद लगहुन
बिके दम ककल ।"

अन्न ओ पै लुवि बूढ़क मुँह गौगसँ देखऽ लगलनि आ फेर एकदम
प्रणव बोलन "एकदम इलाकट । पापा अहाँ ठऽ एकदम बाबाक हुनलीकट
नै । उन्न ककल अई अनमन एहन लागल "

ए रंग भारत पनसामें उठ मानियाकें होसो लगलनि । श्रीमन्त
बड़न पन्नकें नन बैच चलिधिन सत्रद वर्षक अगित कानेजमे पड़ीव गल
काना अन्न उठ नहि नै आ प्रतिभासँ भरल । बौद्धक परीक्षामें जिलामें

पदा काष्ठानां समस्तैः तैः सप्तमिन्दिनं तस्मात् तैः पौनःपुन्येन
परीक्ष्यते । अथ शान्तिं सवितुः गच्छेत् पुनरागत्य कर्मलक्षणम् । "इति श्री...

इस पाठ का आदिक पंथ एकदम श्रवणका गीतक । बाह्यकी इमान
 वचनक श्रवणक इहने अनेक इहि जानि कहिहयलै ? हयथीकी छंदरबालीकी ईह
 कहेक च पल्लव गायन इहनेक छंद छाय घाम पात उगल फहरक
 वचनक अग भक्त ईहि गेल आंगनम जंगल उमि आयल इहनेक नैच ऊँच
 छंद कहिहयलै एकदम चौड़ा रस्य कर्क शाय चूतन इहनेक । ओ ओही शारे
 छंद कहिहयलै अनेक गल अंगनम ममय नीमई उछड़ल इहनेक आ बतर

मोहिना जिन गदन छल अहिनि छानिनि अछि व मकराणि शालम दम
बिचिअजवाक लल मुह गुल सगहरे त मकरा दुनु हाथे कय मुह जेत- अछि
हेडमास्टरनी दुनु हाथे मुह जेतने सिमामे बैसल छल ।

यकुनल हए आ मने अन्तक गे आ अयत मोहरी जेतने एत विरा
संतह १५ हडमास्टरनी अहिना कूटनतर्म अहिनाइत बाजल "कत गे
धलहुँ" आमा कतहु जय जोग गे गत छे "।

हए एकदम सिंहनी जकी गमकल रही- "बुध रैतल ! अह हए सभक
धरहाफाई कइक राबैक अछि धन जइत जे अ मयके" हयकही जैकक
इलाकाम करैत छी ।

अ कुरती अहिना हेतैत गेल "बुधम जय दूरा कसक क
मकरा मोहब जबरमो कयनि ? जिने बिदरि के छुंथे आ हयकक
मचमसा हाकिम हुक्काय तज हंगइत छति "मनइत सभखी ऊथि
खुबि गेल अहाँक ।"

हए पिच्चम अकरा मुहम थुकि दालक अकि अहिनि जलैक
फर अहिना हंस लयल अइ अनानक वडल हए ल गकैत छे जय
अछि हए हंग स्कूलक धरहाफ आ कान्तिम जय क १५ अकैत छे
महावि जल गेह जौन मुदा गहि अछि जय हागम गेह छे । जय क
दिवाक हए अहाँक नोक गत करैत छे ।

नहि जौन किाक हए दुप गहि गहरे पाकर गहल कइक "मोह
हिना हंग अछि अहाँ क" एदा इजले कयनह १५ अय हए जय
गुकाय के आबि वडल ऊथि गुकाय हा इमई गहमे हा अकि क
स्कूलम गहल हए बिना गेह छी जय गहमे अहाँक जय गहमे अहाँ
कालम गहो मुदा अह कका कानम गहल हए गेह फाँटने जय अहाँ
जे आयल छल से एकदम छुंथेह छुनेक कइह १५ अकि कहुन कइह
अहाँ एत हजम १५ मकरा मोहब इमई के अहल ।

हडमास्टरनी फर निलेज अहाँ हए जय हंग हए हए
धड गल जेना अयत निरुक्ति मीका क जय गेह । मकरा मोहब
गति अहैत रहलह सभ हडमास्टरनी सिमामे बैसल दुनु हाथे मुह जेत
रहैत छलैत

मुदा एक गति अहिनि छुजल १५ जालल जेना अय कय हांगम जेना १५
अह मावई न । जयमे बिदोचक दखैत कइलह "हंगम जय हए छे

"एत गहल कइह फर इमईकय सभक वडाबाबु, बुजिपावी नहि
जय के के सभक नाम ध्यावर नहि अहैत अकि अहो अलग नाम
कय जय गहमे । मुदा एकक य गिज्या मुदा गेह आ गहि नहि छे
मुदा १५ गह बाव वडल अइ स्कूलमे कइल मुदा सभक मोहस गहि नहि
मुदा सभ का गेह छल, छाती ककले नहि छल ।"

आ अह ककालय अह ककग रुचि गेह रहि गल छलैक त हेतियल
अह निरुज इह लल वडल वकल भावक कहानियल त जय गलाह । आ
जय अह अहैत हंगम स्कूल बिदा भल गेह कय गेहबाक चष्टा नहि
कइल । हँसे खुशी अगियाति देलक ।

मुदा अहिना बिदु गहमे फर हाँडम धर गह जेहराफ लाली आ पाणि
अह ल गहिल गह १५ अहल जैकक सरकारी स्कूलम अहिना छल गिद
अह अहिना पहराम जयगह ।

फर गेह गिज्या हाँडम अहल जैकक हाँडम नहि आ धी १५ अहल
अह गेह १५ अहल सभकय उपभोगक जय अहल गेह गहमे हए जय
हए गेह गेह अहल अहल आ गहमे जय बिदल करबाक शक्तिमे गेह
हए गेह । पारिस्क आकरे अहल १५ गेह रही हए

अह अहल जय १५ अहल बाव अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल

अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल

अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल

अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल

अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल

अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल
अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल अहल

मुझे पानक वरुणा १९ अंतिया वहि मन अहल २३ अमरा अहल दिहल अंतिया
आह निकलज ४३ जना प्रदन अमरान गहलहलक कथा करलहुं नहिना निपलहल
५३ अमर पानक बल करेत वं हमरा ई बहल अलि ने मोनक ई बल अहल
प्राय बहल पैत आ नहिना बहल तैन १५ अह ई बहल जवन अमिकरानै हमर
लग अगिधित नहि है ३ अहल अलि तकर अहल जार इकज बां अहल
रहलैक हमरा बहल अलि

आजकल सवित्री जी ? पूरा बियतु ।"

हनुकःसौ नमः कश्चात् वदन्ता नमःसं अञ्जयं नमः करुणं छुट्टि नमः
श्रीनामः प्रणवः पानं नमः हांनः नमः छुट्टि हनुकः परं नमः नमः कश्चात्

प्रणव हुम्का में लउ हयलक सोत जयल हुम्के संग इले रीन
 दासर दिप जाय लपलक प्रगन भाकरी ललकै अरुपै रप्य जय लपलक
 शोला झागी अरुपै लः जाय लपलक छधि फलक सदि नः जय थै लेह
 हपरी ह कपता कुदुलीं ह दिन की गल अरुि हउ लपलक ज क जय लपलक
 अरुपल प्रणवसंग लपलक जय लपलक सलक जय लपलक सलक जय लपलक
 हपरी कुदुली दिपः जय अरुपल जयन जय जय

प्रोफेसर झा भागू बदेन साहस क व श्रम से अति शक्ति के

"ताहो भनन त अपकल जो, जल, अपन धा वनू"
 "मुदा घरमे ते घाबरातो बेचनन क्रोध न भनि अछलैह, हस्त"
 लेखिका ३"

प्रणयक जॉर्जि रॉबिन्सन प्रेमिक प्रार्थना या फॉर शांति करने इलाफिन
जिह जोन शोला काना या लगीतको / प्रणय लुपचाप दुकू तकीन रमम

अप्यय इति चिन्तित किंचित् ज्ञानं दत्तं गीताकृष्णैः तावत् नगलात् हुनकर
 ज्ञानं प्राप्तं तत्रैव गीताः कथयन्ति " एक दिन अहाँ प्रणवक संग भूत इनजाम
 का चारों नज्जलऽ नगला शनैः गंगतिया कऽ १ नरहयाक ओ दूठ बादमें मृत भऽ
 भन प्रणव नई रहल तें को अर कतंक लाक ओह दिन ने भगमं गंगटिऔनहुं
 ज्ञान प्रक बाद प्रत्यक एक रीस हाथ दस नुअ उपद्वैत रहल एक दिन दू दिन
 नई, एस कर्ष घरी ३ "

[illegible]

निम्नलिखित वाक्यों में से एक वाक्य चुनकर अपने दोस्तों के साथ चर्चा करें।
 1. "मैंने अपने दोस्तों को बताया कि मैंने एक नया दोस्त बनाया है।"
 2. "मैंने अपने दोस्तों को बताया कि मैंने एक नया दोस्त बनाया है।"
 3. "मैंने अपने दोस्तों को बताया कि मैंने एक नया दोस्त बनाया है।"

1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 26

होलाक आंदोलन कमोनापन आभिमनय उद्देश प्रकट बाहर आत आया पर
जाय कोन उल्लंघनय बाहर आत आ उल्लंघन शास्त्र पर चलेक किउ
चलेक अपन उल्लंघनापर आ अल्लंघन चलेक अं किपक अनय पर

नुही कचरी २॥ चौधरी गोक आर प्रियकांतक कविधर्म प्रदेन इत्येक जय ॥
 पृथनी औष आ बाय सौकरी चुनक पुन ह ऊँईक मन गलेक ॥ विष्णुक मन
 गलेक ॥ साति पर्वमें बंगी अतो गम्प रहन छन बभूज पुन ॥ य कलेया
 ककरासी कानिथो ब्रह्म मंत्र नंद पथ इत्येक ॥ क्या ऊँईक तुँहमें अहिय कानि
 पति मगप व कदार शब्द नंदि पुन इत्येक ॥ इत सप पोट मुखक मन
 छलेक ॥ ताकक छात्रो तवा पान छलेक ॥ एक गति मोख सौकरी वृत्त
 शिव पान्दिक अद्वयगप नंदि रहन पुनक पुन ॥ पान गति पुन ॥
 भलेक ॥ पारम अह सबतपम पुनक पुन ॥ पद पदने छलेक ॥ बर पमक
 दू तोन समाद गलेक ॥ पुन विष्णुक गलेक ॥ वर रीव कविधर्म बलपम नंद पठनक
 गामक ॥ गोक पुनक ॥ वागधरीक धाम अमिया रनई ॥ गानक ललक ॥ इन वन
 छलेक ॥ प्रणव रतको गोटके पुनक ॥

मृदा अपन बेटी गरी अन्धकार मन्दा रातो पड्यो हुनेक होला जहाँ त
चुन्कि पुत्रहु कपाक खुसबत रहनेक यहाँ भुइनेक = जहाँ बिग्याक सघन
सघन काष्ठीक शक्तिता लगेला = त्यहाँ पन्छा गरी लगेला अन्धकार होला
साँझक उज्ज्वलपराक ओ राति जे पडनेक

आ कुतूहल इतना अधिक कि वह अपने दोस्तों को एकत्र करके
पहले ही "मैत्री" क्लब में आ गया। वह अपने दोस्तों को अपने
काम के लिए एक दिन पाँच रुपये तक खर्च करने से अधिक नहीं
छल। हमें हमारे पिता के जमाने के क्लब की भाँति एक निजी क्लब के
कामों के आश्चर्य के प्रति एक जमाने के क्लब के

प्रणालिकां सम्बन्धित मान पहिलेक आ दुसरेक आ कक्षाये स्थित बसल्लेक
सामिक, "ई तू बड़ भेक क ज कपल मल" कहल जवले एकल अल्लहाय कर्तविक
सांगि पोरिकऽ आकर गूनी होनि नैकिक राक अल्लहाय कर्तविक

कदल चौधते बगनल म्बर मा गलल कौमु उल्लु उल्लुलल अलन =
 कललक बलै छी हमर नलल वल कलल ललक लललल अ अल नल एल कलल लल
 ली जल सल बललल ली लललल " "

[illegible]

इहं पनेक लटल चैथारोकं अंतं कुकि मेधेति आसन्ते कवलाह "हयगधै
अन्यान् मेतः शक्य इम अपनेकं भुस देव ।"

रणज कल्याणतम कहनकनि: "अहकै टका लः हम कौ काब १ घुरवाक
हडि लः घुरा सिरीक ओइ अमहक बुद्धिवाक" जे भीख नौग गुवर करै छन घुरा
सकबै ?"

बन्धन और श्रमिकों पर वहि उठलवि नाँक सभ अपसमने कानफूसकी करऽ
जगल प्रशवके जवा काने बातक ध्यान रहि रहेके ओ अंतितः आवशम बजैत
गल अः घुग सकतै मासक जकरा बजायमे बचि आयल रहिएल ' सपने
पहोचो छल ।"

“बहुत मज रत आब चुम् गहूँ नैकिम भय गेलहुँ तका इ मतलब जे
 ३ जवन तेत से लाकक ओहि शैक” इदल बोधमें प्रोत्साह करैत जोरसे बजायाह

"ई दुन बाहू जइस लो माला कहन छल, बजाक गहाक मधनै तह तरक
न न बजल मुनू शय्यापर दइल छल तऽ कह कहन छल फपरा । ओ तऽ छोर
छल अजिन छल व एमिन बाहू धनाक कारण प्रतियोगक भावनासँ पणाल छल ।
तऽ कह तऽ बापक स्थानपर ऊँचिअक पहन ताम पहुँचि दनिअक जायत ।"

इसका अर्थ है कि यह एक 'राम-राम' का रूप है। इसका अर्थ है कि यह एक 'राम-राम' का रूप है। इसका अर्थ है कि यह एक 'राम-राम' का रूप है।

[illegible]

५७. बाल मुँहसे बहता रक्त अर्धशत आरुद्रन चौधरो हनहनाइत चन्ने गेष्ट
काल नकां मेध आरुद्रन खसुर क्रसुर कौत विदा भल

एषां मते ननु कः किं विदो हेतवः सचि रहल छल कि बंदू
अनेक अनेक मरु मरु मरु क प्रणव कन माकाक्ष भव्य बाप अपन अपमानक
बनन नब प्रतीत हेतवः

गन् ए. आर. आ. पादूनी नर सिंह हरेक लप अफला कक' अक' से
हंगडा हनेक सभक खुशाल होने हरेक पलाक से आ लपले से कनेक
आधी पाव शुकिक सभक बल गने धानेक पैदा गने सुनेक

[illegible]

मृत्योर्लोक इदियां श्राम्य विकार उत्पन्नैः "सङ्का मत्तकान् सन्तः अर्ति
बन्धनं च अङ्क कायय लीनं कने धनं कश्चिद्दार्ता मर्तं च तेन च कश्चिद्दार्ता बन्धनेन
जा गन्धान्ध इहेतु न अर्थात् कान् काउ स्यात् सङ्का लीनैः सङ्का कश्चिद्दार्ता
बनेत् सङ्का लीनैः सङ्का लीनैः सङ्का लीनैः सङ्का लीनैः सङ्का लीनैः सङ्का लीनैः

प्रणाली के अन्तर्गत लगभग सुरु संयोजक ने उक्त कार्य प्रारंभ कर
करने तथा कृते किछु श्रेणी व्यवस्थापिक वृद्धिशील वृद्धि उत्ति
विशेष इकाया प्रस्ताविका का क्रमबद्ध बनाये देन वाले लक्ष्य ज
वही करने स्थिति

मालाक त्वं कृत्वडाडत प्रणविके इस माला मन्त्र कर्त चमे नै
न चमे मल मूद पुनं पुनि नयन मालाकै एकै माला वंलकै अ नै
पुनि आयन प्रणव मन्त्रकै अ अता मालाकै पुद पुनं नहि मालाकै अ नै
आश्वय भा दुख धनैक अकर मालाकै बाक छपनं पुनि नहि अ नै
पानिपकै माला वंल अथलैक मल मन्त्र अंका नैक अ नै कृत्वडाडत मन्त्र
मालाकै अथलैक आ स्वयं कर्तु अ नहि मन्त्र कर्त

“आ इच्छामि श्रद्धां धातुं स्थापयन्ति जगत्त्रयं मुगली तऽ आकारं तन्नि रंति
 धातुः पृथुर्वि गतौ इत्युक्तं प्रात आकार इत्युक्तं । द्वाभ्यां च स्त्रीकं
 आकारं दन्ति धातुः चकार, लभ्यते, इत्युक्तं चतुर्धा लल्लो, “एना अंगना कतऽ
 इति च निरुक्तं । एतत् काले गापन्तो गापन् इति ह्यत्र रश्मादो दन्तिवौ तौ
 तौ चैत कल्पात् पत्न्यां च नन्ति धैतनीक ?”

"अद्वैत जगत् इत्यं ब्रह्म स, केवला हाथसं तथ्यकृद्वा लूनैक आंकर स्त्री
इदं तां ह्यः पदं आदित्यक दान्तेक नामण मदति रैगलक की कथासांस्क अहौ ।"

“नरा द्रैक सुबो” यदि सौक्य दृष्टिः : ज्ञात हयरा पता लागत, पुनिस
नरा ज्ञात ज्ञात सुकम ललोक दरो मऽ तल गैक यदि गुऽ अबध्य हय दारोग्य
हर्निशक आ शोरा सोदुका धिन्त्यौक ।”

"हम दिव्य हैं गण-राज्य जोय बन गेम हैक सः अर्थक गाँसे नहि रह्य ?
 ३५५ वरिहः गरीक सौं भर्जन छाँटेक ? जिलाक मलिक ह्ये आहाँ अहाँक दन्ताक
 विन्दु ज्ञान पजिन्दर उगायक भजत छनैक जे हमरा रुधकड़ी लगाकऽ तऽ
 उड़त ? ज तऽ घन कहाँ मुनमराक दाँसोके लाज तऽ वैह रक्षालक मधक
 तऽ पैस दऽ मोमते छाप कय बैलक, कतहू कानो चीज दब नहि भेल ।"

आधुनिक बहुत कुछ कहकर सत्तेक भुगनीने मुझ लगनैक में बंकार
 लेन काय : अ किछु रहि सुनैक । सुनबो कसैक तऽ रहि मुझनैक अपन ओ
 ... कोसो बड़ैत सत्तेक । एक दिन जाना उन गृहेक प्रणवक त्र पुनःप्राक तो
 ... बदले सत्तेक आर कुली अपने माथपर चढ़ रहल सत्तेक आकर
 ... बने रहल सत्तेक । प्रणव बढ़ जात आ बढ़ माहत्वहीन भऽ गेल छल
 ... राखिये ।

४. कृत्तन चोखरक लरिष रेश आ गहि गैस छनैक सबहक मापन
करैक ए अपमान हुनका गहि पचलनि स्वाशे लल आ प्रणलक भुगर् पाछे
नान इनल पुरिअरिष शक डेबा घर मुट चुनूक पुनहुक आ मालक प्रसंग
नरु जक क रन हुनैक अपमानि डेबल बीघरी हुनफनाइल चल गैनाइ
जक शपथे गरि सरप दैत नैकरोक पैखोमे आयल ।

प्रभाव अवस्था का पता करके और तब तब । यद्यपि ज्ञानार्थ नहि
निराकार अवस्था । यद्यपि, मुक्तता प्राप्त करने के लिए कथन
मूल शब्दों को तब तब और तब तब करके जानूँ और तब तब ?

प्रणवकें काग नरैक आरभ्यो गति चोई । इहा दिनक सुप्रसन्न मन हो
 एक शत धनको आका सल्लन बैक । मुनक शोला गति कदक ३
 अनुमान आकरा रैक । नया कहनाई "रस कवक बई चित्त ५ नन हार ।
 बुद्धि सजाइये घर लाग्य लाग्य ?"

गतिना जतिना करैत बतलैक "सैत बडै लिय । मुदा लुटै उई नरै
 अह गपये रहब आब ठौक नहि अहीक लेल ।"

प्रणव कायमान ईयल शीलक करीक चित्त जैतक से अ गैत
 छल मुदा फेर लल्लैक उहा कवक उमइय म आउर पण्ड हो ननक रा
 एकदिन किशोरा टबाक लेन य बजोन्के आ सल्लन बाप होतै दलई " मपत
 विधिनि विधिकन य गैतक विचार म क । अहोमे गप गलेक फा जिकन
 यदायक छोटि आक स आब नौक जा रकर बह क भेद नन उहा
 काना अनुमान दशन विधना प गलैक १५ ननक बर न भधिकर अह उहा
 विधितु बजो लेलके आ आड कहि नन छलैक "अबो उहा कवक बडै कहुन देन "

असल बान कहिओ नहि कहलैक जेनक । अहि कहलैक उ गति गल
 अपवत्त दशान छलैक कदल चौध । इहा कहन छलैक गपक ३ इहा बगै
 पचावीक साड अकरा वा गलैक जेनक । अ बापक बडै भना मुदा दिन न
 धनैक कि फा रक लुत्तल्लुत्ता ननक इज्जतक उहा गलैक ।

सदल चौध काटल्ल सग छलैक । इहा पूर गेक उहा धी रक
 छलैक । एना १८५ वसन कवक नन अकरा छोट २६ नन हो गलेक

मुदा असल साँस छलैक नूनमा । मपत अले अकरा ननक न छलैक
 मदल्लि छलैक "अहो मनाजनिक । न नर न गति ननक ३ मपत ननक
 लुव नौक उहा नन पकाइ ननक । य गलन कवक ननक इहा ननक
 गपक ननक उ कहु गप गपक लन "क कवक इहा अहि गपक ३
 विधना छलैक । मोर सान थीय पुता भलैक । अहोम कवक ननक
 शान पल्लु दिहम नो थोखाइत के काड एपक अहोम ३ इहा गलन
 कनकुसको आ नर गप गल । उहाप उवा ननक ननक इहा अहोम क
 शरम ननक एना एना पुनम पामकवक या पदन दल्लन नुनक इहा ननक
 कनकुसको आ फेर ननक ननक ।

आ कहन इतिहास जा नरमानकाली दवांज भौह उहा ननक इहा ननक

इहा छोट अहोम कवक छोटि प्रणवक मग रैत अहि तऽ गपम कनकुसको
 इहा ननक छलैक । नौक कहु लय दवांज । एना तऽ कहियो न दखल न
 ननक । मप दवांजक अलेत अहि दवांज प्रणव ननक वैह बेट जमाप होनि कल्ल
 चौधरीक आ आब काजाक बाद कोन लोपये अटकल लैक ?"

प्रणवक ननक ननक अह कनकुसकोक अह पसरैत व्यापिक रोकबाक
 उहा ननक छलैक । अकरा अहोम तऽ अहो दिन ननक जाहि दिन दवांजो अहो
 अहो ननक छोटि लल्लल्लन "ममप दवांज भाया रखै छिएक । एक दिन अह
 अफासिक कटिखमे पल २५ एपिच कऽ विध ।"

सुहा छिएल अहो आ चिकनकै मुदा नहि बान कोन भूत सवार मऽ
 गलैक- "बेश, कल ।"

पुन मग अकरा अहोम आबि गेल प्रणव । इहा उहामप कयलकै
 ननक ननक अहोम कल्लु न कल्लु अहोम रैत लैक मनुकल्ल । एकरम
 कोन नहि छैक । मप पतिन छलैक । मुदा मोनमे कल्लु एकटा गरी छलैक ।
 ननक छलैक, स्नेहमको छलैक ।

मुदा अहोम मग सगले बुझि गेल प्रणव । प्रते मेने चरकल्ल छबि
 ननक "दवांजक नन शिकार, जिलाक इकिम ।" छबि प्रणवकें शील
 ननक "कहि मनुक अहोम गेल छी ?"

प्रणव अहोममे मुदा इहा दलकै शोला हँसल कहलकै "आंछा
 ननक ननक छोटलक पण । लिहमे नन जांझि सैयक ।"

इहा ननक ननक कहु ननक ननक उहा ननक दुष्टपूर्वक हँसल ओकर
 ननक छोटि छलैक । ननक अहिना दुष्टपूर्वक कल्लकै- "इम तऽ अहोम के
 ननक । एक दिन जे खोरो क मदाय नहि छै हय । मनुक १८५ विध । अहो
 ननक । मप ननुकल्ल । ननुकल्ल अहोम लिहमे नन जांझलक से तऽ इहा
 ननक छलैक ।"

इहेन शोला मप ५ गलैक "मानै छी हमहुं पष्टे छै । बडका य
 ननक अहि मुदा मपमे इम तुलना कऽ एना मपम नहि कल ।"

प्रणव इहाइक बोचम रैकलकै अकरा "आब तऽ अहोम होसयो
 ननक ननक अहि । अहोम तुलना कल्ल कलहुं इम मनुक मप ?"

इहा शोला नन नहि ननकै कहिन गलैक "तुलना कल्लहुं तऽ कोन

पुण्यक प्रथम किन्तु काल अक्षक काले वैकल्पिक अथ शतक = १०
दश वर्षीय एकदश बहलि गल छलैक अथ शक प्रथम सय साल छलैक अथ
सौव मल जाइत छलैक अथ शक शतक प्रथम अथ शतक कल प्रथम सय साल

उत्तम अस्त्रानां ज्ञाहिना सन्नैक वैह धरावन्ता भद्रक ज्ञाहिना रंग सहस्रं

विद्यार्थी अपने घर के आगे निकलकर पाँचों ओर घूमने लगे।
प्रणव ओड़ीया बैसि गेल । बड़का घोर जाला गनैक दिशामें छपल वन के न
रहलैक दोलामे । राम बिसयबैठ सबक भण्य बरि जलनगे बुद्धिग करलैक
“हृदयम बौद्ध अथवा है तऽ पहिने उठ बुद्धिगक भिन्नक वन गरा जलनके
सुओली धर धरिंके उठ आठ लोख ठगयो हो गेलो तऽ चक्कर दू फाटल न गेलै

६३-इन्द्राजक बुद्धिमात्र के दोन बरिह हउ मुदा बुद्धिमात्रक मऽ आ लल पानी संगे पलल लउ । चरपरि जल ले है दुगा खेतोक काम कया चासिया-तिबासिया एकको दुकांथया बं दे है आ बड़का लता है मुनसरा देवीजेक संगे हवागाडोमे पुरा से ठहि जल है बुद्धिमात्रक मुलत रागनवला काई बरिह दे है । दे है जवान सकलोक । आन हउ अडाले निमसक करऽ पडल हाकिम चौआ ।”

सिंहय तव सकलौ मुँह बिहका लोभकै प्रणव स्पष्ट देखलकै जनमरीक
दुनु बचक औसि राग गेलैक दुनु एकके मांग बजलैक "बुधु रह तौ

मुदा जलमरी गति मानलकै: "चुप नति रहबोक हय लोक मधमे माज
हइ हउ आ अइम नति जाज हाइ हउ व बुझिया अन्दरी माय टिनही बाटो संले
छइ छइ पीस पीस हउ ? से नै देखै हउ टेलस आ मायक लोक ?"

इति ब्रह्मसिंहप्रतापः शुभे शुद्धे शुद्धे । ज्ञानेश्वरी पद्यः निरन्तरैश्च प्रणव
शब्दः उपलब्धः "ब्रह्माणि ब्राह्मणेन चित्तवत्तु आत्मने चन्द्रो न सत्यं है ।"

प्रश्न कहतकै: "को कहियै इस ? एतेक लेक लौक टोलये—
जड्डा राजा नयो ग्रीहण लाक मथ आकाश मथक" भावि नहि हाइ तैक ।"

तन्त्रमर्षाङ्कं" इति मन्त्रं पाराशरान् अग्रे व्यस्यैकं "वाह्मं महौ नः
हंकरं नः बहकां नरां हं हमं तन्त्रमर्षाङ्कं बहकां सधं नृपं तन्त्रमर्षाङ्कं
नृपं तन्त्रमर्षाङ्कं ।"

“तंहे शिक्षाफ ” प्रगव कन आशचवंसं कहलकई ” तंहे शिक्षाफ
 “कल्ल -फ कनक दूध तऽ तां धुं तेल अत्रेल रहुं रांन्दर नहि मानलक बैसा
 भयल । कथ्यो तऽ आपन बैयक मण करैत लल ।”

श्री श्री लालक गणेश आ मुद्दगर लालक गण करैत छविऐक । क
 गण लाल आ मुद्दगर लाल दश टोला १"

इसके बड़े भाई सिंह वल्लभों बाबू उल्लूक, "सूते कहते हैं टाकिम
का अर्थ है। अन्त एकल लोहिक। टोलमे की सीसे भाषण दोम नामी लोक
हैं। बड़े नाम उल्लूक है इ मुनसरा हमरा सभके किमबास बहि हं तऽ एकर
बड़े भाई सिंह लिखीक।"

चुप्य छै जेतयो ककरो, गहि तऽ बेजाम बाल पऽ जेतौक । अह-कालि
 न रऽ अहह केरऽ सभल छै । इनप सभ खाबि रहैत है । मुदा तोरसँ हम बादमे
 कऽ अह कहल जाकिम टोलमे आवल छथि, इनकर खाबि कऽ रे ।”

[illegible]

मनुष्य प्रकृतिक है तो "अज्ञेय" जगत् कुछ है इतना मात्र
जिस धाँ में वह राजधानी पाये वह "अज्ञेय" प्रकृतिक है।
अज्ञेय प्रकृतिक है तो जगत् का जगत् का जगत् है।
अज्ञेय को जगत् का जगत् है।

प्राण कर्ता नहि कहयके "पुना नहि यगदाह पुनै न ठि भवत
आरि भवैचका इह एकैत भुगारि वरि" सुनत नमज्ज ब्रह्म इह यगदाह वरि
वतवैत छी तकर मुखरि बुझय-शर्मि यगदाह नहि भवत नहि भुगदाह वरि
कोना कर्क नहि भवैत छकि हमरा लेल ।"

पुष्पम अतिवर्धमानं कलशायै "सर्वं दुःखं यदयं वृद्धायः । पुंश्च
तमस्य छांदि एतकं नृणां चानेकं कथमपि नृणां कलशायै" शब्दः कल

पणव उठै कहतैकै: "निमन्त्रण होत बनसार । पुरा उठत हम उने
 ली । ओहिना समकै" देखत आवि होत रही ।"

पूजाब बहिन पुरिकऽ विद्दुऽ ह्यंयऽ लणस, फलंसरी बुद्धिवा लणम
विमियवैत जाट लोकि लेल्लै- "हमर निस्सक ह्यकिम जौया ?"

पुण्य संकषका मेला १ फरर अस्तसै कहलसै- "हमरा समा कर ।
अकि नंगा यो आपम हय जिगु के नय नकन कहलसै वर । अउ कप
गामक देव पैय नाक अउ कप के नय नकन कहलसै वर । अउ कप

[illegible]

जलसरोवर आ आल पानी लाकरी प्रवाह लाई अन्य स्रोतों से पानी
पुरा । पानी जोड़ने बरसे इतिहास करीक, कतक इक्लसों गलकरी इतिहास
काल करीक । मुनेसर यह सोमपति पदवी मदीक, बाज एतक दूरी से पदवी इतिहास

चिन्तित शोभा दम्बजेषु गच्छेत् कलौक्य दाम्बजं यो ह्यत्र ज्ञातव्यं ॥

बल गल गले, हां कहे छह छह कौन छल भनि जनि की सब कजा गल हमरा
मुँहमे "।

पुष्पलोकं^१ जस्य पटनैक ।

युवा प्रणवक वयवामि पाहिल अर्धित आदि नभैक गाम्मं धां धार कुली
मूल्यं नय रुद्र कर्षक भान्य इमन्त आ र्चनल अर्धित प्रणवक कर्तजा नहं
काने किएक अमरंकार्य कौपि रुद्रकैक ।

पक्ष सुनैत अभितर्क" उतनैत प्रश्न करानकै: "हम तऽ विदे सऽ रहल
इतई अइ । तै" किएक अयलै ?"

अस्मिन् साहित्या प्रबन्धतापसक चारुकात् विहसित फलसकैः “बाबो नहि
कलकत्ता । एतक दिन लागि गेल सय एकदम चिन्तित सऽ वसलीह । हम कतबो
कलकत्ता सुद नहि माननानि । गादीपर कदापिभेकड सैन भेगोह ।”

प्रणय किन्तु नष्ट कहि सकरीक आगू । अमित एकदम तत्साहस
कहोउ । "तौ नौक कइतनि चली नहि परावर्तित । त. १५५ पौनौ रीतिगतहुँ अं
कल अं कल" अत्रोक्त शब्दों में, चित्तार त्यागत हमरा कलक बां बाबो कहने
रहने । शब्द अल गाममे तहाँ यैत खो, पड़ैत रहो । "

प्रश्न पूछते हैं- "एक ठाँव और चित्तम लोका लयन लक्ष्मी"।
 "एक ठाँव और चित्तम लोका लयन लक्ष्मी"।
 "एक ठाँव और चित्तम लोका लयन लक्ष्मी"।

प्रणव अन्तर्से जन्तो अस्मितकं भीतर हवेली लऽ बाध चाहैत जलन ई
अन्तर् लल शुभ नहि लेक । बांछल बा जखन मनमे आकरा देख्य अखल
नहि लेक । नयन लग, लऽ बहुधा बाण्ड पैल रहैक । नाना बाह नहि छपिय मुदा
अन्तर् फट्या बिससल नहि ठहैक । कहाँ यद्यो बिनिह्ये जाइ ?

इस प्रकार तब जल्दी ही भीतर हथेली में तल हांला ओकर संग एकटा
 "नकदुवकक" रंगि लकचका पानीक आ घुरिकऽ घोर अपन फांतलो
 तल कानेक, "अपन हौत कललक" "एरा पडाइ किशक छ" / तल नाबयौ मोद
 ना लोके । अघितक" नहि किन्दलिसे ?"

पूजावा किछु घण्टाक भऽ गेल । सोखैयन एनक 'ब्रह्म गौ' अउंछ अहाँक
अनचाकसं जोगिछ मुनि नच आ नच यमुनै छुटै । सपरा धोरा नच हानै देव
हमरा लोकाधिक ?"

शौला सेहो किछु कहऽ चाहेन छलैक । नचन अर्पण छुनि अखनैक
झलफम जन्मर भऽ गेल छलैक । मुदा सोला भयक सुइम जन्मरन नहि रहल
छल । अमित अचित छलैक । "भर रहिना अकरा रहत थीम ?"

सोला झर लालन लालनक । अकरा ओकरा भोग बैसि गेलैक मनसाभये ।
पूजाव दानापर चल गेल । अमित छड प्रमल भाने । यम छलैक । ओ गेलैक । एक ठो
छ सुनताहो । दौडलाहो बातक बागमे दूछ लैक । वरन छलैक । जग एकदं विनय भयक
सप गेल दूनि कऽ छलैक । शौला प्रमल भाने ओकरा जेनायाक । गलत करै छलैक ।

मुदा भनि गलि प्रमल भाने अकरा हलैक । भऽ नचन पूजाव चनचन
प्रमल भाने छलैक । अमित गलै नच भनैक । "अहाँ कहऽ छलै । ताहो नच आ
हाइवतक । हम इनसै चन अथर । दू बारि तिन दख । दिवऽ । सैक नच
अछि । दृष्टिमे अछि, दरमगो नचक को करव एखन ?"

पूजाव बड़का असमंजसमे बाँध गेल । ओकरा लैन झा बेसो नच
असंभव छलैक । इतक दिवक बुझाए नच चकित हनेक । ओ छनि कहल
काना छुट्टी रहि लन छल ओ । कतक का समय कहलैक "चन कोर नच
छुनि जाओ ।" मुदा पूजाव घबोके ककरो भन प्रमल । अरन काजक बहाने गेल
जाइत छल । आश्चर्य हलै स्वाभाविक छलैक ।

मुदा पूजाव लोकाक अउं आश्चर्य नच चितित रहि छल । ओकरा चिन
अमित लैन छलैक । ओकरा गधम एकदं कान छुट्टि नचक ? ककरो कान ?
भऽ जाइ । ओ जखन अमित अरन गधम दू बारि दिन गधम रहऽ चाहेन छलैक
तऽ ओकरा रोकाबी छैक नहि छलैक ।

ओ निगम लोकाक व ओकरा एकदं किछु भऽ अदृष्टिक चोखक । अरन
पाछी आबि जयनैक । ओकरा ज्ञान छैक । ओकरा विनय छुनि नचन रहि । ओकर
बजलैक "अहाँक एतक समय दानक कान हय गधम हैत से यत रहि । खन
एकदंका खेने जाइत छी हय हय संय तऽ किछु अछि नहि ।"

पूजावा किछु विद्वल हाइत कहलैक । "ओ किछु अरौ हय नहि नच
बाद देव लन ससं किछु रहि बैसैत छैक । हमर चहवा नच नच । इतक नच

हने । ओ कहव ज गिना लिखाव भऽ नचन आश्चर्यकता हो नचन क । ओ
हम असंसे आयव । कसो ऐकि नहि सकत हमर ?"

पूजाव लोकाक विनय भऽ गेल । ओकरा लैन नचन गधम बैसलैक तऽ
हो नचन लैन नचन दानकबाग हाइ भऽ गलैक । ओ आश्चर्यमे तगऽ लमलैक
तऽ नचन गेल । हय हाइ ज ओ ओ रहल अछि । मुदा कस ओकरा विनय
काज नच ओर नच वरनैक । ओकरा गेल सपरागत गाधम बैसलैक गलैक ।

ओर दिव जट प्रमल भऽ एकदं चितुरी भनलैक शीलाक पुजारीक माफत ।

"अहाँ भन कथने रही मुदा हम बिद हऽ लेलहुँ । अहाँ तऽ सभर
अमित भऽ छलै । तऽ नच हय नच । हमर जिन नच भाने चाहेन छल अहाँक
अमित भऽ नचन किछु छेदलैक अहाँ ? बड़का कायद भऽ गेल ।

पूजाव अमित छलै नचन । सभ अरन बीआइत किछु छल । तमहुँ प्रमल
नच । ओ प्रमल भाने ओकरा विनय अरन कऽ दानक । भऽ हय भौमो कान
नचन । ओकरा नच छलैक नच । ओकरा अमित भाने तऽ अहाँ प्रमल भाने
एतक गधमो छी । तखन तऽ अहाँ पौसी भेलहुँ, मौसी कोन ?"

पूजावा हय काँह भऽकत । मुदा हम होम कऽ कहलैक "तऽ
हय पौसीमे कह हमर । मौसी आ पौसीमे ज्ञान अंतर छैक ?"

सभ दिन हय दान अरन रहि कजलक भनि । मुदा हमर लोकाक ज्ञान ओकरा
नचन नचन नच छलैक । ओकरा भन ज कजलक । ओकरा गधम भाने नचन ।

ओकरा नचन हय अरन छलैक । ओकरा दिन अमित एकदं आर विनय अरन
नचन । "पूजाव बिआइ कतऽ भन छलैक ?"

ओकरा नचन हय अरन छलैक । ओकरा नचन सत बड़ भुजानुव भन
नचन । अमित । नचन विनयक इतिहास छैक छलैक लोकाक ।

हमर लोकाक सौख ओ चल गेल । मुदा हम सभर देखलैक । ओ हमर
नचन नचन नच भनैक । सभर जेना किछु छुनाइ नचन छलैक । ओकरा
नचन नचन छलैक ।

ओकरा नचन नचन भऽ । सभर जेना दानकबाग भऽ नचन भऽ रहल
नचन । ओकरा नचन नचन भऽ । हमर सौखकऽ दानकबाग अछि । ओकरा
नचन नचन नचन भऽ । हमर सौखकऽ दानकबाग अछि । ओकरा नचन नचन भऽ ।

बिनाश नहीं करण। आब हमारो को बल जति गल अति में एकदरे जस मानन
रहित सकी सभहक बदला लऽ सकी। महेन जति गल होत हम गजमे ज लबाकी
हरीक से लाके पंजाबक

मुदा बिन्ता अमितक सन्नि सप्पु युकि बुझि जिउ रहवक वचन भनि
भेल छैक कतहु यूटिक जिविक आ न जय अलैन जसाम छै अग साधन सन्नि
ओकरा समि क ओकर गसा कांरदक अउकर जय कोनो यत्ति नहि छैक जे
अहिक बंदा भनि ।"

चिह्नितो यदि प्रपञ्च जना मुनि भवः पलं बहो कालवर्षी चिह्नितो मनः उद
रहि पलं मामो त्वग जगति पुष्टमयः "की धनै" अमित कहिछा मायत ?

अपने चिह्न को हुक्का हाथ में २५ दमकानों में रखी पकौत पकौत आती है
और गोल धन धर्मिक धन २५ गोल धन २५ पकौत धन आता है नही धन
आता है चिह्न धर्मिक धन २५ गोल धन २५ पकौत धन आता है

फुर्तमै बाज़र भिकलैत अणव कहलके "कन पानीके" देखबनि पुठाने
हम सभतम सूचन देल किएक शहरम हैब तऽ अबसो घनि जायत हमरा जीव
दिहऽ, लखन जायब यहाँ ।"

मुदा खीयर पुर्जातो बेहो दिन नहि ठेके समारोह । सभ दिन मे
कहेक "आप हमरा अब आप दिवस बेआ शाना राख एकसति बेउल्ल हैनाह
अमितल चिन्ता आ दुश्मन सौंस गल ।"

मुद्रा प्रणाली के लिए लेख "संत पुत्रों ने" आई एन एन के लिए, बिना
अधिकतम समाचार लेने आयन के। अंतर्गत हल में आने के बाद यह संभव है

मुदा दिन राति तस्का हर्त कौन प्रणयक अपन हानि खगुन भः गलैक
अमितक काना पता नहि छलैक प्रणयक आसका बदेन गलैक , जहः अति
अशान्त छलैक हडताल तोड़ फाँड़ आ अनशन , स्कूल कालेब बन्द दूगमनक
लेल चिन्ता आ शाहूँ कपर अधिनक लग नहि जानि जान छप छैक , ऊह
काना उपद्रवकारी वा असमाजिक तत्त्वक चागुरमे न खन गल हौं ! आकर मनमे
स्थिति ठीक नहि छैक एखन आ किछुअ कहः सकैत जहि

गङ्गा ओंकर गाय पन्था धर्म प्रवर्धन कर्त्तक । आन्दोलनक कुचावका
इहो प्रयत्नक जल्दवा आ जयपूर्ण प्रवेश कयल आ ईशान सत्तेक आन्दोलन
अन्तर्गत आकर गुन भन्बय आ आन्दोलनक साँकर सम्पन्नक खबरि सभ सभ
सिन्धु पन्था सदस्य दित कर्त्तक । ओकर बदलाक खबरि सभ दिन कार्यालयमे पसरै
कलैक । मुनसर यसवन एम.एल.ए. सक्रिय कलैक ।

आठ दिन इकबंगलासे बंदका कापडे धु गये। एकटा पंकी घटादम
चलन साथ गलियारा आगतक निना आ आकर चक्करुं आ हुक्काई मेट रहि
हु इच्छां मं म्हादयक इ समान लगलिन भई धोनापर अथगें मुक्ताचोनी
क लगान्धन शिक्कः न्यासकः प्रथित किछु काल चुप्य रहल फिर गंई रहल
संयः किछु सब्ज दलकनि कि मंत्रंजा छडगलाह "ठाका कहैत शीखि शोक
हह एक सवत्पूर विनाक प्रहामन अहकै हथिय अछुब घातक अछि "

इसका केंद्र कृष्ण गांव गलैक कहलकनि "घातक आ नुकसानदेह आर्षा
कपड़ नन हन नरग पक का जल्लि २३ जिला गति तऽ दोसर जिला अर्था
अन नद न अन हाथ गल्लतयलप निन्ना अपने न्याकगक करवाक चहै
अह सनारुद कल्लि निहू नहि ॥"

पञ्चोक्तोक्तं कावर्षे पुष्पकारितं खेतिः अतः चाल आयात छल । बादमे
अथ च अनेक अर्थान् आदिन भय भिन्नाति लोक नहि हलैक उपरसे ई दोस
चाल अर्थोक्तं पुष्प किन्तु नाह वैसाधन अथवा कावर्षे भोग्यम् ओका
चाल निश्चित छलैक

सुखं जगन्तः संतो जनिष्युः ईशकः दक्षिणं त्रयतीकं एखव तः पुजंगरी
नन्दः सन् अत्र दत्तं चोदय हस्तधिय आ गामम शान्ता अन्तसासे अधयरू पन्थ
नन्दः । अनितक कांची पत्त नहि सुलैक ।

आ याभियको० जेना दोन दुनियौको कानो पत्र नहि छलनि । छोट दिन
लेनक एउ पांडु ज बरान घनाक न चहने सप्ताह जागरे ओखि खुजेत छलनि
एन करन निकत नहि कौन छलनि गुपगुप पहल रहैत छलनक उतिक
जुन कन छलैत छलौइ नमपात्र लेल किन्तु अहतर पेटम काइत छलनि आ फेर
लेनक गुपगुप रहन गहेत छलनह ओखिक एकटकी त्यागन जेना गुपम किन्तु
नहि रहन तांथि ।

[illegible]

पुणव राशी ज्ञान कहलकै "सुकर शिवाक हई" कै तऽ ज्ञान भइक
पर ठोकाइ करी दिअै तऽ। बिगड़िक छडकल छै, अ हेम तखन जैयै एत
करथ "

प्रथमतः आर आकषक आ विच्छेद भूत पृथिवी पदार्थ वैय मल्लिक
गह्वी श्वाटं करोत प्रणत पुनतकै "किम्पु नः चनु मैदम "

प्रगतिश्रवकं दृष्टो लग्नैकः "कानि दिन कौघत श्रेष्ठान् भाषन्तं जः"

पुणव नकलें गजालें काहजे "अ दक्षिण भाग १७६ पृष्ठ १२"

मणिक जौहिया हमें कहते हैं "साहब जाते बाग बंधन हान एक-
चिह्न लिखते पथान ना किड़ने काबार अहम कायम राखेन"

पुणव पञ्चमौर प. गेल मत्तं बहू ऐत अग्रज्य धः ऐत ऐतैक अंकगर्भ
एतंक दिन धत्त धर्षणकः पुष्पकी गति कथलकै ये काय हल्लन ऐक । मणिकज्ज
उलहन जाजिबै ऐक

नांकगण गद्योः हाइत टंठि शणिका सजिन मदर्न करैत कदरकै
 ५ राग कोकिल ३ खम करुन अशिक ३ राघु उदता करै लो अर्ध किनु
 कांखेन न ॥

पुणव जोकर बाइसम नकि वरीके "कहज मरु / लीं कल शू नर
फहलें समपरी नकि अपनस भन लीं मरु क हण" एक जिय कीं
गसो क ज़ा हमा लीं लीं नालन मुद नई वर अम कुरनै हमा निरुद =
नकि भिखलें ।"

“आमी दापो पब्लिक कान्सेस कितु आग्रहचै मुब लिखत जत
अनक बय लिखत छै कितु पावत जालास न कन रात पद हावत छै
छाहूँन स कथा आब स छब मान हस्तुको नी कनी संसने एत वही पद
दिन मात कितु मान हस्तुको ना

[illegible]

मालिक, श्रमिक, किसान, मजदूरों के हित धारक, आप भी इन सभी गंत कुल के आ
दरक बनो इन गंत, हम न जानें गंत न एकका रा राका, उद्यान पैच भट्ट
निकान ८, गंत, जिहा कुल के ह, किछु किछु भट्टि करत कुल के मुदा लगे,
जानें गंत लगे जाइ, हट्टि ककरा संग चल गल्ले बगवान आश्रम अंगरेज रहत
हल्ले भट्टि ककरा श्रमिक भट्टि गंत कुल

[illegible]

एहो लुक्क चिन्ता बहिर्गत नैक दु चरि न उद्योगनिक अन्त धर्मिक
अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक
अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक
अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक अर्थिक

[illegible][illegible]

गैर-हिन्दुओं को इस विधिविधि में गैर-स्वा. पी. के. पी. वि. के. पल. प्रणय
 केन्द्रों में आकर बैठना सन " "

संकाशक: इलाहाबाद स्थित दुर्ग फर अध्येत बाबल "हर चल अग्न रात
फर रात रात दिनेक फर कांता हांटेले कृति जयन "

आ: पीकः लग शेषलैक मणिका २ पुस्तकै "नो एहिना रहै यत दिन
एकसर १ बिआह कः ले "

मणिका हँसलैक "बायो सब दिन मजी किन्तु काउके पेलाम न को
राजी हालो न बाँधेर खातिर ।"

पुणव गम्भीरतासँ कहलकै "हम हौमो नहि करै छिछोह । के, मय
आब बिआह कर हय ताकि ईन छिछोह ।"

मणिका ओकर स्वरक गम्भीरता आ अकृतिक भाव देखि टकरकी लग
क्षुब्ध रहि गलैक

पुणव ओहिना गम्भीरतासँ कहलकै "हमस मों चल गेलजो, ईह
एकसर छै हम सम्झावे ने समझ हमर लग रह । इस नहि जाँख हमस क
तो चल "

मणिकाक आँखसँ घटघट नीर खुसः गललैक

किन्तु बगलैक नहि खुली कसैत रहलैक । पुणव फेर जवन हय
दोहरीलकै

महान कनिं बजलैक मणिका "कान्को कसै मन दिवडन आगल
किन्तु मे ही जाणी करत पावे आँखी के अमो जानो आपन हाँकिनो जग
जानो । आमां जवने उ आपनो का क घालोवायन जोलकै जवने कानो हिय दन
नैह किन्तु जानो ज ओ जाफला कत घालोबाम । आपनो अराध दम

जग नहि मुनि सकल पुणव फेर छैह रक्तव बाँधय छल छलैक
मणिका ओकरा लग नहि रहलैक "अकर दमक" मात्र चक्रेर दम आ भजिन
मानलैक शोला एक दिन ओकरा पुनिप्राथक हय कहन छलैक "मे रहबक ले
प्रस्तावकै" जसवीकृत कऽ कानो अजकार बाँधय ज जवन सब किछु मुदा नहि
छलैक मणिका सब किछु पलाकऽ आपन हठ धरने छलैक जब जे ओ
परापर उह आन्य-विश्वाधर्म भरल ह्यो छलैक मुदा ओकर प्रपक जग सब
नहि करलैक । स्वोका करतैक ओकर दयल । मुदाक रूपम ओकर स्वोका न
करतैक मणिका नहि ।

पुणव हँसिकऽ हजबह चेत्य कहलकै मुदा स्वर नहि कनि किछु जे
मेलैक हकि हकिऽ बढ कससँ बढमलैक "तारा लोकोने मय किछु न

कोन छै ३ हमर जे अस्वकार छैक एकठ मुठ-मुठ आदरक जह किएक
कर छट्टह छैक व हम खुली शोलसँ प्र करै छिछोह ताँरापर खुली हय दम
नहि शोलसँ सुन्दर छलैक ज हम दू बाहनसँ घुणा करै छिछोह हमर प्र
हँसलैक एकठ चटलत हय जकि मुदा करैत छै दू जे ताँरालोकिन हमस जंगर
नहि छै । सब-साफ किएक ने कहैत छै २"

मणिका कोउछिपे गेलैक कहलकै को बोधका / को सुनत चान आपनी /
जानो को जवन न छ

अग बाँझ रहि अस्वकार जो को धरभट सोर छिछोह सगलैक आ लपट
हय "मेक पुणवकै अरनापर नामस मलैक । एना किएक भेल जाइत छल आ
अना साबान कऽ हन छलैक अकरा समय ज अपन छलैक मुत्सीक स्त्री
हुँह जे ओ शोलसँ एहन बने लिखि आयल छलैक । स्वाधामिनी हँक शोला
हँह नहि टक्के फेर चिह्नियो नहि लिखलैक मणिक आब मणिका कान
पल छलैक ज ओकर फाँटय हय गीत कहलकै "नहि कान मणिका हँसलै
३ ४ मय अस्वकार पुनऽ कयलहुँ हय "

आर मेलै हनि जहलैक मणिका जेना अरी अनुचित बात कल गेल
तऽ अस्वकार जवन अजगर कान पलैक । रह आइ जहलकै गजबाक
जग जेना उल्लेख पलैक राध जेना पुणव किछु काल बाद कहलकै "उत्तिक
हय मे लक सब जवन चाह "

हम जे मणिका आज गिसने बैसल रहलैक अकरा बगल
जो ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

जग एकदम देखलकै ओकरा शरतक गने आँतिना महान महिन
नय नय जेवजवमक कानो धन नहि छलैक स्वय विश्वास आ प्रेमक पुष्टि
हय जेना छलैक मणिक ।

पुणव दम विहा हट्ट काल पुणव कहलकै "निखुई मणि कोना
हय अना बड नहि न" कहल नहि छै मय एहक मेल रहिछै "

गोका लागत हैत हने जैन छी । हपारा वहाँ आर क ई बल कयन
मुदा आर हपार कोन काज गँहे अछि गयने । बाँका दिन कतहु उन्नावक हपारा
कदि जाय सैह इच्छा अछि । तेँ गाम छगँड रहल छी । जँहग ३ दर अरौके
भेटल हम गाम छगँड आ बूकल रहब । अहाँकेँ एकटा घा-इन जइते छी । ओ
अनिमो पयम एकटा भार दऽ रहल छी अहाँकेँ । आर काँडछी किहु ६० नहि
सकलहुँ । एका गोगर आ किछु छला नहि तुम्हा भग ।

समय सम्पत्ति आ हवने अमितक नाम क, दोनोकेँ समय करन पल
रहल छी । समय आकर छलैक अकरा घण्टे अछि । उहाँ बताई रहि बूझ आ
भुक्त अबसत भुक्तिक, आसल अहाँ नग । सारा पूर विश्रवस अछि व अहाँकेँ दू
आ बँवो दिन रहि रहि सकल । जाकय अहाँ नग भुक्त पड़लैक । हमर अन्तत अहाँ
ला रहल अहिवा अमित भेटव । दवेक ।

आइ फेर आ रहल छी । एक बँव गन दूरो जँहिया दखल फल छल नग
आ हमरा अपना नहि दूखल छल उ अहाँ कद । छे इपर घालत । टबनो कदक
गमनू तऽ बूझल छल । खुली अहाँ ट छ । हमर विश्रवस दानर बँवो नहि अहाँ
तैया छोटिक, चल गेल हो । अपने धरम । आइया खालो अम्हने हो जँह
इश्वरक शरण आ रहल छी । दू तैक हो अल त जाँह गमन खालो बँवो हो
हो आइये ईश्वरक शरण हरनि ? अहाँ प्रघन करन हमरा नल उ हुनकरे हम
मेन समथ ।”

प्रणव मध दिन प्रधन करनकेँ नामो नन ।

मुनमरा फेर पलैक पठनग । बड़ पना भटन छलैक । अम्ह विश्रवस
पानी लग पँह भल गँहक । इगतक बधायत होक । अम्हने छल वैतन नल
अम्हन बड़पन देखैवाक लुब चष्ट कयलजै । दू गणव भन्तु अम्हने ।
पठनजँह काजक गय कर । आर कानन । मुनमरा फेर तपन । अम्हने
अकल करनजै । पठनजँह खाल दाम छँह हपार ज तँ हपार बालक । जँह
दलियनि अछि जाब हो । कोनो बँवो नहि कर । उ हैकक छलैक न य । अम्हने
आब तोर कोन निधन होरान नहि कलैक । हमरा जाकय आइया हलैक । नहि
भय छी ।

इगतकेँ हपार नहि छलैक । पैरा बधलि रहल छलैक पठन । फेरस
नल अम्हने । अम्हने छलैक । अम्हने दिन-मागल अम्हने अम्हने । रहल छलैक
मुनमरा जँह बधलि नहि दऽ चल आयल । भुक्त बाहर अबल कात नगलैक जँह
अम्हने जँह बँवो हन छलैक । अम्हने अम्हने शक्तिहोन नहि पल छलैक । अम्ह
अम्हने दैह नग । वर मुँहग लोकर मध शक्तिवान छलैक । अम्हने अम्हने अम्हने
अम्हने नल । अम्हने अम्हने क बूकल । आब फेर पँह बरख भँल निश्चित छैक
अम्हने । अम्हने कतहु एक दिनमे मुनमरा अम्हने । दाम कोनो लगी कर्म
अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने
अम्हने अम्हने अम्हने

अम्हने आकर नलैक अम्हने छलैक । गाम घाप कतहु बढलैक
कतहु गँह बढलैक । दूरा बाँका मध दैह । वेह चहल दैह नाक खाली
नल दाम । वेह कानो मुदा दाम अम्हने । अम्हने अम्हने ? अम्हने नीक
अम्हने अम्हने

आइ दिन अम्हने बढायल छल कि अम्हने दूध अम्हने भौक ।
अम्हने कतहु एकटा छल नल अम्हने छलैक । अम्हने फल मध छलैक । प्रणव
अम्हने नल अम्हने । नल अम्हने धा नल ।

अम्हने आइ दिन अम्हने आ अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने । “कोन मध ?
अम्हने अम्हने अम्हने ?”

अम्हने दूध अम्हने अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने छलैक, पुरा अम्हने
अम्हने अम्हने अम्हने नल अम्हने अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने अम्हने
अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने अम्हने । “अम्हने अम्हने अम्हने
अम्हने अम्हने अम्हने ।”

अम्हने अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने

अम्हने अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने
अम्हने अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने अम्हने ।

अम्हने अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने
अम्हने अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने अम्हने ।

अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने
अम्हने अम्हने अम्हने । अम्हने अम्हने अम्हने ।

"आ आब सपन देन हउ मपदिन जहाँ आप जन बचब रहल
देखिकउ साथ जैत अहाँक" ।"

प्रणव हैभलैक "न" गहि बिजनेन हमार आँखि हउ जे कोन
चञ्चित छलाह आ मायो बुझबोन भिसाओन करैत छलीह । सपदिन हम आब
भरिस गयेन हउ कहि पा लाग नहि भल अहि जगपुवक नपनि कइलिहैक
रहि हउ नाना नामे हउ अपे काय आइय कइत छिहैक "न" उत न-बने
छै" ताहिप कान लइक सान गहि छैक नया बड़न लहर आनतइतक नहि
तोहर सोनक उमिह झलकैत छैक "यस ३ एहि लखि कइल अगु नहि बने
सकबै । अपन पराए ठह गैत लेन अना चला हपन जगपुवक हउ पुर ह-
दुख देवा छोट हउ तला सउ छल देव" न ३ लहर लैक छिहै छैक "हउ
जिनगीमे खालू नहि बडइ होतैक ।"

आँखि कानो उपाय नहि देखैक प्रणव फेर कहलकै "इन होउ उ
आखन मुदा हमर एकटा बाल जान गेल्ले" तै हमार बड छै कहलै हउ
इतय लोहा मालक काँखिसँ तम लेनक नहि छैक । अहिना ई सपन जगपुव
हउ चम अहिहै ।"

प्रणव बल आयल आँखि गहि अपनैक नहि बनि छलीह पुर जगपुव
गहि अपनैक आदिना देन नहि सड़कन अल जगपुव लेलैक ।

बडा अतोडा नहि क सकलैक प्रणव फेर किछु दिन बाद चलेन
गेलैक नथका बाजपुवक कायका लबक एत भोकाइलक भोकाइक नान
मायक बाद बड़का मुचो बड पलैक बडतन प्रणव अइ सुनैत तै
कायका देवा दिन मोजक व एकब" तम अहिना कइत करैक नान गिरैत
नजेलक आँखि जिर घयन छलैक आ थोका घुबन जगपुव का हलैक

एकसर रहसाक अपन निवृत्तिक ओ स्वोका का नन छु अहिना
बकिप दिन एकसर बीति जयलैक आँखि लेन ओका चिन्ता छलैक पुर जग
आका पायक भरोस छोटि दबाक अतयैक आर कानो गला नहि छलैक

कायका लबामे रहिनै एक कर बलकर गेल पाय मायिक पति पुर
लेलैक ।

पुर हउ पुर हउ दिहलै प्रणव शकपका गेल मायो लग एकटा मार हउ
बेला छलैक प्रणवक दंष्ट्र मायपर आँखि घोंचि ललकै भयी हुलसिकउ
छलैक— "आ नै, कयो अना नहि छैक ।"

प्रणव छोट लालकनि पायपर लग प्रणव बैसि गेल ओ मी आहिना
छलैक आँखि लेने मुचो मुचो बैसल छलैक ।

प्रणव बदलैक गय कहलकै । अमितक गय कहलकै आ अनामे अपन
गय कहलकै "यहाँ मुनि चलू मयो अना बटाक" एना एकसर छोटि कोन रहैत
छ अही ?"

मयो मायपर हाथ जैत कहलकै "अपन बटाक" काना छोटि हम
जगपुव विचनक नहि सोहैत छिहै हपन / आ आब तऽ एकटा दोसर चिन्ता
हउ अपन अइ बरोक ककर लग छोड़ि बयलैक ? एकर मार क लेलैक ?"

हउ नब मायो अही दिनको नन चलियनु अप्पा संग मोद दिनका
अहिना नहि होनि ।" प्रणव नेहण कयलकनि ।

मायो हँसलैक— "तौ अपने पूछि ललैक नै ! रहतैक तौर लग ?"
अ तौ लेहो हँसलैक । मायपरम अँवर समरि गेलैक । प्रणव आयचबस
हलैक "अहाँ ?"

हँसि हुचन रोला हँस ललै छलैक ओका शनक कोन जवाब नहि
ललैक "हउ नहि, भोका हल गेलैक, "आब तौहो दुनू गेट फेसला कर "

किछु काल बाद प्रणव पुल्लकै— "तौ पधार दिगु मायोके ?"
रोला रहत हँसत हँसत कहलकै "बयब मयाक" बुझल छलै एतऽ रतो
न न अहउ न अहउक अहि लीय रहा का नाम आसत तऽ अहाँक आँखि "

प्रणव जेक क अहउकै ज्यन्य नहि कउ रहत छलैक शीत वेहउ सिम्य
अ अहउकै छलैक अहउक अहउ विचमण आ रादा सारो पंदरन अहउ आकृतैप
अ अहउकै उपकर एकटा पवित्र भाव । प्रणव एकलैक अहउक देखैत रहल

"एना को देखैत छै ?" होला सुल्लकै तौरपर मिथि हँसी छलैक
रतो छै उ नहि कलैक बेर हमर अहउक एना अहउकै करैत रहत "

"अम्बाका गले दू ल सापण धरणा भेज एक बाट लहे दे
गले अलि हारा लगे शोला अग मन्दे आ कापले स्वयं कहनरे ।

प्रभावक स्वयं धाधानले कुलेक "तु हमार मन गी गले अलि अलि
अमानत जिकरा आब अहीके" गरी दव । इकर छेक "अब कहिय नहि पुन
हम एकसरी रहब सभदित ।"

शोला कनेक अलिदेगधुन दुखामे बगलेक "रकम किरक रहव अही
सम तऽ चहीक लग अलि पाम ओ हपद या अलिनी अलिनी पुन ओ कने
जाय अहीके" छीइकऽ इय कनानत सपन लगे गइ इकर छेक "अब
देवक । ओ धुरत, ओर अहीके विनय, हण नैत छी ।"

प्रभाव शोलाक हण अगन पुनकुम नेत कहयके "नेत हणय तऽ
प्रार्थना करब ओ अहीके विनय सत्य नहि सकय ।"

दूर मन्दिरमे ठंख-ध्वनि भऽ सल छलैक ।

नवारम्भ

हवेली मोहनपुर

रत्नाम्बिका • १२७

हमलो मोहनपुरक गप्प !

हमारी मादकपुत्री ममकी पंजन शयक कान धीमेत चलाई रत बनी तबक
महनु गिमा , अन्तराग्य आ तां जामे पत्र पत्रे मने नमक के बाले घर में
जावन छलाह हुनकी मंत्र बह निकित कान नीमय गुनकी रत पही । अ-
मजक बर बी दाह बेत ओ धर दिन उठन छलन बाक बीचम चक-कनकनकी
धोरी मरण कांध अहित्य दौरी ताम उल अन्तराग्य अइ मजक ओर करे
छलथिन नापी बाबु गम धरिके जलब ब्र कानि कभी निंध बूडन उतगम
होअय अखनयं तै महनु मिसरके नीर हांनि ।

[illegible]

सत्ते, छोटकी बाकीकें सय माफेक संक बुझै छति । छोटक
आह्वाने कोनी काज हई छोटक सब मनमें प्रभु छोटकी बाकीकें संक
गायने कयी गहि दैत छति । छोटकी बाकी मन बुझावने गीत सुणए
हुँहऽऽ दाम्भ कया न गहैत छति । छोटकी सब मन भावक गायने क
क्षैरै छति । छोटकी शवः मन बुझै कय गहै छति गायने , इच्छा न गहै

छंटकी बाबा तनो नुत बड़े सम्पत्ति बाबा हस्त शा ५ न
तनो छंटकी बाबा आत्म सन्त आ कला उद्गुत नु बलि नय शा

[illegible][illegible]

इसमें प्रत्येक वर्षीय श्रमिक नौशरी में घोंगे पाप देगाइन कलानि
एक कड़ा का कट्टर रहति बे भौर ग्रामक लोक डरे बाबर करनि अपन
का जगजग लप बीप बप्रबाक सहस सह होइनि, मानने अकेत देखाचिन तें
हउ लेखिन । दलानमें कताब काल बैसीत कप्रह, सगनेसैं कपो बिना मार
न बिना उदध कोन नहि कहित छुअ जणोदान तें जोनु मैथरोक रहनि.
रांभ रहनि सुनो बड़के टाक । माने ओकान्त नौशरीक

बहू विज्ञान जांचितव लक्षणं तन्ने परीक्ष्यं बन्धो ऊंच चौडा कथय आ तंने
 ३. एक ग. दुर्गा तंने बन्धो आ गजल बलिष्ट इति । धातोक प्रोचो जयंगण
 ४. एक ग. कत कतरणे कविता प्रचल्ल इति गर्हाय दाहिया हाथमे लडी अ
 ५. एक ग. कत कतरणे कविता प्रचल्ल इति गर्हाय दाहिया हाथमे लडी अ
 ६. एक ग. कत कतरणे कविता प्रचल्ल इति गर्हाय दाहिया हाथमे लडी अ

मैंने एक गंगा एकदमसे ठहरते और छात्राश्रित आइ अबा! काना भंग ?
 'काना भंग' इतना बड़ा शब्द है कि भोजन करने के बाद भी वादों के अन्तर्गत आने लगे हैं।
 'काना भंग' का अर्थ मिथ्या है।

संका-३ चौथा स्तम्भ समस्त एकदम पाश्चात् । धाँ पैन बजे कति
हलचर स्थिति उक्त कुलाह घुमिक । मात बज अवैत लगात नौकर नखन घण्टी
संयम होने ल्यानि दस बजेत बावैत स्नान कर धोवन तेल तैयाग पर राइत

छलाह जा झटका बाबांक शनप पड़िके मुँह जहाँ वेदाए खेत उलने हुन बा
 घोवन कौन छलाह किन दप कर आ गांवके सट बस हलगे रक्क बा
 नहि बुधईरिषाम हल कलहने गलि नगरे बजैक बल ककगई हटै नहि
 दिजाम भाजनक बाज आगन मँछा पँचमे आन छी उननध बैसक यध न
 मछदमे बजल तहन बाँकान बाँकौक एह गौरी हौल हँसन आब हँसै मगक
 हलौं मिलन नइत छी चौधमे

आ हीमिक राह जाइत इन्तधिन गार सुनरी मंगलक बई हू जेहि
 न कहौ बघाक न जाधि- आन दिपका छोर बाधनक" देखु कहै- जउ मंग
 मंगलाक" बचाग मधवाणि अलि यहि पाहुमक पउ नलि जाउ न मंग
 सौगिक मंग जात ननय मंगलाक" यक्ष सन सनय रति" सुक दमनि नै नर
 य लागल लागल पहिन दमनि मंग सौ मंग ल मंग न ननयधन जेकर
 तक्य बग गम आ अन्ध लाल ममक पालन दाया नै न जाइययन मंगल
 अन्य र निरिहल पउ जाइत छलोर

येसो जेनी धोण पुत लेन काग बसो मर-मर जेन नई देन लेन
पानमे जेवन जेकणपर बिगडि जाधन एकद रोगा जेनी गेन खुथेन गेन जे
गहि होलेन उलाधन बप्प करे नख गज्ज बब कृक बिनाइ जेनी बज्ज
बद करे जेनी न हावुन न डेलन आ जेनी जेनी नख गेन न खन
जेलन लेन जुह देलबक कक न कुमलन गेन जेनी अगज न
नागलन गेन, गेन सग गेन जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी
जेनी गेन आ जेनी गेन जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी
जुनिक हुनक बब जेलन जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी
नकन गेन गेन जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी
जेलन सग जेन जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी
जेनी न, जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी जेनी

मैंने जिनके काल ज्ञान का ज्ञान ज्ञानसे ही है जिनके ज्ञान का ज्ञान ही है
कोई एक ज्ञान ही मन धर्मिक ज्ञान का ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है
यही ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है
ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है
ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है ज्ञान ही है

माला शास्त्रक प्रथमाध्यायः पञ्चमः स्कन्धः टीकाः कृष्णः, अंशः ५००

[illegible][illegible][illegible][illegible]

१०-११-१९७७

बाला मैदानम पारि आश्रम बांधे गुरा गणपत देव जलधर काठम ईश्वर
नैष्ठिक गणेश धलमानुषके विद्यालये ललि कर्षे गुरा स्वामी अश्वक काल
सासुरम जैन लल्लिका ओइ दिन आहो काताम मलाध बने पसरि होइ वन्याके
हृदयम मयने गौरा वराहि बकरी ईय पौरवक वराके नकीन गहनार । माल देव घरो
तकाइ हाइल गहनैक अत खन बह पलांने पदका भिकन पोष गिरीध शरण छो
बहाल मउ गोलोह । शान्त आ नियाँक मलावनी अंकाम चौधरीक पकुरि दु ल
निरोह आ सामर मउ हलाले

इससे अलग विचारों के अनेकक ओष्ठिपुत्र गढ़ते हैं कि गौरी भडकऽ हमसे अछरित
अछि = पुण्यक जान कथा आ रात विरात कतऽ निपता रहैत अछि ?
गढ़ैत पाए अन्तर्गमन कि एक नौ आइत अछि ? गौरी बोराक" फेर कसुन तसुन
कसुन जान केस कसुन कसुन मंगना मृगिकऽ हँसि दैखि । गौरी आन जगि जायि-
अछि न चराक" एकदिन एकक नार कनकऽ ।

रहि जाति कनेक कह्यो बड़ मायाग ज्योत मान मयक ज्ञान चरित
आठनक अन्तागम बुझा गंतन व नाम गह बंहेन बैसल छोट आ कंठका
बैसलका चरित कयलधन बौरे धा हुनका अउ हाथकन सहजता कयलधन
धंगल आ संग संग धर दिस नर जड़न कयलधन अगरे सन्यास बैसो दुख जंहे
द योगी तौ आकर आग प्रात सकैत छलैक १ आ ग तौ तौ छलैक आ टकर
बन्म १ तौ अपन नै बहुत दिन बंहेन परि गन छल २ अगरे भोग विषय धर्यो
तौ फा उमर ननह ताहर हंनो ताह भुगम मय किहू हिला मय छल ३ तौ
हिना गलैक आकरा गल्यो यल हम अकन एकसैनाक नर रति धर
धन ४ ककरा खलायक हयब बाजब किहू पटा कनह तर कयल नहि मंहे
धन ५ तौ मंहे उमर हरहु तर मंही रहलहु सधक मंहे विषय अक
रहलहु मात्र नहि लेल तमस भुगि गोग हय तौक कहै छल ६ हर ७ मंहे
हम आहत साद रूप धारण कयलहु तैय तंग नहि मंहे हाडन छल ८ हम
माह मासु खयनाइ धरि नाग नहि कलैक हंडत छल ९ हम १० मधक छे
मंरा तऽ बिछेन छल तौ जकै तंग रति सके धन ११ अकरा ह
सहकौनिक तंग दुख मंहे गल नहि भूय धारक मंहे सके धन १२ हम
हंस बाज कहलैक अकरी १३ तंग नहि भटलक मे कनका धरैत गल
ताग मंहे रति धन १४ दूध कइम ताह कल मंहे नहि लप १५ ककरा
टाह १६ मोगक कपण आकर देह निकां छेक १७ ककरा छेक नहि
१८ किछु बंहेन गल छेक १९ म म म अधकन आ अगरे मऽ कइत छेक २०
मोनसै, चाहे अवदीतौ ।

बहिनक संग कोठली दिस बाइल गौरीक पकर लख भेल जइत तौ
के जाति होम कलधन १ अकनक मंरा जबरदस्त छल किहू नहि
मनितको सुन पंर बाइल छल ।

पंगला पेर कहलधन सहकौन हम तंग किहू नहि तौ नै
बुझि नहि नकल २ तौ कपण मऽ लख पड तंग आ विष बनि बड़
लगल गोग मऽ अकनिक लखि लगल जे दैध पल्ल ३ मंरा
जाति कललैक तौ मुझि आ हम कुराग तौ पुगाग आ हम कइत
सध ठाग हम जगह मंराक ४ मंहेक ५ मंरा तौ कइत
सुनर छल ६ हुनक मवणा विधैत छ ७ हुनका कउ काबल ८
छल ९ हम हुनका मध काज तंग दऽ बंनिध १० हुनका
काज आइम तंग मुख धरैत छल ११ जगह तौ सैनाडन छल १२

नर नक बंहेन छल १३ मंरा मंरा हना देखब तौ नहि मंहे हाडन छल १४
अकन कनक कन नै मंरा कल १५ आक बसम काज १६ कुरा
कल १७ कुरा कल १८ मंरा कल १९ मंरा कल २० मंरा कल २१
मंरा कल २२ मंरा कल २३ मंरा कल २४ मंरा कल २५ मंरा कल २६
मंरा कल २७ मंरा कल २८ मंरा कल २९ मंरा कल ३० मंरा कल ३१
मंरा कल ३२ मंरा कल ३३ मंरा कल ३४ मंरा कल ३५ मंरा कल ३६
मंरा कल ३७ मंरा कल ३८ मंरा कल ३९ मंरा कल ४० मंरा कल ४१
मंरा कल ४२ मंरा कल ४३ मंरा कल ४४ मंरा कल ४५ मंरा कल ४६
मंरा कल ४७ मंरा कल ४८ मंरा कल ४९ मंरा कल ५० मंरा कल ५१
मंरा कल ५२ मंरा कल ५३ मंरा कल ५४ मंरा कल ५५ मंरा कल ५६
मंरा कल ५७ मंरा कल ५८ मंरा कल ५९ मंरा कल ६० मंरा कल ६१
मंरा कल ६२ मंरा कल ६३ मंरा कल ६४ मंरा कल ६५ मंरा कल ६६
मंरा कल ६७ मंरा कल ६८ मंरा कल ६९ मंरा कल ७० मंरा कल ७१
मंरा कल ७२ मंरा कल ७३ मंरा कल ७४ मंरा कल ७५ मंरा कल ७६
मंरा कल ७७ मंरा कल ७८ मंरा कल ७९ मंरा कल ८० मंरा कल ८१
मंरा कल ८२ मंरा कल ८३ मंरा कल ८४ मंरा कल ८५ मंरा कल ८६
मंरा कल ८७ मंरा कल ८८ मंरा कल ८९ मंरा कल ९० मंरा कल ९१
मंरा कल ९२ मंरा कल ९३ मंरा कल ९४ मंरा कल ९५ मंरा कल ९६
मंरा कल ९७ मंरा कल ९८ मंरा कल ९९ मंरा कल १००

तौ मंरा कल १०१ मंरा कल १०२ मंरा कल १०३ मंरा कल १०४
मंरा कल १०५ मंरा कल १०६ मंरा कल १०७ मंरा कल १०८ मंरा कल १०९
मंरा कल ११० मंरा कल १११ मंरा कल ११२ मंरा कल ११३ मंरा कल ११४
मंरा कल ११५ मंरा कल ११६ मंरा कल ११७ मंरा कल ११८ मंरा कल ११९
मंरा कल १२० मंरा कल १२१ मंरा कल १२२ मंरा कल १२३ मंरा कल १२४
मंरा कल १२५ मंरा कल १२६ मंरा कल १२७ मंरा कल १२८ मंरा कल १२९
मंरा कल १३० मंरा कल १३१ मंरा कल १३२ मंरा कल १३३ मंरा कल १३४
मंरा कल १३५ मंरा कल १३६ मंरा कल १३७ मंरा कल १३८ मंरा कल १३९
मंरा कल १४० मंरा कल १४१ मंरा कल १४२ मंरा कल १४३ मंरा कल १४४
मंरा कल १४५ मंरा कल १४६ मंरा कल १४७ मंरा कल १४८ मंरा कल १४९
मंरा कल १५० मंरा कल १५१ मंरा कल १५२ मंरा कल १५३ मंरा कल १५४
मंरा कल १५५ मंरा कल १५६ मंरा कल १५७ मंरा कल १५८ मंरा कल १५९
मंरा कल १६० मंरा कल १६१ मंरा कल १६२ मंरा कल १६३ मंरा कल १६४
मंरा कल १६५ मंरा कल १६६ मंरा कल १६७ मंरा कल १६८ मंरा कल १६९
मंरा कल १७० मंरा कल १७१ मंरा कल १७२ मंरा कल १७३ मंरा कल १७४
मंरा कल १७५ मंरा कल १७६ मंरा कल १७७ मंरा कल १७८ मंरा कल १७९
मंरा कल १८० मंरा कल १८१ मंरा कल १८२ मंरा कल १८३ मंरा कल १८४
मंरा कल १८५ मंरा कल १८६ मंरा कल १८७ मंरा कल १८८ मंरा कल १८९
मंरा कल १९० मंरा कल १९१ मंरा कल १९२ मंरा कल १९३ मंरा कल १९४
मंरा कल १९५ मंरा कल १९६ मंरा कल १९७ मंरा कल १९८ मंरा कल १९९
मंरा कल २००

दवाक गह गंठ भुलधन तौ मंराक भोग दामर आपात १ मीरक
मंरा २ मंरा ३ मंरा ४ मंरा ५ मंरा ६ मंरा ७ मंरा ८ मंरा ९ मंरा १०
मंरा ११ मंरा १२ मंरा १३ मंरा १४ मंरा १५ मंरा १६ मंरा १७ मंरा १८
मंरा १९ मंरा २० मंरा २१ मंरा २२ मंरा २३ मंरा २४ मंरा २५ मंरा २६
मंरा २७ मंरा २८ मंरा २९ मंरा ३० मंरा ३१ मंरा ३२ मंरा ३३ मंरा ३४
मंरा ३५ मंरा ३६ मंरा ३७ मंरा ३८ मंरा ३९ मंरा ४० मंरा ४१ मंरा ४२
मंरा ४३ मंरा ४४ मंरा ४५ मंरा ४६ मंरा ४७ मंरा ४८ मंरा ४९ मंरा ५०
मंरा ५१ मंरा ५२ मंरा ५३ मंरा ५४ मंरा ५५ मंरा ५६ मंरा ५७ मंरा ५८
मंरा ५९ मंरा ६० मंरा ६१ मंरा ६२ मंरा ६३ मंरा ६४ मंरा ६५ मंरा ६६
मंरा ६७ मंरा ६८ मंरा ६९ मंरा ७० मंरा ७१ मंरा ७२ मंरा ७३ मंरा ७४
मंरा ७५ मंरा ७६ मंरा ७७ मंरा ७८ मंरा ७९ मंरा ८० मंरा ८१ मंरा ८२
मंरा ८३ मंरा ८४ मंरा ८५ मंरा ८६ मंरा ८७ मंरा ८८ मंरा ८९ मंरा ९०
मंरा ९१ मंरा ९२ मंरा ९३ मंरा ९४ मंरा ९५ मंरा ९६ मंरा ९७ मंरा ९८
मंरा ९९ मंरा १००

मुगु वैठ मन नहि छलैक । विधि नाम छनधन रेना । आधतपर
मंरा १ मंरा २ मंरा ३ मंरा ४ मंरा ५ मंरा ६ मंरा ७ मंरा ८ मंरा ९
मंरा १० मंरा ११ मंरा १२ मंरा १३ मंरा १४ मंरा १५ मंरा १६ मंरा १७
मंरा १८ मंरा १९ मंरा २० मंरा २१ मंरा २२ मंरा २३ मंरा २४ मंरा २५
मंरा २६ मंरा २७ मंरा २८ मंरा २९ मंरा ३० मंरा ३१ मंरा ३२ मंरा ३३
मंरा ३४ मंरा ३५ मंरा ३६ मंरा ३७ मंरा ३८ मंरा ३९ मंरा ४० मंरा ४१
मंरा ४२ मंरा ४३ मंरा ४४ मंरा ४५ मंरा ४६ मंरा ४७ मंरा ४८ मंरा ४९
मंरा ५० मंरा ५१ मंरा ५२ मंरा ५३ मंरा ५४ मंरा ५५ मंरा ५६ मंरा ५७
मंरा ५८ मंरा ५९ मंरा ६० मंरा ६१ मंरा ६२ मंरा ६३ मंरा ६४ मंरा ६५
मंरा ६६ मंरा ६७ मंरा ६८ मंरा ६९ मंरा ७० मंरा ७१ मंरा ७२ मंरा ७३
मंरा ७४ मंरा ७५ मंरा ७६ मंरा ७७ मंरा ७८ मंरा ७९ मंरा ८० मंरा ८१
मंरा ८२ मंरा ८३ मंरा ८४ मंरा ८५ मंरा ८६ मंरा ८७ मंरा ८८ मंरा ८९
मंरा ९० मंरा ९१ मंरा ९२ मंरा ९३ मंरा ९४ मंरा ९५ मंरा ९६ मंरा ९७
मंरा ९८ मंरा ९९ मंरा १००

बोचक इतरी लखे उतरन रहनि कि धीक ठगो मरगो आबि गेलनि
मंरा १ मंरा २ मंरा ३ मंरा ४ मंरा ५ मंरा ६ मंरा ७ मंरा ८ मंरा ९
मंरा १० मंरा ११ मंरा १२ मंरा १३ मंरा १४ मंरा १५ मंरा १६ मंरा १७
मंरा १८ मंरा १९ मंरा २० मंरा २१ मंरा २२ मंरा २३ मंरा २४ मंरा २५
मंरा २६ मंरा २७ मंरा २८ मंरा २९ मंरा ३० मंरा ३१ मंरा ३२ मंरा ३३
मंरा ३४ मंरा ३५ मंरा ३६ मंरा ३७ मंरा ३८ मंरा ३९ मंरा ४० मंरा ४१
मंरा ४२ मंरा ४३ मंरा ४४ मंरा ४५ मंरा ४६ मंरा ४७ मंरा ४८ मंरा ४९
मंरा ५० मंरा ५१ मंरा ५२ मंरा ५३ मंरा ५४ मंरा ५५ मंरा ५६ मंरा ५७
मंरा ५८ मंरा ५९ मंरा ६० मंरा ६१ मंरा ६२ मंरा ६३ मंरा ६४ मंरा ६५
मंरा ६६ मंरा ६७ मंरा ६८ मंरा ६९ मंरा ७० मंरा ७१ मंरा ७२ मंरा ७३
मंरा ७४ मंरा ७५ मंरा ७६ मंरा ७७ मंरा ७८ मंरा ७९ मंरा ८० मंरा ८१
मंरा ८२ मंरा ८३ मंरा ८४ मंरा ८५ मंरा ८६ मंरा ८७ मंरा ८८ मंरा ८९
मंरा ९० मंरा ९१ मंरा ९२ मंरा ९३ मंरा ९४ मंरा ९५ मंरा ९६ मंरा ९७
मंरा ९८ मंरा ९९ मंरा १००

उत्तरांच आ नन्नाकें गौरीकें कसामें दैत बतलौह
एकर तऽ बाइआ नहि छैक

गौरी खाकें आपस भंगलाक कसामें दैत बतलौह नै अउ बरि ऊके
घाँकें गेलहुँ होइन तेनुकें घाँसिकेसँ बीएक सेनु नन्नाकें गोलि टाँसलिन नै
छूट्यो दैह आब नहि यम लागत नाहें लपेट हैन उठ बिमबाइक नन्नाकें मुँह । एकरा
हाटकी कनिशकें दहुँ आ चित्कड़ा लप आ बस नैचन रहन

भंगलाकें बार दृष्टान्त लोशोक जिवन पर गन कलैंक अउरिहने ।
बौधायन कापी बनि गम छन । छै गमक बरि कलैंक अउरिहने कसामें नन्ना
छोटी कनिशकें कसामें बचकें दैत बतलौह । एकरा सभे अहाँ अन्तरिक
कनिश

नाम रखबाक गम ठठलैंक नै यम होसिके कहलौधन । पोरक मूयक स
आयल छभि नासक जिनगीक दोष मझा गेलनि नै को । तिनक सभ रहि दिनु
एवि

आ रवि नाम पहि गेलैक नन्नाक

इनैस सभ चौतीसक भूकमक बार दृष्टान्त नन्नाकें उठनि गम उलैंक

सभमें पहिन सभसँ गौरीकें दक्षिणदिशि बतलौह । गौरीकें आ अन्तरिक
कुलधिन मूलक कठिकेसँ पहिउया नै सकल्यह । तका बार खल्लैक एकलौ
दोसहला । तोक कौक लंगलैक उंग कालकें छत दू श्री भूककें तमन मुनकें
आ पोर सभ य दहककें छल्लैक । सभ बहऽ पन रहैक अहू कानि
दुनु बहिन राति गति रहथि । हठभोक भौतिक शीकाल चौधकें दन बरि
विचला बाहन । बहकी दाइ कोटका दाइ । सरी सभ आ मन कहथिन । बहकी
पोसी आ छांटकी पोसी राति पनच कहनि । बहकी पोसी बाकी आ छल्लैक
पोसी बानी । आ दुनु रति गनौह । कोलाक मोल । छांटकीक कोषन एक नै
खसल रहनि । झिल झलि नहि भेलनि । बहकीकें कतहु कानें चार मोल
रहनि मुदा आरुकात ईग मौरि मुँहकें तरो लागल रहनि । कामलसँ नन्नाकें
बाँट नै रहनि । किलोल करैत नहि गेलौह बरि नहि सुनलकनि ।

कका मून्नाक तस गौरीकें । दिनमें तारा निकलि गेल गौरीकें । अरिमान
नन्नाकें बघल आ गौरीकें तसैत गन । चाककात खसल बरि घाँट सुखी दैहक
दुनु नैचनसभन दारि फाँटि गेल गौरीकें । दुनु बतलौह य नहि सभ बरि खसि
नहुँ रहैक । दलन बहकी पोसी पोरि गेल गौरीकें । सभ य अन्ना पानि भइलक
गौरी सुखीकें बनि गलैक । छानो चाककात लोकक किलौल कायभक आसनद
ए सतलक नकलारै

गौरीकें बहिन छोटकी दाइक किलाल सुनलकनि लोक । कहना देरी
हैन नै पहुँचल । पया पयसँ दैहकें भंगलौल छलैक पूरा पया नहि खसल
हैन नैच । किलाल पाटाकें आ दूरल अंश पवाँत पारी छलैक । बंधक दहकी
लहम छेँटि दन रहनि । पोर कठिकेसँ नहि बलि सकलौह कनिश । बिसरी
बहिन । आ पोर बिबैत खलौह, बिसरि कटलनि

बहकी दाइ पूरा एकदम बौच गलि रहथि । छोटकी दाइक किलौल कम्म
लकन नै भूककें लंगलैक उंग भोला बरि सार पोह रहल आँख बड़ मही मु
दहकी दैहकाल गन । बहुत मोल आब । बहकी दाइ भेटलौधन । अपन पंटा
नन्नाकें छल्लैक । भंगलाकाल अपन पंटा बड़ ननै कहथि आ आँही पटापर
किलौल कड रहलि छलीह ।

अहूकालमें सभकें दैहो भालैक । बहकी दाइक पंटा नामो छलनि
नन्नाकें छर नही भऽ भैलनि । ओकर कुँबी ककरो दैत नहि छलथिन । अपनो
पन भयन दैहो छल्लैक छलौह काँहयो । नुकाकाल एकमरने कन पल्ल ठग
कल्ल कल्ल कल्ल ननै छलीह । पंटा को रहनि छल्लौल सन्दकबे रहनि
नन्नाकें पदुननन अउ पंटाकें कालम बिसरीत अबैत गहाँ बहकी दाइ
नन्नाकें नामो दैह

गौरीकें दू बहनपर हंसो लौक । कखनो दूनु पाँकरम लतल गाने
नन्नाकें दूनु बहिन पोर नैचन । कन य बौजा एक य पकलौल लतल दे ।

गौरी बहिन कोक गकल गडि छै । अहाँसभकें नहि छै हैत
दुनु नन्नाकें लंगलौधन । दन छै कन मिलौलप धरि दैहक
नन्नाकें बहिन करक । अहँ छैक । अहाँसभ अहँ छैक ।

नन्नाकें दाइ दिनमें करैत लतल बस अबाधिन । कथीक अहँ छै । ताँ नन्ना
नन्नाकें बहिन अहँ छै ।

हार्दिक नमस्कार, मैंने इसे पूरी निष्ठा करके लिखा है। बहुत ही मेहनत, धिसरी कटौत जेटीली जैसी-बाबो किलबल करके लगाये। एम्बर आ रही। हमारे काउन्सिलमें चल रहा।

नीचे दिए गए प्रत्येक वाक्य में वाक्य के भाव को पहचानिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए।

संपादक: श्री राज जी भास्कर सुनी मांछे हस्तपुस्तक खंड क ५ ए
कंधाई का ३ हैल हस्तपुस्तक खंड क ५ ए

श्रीकान्त चौधरी किम्बलजी अयकरे कि मसाह हूँ फाईके एक वडाक
नामस यः मयि हुनके सोरें कोष बंगाफाः हउत गनके मशहिन कहलांते वन
कजं बवं हम्मे हउत सो नाकिय हसः हउ

पायमं कथं प्रसन्न नरं धत्तानि अत्र निजगामे । तत्र तां कबलं ह्य उच्यते
बडका मालिक । एतेन गते तौमवान् कर्त्तुं उत मय्य हा इनपनायते परः द्विः । त
बन्धः प्रहृतनि मय्य । कुतः क्वचिद् भवति न भवति न भवति न भवति ।

बसों और मोटरों में इंधन का कम खर्च होगा और यह कि पेट्रोल की कीमतें बढ़ेंगी और इससे बड़े-बड़े कारों में इंधन का खर्च कम होगा।

श्रीकान्त भांगल संखाल मन्त्र कल्लेयन गृह नदन दुर्ग मन्त्र
मन्त्रिक यन हर्षि

बड़को दाइ भापन ययलोह औरह लान रहनि ओ जरी अउर
तनश ड दनु राखन हय १ १ दनु बहक पुन कानकोक रहन
काना धलोक १ माय अवधनक जय दिनि प्रो गोल रहय दनक
हम फा बाबुआ नहि रहना जत भाय यय ओ रहनी दनक
अन्याय और लज गिह कोओ दनक ओ न दनु हय रहने प

इस पाठ से कुछ कहना है - बहिर्लोक नामक बुद्धि वर्तन कल्प है
सुख आ प्राप्त करने के बहिर्लोक में कल्पना है - बहिर्लोक बुद्धि वर्तन - बहिर्लोक
अतः बहिर्लोक कहना अशक्ति है - अतः

प्रकृत प्रमत्तायै कहलथि जे तब ले प्रकृत

गावघात आ नापो पल्लन ह जन्मल आ हुने एह पासे वर ले
लेताह पुद लोके लोके चला करब आवश्यक छति लोकरे पो खबर ले
कहेलथि अहीके असुरा भए य जायते पाइ कहे तउ किछु अन्य
हमराणाकनि

बड़को दण्ड फेर गइलसोह जाहा अन्न इतौक हय एहन सिंगर न
करबाक ताहस काना धेलोक ताह

दुनु भाद्र स्मिर्त्तिपदाकउ विदा यत्ताह

आ वन महा बहू पूरा ध. गीत लैक दुनु वंतिन बहू बूढ़ि म. गीत
चुनैह म. पतिप्रमन रडन वनाकः मातः-मातः छी शैल कलक

ऐसे एकदुर्लभते में मान बर चढौतधिन दस हजार पण्जति कयलधिन
इह जग वैह जामि लख नह ओ खल गोक समैक दिखीये पाछ पासु लऽ
हुक इखा इखा खाए जागल ओ हुनू दाखत नहासु करऽ लगधिन कन हमरो द
बान कजरी केहेवाहक नहि

आठवीं दुनू अदिनक एकक रहनि पुनरिया घरक कोठली: फूमक फूमक बाद बगल रहैक. खसलाहा कोठक नीक नीक खम्हा नागल रहैक अइ: ए चारम रोक चुनल चुनल बौस, दरबजा, लैखीठि क्षीर भटक, खूब पैघ तहन मज्जुत दुनू आठवीं जैक आइ घग्ग, एक राम दुनू बहिन: छोटकी दाइ बहिन: एहेत लतांत आ रामराम श्रीकान्त चौधरी अपन भूकामक बाद किछु जन खसला गाँवर उहाँ एक रा घग्ग रहनि

फर गइरयो फर लाइ धेलनि पवकाक ओहूमे दू टा काठली रईक-एक
 लुग जेबे योग ओ ईदने गेक ननत्यसक संगे मंगल आ गीरो । छम आ लाल
 टनने ईत छलाह दलान कांन, दुइरिया धरक आनरा । मीर छलक कडांमे
 होई न्ना ननति नै किहु गिन आउ काठलीसे क्या बरि रहनैक फेर शमक
 जेवइ धेलनि ईह काठली धेलनि ओहो कनियौ बरि बचलीक तौ काठली
 फरम पनछ मऽ गौरीक ग्याइने वस्तु बाल राखि ईल गौरीक

[illegible]

कलह म स्वि स्रध गति करैक बाबी खिम्मा काहु आ मंगलाक
खिम्मा मुकु नु अडनि तांहु ज्ञान कल्म खिम्मा अबैत छति जा धरि दुन

राष्ट्र संसद में २००० में आने वाले संसदीय चुनाव में
राष्ट्रियतावादी बल को बढ़ावा देने के लिए

राज्यक पाप पण्डित इ. जइनि बोन मउ छुनि नउ क रगेने एकरा
रजितैक नै आकरा घेइ

मुदा त्वि वधो सां- त्वि शै- 'जा साव- सातु' जरी श्रुत
सां- 'साव- सातु' जरी श्रुत

ॐ वायु षोडश लक्षणैः-‘बान्धवैकल्यैः’

रवि बीशम टांगि दौन न आवेए आवे आवे तिन न निकलौन हो सुन
लियऽ

गोप फर शुद्ध कथ्य. जिज्ञासु विवेकाल मित्र नमः.

रवि का पंक्ति है। अद्वैत है कि दुआं नाम रवि है अद्वैत है।
मानव गरी मुनि लिये।

गामक छती भवमं पदु लपने गिअं विअं नहं बिअन डने
एकदा सुअक कि कपट

गायक परिचित तो हैं जावक गुरु गलपित नान धर्क कय करे
रुन धिन गीत वं उड दिन धन गपन सप हवन न न न न न न न न
इलाक गि नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन नन
एतक पवन लिलन बाव धिय न न न न न न न न न न न न न न न न
पंडित न पंडित लगलपिन— 'अथ कय'

यदि पानी लोक सफाई करने में मदद करने में मदद करता है, तो यह सही है।
इसलिए यह सही है।

अ. शब्द घटें तब बी मध्य भाग में किं रनकनि अ. तब पाठ में किं रनकनि
 दैत कहनकनि आबि आहिना नून लिख

अस्य कथं त्वं प्रपद्यमानं त्वं पश्यिष्यसि ॥ १ ॥

प्रांतिगतः कति ह्यतेषां ज्ञानं लेखनम् ।

मे बादक पम्प छैक लोहिया वि हाउ स्कूलमे रहय अंका २००० मे
बच्चन सपर हाउस लागत छैक ।

दुःख हट बह उकड़ती परि गमक साधक क 5 दैक सधक
 बर साधक साधक लाम सुहारे लैक लागर आनि दैक दसभसुहारे रहेक
 उकिन उहबारी सोलक गयेनी सकक बयों कपत दुनको घार पाधुति
 ने बह बहक ह बह ठैक न काना कपथक गेकान । पार दुहगिया गेक
 कपथक कपथक उहरे ५। गय दुन काना सोलम आ गेलम अगत पधि जाइ
 घार गमक दुहल जाहो विकृत रहेक नन आ कविना । कविता आ

मानसिक शक्ति का कविता पत्रिकाहस्तै छवि शोक आनंदिन जर्को

[illegible]

अथ एक ए पात्रयं नैव कलशः । तत्र ए नहि स्त्री ।

नि गान्ध्या धर्मशास्त्रे द्विंशति विवि प्रस्ता ५ + १ गान्ध्या कविता
५. २३ सप्त अध्याये पाठ्य पाठ्य नाम आश्रित बाहुल्य रत्न जट्ट लताप
७- ४

१. नया बज्रक धातु की कि. हैमन हथियार पाकल तर्पण
२. नया बज्रक धातु की कि. हैमन हथियार पाकल तर्पण
३. नया बज्रक धातु की कि. हैमन हथियार पाकल तर्पण
४. नया बज्रक धातु की कि. हैमन हथियार पाकल तर्पण

[illegible]

"३ लक्ष आराम ऊँछत हउं आकर गैजमे बल्लि गनैक । पदछाफ
मः मः मः न दुर्लभ भासु कः यः अत्र दम हो सन्ना भव्यो.

प्र. न्याय के अ. लक्ष्य मानो ज्ञान गति-यं धनो ज्ञानमै प्रवर्त्ताह

वसन्त जातिन अर्धचन्द्र रात्रि शुक्रदि याह्यम् कविताक पाद्य टंक करो
शक्ति बंदी दन वरुण माने मन्त्र हैक रथम गुण हवः ॥ कलक
लगतैक कम्पारानक कर्ण कहुन कर्णि कहुन दन बाइ कहुन वैश्यादि
भक्त करि जायत कर्णो

प्रां. विश्वविद्यालय, अहमदनगर

[illegible]

आंकरा एक १ गम पट्टनैक उ श्रम तै श्रम कर्कक नउम ५
पटल गौह नलैक ५५ उठारै नउ गम दण्डनैक

गंध विहार श्री बाबू. जन्म महीना पटना ।

श्री बालक दुख्यश्च हल कने अग्रास्त बाबल लंडनियान तऽ कौ
 लंडन नगर एतानि को संनि जानौ । आ फल फलहरो तऽ संभके मखीक
 लंडन एतन डेक सैह तऽ कहनियान बाबाक । श्रुत लोय चला देलनि ।
 जनेन २० काल सति जाइत

‘वि आ गेहलज्जित बाजल ‘कोन खराप भात कहलियनि हम । ललाम
‘कहाँ से तू लेक तू की गयली हुकं लगाआल छनि ?’ आ हुकं छीने तऽ को
‘ललाम’ ? दन से मुखने छियाए अपन बाढ़ोक बौस से घुर दबाए हम्मर कप्यार
ज्जे- दन कोन मुसबतधि ओ ?’

भूत-पुत्रक अजमा रहि भटलैक आठ धेरै स्कुलमे सुट्यो होखे ।
 हुन भटलैक गछ नर कछिना नहि छलैक चपरा प्रहारा फर्कैत हाथ दुखा
 लैक जेथे अकल भालसरोक पधार लागे गेलैक । कछिना रहि अकलैक ।
 लेक भटलैक माय चक्का लललैक । भारतसरोक काया आठ घाहीसँ बढी रहि
 ललैक नैक हा गछ नर प्रहारा फर्कैत छह रहल अजयनसँ छेबासिन अकलैक
 र ललैक पक्कै मायकासँक लग आठन लउ गेलैक ।

आकाश वह अस्विष्टा साक्ष्य तत्त्वैक शालसरोक शालपर प्रत्यक्ष फलैक
 रूप में बन्य। एवं कविने प्रदिष्ट रहैत कलैक अमयक पाक्षक यदि निवृत्ता नाहैत

उल ही कविने छंदित छंदोंक ओ मरिहक मिलेला संयुक्त बंदीसो बन्ने छवने
छंदीक धरि सुदियासो नुकस न भवत अथै छंदक अन्त दुकरा संयुक्त
पैरिहक छंद बाहर कोन छंद न ओकर इतराह सदि छंदक छंद कविने
बन्ने छंदक वा कविहक छंदक अथै कविने छंद बने छंदक छंदक
कोन छंदक मनी कविने मनी अथै छंदक

पुन ओर नि अ विपिहक छंदक अथै छंदक छंदक छंदक
कविता

रविहक छंद छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
कविताक अथै छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
द्विहक छंद छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

किहु नथै काज कविहक छंदक छंदक छंदक छंदक
आब छंद छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

रवि अथै छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
बडका पुराण बनि गाने विपिहक छंदक छंदक छंदक
कविहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

पुन बातप बाबो छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
कविहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

द्विहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
अथै छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
बिपिहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

बाबो छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
आ छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

रवि छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

द्विहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

पुन बातप बाबो छंदक छंदक छंदक छंदक
कविहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

द्विहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
अथै छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
बिपिहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

बाबो छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
कविहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

द्विहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
अथै छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
बिपिहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

पुन बातप बाबो छंदक छंदक छंदक छंदक
कविहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

द्विहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
अथै छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक
बिपिहक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

बाबो छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक छंदक

[illegible]

चर्चा के दौरान लड़कियाँ पूछें भी पढ़ा खोलने लीं। मधु अंदाज
हड़ताल के किन्तु बोलें। खाली खोलना छोड़। बूताक खोलना : पुराने बूतल फूटल
हब। मधु तरक खोलना : दू नैन ल खोलक मय जा सभक मोर्चीमें लख टा
दुखननई मोड़। आकर लख यष्टि गेल गल्लल गल्लल। रण बंदरा पल मुदा बंम
लल्लल लल्लल लल्लल। पढ़ाक मधु ल सोमान संहित बढको दादक चितामे
लल्लल लल्लल ।

रवि त्रिस्रियाकऽ कहनि- 'अहाँ बौक छै मौजो ।'

तैय क'ना हल नहि सभय कने आगू परि खोजल जौन' छल। दाबल दाबल मुस्को प्रथम चौजनक आगसँ समकत जाकूनि पुन बजा रहि रवि अकच्छ भऽ जाइत छल ।

एकदम एकदम लाहलिकऽ कहलकनि- 'बिराज भइसँ गम करै छियनि कि नहि ?'

मौजो ककरोसँ गम नहि करैत छलधिन । सलसलको मंस्तिन नर गणक उरने नहि । परसँ दू व श्वसुर दशममें वि आ मलय छलनि 'गानक' गाम अद्वैत छल बाबि भूकि जकच्छ भ' जाइत छल मौजो आदिन बौकक बौक मौजा आस्ते आसल गम करैत छलसँ तीव्र छंटको दजोरसँ श्रवण का माने सलसल मौजा आ छंटकूसँ ।

बिराहिकऽ रवि अकनसँ बहरा कय । एहन मौनकल हय बहक कपलामे फायद कान सभय लय व फर भैर छलधिन छलक मौजोके । छ रहल नहि जाइ पूकि, जे मौजो का वन अद्वय मौजोके लग सेधे छ हुनकर लोभभरक दाबल-दाबल मुस्को ओकरा नीक लगेक । नहि जनि कि

सैह गुम्फ मौजो फागुजामे एक बास्ती रंग मधपर छति पहल्लेय रविया खेलालकान पराकऽ गम सूक्यथित मौजा क सैह चककोक लहुनमे भुजो गति बेम अलधिन मौजा रविजो कहिय ल मौजा पौठ अ ल क आ अश्वर रगड डालकनि । मडो उठ गता लहुन हँस हँस गे अकन लह गलनि मौजा अछि बय क ललधिन । छिकक विरल रोग रोगक कान मौय खूब नज मऽ गल रहि मौय शान गमन अ क सलसल पलक रवि आखनमे पहा आबल ।

आंकरा विचित्र अनुभव मंस्तेक मौजा लय गम अऽ अधिक ऊन बेन कल मुदा रहत अनुपम कलका नहि धन गेन मौजोके लगल आ नखल मौजा गम शरीरक सशरी आका दहमे जल सुनसुरी भनि गल नहि जाइ नहि आखनमे लाद भवपर जो सुनसुरी सलस गंठ पनेक बडौकान उर दह रक ओ अपरिचित उठेऊनसँ सुनसुरी रहनेक ।

सहिवसँ मौजोसँ हर होवऽ सलसैक ओकरा । गम अकन ठे क नहि एकाध बेर लेक-बाल कऽ कंधरो मसरी बय ।

गम एकदम उदास आ सुन लगेक रविके

एकदम उदास आ सुन लगेक रविके गलक नज राम भारी बसै एकसर क लय कल कल रंग कलक लय दिन गत जहि भ भागिआयल हैत छलक लहुन अकन ग गंठ पने धन गल अछि आंकरा अकन मंरी धाधोमे छलक नीक लयैत होयकै । बेमोकल अकन लग नहि धौत छलधिन रविके

अह रविके समसँ जाइत कल पयर लुनि रवि कहलकनि- 'अगिला लहुन गम गम अकन दह' 'दह भ गल अछि वांङक परीषा हैत अनेन द लय मय हफ्तमे पहाक इव भऽ जाइत अछि

अक कऽ मौजो गमके अनेक आघात लगलनि तैय होमिका लहुनमे दू दिन दह वन लग गेन ठे न पहाद अनय हय भऽ जाइत छोक उम नहि अछिहे ।'

मयरक पौहाके रवि विरलकनि । कहलकनि 'परीषा नकरीक अछि लहुन नहि जल नहि अकन विरल कऽ हैत । कपने पौट हलत अछि गम भुमैत क लय खबदल आकाक' कह नहि कहल फ लहिओ बाबू चान्दोस वगम कल कऽ छलत अछि । अ फेर अहाँ सन बवान । सभ य कोश कायी सभ य दौत कलक आ मयगल । नीक लय कल अछि अहाँ सन गममे ।'

कल भवक पोलल छल छलनि । लम्के हँसी लगलनि । कहलधिन- 'नहि ज' । परीषा लविचित्रकल छेक । परीषापर अकन दे ।'

'वि रवि अछि' गल पकन छल बाबुआ गवारी लय रवि कयलधिन लह । रविके गम उदास आ सुन लगेक ।

हय ओके लय लगे गे चेत छल गंठ लवि कलक समरि जाइत ल लहुन जाइत कल कोशे बेर हँसी कऽ दैत छलनि 'विरल गलके कोशे ल लहुन मौजो ।'

पंजे अकन गम अकन वैत दाबल दाबल मुस्को जाइ मुस्कोक लय गे मुदा आख बरालकल हुनका लग बैसैत रहि छलनि पहाकमे पहायल गे छल ।

मय शरीरके अछि गल गल एक कात असर ललल छंटको मौजा ल लहुन 'एह पहाकल कल वल लै ? इयसँ हर होइ ?'

रवि अकबर नाम पौ गण बाबां ललधिन महेस कन महर नर
छलैक, आ इ पदमय फिरेत लल साधु कोन महेस नरि मुन महेस
ठहरीत थपदी पदित बाबल-काह ! अहो बलिता सिद्धेक ।

छात्रको मैत्री तथा सहयोग, पढाई तथा बाल-मुलाकातीहरूबाट प्राप्त
सबै ज्ञान तथा जीवनिकार्यहरूको लागि शुभकामनाहरू।

बाजऽ धुकऽ लगभगधन नै तकिऽ इ कय संबऽ सगलैक मुन्ना अगऽ
दाबल-दखल हँसोबालां भीतांनै अकल संया इर हाइत कलेक । उर सगल अ
ठसुधत सौम आ कलेक गम धरुं मान हँत कलेक । अ इर पही जगत छल
बाजऽ धुकऽ बालो पौजैक सं अकल संया इर हाइत कलेक । गमल सगल
बिसय हाइत कलेक

विक्रमक" गाम बिमानं नभ उलानं । कौमुद दक्षिणं विहृत्य रहि भलनं ।
 एम्पु कउ लागल अत्यह । धडक माकाभतिम कन वज्जइर रहि उलान । यम
 य धम मायक साथ । पाम अस्तेत नाव हाइत उलान । विहृत्य गहकठ नः वडु लल
 गमक दौडा दौडु । ज्ञा गमक" बिमानं रहि उलान

छात्रको धौजको आठ दिन चढे बनि को फुल्लाने । एक स लिफाफा
हाथम देल लजाइल कह्याप ३ हुस्का स दंजनि

विद्यहो सु, हरमंगा जाइत कान एविक" उत्सुकत: पत्तक बर जण
आपत मानक" मुदा नहि रहि पत्तक" विह्वल भाइके" ईश्वर दृष्टि अउ "हरमंगा"
पाहि "पत्तक" नेहु मल अक्षम कछुए पति" गति जयन कलकाम मनउई लक
मोह गीक भाइ विद्यहोके" पदलक

प्राणनाथकं* इत्सीक प्रणमं ।

अहाँ सुँध बिछरा दलहूँ १५ हजार गिलोँज ५५ लोँछ खानी लें

आपकी कुदृष्टि आयन ?

अण्णक दासो मुनयना

लिफाफक* बन्द करी रवि विक्रम भाइक* २३ इन्कवि लिखत* वरि
विक्रम चौकल्लह फंग लिफाफक* तका रकिष्टमे राखि लभनन बन्दा करी करी
अत नहि होइ

अगिला शनिर्क गाय ज्ञान का एक नया विचार देना है

इस प्रकार "वच" ज्ञान मुक्ति का साधक है। इस आ विवेकात् अपन जीवों में तुला
वचन से साथ ही अन्तर्यामी जीवों में स्वयंसेवक चरित्र का रूप मनाशरीर तुलाकाय और
विद्वत्संगी प्रकल्पक-

द्वयम् अस्मिन् सुख्यता

इस विद्यार्थी ने कि काल उ अर्थक लेल गन कनक छुट्टाई अछि
एक लेखक उ अर्थक लेल गन कनक छुट्टाई अछि ए हयै

इस वाक्यांश में हमें हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के संयोजन के बारे में पता चलता है। यह वाक्यांश हमें यह भी बताता है कि यह संयोजन एक रासायनिक अभिक्रिया है।

ॐ अग्न मन्त्रं कृत्वा:

आर्त्तिक शिखर

[illegible]

जहाँ स्वर्ण के बर्तन उज्ज्वल पड़ते हैं अपर शीतल बुझते हुए
 + बुझते हैं तब तक कि जो भी जानते पढ़ाते हैं वह तो मर्लित हो
 न इच्छित हो ही जाते हैं कि वह न चाहें हैं। छैक घोरक, अथवा
 एक हफ्ता तक वह धुते

विष्णु कृष्णार्जुनस्य स्याद्योजो २

दासी सुनयन

एक श्रृंखला, जहाँ एक गतिविधि अंतर्गत भौतिक और अंतर
एक श्रृंखला में एक गतिविधि, गतिविधि अंतर्गत भौतिक और अंतर
एक श्रृंखला में एक गतिविधि, गतिविधि अंतर्गत भौतिक और अंतर

[illegible]

जो नव निम्नलिखित पन्थन अतः राहा समय गीत पुरा छै रहि

समय निजापि आन पदधरि विजय नदीधन उ नन दादा नर दे-
हपरासी ।' मोहन आस्वासन देन्धिनि ।

पातुकाय कथिड कयलक धनाय कयि अमोज लका पैसा नक्षर पुनिल
नः वानहुमं गहायत आन ई बाज एक रा शीशकाड चलिउ दनकन बने
ज रहन ही एकरा बनव

नातकाकी छाती पीरिऊ, कनः ननलन हुइका उपयनक चिन उर
छननि पाडः पीजक टाका पैसा हन पुडिउ पुन इधिन नन वन छननि
बाबैमं क्रिपुह हन उमरनि उ नक्ष कालीन कि बलि । या खुबदा न
नलनि ककर शरीरबयैक धनकक ताक अनेक

सम बुजकः हाँ गनः नातकाक आन विहय अडलि इधिन
अनम गका पैसा नः विजय देन फलक छपे नाकक पु अनेकर पाड
दु गार नैन छुदाह बने ननद न ननगन इन ननद भाइ बैहनक
कबाक ननः व्यवस्था कथिन बिहारी पाहय निमिउ दन गननि ।

विजय ननजक ताक गताह वि गृह रि नः विजयक नन
का नगल उरमि प्राण हनद कनेक कह मयन पनै छेक ननर के इधिन
तकः प्रतीक्षा छलैक अपना त नक अण तलैक

राजक नक अण छलनि नातक कनधन राज नः मयन
पत्रक लउम्या करह नक नक यजंत प्रवसि धुन अण नः मयन
राधन

दजा वड धुमधामरं पनैक ननर बुजय बैसन बहुत रनः नन
एन नुबत अणनन नमः भल गनैक एणः छनै राधन दुइका नः मयन
सधक टकनक तनि नन नैक

कथिनी आपन गनैक पुनः ननर बार इधर = इधर नैक नः मयन
टाकलक गुवाग पडिगन नन उ नः अण कनर इधिन न ननैक नः मयन
विवह नः घरमं निरुतब नन छैक नः मयन

रविक बाधर कथिनी हंसलैक अक विवाह का तन पः नन छलैक
मिहिन नः मयन छलैक विवाह छलैक नन मयन कः प्रकल नः मयन
नन नैक आन वर पुड तै कथिनाक धरमं बाधर निरुतब खुलवब नन नः मयन
पः नन नैक ओहो नन दू नः अण कपन छन आ नः रविक इधिन उरमि
आ इगडा खतम पः नन नैक नन वर नन नः मयन

बाधर गन अनेक नन नै कथिनी कथिनी काल भेट इधिन छलैक
नातक नै नन नैक, नै नन पड गेल लैक नन छेइबासं रनि नैक
नन कयु नन नः मयन नन कयु नै पदाइएक नम

नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन

नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन

नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन

नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन

नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन

नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन

नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन

नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन

नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन

नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन
नन नैक नन नः मयन कथिनी नन नैक कः मयन

रवि भाषा तकलके काँयना लिय भोजन दहयें जहाँ तहाँ सुनार चमक के
 साँझा दुष्ट मरत तापनेक सुख दुष्टएँ तजेत किहु कथ्यन खान बाबन
 मर बत आर छनै अविता कह्यो हय गों बना हँ आब देह भो यन जो
 हथालांकवि तहाँ विवाह छेक दुइर मय बर लोक हखनेक न को करे
 सोचौक १

—‘तउ सोचइ रहिक’ कविता अहिना निर्मय भवलेक । रविक अँनुर
 लुख भँप्य या बँधल स्वयं लोक अँनुर रवि गेल छलेक । जँ अपन भँडन
 नुअ अँनुरकेँ पोछइ-गडइय सागति छति ।

रविक मोन निरंगणसँ बहर भउ गेलैक । एक टा अंगुचत अण्ड अँनुर क
 ठहलेक—‘बिषाहक बाप की दइ छै कयिल !’

अइ बेर कविता सब गेलैक । दानक अँनुरकिय क अँनुरकिय अँनुर
 कैय छान नहि गलेक । अँनुर दह क अँनुर बलसँक कालकिय अँनुर
 छति छति आ अँनुरक प्रमक मय कय अँनुर दइ अँनुर छलेक । अँनुर
 कदमकेँ हय क अँनुर बलसँक अँनुर नान बुझका ठै की मय अँनुर
 छैक ।

विचित्र दयादक हतेकनाम अँनुर रवि कविताक अँनुर रवि
 बहुरदु ठहल—‘तउ आ, अँनुर हमरोँ सप टा बुझ देत छियेक ।’

बहर वहाँ बर भउ गेल छलेक । रवि मुँह मुयाक अँनुरक
 कानम गेल छल कालक गीकिय मुँह गँनुरे ईपनेक रवि कविता
 रहल छलेक ।

फेर कानम बर भउ गेलैक । मुँह उठ रवि दिस तकलके । विच
 छलेक अँनुरा दिस । कविता गीकिय अँनुरक अँनुर भउ गेल । रवि
 तकलके कविताक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 दुष्टएँ गलेत कविता कविता कविता कविता कविता कविता कविता
 रापकाकाकेँ कहयनि सौँसे मयकेँ कहयकेँ ।

आ, दौदत कोठगीहँ बहर चल गेलैक । रविकेँ हर भलेक । अँनुर
 विह अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 सपसावनि गेल तँ बाबुसँ गेलि खुआ दन गेलैक । विचित्र दयादक अँनुर
 दौदत रवि दौदिक अँनुर आबत । कविताक कानो पता रवि छलेक

रवि दौदिक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक

रवि दौदिक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक

अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक

अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक

अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक

अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक

अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक
 अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक अँनुरक

ਰਵਿ ਕੁਨਿਯਤ ਬੈਲਿ ਗੇਲ ।

नामक स्थान समीक कवि हार छलेक गेक बक गन प गन
हलेक आ गहो आधा घन दधनन मकि आ बहन लनेक । धि गेक हार +
चार दोब आयन छन गेक उगि आ हार विरयन समीक बनेक २५ छन

क'उ ओर तोंगरी पदक रहल छलैक चौह उधर का'उ पर रहल
मौत्र ओ उधोड़क छलेक जेकर समय बिचन करिय का'उ ओर धन रहल
परि गम भूकत हमरापर ओ कनूको धाहु गहि उठल हाथसि ।

[illegible]

स्थान उत्तरि प्लेटफार्मपर आदि गेल । फेर करि काठ रोकलक ।
 बान भ गितिन सदा अरु बोन गतिन छदाक लेल नर नरि बनि गेल
 कला अकालीनो नैकि नैकाज कवन भाव नै नैके दू ग क म अरु
 मागल गेल अरु पनेक अकल नै नै नै नै नै नै नै नै नै
 इ गेल कला दुनु अकल गकल नै नै नै नै नै नै नै नै नै
 दुनु कला अकल नै नै ?

[illegible]

एकाएक ओकरा अपने बंदर देखकर तौल आकांक्षी भैलैक । तऊ
चहल वी जउ चल्लामयें पाँड़िया बंदरें मी पल हयलैक । तऊ वी पुनक ० तऊ
भोंक जाकर बिन चिह्न काका ३५ जाइत रहलैक । तऊ प्वाँड पल ललैक
यात्रीमय लयकल अपने कलस दिस चल गेल छल । किछु पाछें पल्लकल
गेल छलैक । सामान जहिक पौटफापरमर जाँड़ रीच बंदिगलमयें गेल ।

वर्षाकालमें जलानि भूकदम् खराब रहैव । बीचमें गहल टंगुल एकदम
 चककर १५ गज घलैव आ बडका आगमकुम्में बैठै दृक्क । अर्धकि गेल
 तैक बीचमें बडको टः घांगि वरुँ एक टः बीच कालमें पड़ल रहैव रावे
 कालमें गेल आ अगवतः होजौं तः ३३ गेल ।

अतः गोपनीय पदार्थ छलैक आ कय फोटोबाक बाद आधा दुकड़ी संगे
 तेन एन छलैक बचिह आधा दुकड़ी संगे संगे अपन अकृति देखब एकदम
 छलैक । कहवा दुहा सटा अपन चहर देखलक रवि चौधर वर्षमं बंधी
 तेन कन्यासंगे एखित अपन नदर । अइ दैम प्रवासमे सत्रह वर्षक नौजवानक
 लजन कनरु हरा गन छलैक । आइ नौजवानक आकृति अयनाक प्रतिबिम्बक
 छलैक तकबाकी रवि असफल चेष्ट कयलक । बीतले चौधर वर्षक प्रत्येक क्षण
 तेन चक्रेषु अइ निशान छलैक । गोर अकृति अरिक्ता तानावण
 तेन हलैक उ अखिर एक ठा कलार नदाला परसि गन रहैक कशमं
 अयन बहो-नहो कनर तर झलकत लागल रहैक आ छी फोटक बलिष्ठ शरीर
 तेन तेन आर नौ दुकन न पगैत छलैक । अतः अपन अकृति अपन अयना
 क प्रतिबिम्ब देखलक आ सट लगलैक जरा धुरि अयनाक आकर निगोवण
 तेन सट सट बिगनन जोग पथ अपन कनो बेर गम करि जयबाक सिवात भन
 नैक । पुरा, प्रत्येक बेर उपहास करैत, भयंसा करैत गाम धरिक लांकक
 आ ओकर अखिरक आगो नचैत छलैक आ नचैत छलैक ओइ उपहास करैत
 अतः अकृति धन कोइ उपहास अपनानि आ दनाश वागुजोक अकृति
 अतः निश्चय बदलि कहल छलैक । कोना लखु ग्रंथत ओ सफक सोझाँ ? कां
 अतः तेनक बे किराक गाम छोड़िक अगल छल ? जवाब देबाक प्रयोजने नहि
 छल । कहित सभकेँ कहने होयतैक आ सोँसे गाम ओकर नामधर भूक
 तेन तेन

एक जेर फेर आकरा ककितपर कौन भोसैक । ई कोष गाम छोटबाक
 नै एकवै जेर एकवै बानक जल कम्प नहि भेल सनैक । ओकर सम्पूर्ण
 सबै कइ देलकै । एक बानक कमजोरोमे एक टा एकान्त्रक बलोनम
 तैकर सम टा खोज, सम टा पहचानाकांरा बरिक्क अंतर थउ भोसैक । आइयो
 एक टा एक बानक । पुरा गेल गेल । पुरान दण्डगण आ फेर आकरासमक
 एक टा एक बानक । एक कानक एक कानक बानक । उठैत एक
 एक टा एक आ एक टा एकको

यदा रक्षयबाक अउर कहै ललेक नवनकोका बाइसमें बाइस जेव
गल सुनोयन रवि भाग बनें यदा लुनजान नालकाका अरुचकाक रविज के
लोक विहबाक चपरा कोर गहनन आ ना आइसने इंडन एकेक अ रिकी
उतसई 'रवि छउ है ! सते रवि छउ ।'

हैं आलकाका समी छैं रवि नानासैं डी पाइन बवन ।
लालकाका आका सतवाण अम नई दलधिन आकर कइस अरुठ मनन रिह
होकि भेलधिन आ आलासै लगा कोर कलधधिन रविज अम नाला कहु
दिनक बाहय बांठे बाहय लोइक निकसि गइलैक रवि हिचुकि रिकुकि
कनैठ रहल- लालकाकाक छोटोसै सटल ।

लालकाका बडोकल घां यो मंग कनैठ इकधिन क' उपरि कइल
रवि दुइ उबायें पाइ लोइक अरु रवि अरु कपलधिन । उतइ कइ रवि नाला
रुनकर आल दुटि रविज के कोरि के नई सकलई दुइ अम रविज के
छोटि गेसल इमरतकनिके ।

लालकाकाक बल ओकर कलंबाकें चौरि गेलैक । एकां उरु
लोक धोयक फा नई लोइ कइल रवि आ अरु कइल रवि
बावु आका रवि रवि रविधिन आकर पणकें अरु रवि कइलधिन एकर
अरुगनें मुँह चोटि वन कइधिन फा कइल नाल धून अरु रवि
छेक गायधे ?

लालकाका नवन कनैठ सुनोयन रविज अरुचक आ दुइ अम
रेक गलजामक उरि रवि अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
ओकर मंग अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
कइ रविज किछुअ रवि मुनकै रवि अरु अरु अरु अरु अरु अरु
दरुजवापर जुट लाला रवि । रविज अरुचिकक मोट ।

लालकाका अरुचके समुतलनि । अरुचक मुँहभरि एम अरु अरुचक
कइलधिन 'चिकिचौ छउ कें अरुचक अरु ?'

अरि गायक लोक दरुजवापर अरु अरु मेले छलैक । अरुचक अरुचक
मना लाल गलैक रवि अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
बावु लोइ छल

अरु अरु आ अरुचक रवि अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

लालकाका पोरुए हाय रवि कइलधिन 'गनक' छोट नंग कइ रवि !
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

फिर सम चले गेलेंक : दाखवण गण मीट आ मंडली इतल जाला
रहि अपन कांठलीय दकल गेले गये बन्वुल कोठली चि जाल बंडल
ओही कोठलीमें सामान रखबौलक ।

घोजी बहुत राम तबाल कयन कुलंडन आ नानक भुले गेले
किरण भानन रही कत गन मीट केल : कान मल्लई एतक दन
ककरो अपन बात बांके नहि सकलेंक : 'अज' गोन मल्लेक मुन ओक दन
आरवरी धलैक जे ओक पसलां वत नई हईन हुलैक आ अउरजालेक
क ओर आकर कलेंक जे नैयें ओक मल्लेक मल्लेक न अउर जालेक
मल्लेक जालेक चैक ओ अनपन नय वचनक इन भर कलेंक
अनितय समयमें भैटै नहि भड सकल ।

बान्नीक कांठलीमें पहल पहल ओ एरी मुनघुनमें तापल कल ।
ओक ध्यान मल्लेक न आ ओक धीक कायलेंक कल एत
कान मल्लेक गेले बौकल कलेंक : 'अज' गोन मल्लेक मुन ओक दन
नोमिदानीं कलनि तकपर, ने खुदटीपर सरकल रुई । देवुनपर हुन
मल्लेक रामायण महाभारत कयन कलेंक : मल्लेक मल्लेक कलेंक

ओकर अज कयन देवदल दिस गेलैक । देवानपारीं बन्वुलें मल्लेक
हुन गिरता हुलैक आइ मल्लेक न गोन कलेंक : 'अज' गोन मल्लेक मुन ओक दन
छोड़ोपध एतल दन हुलैक नोन कलेंक हुलैक : 'अज' गोन मल्लेक मुन ओक दन
कलनि एक टा पल्लेक कलेंक मल्लेक मल्लेक कलेंक : 'अज' गोन मल्लेक मुन ओक दन
हुनकलें लखवा चै हेल : 'अज' गोन मल्लेक मुन ओक दन
मल्लेक बड गेक नल्लेक नल्लेक कलेंक : 'अज' गोन मल्लेक मुन ओक दन
मल्लेक काल मल्लेक हलि गेले कलेंक मल्लेक कलेंक : 'अज' गोन मल्लेक मुन ओक दन
कलेंक कलेंक मल्लेक कलेंक : 'अज' गोन मल्लेक मुन ओक दन
विचिया उठल— 'लालकाकी ।'

लालकाकी दौहल अयलधिन 'की लेवड रवि ?'

लालकाकीक एत दौहल अयलधिन रविकें अपन विचिअधिकापर
धलैक कहलकनि किनु नहि काका इति दखलल ओक कलेंक
मल्लेक से नहि देखेन छी ?'

लालकाकी मल्लेक मल्लेक कलेंक कलेंक कलेंक गेल इंदरि । कलेंक

अउ कांठलीक दबाल मल्लेक एत मल्लेक टा फाटी खगल धल जाइत छलैक
आकिड बकसमें राखि देने छिदेंक । कलेंक इति देखैक ओर ।

लालकाकीक मल्लेक मल्लेक कलेंक कलेंक अउरधिकापर कलेंक मल्लेक
लालकाकीक लालकाकी गोन एक टा रंकाकें जय दल्लेक मल्लेक दबलैक
अपने मुनघुनमें सागि गेल रहि ।

किएक ने कहलकै कलेंक ओ कलेंक मल्लेक ? कलेंक मल्लेक मल्लेक
कलेंक ओकर मल्लेक मल्लेक मल्लेक कलेंक कलेंक मल्लेक कलेंक कलेंक
कलेंक ओ मल्लेक एक टा अपराध बांध अपन कलेंक मल्लेक मल्लेक
कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक
कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक
कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक
कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक
कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक
कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

एत किएक कलेंक ? एत किएक कलेंक कलेंक ?

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक कलेंक

मया दत्त वर्षक मान वर्षक गतु श्री तीन वर्षक दुइटा मफक संग करः
ललांघन चाहे रकरको लग जिक् रकून लीक भः-कु रिक दुष्ट प्रका
जाहू न ललाकः दोसर दिख छः-कु लीक

विष्णुपात्रा आदल कुलैक आमः आ गामक म्कुलने धारल कुल ।
 ए. धे मेरा गिराल बाढ्या नहि धालैक बाध गयक हइ म्कुलमे दया दलांथन
 कालि ओ गाम नहि छल— भाइक डेरापर गेल छल । सुनयन शीखे कतने
 डेरापर सपाद पढबा देने बलधिउ । सभ दीहल आदल कुलैक ।

मुदा रिकें ककरीसँ किछु बबबाक पुछबाक सहसे नहि थऽ जऽ
हलेंक जाखनसँ जायन छऽ ३० वर्षीय रिज्जामामनक बांच अन्तर्ध्याघरसँ बाँक
बबल बैसत रहैत छल अश्राधक जात क्कबाक हऽ नोचत नहि छलैत राख तऽ
घरत छल ओ छाय एखन आकर मन्दूजी ज्योतिषधरसँ अरत छलैक । भरत हऽ
ककरीसँ किछु बाजब ककरा किछु मुन्त्र सम्भरि गेल । इत छलैक जाय
दक्षिण एक टा अवेबै बनिकऽ रिकें गेल छल रिकें ।

पावन जडुन कानि श्रद्धाधेन आहु लय लखनर पावन रजौक अरु
ल्लांटको समोके कठि रेन छिपनि ।'

हवि अकचकाइत बाबल- 'अहो! अहो! ? अहो! कांनो दोमम
अहो! मांडन भइ ।'

मोहनको हैमो मणि गति- 'चौदह वर्षपर सभ ठ चौक झुंझो अन्तराल
लागौक १५५ सभ वहाँ कऽ २० वर्षक दूर गइक अछि जे १५५ सभ
प्रांशु गणि गत हए १५५ २० वर्षक पुरा समय दूर भइक न
लिखि रहक । छोटका समय बचबो गवन-नूकर कसमखिन, नहिई
बसबा समय दू मासक १५५ २० वर्षक दूर भइक न
बसबा समय १५५ २० वर्षक दूर भइक न
हए 'मोहनको' घ घाटो कान काठ १५५ २० वर्षक दूर भइक न
'काक छैक मोहन ! साँएमो कान बिनु घर-घराहो कान गइव ? अपने
किछु कहब तऊ आशा मय कह्य कमल कह्य अछि तऊ अकालिक
हए विक्रम १५५ २० वर्षक दूर भइक न
स्कूलमे मास्त्री धरा हेलियक कह्य पुन कान १५५ २० वर्षक दूर भइक न
वाग्यक आ सभ ठ हए १५५ २० वर्षक दूर भइक न
१५५ २० वर्षक दूर भइक न

ब्रह्मकः चरुः चरुः भयन्तः चरुः भयन्तः अपराधी आह भयन्तः
 ब्रह्मकः चरुः चरुः भयन्तः चरुः भयन्तः अपराधी आह भयन्तः

जन्म का नाम विष्णु कृष्णदास शर्मा त प्रजा सुम्मा बहि कल गवि ३
 बनेक सुख जिसर । सपसै बाब सपसै भैट करहिछ ।'

[illegible]

छांटकी भौजी सुनवना बड़ हौसी कधलधिन, मुदा रणि सलज नहि धर
 ३८ । भौजी आहिना छलधिन- कौनो पोरवतन नहि भेल छलनि । कान्हि पो
 ३९ । छलधिन दलधिन दलधिन वि आका अलधिन धनिक ॥ ३९ आनः कान
 ४० । नहि = नहि विनः अलधिन पुन गतिथ दलकानि गंव भौजी
 ४१ । दलधिन कलधिन- 'सैर बुझियौक । जदू अवेव अलि हमरा । हपरा धलन
 ४२ । दलधिन दलधिन दलधिन ॥ ४२ अलधिन पलधिन पलधिन दलधिन

દાંતરા સહસ્ત્રાક સાહસ નહિ મેલેક । રવિ માંજન કડ ધૂરિ આયલ ।

[illegible]

मनाल इष्ट बालि बटलेक. 'नै बदर, फुरसमिक गप्प कहाँ ? गप्पमै रहन
= क. रीतप गं. फागुन एक टा जेन क-म-क. दौडलन अगि रहल ग।

पराज बहू सभक ठंगरी कठि रहल छलैक । तैयो नहि जायि किण्क
 सन्तह पनेज के आ पदमि बजि रहल छैक । ओ ध्यानमे आकर चतरा
 सन्तह बितलाह जैतह वधम गम्भिरता वा परिपक्वताक कोनो चैह पनाजक
 सन्तह नहि छलैक । सज्ज साकसि आ बाथि बाना आतिता छलैक । बस
 पदम कइ आतिता रहल रहल गोक कता । पदमक तंग बाहरो छलैक । १३५

[illegible]

रवि और सौम्य एक ही जाति के अन्तर्गत आते हैं।
मौसमी अन्तर्गत दो भागों में बाँटे जा सकते हैं।
किया एक भाग में आता है और दूसरा भाग में आता है।
यह है कि दोनों भागों में आता है।

आं भवसि पृथग्वर्ये ज्ञानं वार्यकं लग्नं विप्रकं सारं चर्यं बह्वर्णं च सत्यं
साधकं संगं च श्रोतुं पदं लिख्यते ।

कौड़ा इदाम घट फलैक प हयरी नह नृत्तम प्राले । अहो कौकः =
पुलि तैत छिएक मायरी ? को लउ अहाँक संगी अछि ।

गणित* खौडाक धरा खास बजले कवन प्रथम लक्ष ५०५ पलेक
इतलके भा निरिच्छल रङ्ग, हम् कान्तिङ्ग पुस्तक ओकरासँ । हम्प अगल १५
गडतेक अंकन

एव सुशोभं दम्कैव अकृति तं शैवस्य चतु गत ।

झोड़ आकुत्तिपर हँसते पसरलैक—‘नहिं चिन्तलहुँ में !’

गवि अवाक जे गेल सो कविता कलेक वैह कविता बल गेल
दिन ओकर लागम हैक जे अंश बालमगी निकलिकेही कलेक वैह ओ
ओहन लावण्यमयी काक धऽ गलेक वैह कविता बकर एक ल ओम्पक ओ
दुपहरियाक बाद आयल वषाक अंश्याशिल अंश्याम भावम देखि ओक ओ
ओकर विवेक ओकरा धखी रेने कुनैक वैह कविता व अंश्याम का ल गेल
ओकर कठलोस चम गेल रहैक हग कहबैक सोम गामक कलेक

वैद कविता रचिके टोकने कलेक 'नहि विन्हासु ने ।'

[illegible]

कविता गेय कल्पे छलैक । इहे सुन्दर कविता लल वरक कोन कमी ।
कविता कविताए एक छ दुए ईसे पसरल रहैक- 'सरो ।'

येत हेसा कर्जितक ओंपा एखन घसगत कलैक आठे हैमये कोसो दुख
हो संगत ये छलेक बालसंगोक वेद परिचित हैमी आ यक्ष, 'नहि चिन्हालहूँ न

नव अवस्थाओं को सतत चरम और दृष्टिकोणों के समुद्र में है।
 १- अति गति- 'क्यू हयें आओ । आपके' पुस्तिका के लिए यह नई म.
 २- अति हयें आपके घर ?

[illegible]

नमः अयत्तपरं शिवं यदि विदुस्तर्कैः । कार्यतः ईशिकऽशोकत्वकैः नदि

ਸੁੱਚ ਬੋਨਿਕ ਗਲੈਕ ਭਾ ਬੋਨਿਕਡ ਆਧਕੁ ਰੁਫਿ ਗੇਲ

क. न. च. दुष्टिर्गो ज्ञानं नति शक्ति गैक कविता मुदा ओकर
न. च. दुष्टिर्गो ज्ञानं एकदम रोता गैलैक—'बहू बदलि गेल छी मे हम् !

किन्तु हाथ धोना । कहलकै, 'तौ' किण्ठ ब्रह्मबै अतिक, कतेक हम
 ॥ ॥ देखि ले, सम टा कंगरी पाकि गेल सोहर तऽ ओहिना कागि सौक
 ॥ ॥ उक्त कने बेसी दण्ड गेलि जै' तौ' ॥ ॥ हम कठमस्त यऽ गेल ॥ ॥

कांतिरक्षे एव ईषी नाना गतेषु श्वेद वान इत्येतत् छ' त' । तस्य वानः
 सति न ह्यप कर्तव्य इत्यत्र एषी मुनि पदं कृतं तस्य नर इत्यत्र छ' नाना गतेषु
 ननः श्वेद वान इत्यत्र वानः तस्य नर इत्यत्र छ' नाना गतेषु

सिध्दो सिद्धां तस्मै नमः यत्र विज्ञेयं कश्चित् कश्चित्
लोकान्तर्गते ह्यपि तु पश्यन्तु ॥ १ ॥

बात समीर मेल का सहा सनेक । अंकुश हैसिये उड़वबाक कंठ का
गवि कहलकै 'एहन ओकरे इ' जेकर एक का प्रचुर मित्र इ' के
ताह बासकीर सभ दिन ठराइत रहे हए

[illegible]

विज्ञान मान रहने के ३ लव प्रयोग बच्चों में आनंद उत्पन्न करने के लिये है।
कहलकै - प्रत्येक तः कहलकै छीक तः लव 'कहलकै' न बहलकै छीक एकल बहलकै
घा

कविता है। मैंने एक ट. दशरथ सेपां राम ल ब्रह्म लन लेखन किया
हैं। यदि खान बाए तकेंत सैप रे जाइल छीये

रवि क्रोधपूर्वक बोलत- 'सा क्यों है बकसुन ? कून कोन शरणा
 ६४ अपने जोक, कहेंगे पढ़ने प्रियुक्त पढ़ें । ई कौन मिसर

कवित्तक हैरी आ इयम आ नक्षत्रय च। इत्येक 'ले' कवित्तक-
जाय लं० / बस वष्ट क ले ह्य त। अथ केन० छ।

रवि आ कान्ता अष्टात्मक भवेत् ए चक्रैक वक्रात् ॥ १ ॥
 कथं सप्त घर चक्रैक आद्यैक कथं सप्त चक्रैक अन्तर्गत चक्रैक
 क्रिष्ण शक्ति हृदयको मार्ग सप्त दुर्गको द्वात्रिंशत् चक्रैक चक्रैक आद्य चक्र
 उक्ति नाना भवार्थैक चक्रैक विराट् चक्रैक अष्टा चक्रैक आद्य चक्रैक
 नहि चक्रैक लय हृदय चक्रैक चक्रैक चक्रैक

हवि शोचानामृक हण बहोमक किहु दू एबि गहँ नकनक हण
अहिना ग्रांड हणैक आका गहँन जगनक जा के गुर वृद्ध न क
पान काफ़ी हल्लुक भी धुन नहि गहँ हणैक कविता नकन आ न न
कान नमन अलहान नहि हणैक कष्ट अ अभाऊ हणैक नैक कान नकन

कुछ भक्तियों । श्री अम्बा चौदह वर्ष की आकर गङ्गा केवलक एक २१ अपराधबोधक
ब्रह्म । कर्कशा रुहव धावर्म क्षमा कऽ दन सैक आकरु , अं धृति ए नय निनगी
गुरु जऽ भक्तः सध्या विमरिक्तः ।

गामक धातुपर ओंकर इंग नव आत्मविश्वामक संग यदि रहत छलीक.

स्वि चतु ग्लैक कतिना ओहिना ताकि रहलि आंकर शुक्ति जाइत स्वि क
अनुपम काल रहलैक पर स्वि दुष्टपथलै अदृश्य भए ग्लैक

एक दिन उसी गायमें अद्भुत घट गेल रहैक धरि गायमें चर्चा रहैक
गन्धका नजेक तकोत अपस्थानि आ विक्षिप्त मन घट गेल छलथिन तकरो कोनो
उद नर भलि रहल छलैक गायमें बाहर दोहाय जाइत जाक दसुर छलैक
कर कर बानक मन्दर गति भेल छलैक ककरा किछु बुझल भइ छलैक
लोकन ए घ अनेत छलैक । छाना कविरो ए अनेत छलैक

नृप चाहा कहा जैत छलैक जे पहल काण्ड भऽ जयसैक । वारस
उल्लाई गेल गवैक कारवासे चले गलि रहैक । मोनस कविशे कोना जारका पति
छलैक । लोक भासलगे गति । समकरना आ सम्पूर्ण ग्रामक आश भेकारपर
छलैक स आना कलैक । ककर सन्दह बाइसैक । मंग पायो वैठ छलैक

और कोनो विरोध कियाक नहि करलकै से सोनि आइया आश्चर्य होइत
इह जगह जमाने हुनि ओ फनिन कपलनै छनैक 'हम कति दर्बैक एयकाकाक'
बनैत 'ओ स एयका' ऊदबैक

ॐ सर्वे मां गच्छन्ति ॥ एव नाम हार्दिकं यद्यपि दिनं त्वत्तु निवेदनं यः
श्रेष्ठं भागं जयन्ताकं सुखं मुनियोजकं वानं लागलं सुखैश्च घृति
नेत्रं २ जातिं दिनं वीर्यं इव कामं गन्ताय ॥ अक्षिणीं सञ्चनं हार्दिकं

१२. चित्तलोक सज्जन चित्तलोक अ. ममो बांति गेलोक रविक कांति पता
१३. गेलोक भोक्ता कांति रता नंदी कलोक एता विष्णुक धनलोक / खसलो कविल
१४. धनलोक

उत्तर: ठीक है। धर्मक, धर्मक व अं मयक कहैक गणकाकाक

प्रश्न अप्रत्याशित छत्नेक । कविता कान्हू चौकिल । फेर २२५
कहलकै- 'है, किएक नहि सऽ बरधुर ?'

एव कर इत्यादित हाँसा बाजल- 'तऽ फेर अइया किएक नहि कहल
नऽ जय लल । ओ गेहो ओन अबल । नहि लिखल हारल पहुँचल दिन ।'

लखकै स्नेहसँ जग छोडि देहसँ मरबैत कविता कहलकै 'आइ बी
मोस छलैक बेट । ओ एतक बरधुर राम झलल हाँस जाल अइत तऽ तऽ
लेल ककितियनि ? बेर अइत दधिक, अबस पहुँच देबुन तस ।'

लल खून प्रसन्न नहि भन, मुरा नयक दुखर ओ आस्वासन फोर
बात आगू नहि बाँझल । गाल-बाँझल संवाये लागि गेल ।

कविता कहनमे ठाढ़ रहि गेल । अइ रवि अँकरा नहि भँसल कान्हू
ओ कहन रहथिन नै ई आकृति नै एक बेर देखि लल कम-जमानार तऽ
विमरि सकल । ओ यदि आकर ई आकृति अइ दखितथिन ? कहन नहि
जायकऽ ज्ञानाद भन आकृति ओ एतक उज्जल बनल अइत । यदि सऽ बरि
मकानेज ओकरा तकर दख छलैक । इहन दसु सँत लल अँकि नहि
कहिससँ एक भुग बीति गेलैक ।

आर कतक दिन ? कविताक धोम प्रबल ठठलैक बकर कान्हू कथन
गाँव आ हाथ उठा इजवसँ प्रथम कथनकनि । पत्रगतक ई अँकि आर कतक
अछि भगवान !

सते, बहुत राम समय बोति मेल छत्नेक ।

आब हथेली मोहनपुरमे सधमै पड़ल पिसा रहि रहैत कर ।
तँ कहिय । आपन दानवामे विदा भर पल छलल । आब गजकै पल पल
गौतम मुनिकै नान पडैत । रज अँ नहि पडैत छेक । ओ लखकै कहलकै
मिसर पल दिन अपन मृतल गेल गेलल । सँत उललल बीजल हल बिहल
पहुँचि गेलनि तँही पडल । पिसा मुनल रहल । अरु ललकै चित्त पलैक
बेट देह भऽ इजलकनि । मुद ककल । बिहोषन नै रहल पिसाक मर
पहल छननि । कहल पिसा रहि छलल । गजकै धरकल भँस जाल पल हल

ओ भड नयक पडल पडल कमना बाडक दरबारमे हाँसलवानो
हल । बल गेल नहि नलक । कागजक लल लल गेल रहथि । हथेली भँसल
हल । रामक कारा अदुनय किन नहि मुनल गेलनि । मुदा एक दिन बिना
उना सूचनाक अपने दर्भस्थल भऽ गेलथिन । 'नहि रहै भेल राम । रवि दऽ
मुनलक तऽ नहि रहै पल । एकमर काना रहल । तँ । अही छौँ दिक मुँह दखि
हल । जँयसँ नहि अरलल तँ । तकर कानो दया नाय नहि । कानो छोडिकऽ बा
लकै आकरा ?'

लल बिचमे टाँकि दँतधिन । भेल हनैक कानो कारण मौसी । रवि आना
हल । रहलकना बेट रहि अछि । अबस धूरि ऐत एक दिन । मुद आकर दऽ
कड अछि बुरि आयलि जौ मौसी, से बह दर्भक जल ।'

ओ हाँसल बीन बगै दिन नहि रहलनि रामक लल । मौसी अँबिदे बिजौन
हल । पल पल रहि धलनि । अँकरा बँस सध हाँस गेलनि । अन्तिम दिन
अइत कहलनि । पल दन छलिय । तँरा नै पँहमे आगि देवाक अधिकार लल रहल
हल । अँकरा तऽ अललक इमर । हम्म पलनक चित्त भगवानकै छलनि ।

ललकै मुदा ककल कानो चित्त नहि छलनि । मौसिक रम ट काज
अछि । अँकरा पलनि । लल ककल कुप्रकाक चेष्ट कयलथिन, राम नहि
हल । मौसिक मयंक प्रबल छलनि ।

आना, गाममे मर्यादक प्रश्नमे आब बेसी लोक आगू नहि बबैत छल ।
लल पल । अँकरा लोचन । पल गजक मर्यादक दर्भल हल । अँकरा
हल । बिधवा बैठ नहि गामे रहलथिन आ सम्पूर्ण मर्यादापूर्वक
हल । अँकरा कहलकै लल नहि पलनकान ओ अइ गजक नहि छलल
हल । अँकरा कुलम करैलथिन आ अँकर स्वापक मनुक जमान ओकर
हल । अँकर संग मनुकधन ।

ई लँ पलक मय एहि । अँकर बाहरी ककल स्वध नहि रहैक नै बिन
हल । अँकर लल कानो काज कर । एक बेर अँकरा टाँक करीजा अपनासँ
हल । जपल उल अनलनि । ओकाना चौधरी कानो दस बँक नहि
हल । अपन मय कनधन योगक सन्तल हल । सेहो आही ओकल । राम ओ
हल । अँकर बाहरी अँकर भदमरा यौजमे कयलथिन । नमो आ गोवर्धन दुन
हल । अँकर चित्त सेहो अपने मर्यादक यौजमे करैलथिन । अपनासँ छोट
हल । अँकर लँ जपल गेल लल देलथिन ।

पौर गोवर्धन बुधियार ५५ गेलधिन । एक दिन नहि-बहारक मय कयलक
आ फगक म, गेलधिन संगति फगक मलधिन कयल । दू मयन कय बलक
विवाहक टाका नोलनि । आश्विनक देव लेल कलकक कयल दू धाड़क मयन
नहि गेलनि । सप्ताह देन छलधिन । एक कइती कयलधिन- "अपन-अपन कयल
लैक बाढ़ । ननु दवाधल द । दबनि । मूला लोकाल नहिनि । अइना कलधिन । निर
बदलक लेल बढ अक प, गेल आइ । ललककनि क मय नहि कयल छि ।

ओ नहि गेलधिन । कइहु नहि जाइत छलक नीकनक छिहु अइना
धरम सभक बदल । भागल कुनैक शोकन चौधरी नहि बलकक । दइना
दवाधल हाइ छलनि । पैठ मेल लगेन छलक । सब मय आ मयक कय
छलक । मय ए व्यवस्था शोकन चौधरी छल । जालकन मय अ
नहि ल मयनमय नहि छलक । लोहा मय कइना आ अइना नहिना
बैसल छलनि । एक केर मय ए व्यवस्था कौलक बाढ़ मयक केरम मय
दइनाधिन । एक ए मयनमय आइ नहि अइना कलक क अइना नहि
मोहनक । अइना मयन ए गेलधिन । सबक नहि कइना अइनाधिन ।
नहि दइनाधिन । सभ ए इलकाम कयल- छैक मय मयक मय होयबक स
अपन कोठली क मय छैत छलधिन ।

सभक बदल गेल छलक । मय लोकाल चौधरी नहि बलक ।
मयनक मय मय कलक मय कलक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक

आब मयक लोक बेसी होशियार ५५ गेल अछि । फग-फग मय
अइना मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक

आब मयनक बेसी फग-मयक लोकक बेसी मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक

एक क मयनक लोक कलक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक

कलक ए नहि बलक ककरो प्रमाण होइ हाय नहि अइ मय मय
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक

एक क मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक

मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक
मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक मयक

[illegible]

जाहि सारि पहिल बेर सापेच पोश, आंही सल ज्योयक नव माला
 स्थानि कयसि हांगकन चौकने धरु गुरुजक ज्योय माला ज्योय
 चलधिन् शारि गार हल्लि धरि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि
 गुरुजो ताखत मारु, ज्योचि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि
 ज्योयता कयसि माला ज्योय गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि गल्लि
 यका जुग्याना ।

अपने पहिले पंचैतोंसे हरिश्चन्द्र नाम्ने कस्यक ओइ सूरक निवाह कज्जे
गमक मण्डयक ममधनय एउ ककाने गौं मरे देउ हल्लह गकइ हल्ल
बान्। झा अपन पैँथ बसतुक बटौन नन भयस बरक वर भे अमनेय हांशक
चोघा गणक नौउवानमधक भट्कोलने लोचनकिक जसेत एउत अउत ए
हं दूर बसियलक एक ते एउम दिये शवन छाक भाले बसियलक ए
दलक छौं डामप बरने झा गौं हकय गना नन हल्लोअर चिल्लये गहल्ल
मद गतिवसे हरिश्चन्द्र चोघांक पहुँच गेलने एउत भन देइ वर बायलने क
आयल इवातमे संपरी आगू सरावै हरिश्चन्द्र चौधरी ।

मुद्रा गणपत असत हा होशी छलक लंककें नामी बाबूक सत्तक परत
नाह जनि कक जो ककण वरा उघेन पित्त लीव पुढें सुनने हीन छलक
पहिली हडनाथी उघाक कानां जेवें पोक जेवें जेवें करीन सुनने
पाम्हा साईबक पांथक बैसा लीव गणक इयन धुमका जेवें उघेन
पुल्य कपपबा सल्लबा जेल पांथक गेरे लीव भाड जेवें जेवें जेवें
गुणग बाहबक बैसा जेल सुनने उघा कड कानां गेरे अघन अघन अघन
प्रवेरा रोकाबा लेल बेसी जाल पादशी कर्णआसप अपन सल्लपी पदेन
छनि-पैचक नामपर सब दू सब एक वर नीक नीक जीव । मुद्रा सल्लपी
जहना पादशी पाम्हा विदा दोन उधि नाम्हा कड कानां गेरे

नहिं परि लमलनि सारथे कमलाक रुक्मिणी । औ अपन गुनगुन
छवि मान्य मानेकः पैसा बुझि पलायन कः आका बरफ पर हलैक ज

[illegible]

अमृतमहाहवक ३ पुराण श्री. सु. छलनि कतर्वा वयस चित्तनि ५ गउत्र
इत्यु चो हवये वरुन गाने कहु काने गदसो गधमौ बीडर कि प्रमत्त साहंभ
लंक काटपोक सीता ।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ एक एक स्त्री छनि, नाकि-पौण छनि तौपो चाति देखु ।
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मुनि कहेइया वस किछु सुनलकनि

[illegible][illegible]

१५. किछु बंदोल गेल छलैक । मूल्य आ मिश्रान्त- सभ-किछु परिवर्तित
 १६. = अन्तः । मोहनपुरक दुवैसी धर्म ५३ गेल छलैक आ खण्डहरमे न किछु
 १७. = अन्तः आ लज्जास्पद छलैक । ते साधनो ज्ञान शिष्टाचार, गरिम आ
 १८. = वनवासी जीवनक स्वरूप । एक टा स्वार्थ-लोभ सभ्यता बन्त होइ
 १९. = अन्तः देखिने देखिने । वैह अपननेल बर्को पसरि रहल छलैक

धर्मिणापक मांसं कर्हः लानेक २ मंत्रक दत्त यज्ञ कथनक ५०० रु
करेत छान्दस जाग तं जाग आह्वयं तजक जयन कथित कथाद कं नान्तेक
गति बिगानं पदं गति जड नजु धर्मिणापक इतिन कथनक ५०० रु
आ हंर नैदर पडैचा इत्यननि ।

गणम साब तंजक मरु शृ बर कर्म तंज अकार्य इरा अ तंज
मो संदने आका शंकायक अगम वंज तंज अ अकार्य इरा अ तंज
ताकमरु नुद तंज अकार्य इरा अ तंज अकार्य इरा अ तंज
अकार्य इरा अ तंज अकार्य इरा अ तंज अकार्य इरा अ तंज

वाच. बांधस हाक गटे ठेव. वा गज बव जग एक बां न्हव न्हव न्हव

'आहू किण्णक नहि ?' तंजु गलगल होइत सुत दोहर ओपक व्यवस्था चलाइ । बाहक बाद सपनाक कतरन आ सुकर संग गप्पपर मय ।

अमली गण होईत ह्याचें मारुतें शोभनेक दख्खाम— सोंई विराम
नाम जातलें जेतें छान शक नाहीं जाक अणु होकेंकर वैद्यक हेमन बांज बांज
टोप देत ह्याचें मारुतें बाबु पळिण्णक नासु जातु नात पळिण्ण देवना कें
छायात अनाथें संधक पळिण्ण बाबु मात दू ना थिरावळी ना ह्याचें दख्खाम
गुणकर अक यणेक । दू रत अक कामस ह्याचें दख्खाम ।

मृत कमलाक कनिशा कोना दूत वा ज्ञानसम्पन्न अहङ्कार म. नरे
रैत लनेन. संप्रति आज अहङ्कार शब्द बर्णन करने के लिये एक गीत रचने
परैत छल. क्या यहि देखैत लखैक ।

गुणाकर श्रीराम बदा-चदाकः जात समरैत लूनैक अण अन्तम ॥८॥
 इदं ह्येक ईदं ॥९॥ महवक दाव उरि ॥ १० ॥ अण ॥ ११ ॥
 अणवा शरण ॥ १२ ॥ अणवा ॥ १३ ॥ अणवा ॥ १४ ॥

रविवेक* आई दिन गुणकरे कहने छैलैक ई छिम्मा । कमलक अंक
मंजन ५३ छैलैक आकर गान छंडलाक बाँस अइ गायक अछिनि छैलैक
कनल आकर सठ्ठुगि छैलैक आई दिन अनायास आकर हग पड़ूक छ' दि
थिदा ५३ गेलैक ।

तबू बंद अपनत्वसे स्वागत करके, 'समय से आइ आहो' ई नमस्कार दोस्त मोन पकत । एतेक दिनसे भयभरे हो !

[illegible]

आ दुपहरायास नैयमित आंधरा जाय भागमर खास्तमे आकरा क्षण एतेक
हउ छलैक जे कवन हि कहैत छलैक भंसका समय कहनुना नित्यकमे आ
जानने बनि जइन छलैक लालकाका भांसे परसे निपता रहैत छलधिन
एत दवाखी हाइल छलै पिछोबा काना गप्प नाहि । मनुक मांजन बेर फंग
झुल्ल, घटस । मनोकक संग सेहो नहि । दिनक दिन निपता रहैत छलैक
बदला जानकाका मे एकवचन वर पुकड़की कयलक फंग तैह अफगत असह्य
एत नौक शिर्डी पारलि सुत्तथन पुदा महंगा लजकाटीर बेर बेर सौरीघर
एत रड खूब पलांग गन डुलान आ आकरे सहाराये अपश्रीत रहैत छलीह
ति हँसी कचमकवि ‘फंग प्रोग्राम कै मौवी ?’

श्रीजन्तु नमो नमो अर्जुनाय नमो अर्जुनाय ॥ १ ॥ रहसि हंसिधः । चौबीस ॥ १ ॥
 जन्तु नमो अर्जुनाय नमो अर्जुनाय ॥ १ ॥ रहसि हंसिधः । चौबीस ॥ १ ॥
 जन्तु नमो अर्जुनाय नमो अर्जुनाय ॥ १ ॥ रहसि हंसिधः । चौबीस ॥ १ ॥
 जन्तु नमो अर्जुनाय नमो अर्जुनाय ॥ १ ॥ रहसि हंसिधः । चौबीस ॥ १ ॥
 जन्तु नमो अर्जुनाय नमो अर्जुनाय ॥ १ ॥ रहसि हंसिधः । चौबीस ॥ १ ॥

पीवी भूतलिकउ कुण्ड यः गेलधिन । हुनकर नाक पीचल रहिन आ ठोर
 अँक आ कान बन्ने होय । धन मुँह अँक नहि मुदा कन पैच पैच देखने
 मुँह नदक त उलने । हँसलपन ठीक हुनका सम्पूर्ण अङ्कति
 बाइत छलनि या बह अक्षरक स्वाङ्क संगैत छलधिन ।

इ चक्रात् च तैसा चक्रवाकं कुरुति नगाजकं गतिं छलैकं मे यद्वा शेष
 च नक्षत्रं दृष्ट्वा तैसा चक्रात् अकरं बगलचत्ता कोटलोपं मयोजं रहैत
 तैसा बगलं तैसा चित्तलोपं तैसा चक्रात् अकरं बगलचत्ता कोटलोपं मयोजं रहैत
 तैसा बगलं तैसा चित्तलोपं तैसा चक्रात् अकरं बगलचत्ता कोटलोपं मयोजं रहैत

चक्रांत बौजंक छैअभेल तस भयदिन एअर गैर छयनि. याब किअक
एअर ते अएर बउर र आरं ईंसम लग बकर चक्करभ बौजाइत रहैत छै

पन्त उगमै फिरेत छलैक: आंसस रहैत तः अहँकि क बजबैत ? अहँ
 ' छै अपखे झुल्लिबल्लै वा ' १

आ समय हमें गवैकें विचित्रता, दैत छलैक पुन आंकरा आंकरा हाइत छलैक से आइ अमर्य हैसापर मौजेक काना जल्लिया रहि होइत छाना-परा काना शब्द नहि जन विरोध खतम भऽ गेल होइतै ।

आ साहस बेसी आश्रय अंकुश पीछीछ आकृतिपर पसरल दुष्टि क मन्तोषकें देखि होइत छलैक एतुक डलहन मात्र पान-मनोअलक एक ट दोहायल प्रकृति भनि होइत छलैक मौडो सभ तरङ्ग सन्तुष्ट रहैत छलौह आर पसरल दंठकें समझैत अपसर्गोद रहित कतहु काना दुःख क ग्लानि नहि छलैत ।

आ तेहन भीरी लग समय कदबाक काना कौतै नहि छलैक अंगुष्ठ आङ्गनमं मौजोसभ लग बैसि समय बिलेतमं काना काह चलैक ? आंकरा केह करबाक जाहिऐक, अपन संल-गामक लेल ।

तगत छलैक जेना सभ टा पूर्व नृति गेल हाइ सभ छामरें कुरा क दहाइत चल अबैत छल जेना गामक भीर पानि आ गामक लक आ आकरा बेच चौदह वर्षक अन्तराल एतक पैघ दरारि दह टने होइ आहिम काना पट मंमभ से छलैक सभक बीच बैसियांकऽ आंकराकें अवनवी छ कटल कटल अनुपम हो छन आइ दिन कथितक टमज्जवरी भूलाह बाद लागल छलैक दना सभ अपसर्गबाध तिगैहिन भऽ गेल होइ छ पुज्ज आ पदम कोवन बीच शकल रंग भऽ गेल होइ ।

बीचमे लगता छैक जेना खूब सङ्क भऽ बेचि रहत अन्हि क जना बुझाइन छैक से ई प्रम घिकैक गामक लककें आंकरा गाम किछु नहि बल छैक काना एकाग्र वा दुरागर्ष रहि छैक पुन आंकरा तल कटा कोइ न नहि छैक लोकक पानमे आंकरा हरिगति अनुपमिनि भऽ गेल भ, = तैत भाकक भऽ आंकरा भूलाह किछु गमक बाद ज जिहम छलैक अथक न से क्रम्य गान भऽ गेल छैक

अ एना गीत आ निर्गम सन जेवन उधनइ धारी भनि रहल छलैक रविकें बोहो लभक आत्मानुपमसंगं पार आंकरा नव दुर्गम गामक जेना जोड़कऽ बोवक चंष्ट करऽ पड़ैक

चटा आं गम कथनक

एक दिन राम भन आइतम तालककाकें जहलकनि 'आइ कान सूरतसममे जे नरन हमरें मंग तायब

चलकजो नन एक न जाइ इथम नन ताहि हलथिन भाटा हाथमं मुनि इलन ओ अहि धुर गलनि मुह एकदम फक्क गव जौठा पकड़ैत हलकान बग छाट न नहि गाल काको '

इकें घर झाकें तनयिन से किछु गह भेल मुदा तो किएक नरन नरन अछि भऽ कल छाम्न नन बनिहार छ, तो किएक नरन नरन ?

वि कहलकान वैभल बैलन अकच्छ भऽ बड़ छी लालकाको । किछु न जलन नहि । अपन खन पधर दखबामें नीक काह आ को हैत ?

लालकाका नरन मुखा गेसनि रविकें काना अथ नहि लगलैक लालकाक कहलथिन स देखऽ लल अखन तऽ हम छीह । हमर बाद नरन च नरन, गनक दिनपर आयन छऽ एखन टहलऽ बुलऽ भेट भेट स्लेकसमस ।

उहें जिवर लगलैक तालकाका लालकाको आंकरा जंत पथार नरन से शठ दब चाहैत छलैक । किएक आंकरा हमनो होलैक ? मुदा मुह नरन दुहल लल फक्क भऽ गेल छलैत एहन काना बात कहि दलियोन हम

कान जे तम भगबाक रविक पहिल चंष्ट निष्काल भऽ गलैक हम चंष्ट नर स्कुलम कयलक अहि प्रदगरी स्कुलन जौहो पड़ने नर नरन क टा मास्टर रहलिन अपने गामक । आब ओ रिहथर भऽ नर इनकर भाम् बाधर रविकें लल्लन पान रहैत छैक

अन स्कुल अपा प्रदगरी भ, गेल छैक तीन-तीन टा मास्टर नर नरनो जेति एक दिन आंकरा गेल एक टा दुहाही कुरीपर हंममास्टर भऽ दल्लन ओ बैचपर बुनु मास्टर । जेउसमे मोकिनसरी दस-पन्द्र टा नर होइ छैक आनव दलैक लग ज पुछलकनि श्रुत विचार्यो छैक नरन गम सहैक ?

अथ नानां भयभङ्गन क्रिया चत्वारः द्वावर्गं संगः

हो'हा किन्तु धुकधुका रहल जलैक । रवि पोटभइ शाय रलैक कहलसुई स
ने हय पहा दबीक, जेकरो कोनो डर नहि ।'

दुनू छौं हः संग जागि गेलैक । फेर टोकर पर फेर तेमर मध संगे छः
गेलैक । खाली कित्नु का जुनक् पछा गेलैक भाबै दिख । ने हँ पछकारि-
टोन्म काना पर बाँका रहि रहलैक । सम घरक छौं हलक संग लऽ लेकैक ।
धरि । अथ आशचर्यसँ तर्कत रहलैक । रोगोगम कंभाडो-सयक दागसँ तर्कत रहलैक ।

तस्मिन् नुकस्वऽ तर्कतः अहं रात्रिं तस्य अपर आश्रयकं दुरुद्धि त्वा
सां पदलवर्कः 'अ' तद्धे चलः स्कूलः

छोटा नाग प्रत्येक पुरा शिवकिशोर नरनाथ-‘हम कान्हा कान्हा
स्मृतम्’ एक टा छो हम : ३ धाका कान्हा छो कान्हा कान्हा ?’

रवि नहीं मानतकै- 'बल छै' । मझमे लाखक कानि गण्य छैक । हूँ
सभ धरि दबौक हम

सौं हा तैया निचकिधइत गहनैक कित्तबः मिलत गहि अन्ह इय

रावे आक्षेप लगव्या ॥३॥ सती वांचेत कदाचै वन ती नम ट झुका
मय प्रयत्नक

अथ आहूत दिम भजनक, कथं नय्य पुनिं नग अवि रानि अवि
इष्टाभं कयबाक अनुपनि रनकं नय्यकं मंग न रवि आय कइत

स्कूलमें गृहभार आदि से तन छुनथि। बहकी गन्तुबक से कि
असैत ईति सकचकाक कान्नामें बेदा भाव गलथि। तन आदि से
कहलकनि। निथ पम्प राहत्र जात विदुलक काल काम सई कान
मप अपने स्कूल आशित ज्यइ कि तं ।

सब एक स्वयं कहन्ते आन्द

रवि लाइन्स टावर हॉस्पिटल जाऊ: टॉयलेट क्षमता बढ़ा देंगे: स्व. मंत्री
 'रविक' का प्राधान्य मान पट्टनयक: डॉ. राजेश गुरुजी अंग्रेजी-संस्कृत कलेज
 ललधिन रवि अँथु मुनि गाव, लगान

है। पृष्ठा आनंदशला ज्ञान मण्डकः ११७

श्री ११११ का ११ मन्त्र का ११११

हैं इसमें अतिरिक्त यह अतिरिक्त है कि यह संगीत है ।
 यह संगीत है यह संगीत है यह संगीत है ।

शिवकं अपन हस्तमकुल मौन पहलैक । आतऽ प्राप्तिन रीत शुभ ।
 तेन त- ॥॥॥ या उपायिकारक

[illegible]

२. ज्ञान संत गुरुकें विचिंतित वः । तर्क भूत सुत अपनाकें सम्राट्
३. त्वं त्वं त्वं त्वं । दुर्गु भगवत् रक्षकं नष्टि आश्रय कुरुमिन् । रविक इत्याह
४. त्वं त्वं त्वं त्वं । भूमिः भूमिः पश्यः पश्यः ।

1. इन्हें गणित पतञ्जलि, अनुष्टुप्तीय सह गाल आनन्दा काव आनन्द
 2. इन्हें गणित किन्तु छीं डायमण गणित ख्यात रहैक यहट बसों छोट गणि
 3. इन्हें गणित छीं डायमण मुदा अकार कृत बल्लभाक ब्राह्मण कर्म स्थान गणि
 4. इन्हें गणित छीं डायमण मुदा अकार कृत बल्लभाक ब्राह्मण कर्म स्थान गणि
 5. इन्हें गणित छीं डायमण मुदा अकार कृत बल्लभाक ब्राह्मण कर्म स्थान गणि
 6. इन्हें गणित छीं डायमण मुदा अकार कृत बल्लभाक ब्राह्मण कर्म स्थान गणि
 7. इन्हें गणित छीं डायमण मुदा अकार कृत बल्लभाक ब्राह्मण कर्म स्थान गणि
 8. इन्हें गणित छीं डायमण मुदा अकार कृत बल्लभाक ब्राह्मण कर्म स्थान गणि
 9. इन्हें गणित छीं डायमण मुदा अकार कृत बल्लभाक ब्राह्मण कर्म स्थान गणि
 10. इन्हें गणित छीं डायमण मुदा अकार कृत बल्लभाक ब्राह्मण कर्म स्थान गणि

उत्तर : १. १५.०५.२०१६ : १५.०५.२०१६ : अ. बोगम गरीक शताब्दी आंश शिवा
२. १५.०५.२०१६ : १५.०५.२०१६ : अ. बोगम गरीक शताब्दी आंश शिवा

[illegible]

तबक मस मुदा आंकरा चैन्चै बिसऽ नहि हंमकै । फल धेन अणक
सहामुपनिषद पद्यम लागि गलेक

एना को कयलनि अंछ १ कहन बडिबौ तऽ अपन पदबै छलिक

हमयालीकनिक काज छिऽक हबै हेत अनो टांमक छै ठामम केन
जाइत अछि तऽ जाओ

तो अवश्य पदबै, स्कूलमे देखैत छियनि त के नगु रकैत छयन

मुदा रविकै उद्यान सा प्रतिक्रियाकहोन होइत अछि अछि अछि अछि अछि
आं बडि घटऽ खगलेक मुदा अंछ दिन गुणकक कातरन कोकै उठल छन कि
ओ कहतकै किछु बज्रनिषक बाड किएक एतज इच्छु मेले क गुणक
दवाब देखैत अहोको हेतबऽ लल

रवि आंकरा तू नहि छैत इतैक भइबाबूक इलाक गुणकौ कइस
कोनो छनि चलैक रवि अजक सभसो बोलैत इतैक मुदा ओ त कहलकै
मूनि क्षितचौजन अछि रहल छि सभ त काण्ड अहोकि रवि पल्लवबूक जगल
छनि बुझलिकै किछु

चौकिसाक सन्धर पल एव ५३ अछि अछि अछि अछि अछि
किएक एना कयलै ?

गुणक सैन्धव आन नम्र हो पयन दुल्लोक हल नहि हो
लियाकै आ नहि कहल त मात ककर गड छेक एक नकत इत
चवाह नजगक कात इत छेक अछि नकत एव अछि अछि अछि
अगन साथ पदमय अछि पदमय अछि अछि अछि अछि अछि

रवि अने गलबै अछि अने अछि अछि अछि अछि अछि अछि
स्कूलमे नहि पदमय

गुणक एव बुझल अछि होला आन होक दुल्लोक त अछि
अछि बुझैत छिएक अछि कलम नहि दुल्लोक रवि अने नहि अछि
कलम काजक कात जायत नम्र अछि अछि अछि अछि अछि अछि
भीत का नहि छैत छैत यथ मन्त्र

रवि गुणकक अहोको अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
मेल छियनि नहि पलेक गुणक सैन्धव अछि अछि अछि अछि

अत ५३ अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

अत नहि अने किएक अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

अत अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

अत अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

अत अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

अत अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

अत अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

अत अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

अत अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

अत अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि

मिलने देखें वि. १२०० का इन्तेंसास रा ब्रह्मचर्य रूप तक हो
ताकैत कहलकै तो ते बहु तब छै ते लख गाँव ता रूप दुइय वर्षेन पैरा
पाम काग द्यौक

सह रावपामा १० लख दुइल प रतलैक नखन न हय आ न
पहल पुन एक ठ बात अहाँकै बिमरि गेल रविमरि ।

रवि सन्हमें पड़लकै कान बल ते ।

अहाँ कहने रहे ते बाबुई धौन जग दन बह न लेतु न इत
एक दिन हम जगन पड़लक धन जयक दम कांयरा न, पैक ।

रवि बुझवै कहलकै 'एहन कहि नहि करी भइसक नहि बाह । अने
हमही पहुँचा दबैक तरु

प्रौमिस नय होसक ह्यो बहा लकै

जाँकर जग बढल हाथ जपन हाथमें एकदैन रविच होसक
कहलकै प्रौमिस

रवि मानमान इतिहा कहलक व ओ गुणकक बात केनहि जग
लालकक भेल केना लखक मंडह अपन मानन रहै उपरस दन ।

रविना सुनयना पौजो लख ते मंडह जाकर जगन सुनने छलैक न जगन
छलैक ओकरा जगन छलैक जग पौजो लख गान हाथेन जग दन कय जग
गल जाकर बालम जगन म जाकरम जग कौ, जगन द्यौक ओ १० जग दन
बन क दन छल जाइ दन अधन जग जगनधन रौजो अहाँके जगन जगन
अहाँ ते १० बेस रौजो लख छै यौ एकदैन बिनकन होसक गजम कंदर ज
निगना रहलहुँ जगन धौन लख रहि बूझि जगन ते कौ दन छल जग
बिनबल हममें लखिक अबाजो बन कयन हो कय अपराध धन हय

रविकै जगलैक केना पौजो लख ठा बहु सहज धनमें कहि रहि कौन
ओर दिन ओकर बातक जगनह रहि बालन छलधन दजग भावजन ते द्यौक
होमजाये कहल जा मकैत पैक ।

अहाँ सहज भावसँ होसक कहलकनि अपराध अहाँमें नहि हयसँ
अब अछि जाजनक अजगर दन नाथ

पौजो जगन होइ कहलधन दन गेल अवसा आइ दुपठरिगामे
जग दन ।

रवि गान छल दुपठरिगामे पौजो जगनधन छलधन कने बेसो
जगन छलैक पौजो दखन सुनयन बड़ मुनरि छलधन गंगा दसठ नाँह
जगन बिज्जन अ प्रिय गारा ताहिम मिलम एकदैन गिनगिया कौन ओसि
जगन दसठरिगामे जग कौन जगन हाँइनि किउ नमरा लखल गडल पुर ।
जग जग द्यौक मुन कौन मय राक पौनपर छिड़िजायन धनय कौन कौन
जग नहुन धौन गहुँन अलतमै रहन पयन ओ हाथन लगल मेहदा अक्षय
जग नहुन जगन जग जगन ओसि जगन मुन अदनीन दहक वभा ओसि
जग अपराध जगन दबल दबल मुनको

जगन माला बर पुर्वक ओ शबल दबल मुनकोबनी सुनयना पौजो
जग द्यौक ओ धौनमै जाकर दन हाँइ जग ओकर लगलैक जग
जगन जगन मयौ नद गेल ओइ । मुन, पुरबाक कोनो दपन रहि छलैक

जगन एकदैन सगौने तकैत देखि जगन हाँइ सुनयना पौजो
जगन दन को रहै ओ जगन

रवि होसक कहलकनि अर को देखु ? एहि गाममे अहाँ छंडिक
जगन जग द्यौक को अछि जग नय दौदल चल गान मुन अहाँ ओसिना
जगन रहै ओ जग जगन हो जगन बनल गहुँन जगन ना कन आरी
जग दन दन दन

पौजो जगन कन द्यौक जगन का अपठिअर कौन कहलधन अहाँको
रवि जगन ठा मुन अछि जग किउ नहि

जग जग जगन बचन कहलधन जग मुन अछि पौजो अहाँको
मय पद जग

पौजो जग कौन कहलधन जग दन दह अइमे काना पाकषण नहि

जगन जग जगन रहि दन धौलैक सुनयना पौजो जग मंडह कहलधन
जग जग जगन जगन जगन कि नहि ? ओइ दिन तँ अहाँ कहने छै

[illegible]

लालकाकाक मध्यम निचय नीक ह्य म्हाकां सुननि ३२ ३३ ३४
 हांयनाक कल, से येन ।'

लालकालकोक स्वर और लोच ५३ बेलनि- 'बुध कोन रह ?' अ
धोयापुताक गम्दान कटैत दंष्ट्र बुध कोन रह ? दुध सुनि जखन अ गम्दा रह
गोण हलक आब कोन अरु आगि दन्कनि बनत जखन नाम कोन कि
निधुलाधिन बुद्धि चम्परी बुद्धि हलक सभ छ कथिलियनि हम इन अ
गैह मून सभ उज्जेलियनि पुरा मान अँटकन रहन इधर अ बँटक अजित्त न
दंष्ट्रियौक चोटह दंष्ट्रक चट ननि जनि किस्सनी आब तेन जनि दंष्ट्र
हान भविउत छै 'लाट जम्क' कोन प्रतलब गहि इधर दंष्ट्रक सभ अ
मूँक अगहा छिन गेल । आब कोन बुध रह हम ?

लासकाको कनई लागसविन । रौप अंहीतम अङ्कनमे रौपि न
लागलेक अंग समज ब्रह्मगद नहि नरु हाइ जा इत्येक कह बनि रौपि न
आका दूध निदने रत्नधन लागकाको रौप भइ आका रौपि न हुन
भानि रहि छानि आका नव छानि लागकाको रौप पत्थक नै न
छविन, भुवा कइ हुनकर समीपर सब बनि लसल छनि ओ । नमज न
रहलि छानि, लागकाको कनइ रहलि छानि

सिक्किम लामलैक सेना सम्पूर्ण युद्धोपर कठमु हवा नहि छैक, अन्तर्गत
हकि गनैक आ वायुजद्वारे एकां जेके हाल छैक सम सार प्रत्यक्ष रूप
हाल छैक आ समक सा आङ्गिक प्रविधि बेस्त तथि सति अन्य इन्ड्र उन्नत
धरतीपर चक्र नवी नानि रहत अछि !

ॐ लालकण्ठी कानि सन्ति कथित ।

(दोसरा भाग)
लंका मोहनपुर

इतना बड़ा डकैत था गोल लैंक । बिलग कहने रैंक रिकी । चौदह
जु जू घरा रिकी मो कोनो नव लांक बड़ने छलेक ।

[illegible][illegible]

जबकि बाद बिल्लो लागि गेल एही कुलुआगुमिमे । तीस वर्षसँ एही
बनाकऽ छी गेल अछि । एक टा मंगल जवरी १३ गेल बैक

[illegible]

मंगलाक्ष बहुकं गहि सक्ति भलेक । एक दिन तोय सब निहानी हूय
पनिहय सक्ति दुपहरय = खाय न = जवेत सब बिलय । मंगलाक्ष बहु कर कर
कहायके खाली गय सिव नचि एक कमलत गहक । बिन्दु केरि बंदिन के
पर लागि घसेक हाल देख ।'

मंगलक बहु मौखी ललित छविक बिलटकई । छहौं मौनी छेक, नमक-का
जैत छेक । हौंमन बात छोट जलकई । योश अकिक जे फल पछुई सोह
अपने घरवाले हक कानो भागत याइ हय ?

पंगलाक बहु सून नोटसँ कहलसकै—'भगने के कोन काम इह (
 योपिससँ मास्टगबके" धकौले छै हय ।'

दिल्लो वृद्धि तब ठाँव कातालि बहु अर्थात् ८ = १०० हलोक २५
अन्तर वृद्धि तब त्रयैक अ- अकार बुझत नंद मंड ६४७९० ज्ञान =
मस्तबा तोरे पर इकल रहै रहनौ पेजो । हमण ७३ देखत प्रय ।

मंगलस्य बहु लालचिह्नः दृश्यते । ह नु, भूतलक तः, १९७२ च १९७३
हम चेता रेलिगे रूय हमरे माटे पाँहने इय मनस्य ।'

बिलस कोने गरि नहि पडने छलैक । यहल सारल बहुल छलैक ।
 ओकर लग अबैत छलैक । बिलस अपन काँसिमै देखन छलैक ।
 घर छैक भोला मानक मान काँपुल गेल छैक । ओकरा देखि छलैक ।
 बिलस देखियोकल अनस दैत छलैक । मुन अल इलैक ।

सुखमयोंपर आसुर जल देसही तैं अंकज सुख गहि रहि भोलेक, ठकरि
देसही अंकजो ।

मूला भीमसे बना किछु चकरो धारिकाउ कैसि नैसैक । मणिखन फनि
 उमरऽ तारऽकै । एक गलि नौकज्जो टनक पसिज्जर छांदि टन आबऽसँ रहने धार
 उवे जपन टोल छांदि गोम बिलय अपन धरक भग आबं ठमकि गेल छी । धारसँ
 इतर जुठक अथान आबि रहल छनैक । बिलय बीनिह गंतवि मास्तर भाईन
 ज्ञानेन, समी बाबूक बड़का बेटा धरक फट्टक पोतरसँ बन्द छनैक । बाहरसँ
 उपन विचित्रावत बिलय 'छांसे फट्टक' ।

कने काल शान्त ५५ मनेक कांने वतर नहि , फेर फाटक खुजलैक
धमल सोडन हौसेत बहरफणखिन 'को बाल छै रे बिलाल' अछि बह सुनौ कवि मने' ?

मस्टर साहब हमें 'कल गैलेशन' बिल्टा बताह कर्को भीतर पैसल आ नद्वैक लठ मुक्कें अभिरुखः 'फुलकुम्परोक' । मस्तर भारैत अपने शक्तिऽ इकर मागस फुलकुम्परो एका बर कित्ताल नहि कवल्कै इकनैत बिल्टापर गइइ उइर सन बोल फेकससै बसस, समाप्त हो गेलैक मर्दानगी ! यर्द हैक तऽ लज्जैक टू कल हाट मस्टरबात' हमरै बुझिणिक न इमर घरवला अतिवासा इट सम ल कर्कनो एक टू कमजोर पौतोस ।'

दोष । बिल्टा गरजिहउ एक लाउ देलक ओकर थुयुनपर आ फे
 नगर जकां नृतन विदा थउ नन । धरि बाट फुलकुम्भरीक बातक जहर ओकरा
 लेल दुलेक । अकरा विसरी गेलैक जे फुलकुम्भरी ओकरा संग खाखा कहने
 लेक । एका पदेक रखने छलैक अप्पन कानलोय । ओकरा खासो एतब धान
 लेक । यस्तबा अकरा अप्पनो हँसैत उल नतेक आ ओ एक टा हरभुक नन्ना
 लो बिल्लो पति मेस । मर्दानो देखौलक एक टा मीगीया । अह, कहाँ
 उल अकरा उलक उलकम्भ । यस्तबा सभ दिन मंगलक बहुक घर गैसैत
 लेक । नन बुधवार देखैत भलैक । यस्तबा बिल्लक छ पैनलैक तैशो आसम
 नन कम्भ । इहो मंगलक बहु नाह कहलैक तै ओ बुझबे नहि करैत । सौंसे
 नन बिदा भः पन लेक ।

[illegible]

अहि-स्वगमा ५ फांसीसँ बधिग रहै एतक सुनिअँ कान जयब आब
रहि जाउ अहिगक्रममे मार पहुँच दब

पसिजर जिह घऽ लेनकै कहुना पहुँचा रे । जे पड़बँ से दबोक
मार चल अविहँ इजोरिया राति छैक

बिलटाकँ बाय पडलैक एतुक समर आ जनावनक हग दुनै बने वऽ
गलैक । तेषां अहि गोमधं रहि स्फुरत । हुनने विरा घऽ गंग बिलटा । डङ्ग
पसगन छलैक हंग झरकाने गोल गबैत किटा मेल ।

किछु दूर अवि लगलैक जेन बयो पछेहु घयन होइ कने दंड सिङ्गल
गालिग गाछी रास्ता दूर दूर तक कान गाम का घा रहि रातिक अन्तिम परा कन
मूल दल पारुँ घयन छलैक ओ हाथ पड़बँ ठंडा कने कांसिकऽ कटि लपेट

पाछेसँ अबैत छाया करे स्पष्ट छलैक एक टा फाँलाका धुल
नहि बुझैत पाछाँ घयन छैक बिलटा डंग बड़ौलक भूमिकऽ बाछे रहि सकल
किछु काल

स्वगमाक बाय एहि घन-शुको लग पहुँचल तँ चुनिकऽ पाछे तबल
आंठिना पछाँहु घयन छलैक चुहल । बिलटाकँ हाथसँ धलैक आन गहँ हग
इ ओ ठंरु आर सरिया भेलक ओ डंग छोट कऽ लेलक । ओ बुझैत नर ओ
गलैक ओ जाँइन एकदम लग भलैक कि ठेका उठा लेलक फलटिकऽ बिलटा छन
छै कि नहि हमर बाद पाग अप्पर रस्ता ल

भगबाक मनी आग लग मृति गलैक ओ चुहल बिलटाकँ ठंडा मल ग
गलैक । इजोरियासँ देखलकै इ तँ अनुसुखातिक छलैक एक टा कन
कपारप एक टा पट्टा बान्हल छैक चन काना कटल हाइ । नई तबल
जनाता कामे गंग आ अउयध रहै लगय सरिकऽ अउ छलैक बिलटा छै
मोचो करै कहलकै फ छँ तोँ एकसरि कहो बाइ छै एतन गलैक

मोरो नेवा किछु नहि बजलैक आगू बदनैक । बिलटाकँ जग बड
पडलैक संग संग स्तंभन धरि अवि गलैक मोरो अहिग स्तंभन बनेत हग
बिलटा स्तऽ लेन अपन स्थान पर चल गेल संदिग्धमक एक टा कुँजे जेका
रहीन छलैक रातिकँ आकर खालि ओ मृति रहै छल आन बिलटाकँ
छलैक । फस्ट कलसक पसिजर कलियाँ कान हाइत छलैक तँ बिलटाकँ अ
बाइत छलैक संसर कुँजे बहाबाबूक संग रहैत छलनि

गलैक अहिगँ इटल बिलटा मलज्जो गाडोक ३५ गंग छलैक
हग हगलैक अउय मलज्जो काठना निम पडायल जेनसँ सोकर डंग घकमका

३५ ओ गेना अहिग केवल छलैक रात पाग बैसन रहि गलैक पसिस्त
अन लग ३५ गंगलकै बिलटा इहो बैसन को करे छै ? गाडो अबै हग
पडल गेल जो जग जेबाक हऽ गाहँसँ जेबाक हऽ तऽ टिकट लऽ ले

कने तँ चप छलैक कंगडुक बिलटा कहलकै 'कहन बौकी पौगी
हँ तँसँ को छिण काल प्यान दै दै दब बोल नै तँ कने जयब' ? कहाँ
३५

मने मृड उडीलकै कान घर न दब हम्म । कहाँ जयबै हय ।

जग डंग बिलटाक ध्यान गलैक ओ पौगीकँ गोक जकाँ धुगड मेल छै
अन गाम जहाँ नही गल छैक एकदम खाली दंड एक टा नुडी मात्र शरीरग
३५ जगलैक अउय मलज्जो जयन छै पौगी बिलटा कन आर आरसँ
हँ कहलकै जगलैक जऽ पडाकऽ आपन छै घरसँ । जालना रातिमे अकाले
जगलैक जगलैक जगलैक रह गलैक एही आ जा आब घर घूरि जा ।
३५ जगलैक नै नम जयबै हय जगलैक ललैक हम्म

जगलैक बिलटा गंगलैक जडबडायल ओ दामर दिस चल गेल गाडो
जगलैक जगलैक कहलै हुनले दुमहरियाक गाडो चल गलैक
जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक भूखानि पिआमाल बिलटाकँ
जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक
३५ जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक

जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक
जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक
जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक

जगलैक बिलटा जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक
जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक

जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक
जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक

जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक
जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक जगलैक

दुखियणो हय इत्यथो पणो जज्जण पणुप पणम्म वेतल हय । कण्ठे
 छिद्ये मांगल न इय । अर्रो गच्छि निज्जे इयमे खाना इत्थे वेतल हय । बद्धावां
 विचारि कइलधिय- 'अच्छ से बाओ ।'

प्रसन्न हाइत बिल्लय हाइ मोगो यय नहुँवत आ कइलकै । हट न होइ
 बद्धावां कज्जे छिद्युत ।'

ओ भौगिय कठिकऽ अगलैक आकर सोम । बद्धावां लौम्पक ॥ १२ ॥
 गोक जकाँ देखलधिय अकण न कहलधिय ना बज्ज । इ ता साबन ज्वाँल
 इसको अकल्ल कौस रखण होसये ?'

भौगिया पृष्टो सुकौत घरम बाहर आ फो जकाँ दुब बैसि गलैक । बिल्ल
 भारी चिन्तारे पडि गल । किहु माचंत बद्धावां कज्जणधन । एक टा बज्ज
 बिल्लय । तुम गेल लो हम गोरत को । तुम अकला हो सुझावो घर बस हय ।

बिल्लयकै बद्धावां कक कौस जवाब तुस्त नहि दऽ भनैक । होइ
 किहु जहित नहि होइ । नहि होनि कण पामक होइ । कहौं पडऽ । ज
 होइ । आकरा घर लो जकाँ काना आकलये न होइ हय । कौस बिल्लय
 ने पसारने होइ । फुलकुम्भो मोन एकलैक ओकर ।

मुया कछन राति बाछ बजेक डायन देन चल गेलैक तँ बिल्लय
 औनाय लगलैक । बद्धावां अपन होइ चल फेलधिय । प्लेटफार्मक
 होइक पिण एक टा बद्धावां बैसै कलैक । होइक बद्धावां बज्ज क, तब
 चपरा गिराओ तँ होइक चन बज्ज कलैक । पण पण बज्ज जवैत होइक ।
 माहो जइस । होइक छिद्य होइक होइक । बद्धावां कण होइ । उठन होइक ।
 गइल होइ । फलपनसप होइ । गोरक नहि होइ । बज्ज कलैक ।
 होइक । गोरक गोरक होइ । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 पडा बज्ज कलैक । होइ । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 पडा होइ । गोरक गोरक होइ । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । होइ । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । होइ । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । होइ । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।

मुया ओ मोगो तँ बिल्लय छे सुकने मति गेल छनैक । पणो बज्ज
 राति एकठाम बैसल छनैक । बिल्लयल तक नहि कयलकै । बिल्लय
 एकठाम जग अकलकै । किहो पण कान बड हट ? पुनि जग अकलकै ।

मोगो बज्ज सुकने नहि कयलकै । लोहछिकऽ किहु ओर कहऽ जाइत
 होइ । मुया नहि जग कोण ओ बद्धावां कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज ? कबो ने हय । हमहु अकलै ली ।'

उनो जग पणैक । मोगो जलैकऽ तबि पड गलैक । मुया सविआ भनैक
 होइ । होइ । होइ । बज्ज कलैक । बिल्लय आगु बज्ज । जग
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।

जग एकठाम बिल्लयल छनैक । मुया भनैत दहि कुकु भनैत
 बज्ज कलैक । होइ । होइ । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।

अज्ज । बिल्लयकै ओ गण आ ओ नजायल स्वर बज्ज लैक लगलैक

अज्ज तैयो डकैत नहि भेल छनैक ।

अज्ज गोक बकाँ बज्ज कलैक । एक टा होइ । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।

अज्ज कलैक । कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।

अज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।
 बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक । बज्ज कलैक ।

प्रायः किन्तु उपर्युक्त कौटिल्य काली लक्ष्य मोहनपुरक लोक । मोहनपुरक

२७. यह नोट कृष्ण छलैक से कर्मा या यत्न जयतेक आकरा छलैक
२८. नोट ओ छलैक नहि गेलि कलैक आकरा । ओ तँ शानिक पैठिका
२९. २३ । धूँकल नहि अपलैक । कबो नै देखलकै फेर आकरा , पैठियामे
३०. २४. एखन कलैक २७ वाँटीन यत्नमान धनमे छलैक ओकरा छलैक

लगाय गयानि कृष्णक मण्डनर फर नंदे दत्तककै नदि उर्जन शिखर प्रण मंड
 सौन ।

किमती इंग्लिश की धूल धूल पाके कट्टरक लगान हुनैक जन्म नः
आश्चर्य भनैक चान पर नकलक मरणा बडुक पुछनै भौम मरणा सुनै
कन किछु मरि कडलकै कडलकै मरुतार गडवः आ बिन्दु बडै मरुत

एकदो वर्ष रहलैक कजरी । कहियो नै कहलकै नै के चलैक, जस
अबानि चलैक । बिन्या पूरब जाँदे दलकै जवने आकर धरम धरम
चलैक एहिमें अतिरिक्त मग भाले अकल बिगल भव चलैक । कजरी एहि
अदलैक । बन फाँ कटल तललैक बिलसकै धरम मरम किंतु लालक उलै
कांनो वन्दु नै नय गल चलैक आ आंका नूझो आठो पठे धरम चलै
दहपर एक दह मरम । बहिन आयल छैक लहिन चल गेलैक ।

किलो फ़र स्ट्राने ५३ लंकक । ग़ममें कान्हे एतानव नहि ५३ ।
पल्लीस बरख ५३ गेनेक । वग़म वर्षक ५३ गेल बिमल ।

कार्तिक बड़ाकाबू अमलधिन आ झल गेलधिन । सभक लेल विचार
स्थानी सुगुं जा लड़न दिनया द रज बिबर त दिखल निरद
पचयन अप को रही है

एहो अप-हाउनक बलना-बाहो इस्त्रोत जौवनक स्त्रीसँ शेष बोट
आ बिलय नवर्न बूढ़ पऽ गेल । अब इलाका हकैत पऽ गेलैक ।

[illegible]

उप. विद्यार्थीक इलक नामपर, सय स्टेशनक मण्डा-बदला ३३१

[illegible][illegible]

इलाक़ा सन १९८४ ५५ गैल लैक ।

एक नमन अपने घन्य गुरु करे वने लोक नी ही सी पाठ आ हावमक
अन्य नमन लोक निनुकी आ तुक दुनु इनमें अठ लाइनमें खाली कुजडनी आ
एक २ नमन लोक खाली बार भवकी हयमे खाली इधक दिव्य स्टेशन मरान
नमन इधक संग दिव्य छपरी दुधक दिन, बडक-बडक दिनसम सवकाल
के नमन इधक नमन ह मरखन बहकक दुनु इधका जात एक भवका
नमन बहकक इनमें भव घूरि अवैत लोक । एकएसभके विद्याधियोंक डर नाह
नमन लोक । गडडीक हावक, सिपाही, टी.टी.सी. समक रोवा बावत लोक

[illegible]

ज लुकी शब्दों में खाली कुबडली आ लगाने में हिस्से हिस्से भराने से, ये लुकी अलग-अलग चीजों में घुल पड़कर ही अदृश्य बनते हैं। टिकटों के पैकेट में बसे प्रत्यक्ष कारवाही दिखाने से ही लुकी बनते हैं। लुकी बनने के लक्षण हैं -

ਭਗਵਤ ਉਪ ਭੋਜਨ ਚੰਦਨ ਦੁਰਯੋਗ ਗੁਰੂ ਗਾਥਾਮੈਂ ਤਸੀਮੀਨ ਅੰ ਕੁਝ ਹਨੀ

मध्य गाँव से एक बालकजी गढ़ासँ पनं कुपनं वज धुँई अँसँ सेक बहका
मौलैज गहेत छथिन आब चबनो वसुध न बलन सब मः कइत छथिन न रन

आ, गढ़ी गेलपर सभ ठ अमुलसबाइ पैस बड़ाबाबूकें दऽ देत छथि
बिलेट आ कनिअ कन प्रमन भऽ बड़ाबाबू एक ठ वीअनो ईन जहेन रुधिन से
करा बिलेट !'

बिलेटकें ई झपेला आव अखनै छैक । वयस भेलैक । पनं ए
मौलमे आब सकैत नहि आछि मऽकार कुलांगम धाँगे काने मल छे
शेका पशका छीं डोपम रिक्म आबन करनम आ बड़ाबाबूक पद
कारबाय आकर अपन हज हऽ जयेत छैक मय ठा पमिज चल हऽन से

पुन सभसँ बेसी अखरत छैक अछे रहि बिलेटकें ! इलाकाक
छोटाबस एक ठा दुग्धधनिया कानवाक डिब्बा नै चलि ननकें बहऽन
खरगक जिजिरक कनकन केरि ननकें अकर तर बऽन किनन करन
जिजिरा छिबलकें गढ़ा बाइ रहि पलैक मुक मलमम आ छँडबल
चिकरैत नकनिकीकें ननकें एक दिस पढ़लैक ।

रहि रहि पलैक बिलेटकें 'आमँ ननकननकें सभकें दुवि हो र
सभ । एतेक लोक नै मंथनपा आ एक ठा मौलिक इन्हन मृति गहन से
अनै जो सभ हमर कन ।'

हल्ला करैत दौडत बिलेट । किछु लोक संग देलकें । अपन
पलैक आब दुग्धधनिया कनिधौकें छडि पढ़ पलैक अकरा ठा
अनकै पुप करौनकें तन्या पुननो इगक बड़ाबाबू आब कनन
गन रहथिन मय ठा कागड पन्नाक बार बहऽनननन इबनन
कमल कर दिवा तुमने ।'

दोसर हेली मृत्कड अकर वा अछलैक । बेर-बेर हाथ बँडनकें बिलेट
कनिया कानि कानि कऽ पद कुनकें आँ ईधनमे पुननननन
सभ पुनैक बिलेटकें बिलेट विनन सैक कनक पदकें पढ़
ललैक दरेग साँठ । ककरो नै चिन्हलैक ।'

दाराग चल गेलैक बिलेटकें छैत लोकनकें आ कहलकें बे
पलैक मुन बिलेटकें इयम पति गन छलैक आ कनैत
कृतज्ञता ।

अकरा ननकुमारी गन दडनैक एकदिन आकर मदीनीको धिक्कारन
हुँक । आब कनं दँखलैक ओ ओकर सहर ।

पुन न कनकुमारी छलैक न छलैक कनन बिलेट एकसु छल आ बूढ़
न नन पुनबामम बदलौ छलैक ओ जनेत छल ओ चाँदकें त सभकें
हडन छैक पुन ओकर कान पऽ गन छलैक आ ओछ चिकरैत नकनिकीकें
न नन छलैक ।

मुन ककन ककरा बहलैक बिलेट ? मौस इलाका तँ हकैत पऽ गन
नन

ममँ हिन इकैत छथि पुनछा एकबाली चौपरी ओंड़ाप
नन हरिबन चौपरी ।

एकबाली चौपरी रहिल मुनछमे मुनछमे पन रहथि शकर बोम वध
पन । आइये गमक मुनछा कै छथि ।

मुनछा हडत हरी ममँ पडिग गपगपन मंथनक पहिल मुपती तन
नन अचऽ दडक लंका मोहनपुर जाइत छैक एक ठा बाँड एक ठा खुनछमे
नन पडेलौन पानपुर पुनारिपर अपनक स्वागत करैत अछि ।' मुन ओहो
हडन नन पऽ इगँओ बगोही एखन पुनैत छैक लंका मोहनपुर कान बाँड
नन नन आ नै आन लंका मोहनपुरक लोककें जयपा क्या पुनैत छनि जे
नन नन छै तँ जबाब देत छथिन लंका मोहनपुर ममँ मोहनपुर पुनारि पन

नन कहैत छैक ज एन कनन दड दूरा हवली मोहनपुरक चौपरीसभ
नन नन छलैक ई पगन ओकानत चौपरीक पुरखकें मृगल बादशाह
नन नन नन नन पडल रहनि । मौस इलकन ओसँ-अंगन सैक आ नंगनक
नन नन अलक पन । पहिने अकुर कनकैत छलैक ओकानत चौपरीक पुरख ।
नन नन पडलौन चौपरीक खिलाब । पहिने दू नलिछैत छलैक अकुरा नकुर
नन नन मृगमँ ननछा जयपा आकु दिगम्बर चौपरी । आ बादम खाली
नन नन नन ओकानत चौपरी ।

बूढ़ दिन धरि ओकानत चौपरीक पुरखालाकनि पुनारिपरम रहथिन नन

बहु असाधारण दाढ़ी लगाने की थी। एकाएक जो सूर्यवर्धन बंजन या गणेश
जंगल का गिर बसल छाकहे। रात्रि शरनं पुनः गान्धर्व लखन ही कल्लो सूर्य
बदशाहक चांदमवार मकान आ पल्लव न बह लंग छानि। केक बा बहुरंग
नैबत आनि आदिन अकच्छु या मुचानि या छानि दृष्ट। के बह पल्लव
वल गनह। आकाशका गणेश कान्ठ गलेक आ मुचन्या बह।
मने चौधरोलोकनि। बंजी लोके रहि गेल पुबारिए परम्ये।

[illegible]

अपनटोसो तीन घण्टे बैठक केक-अनुआही, पोषणही आ नैक
घरक अ पाग बालुक पैठन मननन सदन बालुअही गम गम ५ लान के
सैक बालुक पैठनक बाद नई कथीं सबकक बाद बालुअही नैक आ
सोइत केक आहांवापरें सड़क बउन लेक एका दक्षिण व लेक
पुधन लामें सैक हैक एता सबकक बाद एका बालुअही गम गम ५
केक अइ टोलक सर्वसर्वा छलाह समीतर पिसार । बेस कताल-कक
हथि रंग एकदम काही दिनक एक बा नार्थबालुक का अइलान
अइलान तै मान्निपागम बैसब छांठ दतांथन आंकान्त कीथीं गत नैक
दस्तिवान नहि रामेतव पिसारमें हुकर बउक अइ गम ५ अइ
मास्टर सईगर्को अइ टोलमें खुब समीरन छी ।

पुनः एकवार्ता चौधरीक समर्थन दर्शायित अन्त चौधरीक इत एव
चौधरी अन्त चौधरी पितृमौल स्वर्णयत श्रोकन्त चौधरीक दुता दुन
वति बनलनि काहारा नक्षत्र परगुणा जन्मयत बिराज चौधरी ई

[illegible]

समस्त इन्द्रिय संज्ञा चोद्योर्भावेन छवि कायेमो भावात्मक एक
हो अथवा तत् एषि नो इन्द्रियमपि न कर्मा संज्ञा इन्द्रिय भवेत् छवि आ नाना
हो अथवा तत् संज्ञा चोद्योर्भावेन छवि कायेमो भावात्मक एक
हो अथवा तत् संज्ञा चोद्योर्भावेन छवि कायेमो भावात्मक एक

[illegible]

१. कनक लाल ने एक बहन भाई सुखदासम प्रसन्न रहते अर्थात्
२. कनक लाल ने एक बहन भाई सुखदासम प्रसन्न रहते अर्थात्
३. कनक लाल ने एक बहन भाई सुखदासम प्रसन्न रहते अर्थात्

सब तो लौटै घोसाहि देने रहनि नवयाम्मवाससम् । एक बेर मान
लगाइ कह्यो तका साहजगजनाप । हिनकप्रथक् लाडोक जाँक मड
न कालको लग्न-सतीअलि होइन बाहरखालसँ झाझा होइते सप
जाते कहन्छ । नव्याम्मवात्मस धीसर पंथावतये छल । सम ओकर
हे मुखस एकबली चौधरीके कहन्कि अ कर अप्ने इसंडे

बाजि गाय जावे बाह बाजि दलकनि । अविषय दाम उडत छल कि प्र क
 प्रोचणह बाह कति इलकै कहा मुलं राजु नपनेक लालो चल दलकनि प
 मोहनपुरक पहलमान गानं भिम । ऐल्लोकि सुनक बाजि बांछ गन
 नवपामावलमप कान छल दैशन घर बहि समयन चल खानो लालो मो
 हाथमे ई सध गडैम गाना नउ खहालधिन पतिन पाए खा पाछै दैत
 मप मुदा बाप तदैत आ खलधिन एह ओह भिम । एक ठा गायन ठाक
 खेहारीत खहात लंका मोहनपुरनामप गजु गन गनत नग अवि ललक
 गन गानो चलैक बाटक दनु कान । ओही गानो ठाकन छल अवि
 लिखलिकै शोक इका धूरे दलकनि गानो भिमक यथा खपडी छल नकु
 चौधरीक दण्ड टुल आ पोट ओ दहण ललक गति कलक गलक
 बाजि जानम कान गतिन आ मप ग ललक धारा घटत कि गान
 चलैक दुनु दिशसँ नीव पप घनि चलैक म विषय काक कै

ई पुन मप कै । तहिना इलका एतेक कलक नहि लैक । अवि
 ओपममे नीर धारे पड जड दू गाममे नेपा बाट धार ललक लिखल कल
 बटाही, धौयापूता आ खोणक खन आ इन्वति सुरक्षित रहैक ।

इन्वति एक बेर पाखनीपुरल लेने रहनि लंका मोहनपुरक । ओही
 शय पचाममे छलैक चौधरीगमे एब गलैक ओ ललक इहो गल
 माग विहा चलैक लंका मोहनपुरक ललक आ खहा जहनि कल
 मिलत ली गलैक लंका मोहनपुरना आ ललक ग ललक गलैक
 खगलक ललक आहण बहलक ललक चौधरी कि ललक ललक
 आ खलक गलक दार विह अउ मुन खलक ललक ललक
 चौधरी गलक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

लगल एक ठ बहका हँसेही कलकलैक पाखनीपुरल आ खलक ललक
 चौधरीग धरि लंका दलकनि मपक ललक ललक ललक ललक

चौधरीग छैक मपक आखिग ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 बाट लैक किनु गलैक आ खलक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

छाी पंचपामे गधुराग सहा छलैक । पनग सपस बेसी ललक- ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

आ ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक
 ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक ललक

गेल अखि दू टा ईजीनियर, एक टा इन्जिनियर आ तीन टा कंकोत । ई ईन्जिनियर कियानी सभ आन कानों संलमे एतक पहुँच लिखल लोक नहि । राजीवराज के परिवार में एहि सभकेन पुत्र भवतुं बरतमन कलाह । हुनकाँ एतक कहल गेल महेरा बाबू सनकौन छलधिन वनु फदावतुं । ईहो भित्तिन क'सम दन होत तारातांकनिक', आ मुक्तिअ हंथि एकबानी ।'

बलुआहोवलसभ ओर लागलक । सौमपातेकेँ फाँडलक किछु नन गांधी काज शुरू कयलक । बलुआ सभकेँ बड़ा टोलक मय सनकौन बलाहरी भाषण कयलक । बला अमृतलक आ एक रा योडाक विधवा कलाह आब आइ ग रहि मयत कान लाक । एह पय दुपहरा देत कुरक देह आन लागल । ओ सभकेँ अमुआ येन किब । संलमे छलधिन इन्जिनियर आ अफसर । शिनु मैटिकन फल भ गेल । मुद एह पय बड़ा जगिरा लक । भोजन काज काज कयल नहि । सौम बाबूआँ काइ अक'स । सभ सचलक । ई गेता बना दे, टोल सुरक्षित रहव ।

असुरक्षित भउ गेलाह एकबानी । आपनो संलमे किछु-किछु धिरोय हो लागल । धातिन छलनि गेल । आ बरतमन चक्रवर्ती काइ छल । हुनकाँ छलक । मुखियाक गद्दी लेल ओही ठप्पेद्वार छल ।

आ सभकेँ कहलक ठप्पेद्वार छल तेनु । हुनकी मोहनपुरक लोक हो । मुद गांधी पहन खुब सनकौन छलधिन सभकेँ । बलुआ संलमेयन लेल नगयग । लोक पैसाक पकड़ि रहि । आ छल देन सब । हुनकाँ एह आ आबक चाहो चाहे बना हो । संकायल एतक धरि गेल छलधिये अहि । हाथमे सउ हरिबन्ध चौपटी गांधी मयिक' उकेत छल ।' मिहिर आ नारायण लंकाटेलक बहुत राम हीरासभकेँ नीकरो देअने छलधिन, हुनकाँ भाँसु इन्जिनियर आइ गेलक गेल बौन तब । नन खुब सनकौन छल । पायलक दूना आ बलुआ लोक । सभ विधवा । एहि पयि एह छलक । बलुआक क'सम कहल आ नारायणक सड़ा । संगेक सड़-सड़ पैदरिवाँ छलक दूनुक ।

दूनुक मयलक मुद किछु मय इन्जिनियर । बहुत ओ दम आन कउ देन कल । चहैत छल । दूनु अटगल लोक कय मन छल । ओक सनकौनक दूनुक प्रपलर ताहेन छल । मुद लोकन जाइबनो गेलन विशिष्ट कृष्ण पदार्थक । नन चाहैत छल । तेँ अपू कयन छलनि धांधल महेरा आ नरक' । एह पय दूनुक छलक ।

ब'स आन लोकसभ नगौन छल । तिजरीओ दुपहराली आ खतबेटीओप दुपहराली उपमाद्वारा नन होय पैदा कल रहल छलाह । मन्हाटाली आ लुहुरनाम हुनकाँ अइह रहैत छलनि । अपने धाक मुन्हा छलाह तिजरीओ । एतक ले मय गेलि होस मुश्किलत लोक । मजदूर आ जनक' अपन कबबामे छल रहल । एह मामल वेह घन्टा नीत छलाह । घूमि घूमि सभक कान फुँकैत छलधिन, बेर-कुरेर थकी दउ दैत छलधिन पैच-ठप्पर ।

मुद दिनकामे बनी यादवक लोक प्रभाव छलनि आ संलसभमे । एहने छल । बलुआ विधवा लोक नहि छलक अइ संलसभमे । यादवक बला सुनेत छलनि अबास, मुद ककरो अपू बलुआक साहस नहि छलक ।

आपू बलुआ छल गजुराँक लोक । आंत यादवकीक बलती रहनि । लोक' कयलक धिला । बाला चुनल भेल । भवनी साहुक बदला मयलन साहुक' । एह कयन छलाह यादवक' । आ लोक मोहनपुर आ हवली मोहनपुरक बाहाणतार बलक संलमे हुनकाँ मयल गयो छलनि ।

एकबानी चौधरीकेँ सभ खबर छलनि । लोक आ मयमकेँ बिनबामे ओ लोक हुनकाँ । एहन मय कम बनीन छलाह । बेल किछु बुझल नहि होइनि । सभ लोक इन्जिनियर एक बात कहैत छलधिन 'आब बहुत भेल । नवो लोकक' का नवउ दिनु ।

परि गांधी अपन समर्थक द्वारा प्रचार कयल देन छलधिन । एकबानी उछ बेर नहि छल । होयक

गंगा मुल उछ पय गेलनि । संल खनक ।

साय कहलकनि । हयन नुन नहि हात पालिक । कोनो दसस अन ताकि

कयन धरमस उललक । मास्टर महेरा 'तोहर एहन मयल १ काज नहि काज ? कोनो बेघर कोहि छियौक ?'

कयन पैसा छल रहल 'बेगावे तउ भेल । ओनि वास्तु तीन दिन चौदह पय उलल । ओ बोनिद सती सभ चील करौक ओकरा संग ।'

इन्द्रियां सभ घमण लजो यहाँ पसल । माल जाल केतहु नहि एका ठाँ काल ॥
स्थानिकऽ चारु ॥ १७३ ॥ नन जनैक प्राद । योजन धूमने अँधारा नउठ मनेदुप

यदुआ-पायक भर रँधकँ देखल कलैक । मोयार जाव कहलक स
दिनुका सभघ छलैक । ओकरा नानने अवैत सोखु बाहर बैसन किनु किन ॥
अगोरौचन दृष्टिपर तकऽ लेगलैक । अँ अँ यदुआ-पायक घर दिने बदन

किनु दूरसँ सीधाउर नुनऽप अणनैक । यदुआ-पायक आहवाय क
बाहर पारी विचार उठ छलैक ।

‘समक जहि तोही छै’ गेलस । बहुत कहलापर फँसल मारुछै न
ताह कयलै ।’ एक टा पुछ-स्वर ।

कहिओ हमरा समक बुझावो रहने । दकलोगँ डैसो छलस क
शोक । कहीं कठिखो बहंगड उठ मेलेक ?’ एक टा नरी-स्वर ।

— एक टा वैह सगुनरी छै । हमसभ तऽ काँसे कमल रह
करिक कठियाँ कँ दखलैक हमरा सभक ।’ एक टा वासर अँ अँ

पुरुष-स्वर फेर कहलकै—‘हम तऽ साफ कहै छिओ गेलस । हम
मालिगन पर पकाँड़ लेलैक लालबाबूक उप । अँ नबने हमरा
कदर छोटि देताह ।’—ई यदुआक स्वर कलैक

एक टा सीसर पुरुष-स्वर सँध कैं बल खंडलैक—‘हँ फह । माल
ठगय नहि । जालो बाँहिएक गग दि छैक । काल बुझन बल कय
तऽ पैर फहदि माफो पाँछि लेबनि । को फलंछन तोही कह ।’

वसर पुरुष-स्वर—‘हँ फह । सेह फह । गनप खनेरो छँजति जाल
लेलैक । हम गनना ताह गने । मालो जहि मिने बल छनन प
अँ अँ

हागब नहि । हम नहि फहलै आकर पैर । काब कर गनिम जल
फाँटैक ओ, हमसभक जनीवारिकँ बँझति कालैक । अँ अँ नदने जनी
महबैक ? ई हमरा बुते नहि डैठैक ।’

—मालि को बोझ । तोहर बहका पावसप तँके कड़े छै । पापी
खलम कर । जहाँ कानो समझा फहलक माल । अँ अँ । अँ अँ ।
हनेलो दगैदोले । हनेचन्द्र बाबू जँ विचार बाँहिएक यदुआक जलैक ।
सभका एहिनरी डंग छै, एकर कसो बहंगड करै इइ ।’

नए तेरा घरन जुते । मम नै छै तँ हमतुँ सहै । माली बाँहो
जल, तऽ तऽ छै । हाथ-पथ तऽ इइ । ई तऽ नहि फाँटि लैलै कसै ।’

बुँदवा पर बुझलक । ई नहिदुप यीगी खंडर दिमाग खराब कऽ देने छट ।
मालि को बोझ । तोहर बहका पावसप तँके कड़े छै । पापी
खलम कर । जहाँ कानो समझा फहलक माल । अँ अँ । अँ अँ ।
हनेलो दगैदोले । हनेचन्द्र बाबू जँ विचार बाँहिएक यदुआक जलैक ।
सभका एहिनरी डंग छै, एकर कसो बहंगड करै इइ ।’

गेलस नहि मनलकै—‘तऽ बात रीनु माइ लिखा लोक अणन-अणन
मालि को बोझ । तोहर बहका पावसप तँके कड़े छै । पापी
खलम कर । जहाँ कानो समझा फहलक माल । अँ अँ । अँ अँ ।
हनेलो दगैदोले । हनेचन्द्र बाबू जँ विचार बाँहिएक यदुआक जलैक ।
सभका एहिनरी डंग छै, एकर कसो बहंगड करै इइ ।’

नए तेरा घरन जुते । मम नै छै तँ हमतुँ सहै । माली बाँहो
जल, तऽ तऽ छै । हाथ-पथ तऽ इइ । ई तऽ नहि फाँटि लैलै कसै ।’

एहि कदलकै ‘नै बैसबी नहि अखन । गेलस, तो’ हमरा सँ बल ।’

मम डेर गेलैक । यदुआ-पाव नेहारा करऽ लगलैक ‘माफ कऽ दिओ
जँ नै बुझै इइ अखन ।’

एहि बोधमे खंडलै कहलकै ‘नै नै, से बात नहि छैक । गेलस तो’ हमरा
सँ

‘मालि को बोझ । तोहर बहका पावसप तँके कड़े छै । पापी
खलम कर । जहाँ कानो समझा फहलक माल । अँ अँ । अँ अँ ।
हनेलो दगैदोले । हनेचन्द्र बाबू जँ विचार बाँहिएक यदुआक जलैक ।
सभका एहिनरी डंग छै, एकर कसो बहंगड करै इइ ।’

एहि ओकरा सबे कँयमे तऽ गेलैक । ओतऽ जेना कर्मचारिकँ बाइते
जानके । जेना नाममात्र एहन जेना नहि करियोक । गौबल बाइते झाड़ु किएक
जलैक । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ ।
हनेलो दगैदोले । हनेचन्द्र बाबू जँ विचार बाँहिएक यदुआक जलैक ।
सभका एहिनरी डंग छै, एकर कसो बहंगड करै इइ ।’

जलैक जलैक जलैक जलैक जलैक । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ ।
हनेलो दगैदोले । हनेचन्द्र बाबू जँ विचार बाँहिएक यदुआक जलैक ।
सभका एहिनरी डंग छै, एकर कसो बहंगड करै इइ ।’

एहि ओकरा सबे कँयमे तऽ गेलैक । ओतऽ जेना कर्मचारिकँ बाइते
जानके । जेना नाममात्र एहन जेना नहि करियोक । गौबल बाइते झाड़ु किएक
जलैक । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ । अँ अँ ।
हनेलो दगैदोले । हनेचन्द्र बाबू जँ विचार बाँहिएक यदुआक जलैक ।
सभका एहिनरी डंग छै, एकर कसो बहंगड करै इइ ।’

पुनः तान् समुक्त योजनम् अकल भूतम् इति किं पत्तिक नैत अयम् ३
अत्राकऽ ल. गैलेक एकर भूत तान् कांति नवकं क नैत भूतम् इति
भक्त्यभासं पठितं यत्नम् फन् आभन पौत्राय आभिक भूति रहतिर तेषा
कदन पठन रहै एकर भूतम् कांतिरा पृष्ठम् न कपलक ३ कं उरुका न न
रही होत ?

गैलमाकं बहु ज्ञानं अयम् कौ कौ भक्ति रहतिर कृतैक अयम्
कंडन निलम्बनी अकै । पहलमन कप तम क्या दलाक भक्तिराम नऽ गैल इति अ
पुत्रा क. धृति आपांत हा

यदुजाक माय आका ज दृष्टि रहै दल्लकै अपन भुविमं करै ॥ पत्तिक ३
हमहं किपक ज्ञान कतना नैव हने पहलमाक दुरा तान् कौ अयम् भक्त्यभास
जात पदवा दलाक तान् क्या रहै नौक रचन कृतै ॥ ३ ॥ कदक कृतै इति
यदुभाक बहु । गैलमाक तान् स बंलो पकै रहते चरनपर आका न हयम्
पहुँवा दल्लकै हयली ककरी घनाना ककरी काना कमत नै कयल्लकै
आका ॥ ३ ॥ दुराकतानाम पहन होन जात नै काटु कदने भय कृतै
न । घाटो बाटो जौ भान गजगा भक्ति पटलैक गनलकै ॥ ३ ॥
पुनः गैलमाक भूतलैक अयम् दल्लकै नव भूतै ॥ ३ ॥ कनै न न न
नहि भुवने अखण्डा भक्ति न

अयम् गैलमाक भूतलै नहि रहै ॥ गलैक ज्ञान दल्लकै इति
अपन गणेश । निहाज हय भूतलै ॥ ३ ॥ अयम् अयम् इति नै बका
हम काम गणेश दल्लकै हय ॥ ३ ॥ अयम् अयम् इति नै बका
तान् न हय हय अपन कदने अयम् अयम् इति नै बका
गैलमाक अयम् अयम् इति नै बका
नहि तान् न य अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

तान् भौगी भुक्तिभक्त भान भूति गैलमाक अयम् ॥ ३ ॥

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

अयम् अयम् इति नै बका
अयम् अयम् इति नै बका

खेल हैयार गंत धनिक उर संजु चुसुव. काले १०० वं नहि बुझै उंर
 नम कव शास्त्र पं. क. जिन. जिनिक गोरधर किण्ड क. क. क. क.
 दिकने कपसम्भ नपय १ एका काला खर हय ककरी अर बांधा दुबं क.
 के है हय १ नरकां यथोभ दिन कं है हय १ नरकां काले जिनिकर सभ क.
 बाही लाइथा दतीक दू कटठा १ अउर १ गुण्डा रत्न १ रत्न सवदुर्ग के रत्न
 गय आ इलकाम आ कज कान हैक १ लाय उंर बान स एतना मरि वर
 नहि खंडी कर गेनम् १

गोनमाई काय आदि मलैक । उषे टोलाक पुष्पक बीच पावे ॥
 वाजत ई सभ एका छोट छोट कान कहै दऽ परक इन्द्रावक बात कहै ॥
 छोट बात चुड़चुड़त दुइ तऽ चढ़को ग बात कन सह पर ॥ अंक भाग नै ॥
 अपन अपन इन्द्रावत दऽ दैक य पर को ककन परास मी छे इन्द्राव ॥
 तऽ एके छ हइ—अपन दुनू हाथक, अपन हाकनिक । तखन एके ईन्द्राव ॥
 अन्का कृपापर कएक छैक दुसम मंगलति कहै ज पर मन्त्रे कहै मङ्गलति ॥
 ई सभ हमर ॥

एकको त बोली समर्थनमे नहि बहसलैक । तेना इच्छा नहि
 फार्न जइलक सपक । हय जेत छिउ त दुःख किएक न बज्ज जइने सेक
 मुदा जइ रहलसई ई बात ककनैक नहि जाइ सः इच्छा अ हमा सः ई
 टयक जहिसे मन हय कन नोऽपधक । ईनाइ आ ता सय नहिने ई
 छुपचाप तमेसा देखे ३

नैया क्या जिधु नहि कहलैक अरुन छलन कहलौ कहल कहलैक नहि कहलैक गनय बांझ गल नैया हदि मान्य मत नैया नहि कुल म नैया टालसै उरलै आ दुमघटनो संख धन गल

मूलफल अन्कार घट गैल रहेक । मेकम-बहु हेम अन्कारन रिगैरि रानि
मनेन रह्य एक टा राखेने क्रम किल्लस्य रहेक अ हामरम कने कट गेल
भूआक पलौम बाहुरि कने गान समल्ल रहेक अ छडेफट्टयल गल्लस्य बहुरि
पुमती टपि गैलि राख

गुप्तवासी बलुवाही यदि फाँक सकेक । सारो दुनु कारे गजो ॥ ३॥

बहुत कम उमर में गम के एक पल में सब या किसी दर पर उसी क्षण में
गम के एक । अब का एक पल में गम का गम का बहुत देर की काल में
बहुत कम ।

ऊत भोगंमप षण्णु रहि गलि मईक । ओं हेंप इतकारने गुमते दधि गलि
हप जच बाटमे आबि राखै तकत्तक तै कतयो सुगबुगी नहि लगभैक । ओसतम
ह पछै धुति गलि कुवैक । इत बजारक लोकौ धूम मंत्र छलैक ।

आ इत मारा झटकारलक जे कहना बस्तो लग पहुँच जाय । फेर काये
इ गे हर एहो फाँकामे सही आर कथुक नहि खाली मंका माँहनदुख मनसा
सयक बुढ़ नव मय मुक्क रंग लेक एकसरि देखिते झिक्का तोरी सुख कऽ
हमक प्रतियोगी भुक्तिकाल गनमा बहु त* मय दिन हेजेमे रहैत छालि एकसरि
सय नहि झूठे खल अन्हार मन्तार मुरा आइ सय पाछुं कूटि गेलि लनैक ।

इसलोक धातु एतद्वा संस हैक आंतउसै एखनो अन्धारी भेलायस बोरिन
न. दल अवेत अंत गेनय-बहु खाना काने उकटती छैक किछु मजबो
अन्धै नै ईनिक. अन्धै दैत छलैक अन्धै ड खाली महार मास्तरक अ
एक दू-बूतक । ओकएसपरस संकांश रहैत अलि गेनय-बहु ।

पुनः साह माई अकस्मिन् करः आनांयत महेश मास्ते बुढारी बयमाक
अरु भव महार नहि ह्यध एकदि कडाली खोवः लथाल वनधि न पहाकः
न इन इति चत अर्थान् छान् अठ्या गनभाक् कहि दत्त छलैक

समस्त संकरपर बिगड़ उ नागालि दुनेक गनफ कडपर नहि गलेक धारेण
 सगल बिगड़व अडानये बल गलेक आ अबरसे कांता कसक गलेक
 कसक बल इदक कारगिलि खलेक ।

सब लोग रहल हलैक कि उत्तरी गैसवाक कहलकै । खुये रति जाइत
तेह रंग कइल सोइसुआ काहि दाकै नइह यागुरक अबस कौनों काण्ड
हो न ओ ।

का प्रथम मादपर भवनमें कृतो सेहो फुल्लि ठठलैक 'यदं हय कुर भयम
 ५ तें चंक तें जलत्तक तमर सामु वें चिन्ता कौ हइ यल्लम जे ककर हय
 जगन्ने वृषल्लम हय ककरा भौचिकः फाउल्लम त एतैक दिनभरि कपा खटा
 जेन पन्नासम गडो पंखि मस्त हं बाइल हइ भौगीमप हवन्तीसं बांनि अनै हइ,
 कः पर जै हइ आ गडिकः मनसाक आप्थे राखि दै हइ । पेट भरिते अ

ताड़ीक भइल धरम जाइत धरम मनसा मुनि पड़े हउ सैयार आ फो चिकित्सा हउ
फो फ कटै हउ स्यातां पौर आ चरकुनेयमप। 'सैयार' दुख सुख कल मनसा
मनसा ? आकर इच्छा भरनेक आ चिंचित हो गनैक । सौम्यस्य सौम्य धरम जेकरे
करऽ हउ गरी गरीक करऽ हउ आ मनसा जखन मन घाँचै हउ निशामें बूढ़ हउ
धैर्य पसरि जाइ हउ

मेनसाक बहुत 'चह' गव धैलैक अपन मुकामस। सनै मेनसा ओहन नै
हउ । ओकरा खाती अपनै धुख स धरमस नै हउ । ओ इया सुख दुख बूढ़े हउ
ओ जान हउ देह, मुखा अन्का सग उपर रहि होका देह इमो ।'

अपन नसुपन ओकर धुख आग रहि गनैक । कहरन निर्लज्जो हउ बहुरा
अह वचममे कहरन कहरन बिचित्र होय मरक के हउ सगले हकक
मुहस बाह आ नरिह ग बचक रहे लल्ला चपा के नौ हउ अहउ 'हउ
बौजा ! तकि हू एक गे !'

कखनो कोनो सुवचन पकड़ि लेवै- 'कनिई पौ गेली गालिक ! हउ-
दिन हा गल 'मोनीक' जन होइ हउ नरिह हउ अहउ 'एक गे' बुरेया मे जउ
चलत है एक गे जेहे हउ ।'

ओ, फेर निलेख निरधिन होसी होसैक । मुनिक आगि लगि जइत हउ
मेनसाक बहुत दुख सौम्य कलन आ सग जेन हउ आ ओकरा सग धरम
बुद्धिया आगे सहकायऽ लैत हँक छै 'इसचक' ।

ओ, ओइ दिन तँ साक कहि देलकै 'मेनसाक पैरसं ठठने ले' ओ
ओकरा ओ मनसा कलन जइत हउक अपन बड़को मुनिक' अपन धरम सग
ओपलै । मन है इहो बुद्धिया !'

मुदा, मेनसा बहु सनै अलि अपन धरमके । मेनसाक बहुत नौक हउ
हउण छैक । नौक जउक बउ पकके सँक मुपा चल रहि मुनै हँक । हउ
बग गयसा रखन छैक अपन आइयस । कहरन सग कलनमे कलन जइत
लोइ सग निलेख उचडन बुद्धिया कल लेन अलि । मुदा मनसा बुरेया नै हउ
छै बुद्धियाके । ओ कलन नै ओइ तँन गल बँक हउि सग लेन हँक

मेनसाक बहुत नै सोहकत छलैक बुद्धिया । अह मेनसा होइत
चुप सँक बुद्धिये ।' अह पौर पाप ओइ अर किछु नहि कहने जेहे
बुद्धियाके सागत हँक नीक कर्क ।

ओही हँक नालैक । मेनसाक बहु पयस पकड़ि होमि भेलि । सोनित बहऽ
हउ ललैक । क्या बहुर ईट गालि देन छलैक । बहैत सोनितके' बच करवा
नै बहुरक नीने नहि होनकै बहुत रास आ फेर उलैकऽ हँक झरकालक

अपन यल पुरुचैत पहुँचैत नौक कौ प्रहार भऽ गेल रहैक । अखनमे
बुद्धिया पल्लि छै 'छै' कलन बोझ पौकि रहलि छलैक जकरा पुकड़ि आइनक
हउण दखलै । कलनोष आ उकनाकऽ सखल बिबिधा तकलक आ ओइमे
मुनिक कलनमे अखनमे अखनमे बगि दिखसलाइ जउ बिबिधा लेमि सलक

न चुरक पजर लगलि । धाँक जयलक मनसा । मुदायल हँक ओ
हउ 'हउ' करऽ ललैक । ओ कलन काओप नहि गेलै । नहि बाधि किमहर
लेक । सगले सग घाँक हँक कलन काओप न काऽ बैरैक । ओकर अदसा बहन
हँक हउण दखलै । धरम-धरम कलनक । माँत माँत राँत पका ललैक आ
हउ 'हउ' हउ छलैक, हउरे ताड़ि पका नौन-हँक हउ हँक काऽ ललैक ।
हउ 'हउ' नहि अपनैक । सगलेक छोटके धरम बुद्धिया एहना पड़लि छै 'छै'
हउ 'हउ' हँक । हउण पिलुआ आ रहलक बहुम गारि गरीब धनल छलैक आ
हउ 'हउ' हँक । अपन बहुम बहुम दखल रहल छल । मुदा मेनसाक कतहु पठा
नै छलैक । मेनसाक बहुत धौन छपठ सल छलैक । ओकर ध्यान दुनु धौमिक
हउ 'हउ' आ बहुरक बिबिधा गारि आ धरमपर नहि छलैक । ओ अहंकापूर्वक
अपन प्रमोद कऽ रहलि छलै

अह कलन बोलि गेलैक, मेनसाक कलन गल नहि छलैक । ओकरा नहि
हउ 'हउ' । बुद्धिया लल बहुरक छेकलकै- 'ओ अखनो न नै चुरल हउ' कल दख
हउ 'हउ' नै ककरे ।'

बुद्धिया बहुरक हँक । हउ कलन ओइयै हँक । रात के ? धरमक
हउ 'हउ' हउ 'हउ' अपन ललन' प्रपन आ 'हउ' बहुरी कोइ आन

हउ 'हउ' हउ । ज गलन हँक । मनसा बहु कि क्या सौदल अहनाम
हउ 'हउ' हउ कलन हँक । सँक सँक हँक । ललन छलैक
हउ 'हउ' हउ । मेनसा काक' बगि के रखन हउ हँक । ललन बहुते
हउ 'हउ' हउ । हँक हँक । सँक हँक । सँक हँक । सँक हँक । सँक हँक ।
हउ 'हउ' हउ । हँक हँक ।

अपन बहुरी पल्लि सगल हँक । हँक हँक । हँक हँक । हँक हँक ।

कलजा लपटा इहे वास्तु रहकासे रहने ओकरा से छान हाँदा लबकेक

गनपः बहू मोक्षुकि गति पुनः जैन जडन्य छवि नहि छै आ मे कल
रौदले कलुआक हाथ पकठने कन आ तऽ कलुआ हमरा ओ

कलुआ ओकर सख रौदलेक । मेनपाक बहु काठि बर्का रौद ग
छलेक घासक दिस हलाव पाति छमेक हेलि गलि आ फेर रौदले खमेक के
रौदले चस गेलि ।

गनपाक बात दुसधालिएमे क्या रहि जानसक : आ धो घर बोझइ ले
गेल

बनपुआ माफ साध सबार ए, दम्भे पास्टा काँइ लोहर घालि ह
तो जैन हम तऽ हरिचन्द बाबूक पदमे छे तारे मणिक क चमत्त गम
मालिकक काम किए छहु, काथ छहु क मुछ नम । बडिमे गला सिद्ध ह
छे गेलमा हमरा ।'

भूला ते अहमे कछु जबाब देलकै अछि हाथ छुवाए हा तन
गनपा ? बहुत इज्जतिक नायक नमोने कर चाहै ते" से इज्जत
नेतागिरी ई नाम बाबू पैयाक हइ अहमे छालका भाक
कल्ल बनल नौका गेटि ले जैनक य आ काज गुरु क अइनाबन क
हवली भेज दई

चौकीरस हाँका कहलकै 'छे रोक वास्तु कठि हठ राख । अनरो
नहि हाव कर आ धरादोषध धिन तेने पूछ कब आ सभ लेक
हाथस देखौ । अह पाति ओ म माँपी पाति ले पालिक से ।

गनपा तेने अइस रहल । कसोक माँपी ? कसूर को हब हम
घरायास अबदेते को सहलक आ आ मे पानसके से हमर कसूर ? हम
छे जहाँ पान हठ काम कब ते पतिअ आकराकिना बगारे बास्त
कसूर ? निहाय करै हमध कोन कसूरक माँपी जइसे हम

काँबा बिगडिकऽ कहलकै बने गिगत रहि पब गनरा दम्भे
छिपि ओ कसूर ककर हइ मुदा हमरा इहा वृत्तन हब से हमरा को को चर

हमर के बदलाव अवन भइ ते रजिडि लवे हब तारा बह अखरे हठ
हमर हा क मे केयना सलिक म हम कस जेबो आइस हमर पालिक
कलुआ उअ दनका चरसध ते" म नालबाबूक पदमे छे हुनकरा
मे पल्लव नर रहि जवधे तऽ पल्लवमे जे मुनराजी के बाल्लन
हमर पल्लव ते कि पाटी कयमे छे आ अपन छेप आकरसध से काज
हम बाहले रहिने ।'

गनपा पात जे छध चरत कऽ हल छल सो स खनकटीगी आ
हमर कय अक सड गिर दनेक आकरा एकसाँ कैरना कर पडलैक
कर बना छे ।

मे अहमे दनकटीगी बहरादल आ धार छि गेल एक बर फेर
हमर चरत कर नालबाबूक कहनि गनबाबूक फेर कहनि जे हमर
बडि इहक कब दिवऽ पास्टा छलेक पालिस । गरीबक दू कट्टी समोन
हमर कोनी मताबर ते मऽ बाबब अहाँनाकनि

लक गनपा कतऽ गह छे गनपा ? टोकलकै ज्यो ते ओकर घान
हमर बहबबूक बसुस गलाका छलैक नहि जान किएक पछहु घड लेने
हमर आ हठ तब फेरि कहलकै आहमे कोने काम हम हयझीमे

गुलाका जे रहि टोकलकै ओकर भइ एक टा गार क्या छलैक मे
हमर लेइक अग चल गेलैक गनपाक इच्छा पेलैक म पूरि जाय मुदा
हमर दू अँकेछ घुरि बहब महा फेरान ललैक आ अग बढ़ैत गेल

गनपा बबब पर लग अकित चरु दिमने लोकमम रौदलेक चोर चोर
हमर जेते गुलाका विनिय इहमेक चोर चोर फेर वाकरा लारी मोधपर
अलैक के दामर लेल तकर बड हाव रहि रहलैक आ आंतकि ओधरा

हमर धलैक ते आ कमी बाबूक दरजबा ओह्रावल छव घामपर । दू
हमर गडो गनरा बाहल छलैक आ पयरा हँसएमे बाहल छलैक चरक कात
मेड हल गेलैक समर हाथ लालते कावा छलैक हाथमे टोच हाथ पक
लेक अक मुहपर बौर नहंरबा कहलछि देखू ते गनरा एकर पालिक
कछ पडल छल ।'

पडल बाबूक बाँबा ओकर ध्यान गलैक से माधम कपारपर हपर किछु

बहि रहन छलैक मोम दह जाके गनिनाम दन जलैक ओ ठउबाक नेम
कयलक मर हाथ बन्धल रहलपर कहन अछिअछि ओपरद्वर उद हाथक
बेष्ट कयलक । मुदा प्रकाश ध्वनि गेलैक ।

जकर अछि तछाप गुणक बगल उकदम सदा वर अछि बउ
देव ने हाथ पर बाकल छैक तेरा कन उनटे पुनटे अछि अछि अछि
ने ने दक्षिण अछि गीत गनिम एकदम बाङ्गापण बनल ओ नऽ जहाँ छ
पुष्पा क खलनैक तप क ओ उद भन कदम दखन ओ ओ उद ओ ओ उद
बहारिए हग सुता दैलएक ।

गनमा बारसै बाकल-‘एकदम झुठ कउ । बाटपर अनेरे पीछे ओ नऽ
भारलनि हमम ओ कपर ओ झुठ पुन क ओ झुठाम कनी बङ्गापि कउ
कदने छिएक हम ।

—‘सुप्य चौर !’ लउकैक एक दूर गुणकर फेर गनपाक भौबरम दल्लेक
ओ ओ गीचिकऽ ओघठ गेह ।

रविग ओ ओ नाम गनल गनि दहीर मम छन गनलक ओ ओ गीचिक
खसैर तेहि बाकल एना नहि मागिने बात नऽ मुनिये ओ कौ कदने अछि

गुणाकर अछि हनीर दल्लेक पारिधेक रति ? ओ ओ बाँउर मल ओ
अहाँ गीचिक बात मुनिये आकाश न गान सुनि नहि गेहने ओ दल्लेक
फा एक दूर गनम किचिककिचिक रति गन गीचिक ओ ओ गीचिक ओ ओ
बाकल अनेरे बहादुर नै दल्लेक । चारि कयन अछि नऽ एकदम घुम कदने
एना अल नहि लिखैक एकर ।

नहम बावू नहम हाँउर कहलनि नै गीचिक रति बहल गनि । नै नै नै
नहि छहक एकराभक बिग बहल नहम अनेरे एक नऽ मदकबहक रति

रति दल्लेक कहलनि गन नचक सचन गीर रति दल्लेक
सबल छैक सत्य दल्लेक ओ ओ नचक गीचिक अपन ओ ओ कहलक अपन
मेदनाक दल्लेक । गीचिक रति बात नऽ तेतसै एकर प्रतिक्रम दल्लेक
रति छैक ।

जहाँ बावू कन बेसी दूर दल्लेक कहलनि नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै
छल छ । रति मुदा ललन नहम नहम ओ ओ नै बहल छ । अनेरे मम गीचिक
अनेरे नऽ कदने एकदम उदा नै कहियो गीचिक अपन ओ ओ

मुनिये गुनल छलैक ललक नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै
नै
नै नै

रति अपन तनम गीचिक कहलनि ओ ओ नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै
नै
नै
नै
नै नै

गुणकर छलैक नचलक दूर कयन अहाँ गीचिक नै नै नै नै नै नै नै नै नै
नै
नै
नै
नै नै

रति कहलनि-‘इमम कोनो प्रमाण नहि चही । प्रमाण बाकल ओ
नै
नै
नै
नै नै

महलक नै
नै
नै
नै
नै नै

सालकन ओ ओ अलनि-‘बहल रति अछिना बहल ओ ओ गीचिक
नै
नै
नै
नै नै

रति अलनि-‘छल नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै नै
नै
नै
नै
नै नै

एक कलर्स को बेमेल पहिना देखू या अकल बच्चा एक कलर्स को अकल
उतलीह मारे लंगर छः ताँहें बाहर कलर्स को बाव कलर्स विचार है। एक
मकली बौकरी छान लहर कलर्स। अब को साधन अकरा हनेह उ एन अ
हुनू अमरीकन अति

तनुअ जोरस हंसकलं एत बंगलबू कोन कलर्स रहे मने अ
बजबाकल अडाँके। हम नाम लम किधरि उन्गोदर रहव

बंगल कन मग बकलर बकल बरि उतलह म गह मने इ कलर्स
शका पैम त हुसकसपका छुं हतन

तेजु जोरस बकल उतल- 'एका हुसक कलर्स छुं हतन म
कोन कलर्स छुं अपन वन लहर अकल मधन कलर्स' अह 'ह अकल
छिएक चुप रह

बंगल मिसा चुप म अकलह तंडक होरस हुसक कोन मने कल
मलावे जग हाम बजल म ह अकल उ कलर्स छुं लेक कलर्स पै म जग उ
छी वाकलम त लकलम एक छेक म अकल छेक कलर्स बहक लहर
को अति सप छ त बाव अकल लुगल छुं

रमिके हंसो सगलैक तेजु बुधवारोपर । बुधवार कलर्स
पहलधन सब मुखनह हंसो अर अकलअर मने

तेजु को अप्रतिम होइत बावस- 'हमलै' कलर्स मने ? कलर्स अकल
बजल गल ?

रवि अपनकें मफरिह कहलकै- 'पै ह, से बात नहि । अपन कलर्स
हंसो लामल उ तप अकल गह मने अर लामलअर मने अकल अर मने
विहल बाधन

'तेजु लुगल मने दल्लेक कहलकै मने अकल 'लुगल' कलर्स
छुं तैय नमने कलर्स छुं सल्लेक मने अकल अर मने अकल अर मने
तैय सधम अकल छुं । मने एकलर छुं अकल अकल अकल अकल
मने मने ककरो एक मने एतक मने ?

जगलक बातर रविअ फा सबअकल मने पहलैक लल्लेक
पहलधन लल्लेकक मने विहलल पुन लल्लेक मने त बावल मने
छल । नहि, बावली लल्लेक नहि, मुसल लल्लेक बीअलल मने ।

अकरा फा हंसो अकल एक छ मने हंसो तेजु फा लल्लेक 'फा
मने ?'

मने नहि जकां मफरिह हंसकल कहलकै नहि बातर हंसो लल्लेक
मने मने एतक मने लल्लेक को करन ? मने विहलल गहल्लेक त दल लल्लेक
मने ककरो मने लल्लेक ।

तेजु लुगल हंसो हंसल 'तै' रवि मने वैह रवि लल्लेकक अकल
अर मने अकल अकल मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने

ले बात लल्लेक कहलकै मने तै मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने

मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने

मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने

मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने

मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने

मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने

मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने मने

तबू पांग डैलकानि अउर ३३ दान्यन लेक डैलन समय हनेक लेक
नाक पठात करि कलत अउर ३ वन अहाँ उर कल नै गते को कहे कहे
गै सुन

रविके गुशाकर पांग पड़लैक । कहने हँक ले कमलाक भुइ
महेश बाबू तहन पटकनियँ रोघन व ओकन वन रहलैक । उर धावन को छे
हुनका नग । तबू कहेक नक डैक । उर बाबू कहेकन तन नकडिपक आ
मोपीक सापना भागे इतय तबू बांगन पिनर नैर करि रहल हलैक
आकग किछु किछु अरु नगर रहल छलैक । तबू पांग नकनके का मनेक हँ
मने नै

नै काना सोच नहि । एहिना विचारैत रही नै छे मुखिया भऽ उर
तऽ हनगमक ऊँचैक नाकके नै एग सउदुगिया बुछय अउर

तबू प्रसन्न होल कहलक- 'ई तौ बकले' एक ठ कत तछनरी ।
त हन हन कयौ न अउ एकबलक' दम मकक आसन वंझलैक नक कहेक
बड़का भारी छिनाम अलि इहाँ एकबलिया

गम्पक एहू अफलाभास पडसँ रवि चौकि गेल । बांग मिसर
हँन करलक । उर नव बांग कने नै हन न उरल छलैक ।
भागनित नैगन बांग नै मुँडय विषय नैगन छलैक । अउर उरल
अयन । दुन खूब खुनि छलइ अलि ।

अमरफौ झा गम्प लोकाबिन- 'मियाँ बुद्धलके पियायु । सौ ई यम
गौर बड़ल छैक । उर नव वड़ उ कहेकन अरु कहु कहेक

तबू अपन फदिनबैत बाबल- हमरु कहैत लान होइत अलि ।
एगबलक लय घन । उर नव वन अउर नकन नै नैर नकन
घाबुन नकन नै नयन नकनपुन उर शिक । उर नव नैर नकन
कबानेय

पहित कानू कहलक- 'तँ अयन एकबली चौपरिक कान होथ । उर
मँ हलपन नैर नयन मपक' छलैक अयन नकन कहेक कउ कहेकन
गेलक । तँ स्त्री तउ कुर्या हने करियन । नहि एकबली तउ नकन अउर

फकार बाबू टेकलक- 'ई कत उर होक नहि कहि रहल हो अउर
गुन कतनु नकन वन नकन नै नकन' अउर नकन पति अउर नकन

नकन समयने धर भऽ जावत । आ, मुखियाक एक ठ कतोष होइत छैक ।
नकन कत एहन होक सँ ओकर विरोध होइक ।

अरु नकन नकन नकन । सैह नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन

नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन

नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन

नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन

नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन
नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन नकन

गहन दंत का पिछो गेलक घोंग कलनंग उदधन क सीर गहवन जे
भाहम न म, गहन रांड के का उदधन बावन कवित

गंधक सगर न्ध अपचित ओ मयमयन मन नगधक
कवित जग तगल मंकि गनैक दधन दधन मन अरु जे बगर पांडे अ
आंधाई लीक उरुन कहलक भाइ कन धन पहि गनै कवित गन

गंध कवितक सरग वनी मुनि आइनक न्ध मयमयन मन
सिंहगनक दवा बावन पन सन दन न्ध कन कवित न्ध कन वन उरु
अचबाक मयमयन नदि मल तंहुं वन अचि

कवित कहलक वन कहलक तार न्ध मयमयन मन अरु जे
मार्ग पन वन अचि

गंध मयमयन मन अचि बवन दधन मयमयन मन अरु जे
हम न्ध अपन मयमयन अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
तारा न्ध मय चीहै वन कवित कन न्ध कन वन

कवित कहलक वन खूब कहलक तार कन कन न्ध मयमयन
बनमयन जासुस लागन अचि गिलिऔत भाइ पांडे अचि बवन पन
आणि दवाक अचि बवन न्ध कन वन सन किहु वन बवन वन
मयमयन नदि वन न्ध कन वन सन दन न्ध कन कवित
नैत वन न्ध कन वन सन दन न्ध कन कवित
नैत वन न्ध कन वन सन दन न्ध कन कवित

गंधक न्ध कन वन आइन मयमयन अचि बवन पन सन दन न्ध कन
कन कहलक वन न्ध कन वन सन दन न्ध कन कवित
गंधक न्ध कन वन आइन मयमयन अचि बवन पन सन दन न्ध कन

कवित गंधक न्ध कन वन आइन मयमयन अचि बवन पन सन दन न्ध कन

कवित कहलक वन न्ध कन वन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

गंध स्वोक्ति दंत कहलक वन पकठन तं कहलक
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित
अचि बवन पन सन दन न्ध कन कवित

समस्या पहचाना। 'तुम्हें कहलकै व तबु गहक डायबक संपु लख छै
टा बाँध आक' धर्मसमय धर्मक 'छा बज' गवा पन रहैक । अं बाँध पन
पाइलक व आकर मगराध प्रसन्न रहलक । कविता धर्म कर देल

कविता कहलकै 'तबु मय पैर धर्मसमय लोक 'अपने किछु बजब' छ
पेर आकरे मंनमे स्वर अकौ धनि-तानि नमोत रहबे' । तबु नहि लख
कातलमे तकर तारस धनी मुदा आना छै लल म मडि कल्लमेक
तारामें कलिया काना छै गते छुम । अडम नहि कल्ल सन करैत 'सबो
मनाक गामक लोक । एकर दुन बहल बेम कहलियो । कविता छै
ऐतौक किछु आ तौ 'अपि पढ़बे' ।'

रवि कहलकै- 'से तौ नहिसे पसारा बयो किछु तैरो धर्म करब
गाममें मन करै तैरो कविता मुदा एक म डल पछे छिरी कविता' कवि
म किछु पसारा कविता से छै छैत छैत मुदा कविता सन पछे छैत छैत
से किछु म मनक गामक लोक ?'

कविता छै स्वरमे कहलकै- 'कविता कविता ? से लोक' म मन
की खेल छलैक, से तौ अपने छै पढ़ा गेल । छलन कहलैक छै ? छलन कहलैक
म सन अहो मय पढ़ा गेल कविता कविता कहलैक म कविता कहलैक
काका मन मय पुनक कविता कहलैक म कविता कहलैक
मानव कहलैक से म कविता कहलैक म कविता कहलैक म कविता कहलैक
मग अन्याय खेल अछि, अहाँ सन कविता ? एक दिन साहस कविता सन कविता
रहो जे हुनकसे न्याय मडबनि । हुनका कविता कहलैक आ दु-छरें कविता कहलैक
जे हुनका आर आपत देबक कहलैक नहि खेल ।'

रवि कवितासे कहलकै- 'ई हमरा ऊपर लोहर सभसे पैर अपन
कविता' म कविता कहलैक म कविता कहलैक म कविता कहलैक
नैतनि । लोहर ई उपकार हमरा मूख धर्मसमय सन लल कविता ।'

'छाती उपकार मोन रहलै ? अह कविता ?'

'लोह मोन रहबे' कविता । सन दिन मोन रहबे । एकको दिन सन कविता
बिलसि सकनिपौक छैत ?'

एकको दिन लेल नहि बिलसलौ जे कविता छै लोहर सन सन
मड गेली । सन दिन भुणाएक स्मरण कविता कहलैक कविता कहलैक ।'

रवि अवाक मड गेल । कविता आकर सन छै कविता कविता कहलैक
कविता कहलैक सन कविता कविता कहलैक सन कविता कहलैक
कविता कहलैक सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक

'अह बोस सन कविता कहलैक कविता ! सन अपन कविता आ सन सन
कविता कहलैक सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक
कविता कहलैक सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक

आ 'कविता' से पढ़बाक छैत तारा ? किछु कविताक नै छै । कविताक
स अकभिक सन लेल सन एकम सन सन नहि छल

आ हम छै कहबो कविता ? सन छै तौ कविता कहलैक तारा । तौह
कविता कहलैक सन अपन सामु चल जेह सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक
कविता कहलैक ?'

'मफुरास गेल अछि-छैत ! अपन अविसे छैत !'

कविता कहलैक सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक
सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक सन कविता कहलैक

रवि कविता आर सन आ अपन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन
सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन
सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन
सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन

'मयक सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन
सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन
सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन

सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन
सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन
सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन सन

चौकीदार : हाइड्रो कठनके दे लाइ हल बरत । कपूड न
पुलिस आ अदालत फाँले । हमरा अपन हस्यो करे दे ।

होरो लेने चौकीदार फिदा भेल । वैह होरो मनपाक दुनु हल : हल
बादलन तुलोक आह 'बेदा भल पठ' पछि

मनमा-बहु एयर नहि छंदलकै लौकांदासक- 'इम नहि कइबस उर
तारा ? इगुन हइ हा काका ? ककलौ भाषा' हल मलाने अइह

चौकीदार एकर किंकर्षण करबैत बइस कइलौ काका हल
मालिकके बखारो कलकवि ओखरौ इच्छलकै लोक ।

मनमाक बहु जेना पचाह दोगह मलक ह जलिक भकटनके उर
पारकै ? इ मालिक झुगता हल इ मालिक उरन हल । हमर हल उरन हल
हललाम हमर मल मुहल इति हलके लल अल सधवे हल एकर बल
आ हो कवका ! एकर ओहि दहक ।

महेश बाबू सरकिऊ लग अपस्तह । हाथमे बैठ छलनि बाहिरी
हल मल दलन लललिन वैह हल सल मल सल सल सल सल सल सल सल
एहन मलल मे गतिनई । तौ हमर इरककपर अलि हमरा गति दल
गुणाकर ऐकर पचम बल ।

गुणाकर बल खलिन लकडराह दल । मललिन आ ललल बल बल
मल बलल लललिन धीम पुन पुन नहि मलन आलिन गति पलन लललिन
बाबूक- 'लिनल, सुदल कलल लललिन ।

महेश ओकर बलल कपलल बल होबल लगलैक, मुन बल आ लल
अलल बललन लललैक ललल अललल दुगुन एकललल ललल एकल ललल
मल ललल लललललल किनु आ लल हलल अलल मलल बलक ललललल
मल होअप ललल मलल बललललल लल लल ललल ललल नहि ललल लल
गुणाकर ।

गुणाकरक हाथ ललल गललिन । महेशबाबू बैठ लेकैत ललल
बललल हमरा ललल अललल नहि लललल ललललल ललल ललल ललललल
आलि हमरा गति पलन आ एकरा ओह दलैक एकर ललल ललल ललल ललल
लुधका दलैक हल ।

'बल की थिकैक ?' - मुलियाको उरन कलललिन ।

बल लल लललैक ! एकर सलल मनमा डलल बललल होसुई कलल लल
हल लल लल गुणाकर एकल ललल लललल ललल लल लल लल लल
लल लल लललल ओहि ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
लल ललल ललल ललल ।

गुणाकर लल ललल, लललल लल लललल लल लललल ललल लललल ललल
लललल ! लल लल लल नलि लल लल लल अलि लललल लललल ! एक लल ललललल
लल लल लल ललल ललल लल लल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
ललल ललल ललललल लललल ललल ललल लललल लललल । ललललल लललल
लल लल लल लललल । मुन एल लललललल लललल ललल ललल ।

महेश बाबू लललल, लललल ललल कल लललललल ललल लललललल
लल लललल अलि ललल ललल ललल ललल ललल ललल लललललल ललल
लललल ललल लललल लललल लललल लललल ललल ललल लललललल ललल
लललल ललल लललल लललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल

लल लललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
ललल ललल ललललल ! लललल ललल ललल ललल अलि ललल ललल ।

एक लल ललल ललल लल ललल लललल लललललललल ललल ललल
ललल ललल लललल ललल लललललललल लललल ललल ललल ललल ललल ललल
ललल लललल ललल लललललल लललललल ललल ललल लललललल ललल
ललल ललल ललल ललल लललल लललललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
लललल ललल ललल ललल लललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
लल लल ललल लललल लललल ।

महेश बाबू लललल ललललल ललल ललल ललल ललल ललल ललललल
ललल ललल ललल ललल ललल ललललल ललल ललललल ललल ललल ललल
ललल ललल ललललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल

लललल लल लललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
लल ललल ललललल ललल ललल ललललल ललल ललललल ललल ललललल

लल ललल ललललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
ललल ललललल लल लललललल लल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल
लललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल ललल

तौ लोड लीड । यदुष्ण-मिथुनं तदो गेने नल किउ टका ३० दिअनक । उ अ
 पौणकं म्हादिआक । बोने अइअन से। को बरि जेन गौन चरिआक । छोट दिअन
 गउ गेने निगान को दिअनक उ कएहि गौने इलाकाक भौक इअनक

गुणकर गेने गेनाह । महरा बाबू चारदि राउ कुलाह । बाप कहलकि =
 अही दुां कहैठ छलिचह सोइ मम दिन उ दारिदारीस धप काउ करह । नउ
 नौक नहि छः । खतबेगलौक एक टा पौण राउकडारा अवि लोड को को २ कहै
 गेअह । कालिध धी राग खचो हुनह

महरा बाबूक तामसकं शरक गेने अप खड दलकने । उअ कुल
 पौणीक एहन मभल । कालिध टंगनेक भार गामक लक । सारै अइअन कएने ।
 अपन चित्त, पड़लि गतने राउने मलि सौच अइअन ।

गैतपक आइअन गुणाकर एकल गेनाह । कक गेने को कएअर
 हुनकर मोन बड़ भिअने ललबायल रहै गेना । बड़प । दुहा तउपरा धिरा बड़
 अलंगु गहौन राधिन । आ चुप छलाह ।

आइ अपन स्वीकृति २३ दनगेने । गुणाकर हुनमल धिरा पलाह । एअर
 अपनार्म सौच लटो रहै । लखारुध अपन को कर्म भविष्य सौच फोर चतौ गे
 मुह बस लका । लखारुध छेअर छलाह रहै । एअर पम । कंधक भविष्य लख
 कसल को कसल । पधरक वधम भविष्य गेना गधे न गौन दुअर कने । अ उ
 एकदम को । मम दिन कहल लखारुध छलाह कस अ एअर । नित्य भविष्य कने
 दो गधे चधरुह रहै छलनि । एअर अधिक को कने अपन रहै । इअर इअर
 बाइल चतौ आ इअर पधे मम लख । इअर स्वीकृति बड़अन तपाक आ वृ

आइअन पैसई पड़ने लोक सकै तपाक वृल आ एर दबलने । अ उ
 अइअन छपकल गेनाक आइअन पैसलाह । आइअन पड़ने छलनेक आ धरक कटक
 बन्द । मापने छन टा रक टा अप फोटो छलनेक बिन पौणदि राउकडार
 गदुआ पाथके आसने दिना दलधन

गुणकर चराने उअन क हय

गुणाकर दुहा हाथ लख दलधन । एअर अवि हय छै गुणाकर ई
 क कएने

यदुअ मय गमल राउन बाबल । महरा बसो बाइ फिले छै गुणाकर
 महरा कांठेन गुणाकर रहै दनी आ माइ उअ बुडियाक दसकिया ।

गुणाकर आलप डैरलध । ई हिसा भजक भव क । ई दसकिया तां
 ई एअर लल रहै । ताहि छोटका पुतहु । उ छै बड़का इअरिबालो लका
 एअर बड़ गुमान छै अकरा । आइ बुअ दबक । कन फोटक खलाह

गदरा मठ मिहाने गेल । गुणाकर राक्षस छै ओकर बड़ल छैक
 छैक । एअर सकै ममदेत छैक । जका भूखन बाभक । शिकार भेल हाइ
 उअर कए अपन चरैत कए महरा बाबू आकरा गोक दैत लखन आ आइ
 उअर कए । मिमोनिअर छलि दैत छैक गुणाकर । बड़अ-माव अनेत छलैक

गुणकर कएअर कोउ उअर गि । एअर काना इच्छा रहै छलैक । गदरा
 मठ एअर अपन अइअन अइअन छैक । जका मोन छै आइ ओकर बड़का
 एअर ममल । एअर अपन छै । आइ एअरि दलक गुणाकर मम ।

एअर मम । एअर यदुअने बलनेक । कने फोटक छल गेने गेना
 बड़ । एअर बड़ । एअर कने

गेने उअर कने बलनेक । यदुअ गेने मम । एअर कने दलक
 मम । एअर बड़ । एअर कने । एअर बुडियाक तपेना दल । एअर गुणाकर
 कने बड़ । एअर कने

गदरा मठ मम । एअर कने गुणाकर दल । गुणाकर अपन
 मम । एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने ।
 एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने ।
 एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने ।

एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने ।
 एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने ।
 एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने ।

एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने । एअर कने ।

यदपि नाथ आनन्द ताडि गच्छेत् उता लालके प्रविश्य शक्तिं जप्त्वा पञ्च
खण्डे खण्डे कथं दैत 'सुखं योगं यस्यादत्तं कदाचित्' । तत्र तत्र स्थितं भू-
त्वा प्रकटं दिनं ह्येव नित्यं धरतीम् ।'

यदुज्जा-यास इत्येवं बोद्धिं श्वरपापं कृत्स्नमेक— 'काटि दै शक्यते । तौ यत्
 सौ । कृत्स्नं दुर्गं । काटि दै, इत्येवं तद्वत् ३५ अक्षरम् ।'

पंचमा बहु लक्ष्म्या नैर्जो कर्ते कदाचनै एकर श्रमनिर्गमं क प्रभवः कदा
गहनैक नन्दा शान्ति हउ चैवान् भगि जियसो अपन लख खानीयके आ कृपाने
बटी-पुतहुके सौख करै हव ।"

यद्यपि माय अक्रिया पंचांग खुलानेक रहलैक तोक कहलै भवतै । मुदा
अइ पापिनेक बहुरा क र भवतै तां पतन दैग र भिन्न सफल भवतै इ
गायमे २ तौं अइ पतिले अक्रितै भवतै ।'

बुद्धिवा इतरांदि मय गेलि जलैक । भवानी भवानी हट लागबैत उल्लास
आँसवा रहलि जलैक । कलक करे भाली नै कयने होइ ।

[illegible][illegible]

किन्तु काल बाद अतिसूक्ष्म अति भरी बुद्धि—“रन्ति ह भगवन्”
तो भागि जो व्यपन्न नैहर ।”

गंनमा- बहुक सेन ई अउरपाशित छलैक । छरो दुखिय बलाहि भउ
 ललैक ओ शबिणावला हाउ दू कोन कउनवें दू कं कलैह मंजला जल
 भयो दू खरि टाक" अनकय दुकौन हउ जो वस ॥ अकगलभक" नुहो क
 दिपंक आइ ।'

यदुष्मा माय होय तद्वि शंभो क. दक्षिण मा' मने' मने' रम
 चक्षुः दत्तं छे' । मया दक्षिण दे' इत्यस्य अस्मिन् अपि अस्मिन् नैव ।'

अमल वह ३४३ अर्थकः हरिजि रति ककग नहि दवैक है खंभला
 ५०० यहाका दू खण्डों भेस पहल हव । पुतिमके बवा लैक ।

[illegible]

३. हुय मै भनबै । जागिबउ कहाँ जयबै ? घम्टरबा आ गुण्णकर तँ सय
जु कहै । जाब घमबै नहि कहौ । बवा लौ पुलिसको ।

उक्त मन्त्रानां बह्व्या लङ्कार्ये बङ् लङ्कार्ये सन्तः प्रथमा गतिः छन्दः
३५ : अन्तर्यामि नै जगन्निन्द्यारौद्रहृत्ते गौरीक ।

धृष्टा तस्य बहूः इव गन्धर्वान् । जगत्त्रिभुवनं जयन्तः ॥ बुला लो
कान् । अथ यमर्षेः अर्षा दत्तान्ताम्रं भाटि देवैक ।

ॐ इत्यस्य दत्तना तेषां सांख्ये अपि आश्रयते नैसि रीतिः ।

पहला चक्रः दायजान्तरं विद्यमानं यत्ने अपन दोल विं गन्ताह यत्नि
= सांख्ये ह्येते । कुसुमस्य बाट उक्ता ह्येति ।

[illegible]

शक्रमरकः पादः वन्द्यः बज्रलाहः शक्रदयः गोबरकः चोतः ह्रिदः मुखियाः
कान्तः मण्डः पुनिः हविः कान्तः पुनिः कान्तः चोतः हविः खान्तः दारभंगामः पेरभंगामः
दीक्षा लोः । वस्यः प्रत्येकः मण्डः हविः ।

[illegible]

कृष्णः शङ्खानां उदयन प्रज्ञान पार कड नील छात्र भावुजि महा पैतृजीमर्से क्षम्य
रुद्र हनुमन्त पावने केश श्री गुरुकुल गलबाली तैत्तिरीय ताम्रक गांठ नरानं
रुद्र श्रद्ध प्रकटालोक कृष्ण सगैत ह्येष्टन हनुक विहीनप सुतलाक बाद भवि
कड तं ब्रोकडत रहैत छलनि, ननब कोनो लसध वस्तु सुधि हंगै होधि ।

बिन 'एक कठक दिन चलत ? कहाँ तैं हय किहु परत करी । अह भिन्दा
सो न्यपर दूण्ड दाइक हाइ स्थली छेक । अनौक बहाना करबा सकैत छै ।'

मुदा बुझबामे भन्नाक सौ बहाना छैन । एकदमक अ
हुलाक भेलनि । ओ भिन्दाक कालाघर एतक दिन धरि अहाँ कहाँ भुक्ताने
छी कुसुम्दा ।'

कुसुमदाक दूण्ड दाइ बनि गयोह । एतय पैसाक अमरनोक भेलि ।
गेलनि । बहाना अहनाम काण्ड दलैत बुझुनक म गेल छनि । एतक चलने
कौन छनि । छारको बंगीक । अस पिटा करबाए एकबालो बह भेलैत कदना
बोले दुनक । कालजम इहोकर व्यवस्था करा दलैथिन । अहनाम छाना प
आ एकबालो विधाय बाघ अह लल्लाह । कुसुमदाक मिठ्ठा अना बने
दाइ हरम रहल कसय कपल जाडे । ओ भिन्दा सदा औखुपर भेल ।
इलाक लक्षण छल तने भनि कहैत छलैक । एहि नरि आ बनिन एकदम
कुसुमदाक दह भाने एक ठा भिन्दा हाइत छाना । इहोकर मनु गेल
छलनि । तयक कुसुमदा घामे बहाना अहनाम कदना । आना अहनाम
छी दा लोपाइ । एकदम लल्लाह छलनि । बिना बाबूक इन बालक मुसक
भोइ कदना बोधो भेल । अह लल्ला कदना । ओ भिन्दा भिन्दा अहनाम
मुसक किपक एना आ अहनाम । ओ भिन्दाक अहनाम । ओ भिन्दा
कारी-बुन लल्लाह इलाकाके धुमकाइ बहो ।'

एहि गाम गैह प्रचल कदना । मुदा हुनकर इह एकबालो नहि
ओ भिन्दा तहने अहनाम छल । हुनकर अहनाम अहनाम छल ।

अह महारा दह लोकाके लल्लाह अहनाम अहनाम अहनाम
एकदमक अहनाम भाक अहनाम छलनि । अहनाम अहनाम
तीन दिनसें गेलो नहि छल ।

एकबालोके दलैत कुसुमदा प्रचल । अहनाम अहनाम
बाट अहनाम अहनाम तहने अहनाम मुसक । अहनाम अहनाम
त्योनि दल । अहनाम मोन तमसामसें दलैत छै ।

एकबालो बहनामदल छल । अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम
कोन अहनामदल कुसुमदा । अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम
अहनाम अहनाम अहनाम ।

ओ भिन्दा अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम
अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।

अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम ।

अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम ।

अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम ।

अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम ।

अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम ।

अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम ।

अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम ।

अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम ।

अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम । अहनाम अहनाम अहनाम ।
अहनाम अहनाम अहनाम ।

कैवल्यराम ठाढ़ ५५ 'नपाक भाकटवा देखुवा' देखुवा चूल्हा लहाइ ५५ इतने
आ तिवारीजी अनारक दुश्मनीमें बैठइ चढ़ैव चलाइ ।

गढ़वाकें बुझौलसभ 'ना' नहि नुसैत छलक पाइवन । ओ माफिल एक
सोझ नहि छैक नूनक मकदम, छैक अंगुष्ठ इज्जत, हैइ कमिस्त छैक

मछौवन मछौव नहि मानलकनि- 'मछिल कोन छैक तिवारीजी ?' एक राइ
इज्जति चलायिअ अरक हड़पायिअ मछौव आ गुवाक, हुका जमानि ५५
मुगियाजोक कमिअ नम आ मछौव बावक धौ, एक निम्न छुकाव को बस कनू
मरान बाग्य ते काजना कोन 'कानटा' क हुर छैक अने राइ ५५
हा आइत हड़ आ गंतमा आ बाक बहुरा' नै इतक मर नै हनई कहे छै मछौव
जे लौक नैत लौक मानु हड़ काका बाउरक बाव अने नूनक का का का
छिड़ मारम ने पावे छिड़ अहुँक मर आका जाल रामो कानू हड़

तिवारीजी पाइवनक करलस गे. हौं पैलि कहलथिन- 'अइ तौंग को
गोलाइ भाइअन । हका धान लो' नै बनेत छह । नै मछौव छिड़ मारम नम नुसै
रहेत छै । हका मानम नाराम लो बहुरा क'क अहुँक मर नै हनई कहे छै

'सच कहै छी तिवारीजी ?'

'कूठ किश्क कहबइ ? मछौवा लउ लैइ पाइवन !'

'अच्छा तै एगो बात करु तिवारीजी । हमर बेटो बड़ सुनस हय
तै देखल छिए, अहुँक बंछ छथि । हमर बेटोकें अपन पुतह कन
हय-अहौं सम्बन्धी बनि वैब ।

तिवारीजी बढकला- 'तौहर दिमाग आइ खगब ५५ गल सभ
अण्ट सण्ट बनि रहल कउ । हौं हमर लंस तै अइ दशक सभ लक अपन
मछौवो अछि क न मछौवो क'क अहुँक मर नै हनई कहे छै
गय करब ।'

तिवारीजी पढ़ा गेलथिन । मछौवन गढ़वाकें हौं लागि गेलैक ।
प्रहसन तिवारीजीकें सम्बन्ध आ बरबारीक उपदेश बिसरि गेलनि । सभ
अछि अपने धौव लो अहुँक मर नै हनई कहे छै
अछि ।

आका मैनमे बहुत दिनसँ आगि सुनिग रहल छलैक । मछौवन गढ़वा

अहुँक हलैक छल छोट नानम एतव निखुब छति अहुँक कूठ उठै छै
अहुँक लो' नै बनेत छह । नै मछौव छिड़ मारम नम नुसै
रहेत छै । हका मानम नाराम लो बहुरा क'क अहुँक मर नै हनई कहे छै
गय करब ।'

मछौवनकें सिल नहि छलैक मुदा कानो हपाय नहि छलैक मछौव
अहुँक मर नै हनई कहे छै । हका मानम नाराम लो बहुरा क'क अहुँक मर नै हनई कहे छै
गय करब ।'

मछौव कोनो कमिअ छैक कहेवा नहि हनौवा किहु जपान बहुरा
अहुँक मर नै हनई कहे छै । हका मानम नाराम लो बहुरा क'क अहुँक मर नै हनई कहे छै
गय करब ।'

कामक जपानक नामपर गढ़वाकें बिलटाक छीह भोन छति गेलैक मछौव
अहुँक मर नै हनई कहे छै । हका मानम नाराम लो बहुरा क'क अहुँक मर नै हनई कहे छै
गय करब ।'

मछौवनकें नहि कहि गेलैक बिलटाकें । बिलटा टोलमे आधक जायब
अहुँक मर नै हनई कहे छै । हका मानम नाराम लो बहुरा क'क अहुँक मर नै हनई कहे छै
गय करब ।'

मछौवनकें अहुँक मर नै हनई कहे छै । हका मानम नाराम लो बहुरा क'क अहुँक मर नै हनई कहे छै
गय करब ।'

विलट हाथ पकड़े लज्जती ने सुना ५३ आठ धातु पकड़े ५
रहल जाय हय कबरी फुल, तखने अयनी इपाई । तखने तोंड़ी हल जाक शिखर
राख्य भाई ।

ओ शिखरारे आठ भाग पड़े रहल छैक । नदर बज्जक कइल
पहल छैक एक चर हल गइल ने का तखन छैक तखनका कइल छैक
आठ बीर डोह हठपि जयलैक ।

विलटाक' गहि कहि सकल छैक गइल ५४ एक चर कइ
कहाय आकर ५५ हल छैक । विलट गइल छैक ।
कहुआयल छैक काला काह ५६ क बेलक यल गइल छैक ।
दु पगना जलम बल छैक । पगना कइल छैक ।
माय पइलैक । पद पंगकाय छैक ।
अपनालम पगना पुपाकर ओ दु पग अगइल ।
गल शिखर छैक ।

निवारोजीक' नाइलक' ५७ गल छैक ।
गपमाक धरक लाकय छैक ।
आठ गल नाकय छैक ।
आठ गल नाकय छैक ।
आठ गल नाकय छैक ।
आठ गल नाकय छैक ।
आठ गल नाकय छैक ।
आठ गल नाकय छैक ।

शिकरार तै ओ जयने भल गइल ।
मप तै गलबह छैक छैक ।
प्रमुखायलीक लाक ।
आठ गल नाकय छैक ।
आठ गल नाकय छैक ।
आठ गल नाकय छैक ।
आठ गल नाकय छैक ।
आठ गल नाकय छैक ।

तो ता जाति सुनो रहल छैक ।
दुसधालीय धर आठ दिने निवारोजीक ।
आकृति हल, छपर चुप्पे ।

भुक्तरभि- को बल छैक बलक ? सप बुध छै ।

चौकंदर हाइक बातन की बालू हाइक बातन ।

जयने नदर नदर ।
५८

निवारोजी कहलैक ।
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

प्रवाधन कहलैक-
१०१
१०२
१०३
१०४
१०५
१०६
१०७
१०८
१०९
११०
१११
११२
११३
११४
११५
११६
११७
११८
११९
१२०
१२१
१२२
१२३
१२४
१२५
१२६
१२७
१२८
१२९
१३०
१३१
१३२
१३३
१३४
१३५
१३६
१३७
१३८
१३९
१४०
१४१
१४२
१४३
१४४
१४५
१४६
१४७
१४८
१४९
१५०

निवारोजी कहलैक ।
१५१
१५२
१५३
१५४
१५५
१५६
१५७
१५८
१५९
१६०
१६१
१६२
१६३
१६४
१६५
१६६
१६७
१६८
१६९
१७०
१७१
१७२
१७३
१७४
१७५
१७६
१७७
१७८
१७९
१८०
१८१
१८२
१८३
१८४
१८५
१८६
१८७
१८८
१८९
१९०
१९१
१९२
१९३
१९४
१९५
१९६
१९७
१९८
१९९
२००

बंदर कहलैक-
२०१
२०२
२०३
२०४
२०५
२०६
२०७
२०८
२०९
२१०
२११
२१२
२१३
२१४
२१५
२१६
२१७
२१८
२१९
२२०
२२१
२२२
२२३
२२४
२२५
२२६
२२७
२२८
२२९
२३०
२३१
२३२
२३३
२३४
२३५
२३६
२३७
२३८
२३९
२४०
२४१
२४२
२४३
२४४
२४५
२४६
२४७
२४८
२४९
२५०

निवारोजी कहलैक ।
२५१
२५२
२५३
२५४
२५५
२५६
२५७
२५८
२५९
२६०
२६१
२६२
२६३
२६४
२६५
२६६
२६७
२६८
२६९
२७०
२७१
२७२
२७३
२७४
२७५
२७६
२७७
२७८
२७९
२८०
२८१
२८२
२८३
२८४
२८५
२८६
२८७
२८८
२८९
२९०
२९१
२९२
२९३
२९४
२९५
२९६
२९७
२९८
२९९
३००

बंदर आ प्रवाधन तैयार नहि मानलैक-
३०१
३०२
३०३
३०४
३०५
३०६
३०७
३०८
३०९
३१०
३११
३१२
३१३
३१४
३१५
३१६
३१७
३१८
३१९
३२०
३२१
३२२
३२३
३२४
३२५
३२६
३२७
३२८
३२९
३३०
३३१
३३२
३३३
३३४
३३५
३३६
३३७
३३८
३३९
३४०
३४१
३४२
३४३
३४४
३४५
३४६
३४७
३४८
३४९
३५०
३५१
३५२
३५३
३५४
३५५
३५६
३५७
३५८
३५९
३६०
३६१
३६२
३६३
३६४
३६५
३६६
३६७
३६८
३६९
३७०
३७१
३७२
३७३
३७४
३७५
३७६
३७७
३७८
३७९
३८०
३८१
३८२
३८३
३८४
३८५
३८६
३८७
३८८
३८९
३९०
३९१
३९२
३९३
३९४
३९५
३९६
३९७
३९८
३९९
४००

बंदर कहलैक-
४०१
४०२
४०३
४०४
४०५
४०६
४०७
४०८
४०९
४१०
४११
४१२
४१३
४१४
४१५
४१६
४१७
४१८
४१९
४२०
४२१
४२२
४२३
४२४
४२५
४२६
४२७
४२८
४२९
४३०
४३१
४३२
४३३
४३४
४३५
४३६
४३७
४३८
४३९
४४०
४४१
४४२
४४३
४४४
४४५
४४६
४४७
४४८
४४९
४५०
४५१
४५२
४५३
४५४
४५५
४५६
४५७
४५८
४५९
४६०
४६१
४६२
४६३
४६४
४६५
४६६
४६७
४६८
४६९
४७०
४७१
४७२
४७३
४७४
४७५
४७६
४७७
४७८
४७९
४८०
४८१
४८२
४८३
४८४
४८५
४८६
४८७
४८८
४८९
४९०
४९१
४९२
४९३
४९४
४९५
४९६
४९७
४९८
४९९
५००

धाना-धुनिस-कच्छरी भेतैक । मेरुज ओ ओकर बहु बने रहतैक । मरुज-
छति अगनाह रवि-र सत मृत्तना पेट रहतैक । अ अपन किछुअ नहि
सकल, बाकउ देखिधे नहि सकलैक ।

पहुअ-मध्य एक दिन आयलि छलैक प्रवण्ड बरहि धेलि । मरुज
गुहरो मत-अखि नाल-लान ओ मृत्तना नहि हउ करज नान्यै । मरुज
हउतु दुनु ऊपर रहत तैत छेक जेन करज मरुज के हउतु हउतु मरुज
अहिना हाथ हउतु नहि नहि नहि मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज ! दुनु बैकमृष्टि हउतु ।

फर हउतु लमलैक एक टा हउतु हउतु । मरुज के कर करज तै हउतु
दतौ । काटि दतौ सम्बै छण्डो छण्डो ।

आ जहिन आयलि छलैक मरुज हउतु मरुज करज करज करज करज
रवि नैप किछु नै कउ सकलैक । एक दिन मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

रवि जेत छलैक जे मेवना छरी नहि कवन छलैक । ओकर अधन
करेत छलैक । आ मरुज हउतु मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

मुदा, ओकरावै परिसक सहसक अम्बल छलैक । एक दिन एकटा मरुज
क्षणमे अपराध कउ भैमल छल । ओइ अपराधक मरुजक अम्बल छलैक । मरुज
कहितनि जे हउतु बुते अपराध मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

आ, फेर मरुज भागि पड़्यक मरुज तैपारै कउ लेने छल रवि
कविनाके काँडे हउतु छलैक । मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

रवि हउतु पृष्ठ गेल रहनि । मरुज के रहैक । विजय मरुज

मरुज । रवि के देखि मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

रवि ओइ अप्रत्याशित आक्रमणसे विवर्ण भउ गेल । पहर जमोनमे मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज
मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज मरुज

भूल है कि आदि आदि अद्वयतां प्रकृत कृत चरित शीतलकृत नै शीतल अति कृत
 यंग मध्यम नै चरित शीतलकृत यंग नै चरित शीतलकृत यंग नै चरित शीतलकृत
 एक कृतता यंग नै चरित शीतलकृत यंग नै चरित शीतलकृत यंग नै चरित शीतलकृत
 लक्षण मध्यम यंग कृत आदि अद्वयतां प्रकृत कृत चरित शीतलकृत यंग नै चरित शीतलकृत
 शीतल शीतलकृत यंग नै चरित शीतलकृत यंग नै चरित शीतलकृत यंग नै चरित शीतलकृत
 तको सत्य भूल ।

कविता शकित जातोमे मूर्खी गूढने कळवळी 'हमरा सेल ते आंदा' =
 छल जे चड दिव अहं प्रलय जाले छल । ते ते जेन ते जकरा सं =
 बिजासनि मन क्षम बला जेननं मय ते जेनने पुनः =
 दिव आनि पाल अंकि ते हा जेनन पाल जाले नि शरि किंकर जाले =
 जे प्रलक मुख हमरा यनि जेन जेन । जेनने दुख जेनने जेनने =
 सुख, सौंदर्य शकित पास एक बेर पावि नद हर घड रहल अंकि ।'

रवि कलितक कपित देडके* अपन बौहेक बंधनरी स्थिर कम्बल पड़
कौन कहनके काना डू नटे कविता इह बिग्री नानाध नन नन लल ॥
नार लन भाषिकाका ॥ गाम अ सीम सफरन नटे कने ड हन ॥
आइ राविके न एकादन अपन हथकिर पैर डका नुगवाय पड़ा न ॥
जोड कनकके* अपन माथपर मरि नन इति गंड इति नन ॥
गाम अ सयाकक समक लल इति रवि । ओकरा ककर डर नहि केक ।

बादर गन्धाल हावः नदाल हुतेक सवे कथलकै छै ३३३ स
नीक जकाँ आँचर लऽ सफ़रिखऽ छै ३३३ गैनेक । दरबलकपा पाँह बया =
सुल सुलैक, आलकाल सपकै बक सुन छैन, से आकर अन्ध २ २ २
कछनामे पाँह बया ३३ सुल सुलैक । रवि काँचलसे बहर आगस । ३३३
आ एगलक कानवै नहि हथियन अल्लैक। का आ जहने वरुन
हुतेक सवे नागझोझै कहलकने दगः छी बरकै नदर ३३३
लगनकाँकी ।

लालकाकी झुझिकी उत्तरस्थिति—'कहो! स्त्री का कहना येय ।'
 बाल बच्चावाली बिआहलि क्रिस्ताणक अपन घर लउ जनने ३५ अर
 आशीनांद मडैत कः । पैहयम कब्जा तम नान दुरम डिक उडैत ।

एहि बीबले कहलकनि- 'अइसें हें यरिए गेल रीतिकई सैठ नैक ।
सुईक नाह नै जाक प्रकृति का रीत छैक ।' जस इहे बात आत्मनं बीबल कहलकनि ।

एक ही मूल चौरस चरित्र बरत रहते हैं बस जहाँ अहाँक छातीपर खसने मूला
जहाँ मूला अहाँ दूध पिऊने छलिनएक खातकाको ?

तत्त्वज्ञानं प्रपि कने आश्रयमे विस्फुरित धामनि पुरा एकदल
इति वक्तव्यं बगरी आठम काशक लागे आदि पालिक दध पिऊने काल
इति बहल होचुके उ योचके दध पका रहलि हो । कादिन कयरे डैमल । ताह
इति कयरे यदि तय भू-भू भू रहल छ । कयरे भुँइ देखयबा जोगर रहल
रहल छ ।

चन्द्रकान्तः प्रोक्तं चन्द्रधनं ज्ञानं यथाकं भाषा करणं व्यर्थं छन्दः
 ७३ चन्द्र धनं लालु बौद्धा ज्ञा चन्द्रकान्तं मायं छन्दधनं चिकि मायं नानं
 चन्द्र चन्द्रकान्तः रात्रिं गविकं मृत्युञ्जयं कान्तवः शानं रात्रिं ब्रह्मि गेलानं भूधो मृनि
 चन्द्रकान्तं कान्तं गेलानि नहि भेलनि ।

— पक्ष । ओ ओतपस ईति नगर दन्तन दिम गेल

इन्हीं सुवाक्यों में प्रथम कथक: एतत् कालं ज्ञानका सौम्य गमकं
 १५ ॥ १० कथक: एतत् कालं ज्ञानका सौम्य गमकं
 १६ ॥ ११ कथक: एतत् कालं ज्ञानका सौम्य गमकं
 १७ ॥ १२ कथक: एतत् कालं ज्ञानका सौम्य गमकं
 १८ ॥ १३ कथक: एतत् कालं ज्ञानका सौम्य गमकं
 १९ ॥ १४ कथक: एतत् कालं ज्ञानका सौम्य गमकं
 २० ॥ १५ कथक: एतत् कालं ज्ञानका सौम्य गमकं

[illegible]

“ये दूधवाले बच्चे जहाँ-जहाँ अपने घर में पहुँचा उस छिपेका काँवला
 “हैं बिड़ आ सब उपर बैठे । अपना भौरी बेटाके” अपना घर जानब निलम्ब
 “कार्य रैक, से अदाए जान्ते ।”

[illegible]

रवि आहिना इहनापुर्वक कहलकनि- आज हमरा धन धान्य कउ
अइगो हाइत अछि अपन स्त्रोक* अचिहान छडि जाय वक्त* यह गेल गयो सक
लान आइयो हाइत कउं पुदा लउ वं भइ दुनू* अपन श्री भट कान ज-
रहल छिाक तकर कनियो लान रहि अछि ओकर तब यऽ रहल अछि । ३ कउ
बाहुत दिन रहिन करकाक बाहिन छन स अइ कउ रहल छौं हमरा अन्तर्जालि
आमोवदि चाहौ ।'

पश्चिमत काका कहलथिन— 'विश्वास नै होइत तबिक रवि बेई है'—
बाबि रहल छऽ कतक बटलि जायत जनि पसुसुद । सव भडुक धन का अक
धन कुन । एहन के ईसे हमानाकके जगेंवांर महीन ना चउड रहल
चाहिये ।'

[illegible]

‘यु ईव मङ्ग ज्जस्सिमं पाङ्ग चङ्गल्लं
माका बाणि वृत्तधरि

हैव यु गौ मेढ मत्तः लङ् = ण = लृट् मत्ता
काका एकलंथेन शो इव देहद द मन्त्रा नमः अ० अ० अ० अ० अ० अ०

दुष्टिकार काला यह इंसान कहामधिन- "आह नो उतह नो फवार । अह
दु सी आह जहम काह सी - ह- जैन जो दह जैन जो धरम - ह-
देखवाक बोध कह जे मान नीह देखि पावि रहत लधि ।)

सप्त अधिपतः काकापरं तन्निधः कऽ अकलनिः 'अप्पन अधिपयो बन्द

१. जन ज. मया २५-अथवाक प्रमन हैक यवे श्री सांघाजिबक गति रबाजक
प्रमन हैक ।

पञ्चमः काव्यः जगत् जगत् के मानधिनः ३ त्वेन सात विरयत दु धो वन य
हवः ३ जगत्सिंघ रवि १' (ईलाकनि इमर सात गहि भुनज मुय इमर अश्वीपार
जगत् जगत् रवि १)

उ भणू बरिंकऽ गांठ लगलकनि बुधियार काका सल गेलथिन
 एकरा पकामयऽ रक से फेर दिक रा जुयां पसनि गोलैक रविपा बुगचाप आइ
 ३१ बुयांक बाब अछ रहल ।

३. । हम्प अग्रहणम् ई अग्रधार नहि भेलि सर्वैल जौं ।'

रहित चक्र कबल तकनिक । किम्होसै लोकत सपन समर्थनक आशा नहि
 ७७६ । सय जेना स्तलिककालक बातके समर्थन कऽ रहलु छलनि

पहला भाग कहलखिन 'ताल सीक काई छथुन । हमरालोकनिक
 लक्ष्य ई अनाकर नहि बलि सकैत छऽ । तीरा के करवाक होजऽ, गामसँ
 दूर तक जर पल, रहवाक छऽ तँ जइ दुनू भाँसे धोतक' अप्पन लाइन
 रचै सकै ।'

रविवर शरीर कांध, धृष्ट उस हरेचनमर्मा कांपड सललैक- 'हम अपन
 ३ वरक चान मन्त्रम प्रकल्लं गं धमिक अनन्तर आ दामक बटो बहुक
 मन्त्रम गाय हक मन्त्रम एक राते विगति काना गर पैयब मन्त्रम लेक ?
 ३ मन्त्र चाल मन्त्र मन्त्र अउ दुन पाय बटोका जात्र मउ जाइमर्मा क्या नहि
 मन्त्रम जेत लेक हमर जात्रम अउ ३ हम अपन ३को बटोको मन्त्रम हमरा
 ३ मन्त्र मन्त्र मन्त्र ३'।

‘इहं कश्चित् लङ्घयित्वा, वज्रलेकं हस्य ॥१॥ कालं संगीकं तंहाजं चुप्य
 तं ह्यहं शबं हृष्टो वज्रं, वदत इ मै चालि मकैत तौ मधि । ई पापं धिक्केक
 तं कश्चित् निष्पन्नं, मयांश आ कश्चित्-कानून सैक । ककरा योनं हेतेक, ओ अहं
 कानूनं रोहि मधि मकैत अहि । सम्राज ओकर निष्कासनं कइ रैत सैक ।’

रखेंगे तैय्यक बातपर हमें सगरीक । तैय्य आ स्थानक गय । ओ
 पहिले रहनेके हमरे प्रहस काल अस्तरक नहावने नाम पै तप सुनिचौक
 २ अन्त वीचमें कलि तान कलि दलिक ककरा भरमें अन्तर मी नाग जयन

अथवा, 'अथवा' के अभाव में वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता।
 'अथवा' के अभाव में वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता।

पंकीरकाजी कहलायेन - 'तुमसे दखनेसे स्त्री हैदक हट पाने छः आ
सधाय मिछा जगप भग रत्न दुहक काँचो मनन गहर चेतन अ क ह सवें

सवि कनकलस तंस पुण्य पद गत । कान्त ज्योति नहि कुरलेख । को
कहलकनि—'हम साक्षी ज्योति भगवान् ।'

महाराष्ट्र फेर तराहताह 'फेर धिप्यह आ अन्तर सगे अन्तराह नम ।
विवाहक नालि मध्यात महगे वइन गेक गणन नम क उ-५, २००६ क उ-५
भेलऽ दिवाह ?'

[illegible]

एषि वृषी लक्ष्मि हृद् मय्य कलत्रकान् दुःखं ह्येकं शान्तकरम् ।
कलिका हमा स्वं अष्टि औ लव हमा बन् एत मन् लेखः कः शक्यं च
कथं च वाक्यं यो मन् लेखः सन् लेखः एत कथं च वाक्यं यो मन्
शिक्षाश्च वद नहिं वाच्यं च अष्टि अष्टि लक्ष्मि अष्टि लक्ष्मि
गतांघनः कश्चिद्वा दृष्टिः नहिं लक्ष्मि च यो च मन् लेखः ह्येकं शान्तकरम्
काशिता एत मन् लेखः एत हमा स्वं अष्टि सन् लेखः शान्त हमा विजयः
भान् नालं नै नहिं अष्टि लक्ष्मि गतांघनः यो च मन् लेखः एत कः शक्यं च
दः दैत कः शक्यं अष्टि अष्टि लक्ष्मि गतांघनः यो च मन् लेखः एत कः शक्यं च
कथं च वाक्यं च अष्टि ।'

हरिश्चन्द्र चौधरी विराहैत कहलसिन- 'बन्द करइ ई नैतकी । लो' ते
नाटक निम्नलिखित गण करैत ह- 'जबत पल्लव जवान बचक सो' ते गरा
कास गलधुन आ सोपक इन्तरे' नैतइ नईक एक से बचक हउक' ते
सिन्दुर कंग दशहक 'चुम्बप दनुक' घामत दकुजक वा पठ दहक जवन
विचार कउ ग्रामासो बौद्ध कयस जैतैक ।'

रवि हुनकासँ बेसी ओरसँ गरजल—'ककर भजल छैक में अकरा ।'

[illegible]

लालकाका ओंकारोमें बेसो जाँसैं चिचिया दल्लधिन 'हम आइयो कहैत
 जेहनि न हमर भाइ विमानान जुडत' भाँति गानक नमस कहैत छियाँन तब्र भाइ
 जेह भाँति बसत हुअक होंग कुलानि कानों दुधधनक नजरि लागि गलेक 'चा
 न सेत नैरि गेल' । ई ने धुरिकउ आयल अति, से हमर राम भाइक बैटी नहि
 उंच हन बहुरिअ ओइ नक, आयल ओइ इमगएधक' ई गवि नहि
 'कानी बहुरिअ धिक' । एकर भगाउ पञ्चनं गामसँ...

[illegible]

अब मैं तुम्हारे निकट खड़ा हूँ कहलकर। एनेक ज्ञानान नाम लेक
ककरो हक जेनि अनेकरा ग्रामसे भग देख । हम ते अपन हक छोड़ि ग्राम
तहँ निश भइ लेल खो । भुइ अपन स्त्री बैस लेल घुकिउ आबइ भइल ।
अब हक अनेक भइल । एनेक एखन हमरोक बाँके लेक आंतहु
अनेक अनेक प्रपंच कलत ते आमूक सरल लेक । हमस भूय जाणित कथन ओ हक
अब ते, चत नानक । हम बहुतरफा हो । कानि भाँखबान बढ्यास । को
अनेक अनेक, अहाँ बाँदैत हो हमस ? अहाँक नेउ ते हमस सखी कल । आ अहाँ
अनेक अनेक ! अहाँक नेउ हमर सखी कल । आ ओ लेव । तो ते सखे पहुँच छलें
चोँदै हैं की खे हमस ?

इस प्रश्न = १ अंश के अंक अंकनः दख आ धुणाक चर आर

जगतिभार य भावकः जगत् पश्चि बोरैत ज्ञो हय एहि गामः हय एक ए
 घोखबाज बहुगिया छी बत लिय। भूतमर्क अहिमेष पुन एक ठ बत ज्ञो
 राखु मन्दक गङ्गा सोब बङ्गोक एकस जग नोह ज्ञो मर्क छैक ए रीह
 सो स शोका बुझ ज बहुगिया के भोखबाज क ए हय अथर सरी बलक मर
 एहो पमम अपने घरम रहब ज्ञो लोकनिक अहिमेष चोहो छलहु नक
 बलनाथ अहीलोक नि बहुगिया को भोखबाज ज्ञो हय बतहु : बत पुन हय
 मोन रहत ।'

३- सद्यः मङ्गलं भवतु । अस्मिन् उदये । एतद् नौकोप्यं नाहं वेत्ति । शृणुमः सौम्यं ।
४- नौकोप्यं अस्मिन् गन्धर्विके छन्दोऽयं पद्यतः । 'हैमः कवित्वा' गौतमः । एषा कान्तः ।
५- नौकोप्यं ह्यस्मिन् गन्धर्विके छन्दोऽयं पद्यतः । 'हैमः कवित्वा' गौतमः । एषा कान्तः ।

नलकै एसा नहि नमसठ अर अभागलकै एतक सुझ नहि छहि हतैक, हम को
झरे छै । हमरा मुणायें दुनजगें दिनुनू नै चाहि नितहैं एप

गँव घुमिहऽ कथिनाकै अपन पैहसैं सति केलेकै कविनाक कानन बन
मऽ गेल छलैक मुदा दह धाधक रहल छलैक । अपन गुर आ हाथक मर
कथिनाक आकृति आ शक्ति के बा बा देलकै एउ आका दैक धरकले इउ प
गँवक आ गहन अगलैक जखन एकटा सिनध आनंदन गतिक छलैक आ
देहक बाइ दैत गोरसैं ओकर कणन जुवैत कोउना कहलकै अउ कर पूरा सलैक
पड़ाव नहि ईष अहाँकै

ओ आलाइन अउहीन पऽ गेलैक । अपन सिनध, आरु केउ । हँव
शिथिल पऽ पहांत गेल छलैक मुदा गँवक मर हात को पैह सिनध जखन
जाहने इन्धक दो गँव फाँधन प मोह गेल छल काँवरक मर गइल आ
पैह सिनधन पैह सिनध कम्पन ।

पान तखना नहि भव छलैक नाथन गँवना दन छलैक काँवर
काँवरक अउरम देवीक एका न गइ नहि छलैक मुदा काँवर दहि नहि
छलैक रविआ दहि रहल छलैक मरगंज जना दहि अहि दन छलैक
एक एक छ भाव एक एक छ कहलन आ जलाइकन दहि रहल छलैक न
अनुभव कऽ रहल छलैक प्रसिध ।

'सूतब नहि ?' - कविना पुछलकै

'अह कोना सूतब ? अह हँ पहिल मिसन-रति धिक । अह पुच्छक
गय नहि कविना ।'

कविना रथिक लतापर हाथ रखैत कहलकै- 'तखन आर गय न
आनक दिनुका गय जौह चढ़ घने कहै न अहँ कह कर गयलँ अ
सम छ कहू हमरा....

अ, रवि समय कहलकै ।

हँवसैं फेर गइलँ मुदा पाकामय कलकल नहि गेल गँव नम गेल

हँव

मुकुन पिअरुन विधान आ इगधन आकृति देखि गइल पऽ लतकै
हँव जलजग बड़ी काल घनि गकन हलैक जहल पठा दवाक घनका दैलकै
हँव जग जग गँवकै सुपुनप सद रहल फेर नहि जनि को घनैक
हँव जग विधिप दवा आ जगन न अथ आश करबाक अपन गलत
आकांक्ष कि एक्के से विधिपाकऽ कहलकै 'वाओ, वाओ वाओ !'

हँव देहक बाह बाबि गेल मरक काल लाल दोकानमय चह
हँव देहक क्षुद्र नाककै लकड़धन ओखि तवैत कन पड़ाइत गड़ाइत
हँव देहक नाककै नाक बाब अउ मरगंज अनुभव मर गल छलैक
हँव देहक नाककै नाक बाब अउ मरगंज अनुभव मर गल छलैक
हँव देहक नाककै नाक बाब अउ मरगंज अनुभव मर गल छलैक
हँव देहक नाककै नाक बाब अउ मरगंज अनुभव मर गल छलैक
हँव देहक नाककै नाक बाब अउ मरगंज अनुभव मर गल छलैक

मुदा 'काकनामय' कृ गँव छलैक आका आना तवैत देखि मय
हँव पऽ गेल छलैक- 'कहाँ किछु लेउ नै पड़ाव ?' रवि अलू कहैत गेल ।

हँव ग घालन गय पऽ छल रहल छलैक अहाँ किछु जल निर्वात
हँव ग घालन गय पऽ छल रहल छलैक अहाँ किछु जल निर्वात
हँव ग घालन गय पऽ छल रहल छलैक अहाँ किछु जल निर्वात
हँव ग घालन गय पऽ छल रहल छलैक अहाँ किछु जल निर्वात
हँव ग घालन गय पऽ छल रहल छलैक अहाँ किछु जल निर्वात

ओकरा टकरकी लगैत देखि होकानदार सेकलकै असा बात है ? बली
बही ।'

गँव आगू बड़ऽ लागल मुदा फेर किछु साँच छहँ गेल अ कहलकै
कोनो काब घेर सजैत अहि ?'

हँवकनदर एकदर ऊपरसैं निचिँ घरि देखलकै ओकरा । अ फेर
हँवकनदर एकदर ऊपरसैं निचिँ घरि देखलकै ओकरा । अ फेर
हँवकनदर एकदर ऊपरसैं निचिँ घरि देखलकै ओकरा । अ फेर

गँव कने आनखि जौह बाजल- 'कोनो काब ! नै कहब से पऽ देन
न हमरा छल निध ।'

हँवकनदर कहलकै अहँ उठाव पड़तैक थारो काँच पाँच गइलैक
रवि आर आनखि जौह बाजल- 'हमरा मँवू अछि ।'

पंचावली ५२३ मम ए वात मय कः लंघः नरत हन पण्डित
पन्द्रह टका पटलक इतनी मी छै बजई मी बागह बज घि पट्ट छै

रवि फेर कहलकै- 'इमरी सय त मंजू अछि ।'

आ रवि ओही दौकानमे गहि गेल । ठपैठ-कूठ खफ कय लागल ।
माहुजी बस विरही गहि छलैक । अचानक बाट छुलैलक खनक दिखल अन्क
बाउरक भात आ शनिदल दालक संग कहिक कल बल्ल अचन टक्करीय ५
तेन छलैक 'गोख' धरि, मोंग फल घाँस आ हल रोक कय चले उर
छलैक

पहिल मास पन्द्रह टका पटलक, तँ एकटा दूसर खरद मेट सन सन
कानि नोनक शमा गाम भरलैक फल पट्ट भुङ्ग । रिकत कपत बाक पण्ड
रवि पुरा नमर नमक टाकल हयस देन महुजी कहलकै टन चोच कय
आन ताम काव ताज ले । अरु काय कानि फिजलन नई छलैक हयस
नई छलैक किछ अरु अछि जेना वं काम ताम अरु सटि लो पट्टन लिपुन
बुझल छै ब्रह्मण ह । अरु सय चरित कर एक टाकानक टुटल पडल छै
ह' तँ महुजी बालक शक पट्ट पलेन अरु अरु अरु कहल कहल
छलैक त तँ क लेक पछतह मने अरु बोझ 'कल कल कल
काव ताकि ले, पटल लिखलकल ।'

रवि पन्द्रह टका पटलक सखि हाथमे सोमर छरद छलै लेन सय
खि पान पक म थान किछक आ अरु अरु लेखु अरु पण्ड
अरु एक टा नमूनो चाल कानि नलक । अरु फल पट्टन लेन
बौझक । मयम अ पण्ड छल नि गय पण्ड हयस पण्ड क लेखु
आ पण्डकण्ड अरु अरु पण्ड अरु + पण्ड क क लेन
पण्ड अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु छल पण्ड

पुष्टि अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
सय १५ दिवस इमरी, भुङ्ग बाण तँ नहि अकल ।'

साहुजी पान देलकै अरु देलकै एक टा पण्ड - 'अरु छप कल
बोआ सम्राजिक मय काह' अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

पेट मी गेलसँ दुल आ उत्पलित रवि अरु उत्पलित संग किछी पण्ड अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु

सुद पनरा राक्षे क्षीर गेल छलैक आ अन्तरांगक कृत्रिमपण कहामे एक
ठ टिनमे बक्का आ काहामे आगे भये गेल अन्त बदन आ रहल छल । पनरा
खालैक तँ एके ठो कानमे धुक् लगा पाये गेलि आधक पर जगु बदन गेल
बडका मैदान जाबि गलैक आ आहोम गेल गेल छल मैदानमे पहुँचि गेल
आतमे जाह काठ ठाँह अन्तरांगक आ मैदान लोक आ बहामेसक टाछलै
एक बेर धाकिकऽ वृष घऽ गेल छल गेट लऽ घऽ गेल छलैक आहोम अखुआ
बाह्य कर्मक आ माथ तर बक्का आ आगे गलि मैदानमे गेल रहल जखन
मैदाने बक्का लम अखुआ गलि सलक किछु जाम बाद अखुआ हँसि केर एक
कात तकलक

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

गल छी । मात्र नां जेन लखक लल ज्ञापन तँ यो खलक लल दुन दुनकराई
भेट रहि छल । मुदा ताँ हुनू नाँ भलि गल । ऊन कय दइय व सीह देओर बल
अबस्सो आशोबार देवाह हमर माइस लल नाँ अल ललकें प्रहण कइबाक लल

भोर भऽ गेल छलैक । खिक कय सुनैल-सुनैल कविक फेर जेन
लागल छलैक । इहाँ बड़ नाँ कहबाक पुनिस गाँव नहि देखने छलैक । मुदा जेन
बात समझल कऽ धारक बजाने लखलकें अ कविक कवि छलैक । ऊन
टोकलैक—'तोहर अओझम फेर भोर' ?

कविता ओर नैरकें भेछलकें नाँह—'एकरा बहऽ दिखैक । गहलैक कय
सुनैल सुनैल नहि जानि कयन बह । लगल रहै न दुआँकराई । नहि केँ वेंचऽ कय
थलैक दुख आ कष्टम जितल स दंत लखल ब कय दुख नै केँ नर उल ।
रहौ मय-बाप सीबै छलह माइस लल । ओ दुन नहि लल तँ कऽ बहल
भऽ गेल । माय कष्ट बुझलकें आ मय टा मसलैक ललक । दुहाइ छलैक
लखलकें मय या भुविषा लखैक एकल चललैक । अहाँ कय उलकें रहलै
एकसर सय टा दुख कष्ट ललैक । अहाँ दुतमं नर बह ललल

खि ओकरा टोकलकें 'हमरापर पुण नहि भेलै कविता ? भे-वे अल
कविता छल छै हम । लखल मित्रगाक समकर्म लखल नहि रहल दल । कविता
कान नर नहि कविता रहल छै । कान नैर अ कविताक लल अपलकें । ओकर
लखल-गलल नहि भेलैक देवको बर । सल-सल कय कविता ।

'भेल लखल अ गलल । एक बेर नहि, कलेको बर भेल । सल जे
छी ।' कविक कहलकें—'छैकें लखल अ गलल भेल अपनपर । इमर क
सम टा दुख आ अपन उललहैं जहाँ लखल परलैक लखल पुणलकें जे
बनलहुँ । कय ललल नै होलर गेल लल । अहाँ कय ललल लल
गौल लल अ मल्ल पलल अ गौल चपलल लल ललल । अहाँ लललल लल
ललल । ललल लललल लललल । लललल लललल ललल । लललल लललल ललल
समलर हमर कललमे लल ललल अ ।

लल ललल सुनल छलैक । ओकरा दुन माय भऽ ललल लल

ललललल ललल ललल दऽ वललल—'एक कनमा अन नहि देवह इम
लल । ललल लल नहि लललल ललल ।'

लल लल लल लललल ललल ललल लललल लललल लललल लललल
ललल ललल ललल । ललल लल नहि ललल ललल लल । ललल एक ल
लललल । ओ कल्ल ललल लल । ललल लललल ललल कऽ लल

ललललल लललल लललल लललल लललल लललल लललल लललल लललल
ललल ललल ललल ललल ललल ललल लललल लललल । लललल लललल ललललल
ललल लललल लललल लललल लललल लललल लललल लललल लललल लललल
ललल ललल ललल ललल लललललललल लललल ललल ललल ।

ललललल लललललललल लललललललल ललल ललल ललल ललललल ललल
ललल ललल ललल लललललललल लललल ललल लललललललल लललल ललल ललल
ललल ललल । लललल एक ल लललल ललल ललल लललललललल ललल ललल ललल
ललल ललल ललल लललल ।

ललललल ललल लललललललल ललल लललललललल ललल लललललललल
ललल ललल ललल ललल लललललललल ललल लललललललल ललल लललललललल
ललल लललललललल ललल लललललललल ललल लललललललल ललल लललललललल
ललल लललललललल ललल लललललललल ललल लललललललल ललल लललललललल

ललल ललललल ललललल ललललल—'ललल ललल लललललललल । लललललललल
ललल ललल ललल ललल ललललल लललललललल ललल लललललललल लललललललल
ललल ललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल
ललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल
ललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल

लललललललल ललल ललल लललललललल ललल लललललललल लललललललल
ललल ललल ललल लललललललल ललल लललललललल लललललललल लललललललल
ललल लललललललल ललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल

लल लललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल
ललल ललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल

ललल लललल लललललललल ललल लललललललल लललललललल लललललललल
लललललललल ललल लललललललल लललललललल लललललललल लललललललल

गामक धर्मसंस्कारों आ प्रतिष्ठित विद्वत् छलैक इह बात कमलाचरण वर ।
रवि ए बेनीमोहन हिंदीटिप्पणी ।

रवि जिज्ञासा कलकत्ता- 'वखन एतक इन्दी ई परिवर्तन कांन पड़े
बुधवारकाका ?'

बुधवारकाका ईमलाचिन- 'कन्दी नहि, ठगते-ठगते रवि । ओकरा-कलकत्ता
जीवनमे एक-मिशन शुरू भेल गेल रहल आ ओही ठाम छलैकन अइने पदवी
अपन होइत रहल छलल त जे कुछ नोट गलत पुनर्गठन इन्टरनल अइने पदवी
मऽ गेल तैक पुनर्गठनमे अइने छलैक अइने पदवीमे जेह छलैक अइने
अइने शिक्षा लेल प्रोत्साहित करलैक ओकराकाका । तैक जेह अइने पदवी
रामेश्वर जेह बनलाह, ताहने बाप बीए, पास कलकत्ता आ धरम लांक पड़ल
कलकत्ता । तैक जेह अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
धर्मिक, संकीर्णता अइने गेलैक छोट-छोट परिवारक स्थाप । सभ अइने पदवी
गेल- इ जेवर्म कौन फल्ट इंडिगन एण्ड इमन आरु २५ मिलन । (पुन
आ धर्मिक प्रोत्साहन लेल जेह अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
एकदिन तैकक कहने रहियैक सभ मूल्यतय । अइने सगल अइने जेह
शुद्धिमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
हैत, सभ ओकरा चोट देबल सल कलकत्ता-ओहीओही करल । गामक
जैह अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अपन बहुमूल्य चोट चोर-चोहाक २५ फेर अपन धर्मिक कनैत छैन
प्रत्येक पदवी अइने । अपन गमलमे कांन शिक्षा नहि सैत अइने फेर
नागनाथक भाइ सौमनाथ

रविक बात करैत-करैत बुधवारकाका दोसर गम पर आबि गेल
बुधवारकाका तैक जेह कहलकनि सभ अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

दुर्गापूजा आबि गेलैक ।

फकीरकाका ओ पण्डितकाका कहने रहियैक- 'पूजापूजा तैक
मिहनेर आ नाथपण आबि रहल छ, एते पदवी अइने

तैक जेह अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

सभ तैक तैक कलकत्ता आ पदवी नहि अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

गाम धर्मिक लैक धर्मिक लागल छलैक धर्मिक आ नाथपणक धर्म दिस ।
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

गाम धर्मिक लैक धर्मिक लागल छलैक धर्मिक आ नाथपणक धर्म दिस ।
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे
अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे अइने पदवीमे

मुखिया एकबालक सगंधप फल माहवक पुन कुलडा जड़े खन
तजूके एक धनकाम बिल का डलकनि सगंधप डलकी मोहनपुरा स
जोत स डलकनि व मुखिया गफुरगजक समकामक वाट दिवा दब
सम टा वाट दिवा दलके एकबालक नि नकेत गडवा मकलन मरु ओ न
हमरसे निजल वृद्धि सल, मुखिया एकबालक आ सगंधप वा माहव कव न
बाव खुसो ।'

हवली मोहनपुरा सगंधप डलकल शानत मड गेलैक । ठरसी
गेलैक तजू माहकल रौटेनक नका गहनप गन गहनपक
कनकु किह वनबाके धास नि धलीक सल मोहनपुरा डलके कडवा स
सल वसुआहसी पोपगयो धास सम गलेत गड कुलेक ओ मकलन नि
मपक हाथप ललैक लम्बा लम्बा दक फलकल खान मडव वन
मालेव कुलधन आ तजूके ताखन लक मधन कड चिल एन कडिह गड
टीक-लक है— मुखिया तजूबाबू का दोस-खप ।

मुस दीप मिझा गल ललैक से बुझाये काने पावत नई सलेक मड
अपन घरमे आबि मापपर हाथ दड बीस ठल ।

मुन गहन गफुरगजक वाटक निमरी रुक धलैक तजू खलबलकी ड
दुसपटीलोमे ककड फलकल ललल - 'निकल निकल हमर जोट चपलमप
मूडी पलु बास गका सिलीक सगंधप' ओ गहन वृक्षवा पुन अरकी
कया दक टा वाट नई खना मकल' दाखये कहां छी आकलन निगल
लललवा टाखनो मोहन निगल गडका गल इयक छल फलकल सगंधप
दसदकिध दलिनवी ।

कडवा गडिआडल बाजव ड लू इयक आन दीप दिवा से
तजूबाबू सगंधप त गड खानि ललनम अलिखी वक पडुन सल दलक
हम सग की करी ?'

तजू ओकल घोट मड तलकै— 'निकल हमर सग लका ।'

पेव टा दसदकिध नकैत कलकलन दाखक ललल ३ बीस डल
खल हो गेल से कहीं से देव ।'

मुस शोभार्थिक ललक इतिहास का, ललकैक गहनमक कहां दल
पूही पीछ नीस लका ? मूडी पीछ धमे लकी देले इव ।'

कडवा गडिआडल बाजव डलकल सगंधप डलकी मोहनपुरा स
जोत स डलकनि व मुखिया गफुरगजक समकामक वाट दिवा दब
सम टा वाट दिवा दलके एकबालक नि नकेत गडवा मकलन मरु ओ न

हमरसे निजल वृद्धि सल, मुखिया एकबालक आ सगंधप वा माहव कव न
बाव खुसो ।'

मुस ओकल घोट मड तलकै— 'निकल हमर सग लका ।'

पेव टा दसदकिध नकैत कलकलन दाखक ललल ३ बीस डल
खल हो गेल से कहीं से देव ।'

मुस शोभार्थिक ललक इतिहास का, ललकैक गहनमक कहां दल
पूही पीछ नीस लका ? मूडी पीछ धमे लकी देले इव ।'

मुन गहन गफुरगजक वाटक निमरी रुक धलैक तजू खलबलकी ड
दुसपटीलोमे ककड फलकल ललल - 'निकल निकल हमर जोट चपलमप
मूडी पलु बास गका सिलीक सगंधप' ओ गहन वृक्षवा पुन अरकी
कया दक टा वाट नई खना मकल' दाखये कहां छी आकलन निगल
लललवा टाखनो मोहन निगल गडका गल इयक छल फलकल सगंधप
दसदकिध दलिनवी ।

कडवा गडिआडल बाजव ड लू इयक आन दीप दिवा से
तजूबाबू सगंधप त गड खानि ललनम अलिखी वक पडुन सल दलक
हम सग की करी ?'

तजू ओकल घोट मड तलकै— 'निकल हमर सग लका ।'

पेव टा दसदकिध नकैत कलकलन दाखक ललल ३ बीस डल
खल हो गेल से कहीं से देव ।'

मुस शोभार्थिक ललक इतिहास का, ललकैक गहनमक कहां दल
पूही पीछ नीस लका ? मूडी पीछ धमे लकी देले इव ।'

हाथे अपने गरदन किटका संक ? फिर और सूनाइहल टेन्डनी ? (अन्तराल)
 प्रवृत्ति तेल ?) फेर अगिला चुनवा धरि अपने छटपटवई मिक्कलर करके मन्दिन
 इधरे मुल के अइ निम्नलक दोहरीकन चार एत मन्दिन एत
 फेर फेर आ फेर चीने छिये नक वकी चीने 'छयो नांदासधक' नक
 इशाण्य अनकर बने कुनै चुनवा शनतन एत मन्दिन नक
 निम्नल 'द्विहोप कोड़ा हमर ल' नरि कट बोई छियो लानसधक' से
 ककी चीने छियोक—सब मूर्खनाथ, असल लक दु ।'

गेनमा-बहु आइलमे गुनगुन बैसलि छलि ।

धीमे गन आ शनकामि हरकाम यवन छलैक । पुनिय हल्लन
 नैक घट पकट पन गेक भाग कुल्लनक अइलक मुहमने लो एकरक
 दह मन्दिन छलैक घट अकरा छोट मन्दिन फल्लनक पन बल्लन छलैक ।
 शीर्ष ठापलि ओ मन्दिन रहैक

मुनधरि आ लनक इअम शीर्षन छलि मन्दिन बहु लोम शनक
 शीर्षन छलि शनकव शनक आ शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक

गेनमा-बहु हल्लन होइत लागलि । निधिरिक इ शति आ शनक
 छलि बनेयाम शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक

गेनमा शिसिवाक एक दिन कहलकै—'एत किएक करे हइ ? एत
 भूलासे देह फैल छै चैत एकन ?'

गेनमा बहु कानड लगलैक— 'अर को पैल होलैक इ देह ? इ
 भांकल हइ पहिल मुखिया फेर शनक फेर शनक ३ देह ३ शनक
 एकरा कटि दैलैक एकदिन ।'

गेनमा फेर ईल्लनके मुदा शनक लो हल्लन बनेल छल
 दह किएक शनक शनक ? अन्तराल हइ एकल शनक शनक
 आ शनकके शनकलमे शनकल शनक नै होइ हइ ।'

गनमा बहु पुनिय हल्लन नै छलैक ३ हल्लन अन्तराल हइ हमर
 ३ हल्लन नै क शनक एकल हल्लन अपने गिजगील्लनक हल्लन बचल शानि
 हल्लन शनक शनक आ नै हल्लन अन्तराल हल्लन बचल शानि
 हल्लन मुखिया लन । फेर शनक । आ, मन्दिन ककर हइ अइ पेटमे ?
 हल्लन नै शनक क शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 हल्लन नै शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक

गनमा कुनिके गल्लनमे एकल शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक

गनमा गनमा दहन शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक

गनमा शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक

रखलकें सपुआ-माय । शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक

गनमा बहु अन्तराल बनेलकें अन्तराल शनक शनक शनक
 शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक शनक

ऐतकै फेर आकर पध्याल परपर आपन कान मग शलकै बहुत करत हउ के
हलेक हँसकउ कहलकै ना बाँटै उँ नै कुटके हउ भँस

नय बहु नजकः उति बेगलैके आ बाहर जाइत कहलकै भेनै नै
हउ ई नै फट्टक खुगल हउ आ पय बेगलै हउ अउ कम

गंसा अहाँ ताम चणलण अँ कगुन ओन्सँ कहलकै अति नै
एक सिक्क खाना दँलए आपन कहलकै नै नलजउ हा तँलए ?

आँट जी कँचन काम, नालकै : जी पऽ गल काम नै नलजकै
भिककै ?

रविकै अपस भलकै- 'ओन तँ बहु भूँट देखैत छलकै = 'लँककै'

कायित उहिना अँनै तलकै नाज मँ अँनकै गप छेन नै
लँककै बाद लँककै यथक बाद अउ कुडलै उँ नलजकै नै अँनकै बँस लँककै
भिककै ?

रवि हँसै ऐलकै अककै- 'कैसम अपर-अपर साँच दिनुनदिन
लँककै अँनकै कयन ना हँसि छै' अँनकै नै नलजकै दँलए ना उँ
अपना संग एकराँ बाने लँककै !

कवित कँस-कँस ईसलेक आ कहलकै- 'बन तँ अमरसे लँक ई
कुलराम अँनकै परम अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
लिरस्कार बँसो कपकप हँस सहकामे !

गँसक कप बँसक अँन नालकै अँन नलजकै अँनकै अँनकै
आ कपकै लिरस्कार / अपन अँनकै संनकै अँनकै कपकै अँनकै
धिकैअ अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
कँ हिये हय तँन आ लँककै उँ बान अँनकै नै लँककै अँनकै

कविता अनुपमसँ कहलकै- 'बिगड नहै ! दुख नै कँ हय बानकै
मोठ तुराब पल आ नलजकै अँनकै दुख आ लँककै अँनकै अँनकै

अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै

अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै

अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै

अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै

अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै

अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै

अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै

अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै

अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै

अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै
अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै अँनकै

बाड़ा ३९ अर्थात् छलोक रवि धरि अत्यन्त कुल— नव डिक गल छने । कौन
 खुना कहने छलोक आकरा— दवाला नव हंग अवतक ते मक भंडि कालेक काल
 आकरा किन्नुहु नहि ।

मुदा कवितक सब गनमा बहुत दुप लेखि रहन लेक मिदको छे
 भेनमा-बहु ।

रवि निर्गम सड लेलक । कवितक मिदमल किती दिस देखि सभ
 कडलके हम फां धूमि रहन छिदीक कविता— सोदर बात कालि मूल छिदीक
 भमा कहिहे— तो लेखके मनुक बनइ कउन छल— हम तहि नवक
 आस जोग लेखके मनुक बनपवाक सकलक संग धूमि हम छिदीक
 करड दे एक ठा नकारम्म नव मनुक— नव समाक न्यायिक चयन तह
 लेल । तौन नव भन सन इकरा-माखी सबक लेल ।

तो खुरी भेल ने कविता ।

राजा पोखरिमे कतेक मछरी ?

चोर का ललितेक पाकर हर रोज कलक सुनैक तं राम लंके
कहरी बाबाजी

बाबा साहेबराय उता रानके पाप्पक विद्याया मुदा राना गते वडे
पुडनके काठक लुके लड शाणित कः बहनेक कप्या कांय करुनेक

बाबा गुरुबहादुर लंगलैक । एहि ध्येनक तत्काल कांनो उत्तर नहि :-
 भन्करक शिष्यायाँक अल नहि धन छलैक । मुन्सुक हेइ कलक काँन
 गलैक बाबा ? साय माइतक मरुसक नहि हस्त कैक ?”

पानसो भास्करक इल वासु यऽ गनैक ।

जांका माय भनस पद्माङ्क अङ्गिरस आठ कांन्ह विविचन छलैक
भनस-मात शुक ६३ सेने छलैक ।

[illegible]

मास्करक चलते मुझा इंसानि बकि गेल छननि । आबोक औमौनर्म
 मोझाय त्वग अवैत छन बाकी अन्धगाल उतं गममे यो
 छलैक पाय मास्करक कृष्ण अवयव का मय दिन एक
 छलौखन गगन दिन गिराय तयय एकदुन एकदुन प्रसन्न क
 माय, एकटा बात कह : छी हमरा सम दिन मोझ होत दूध दैत छै
 को काही दैत लोको ?

आँकर प्रसन्न-मनःकरोतु मया ब्रह्मैव- "मः अनेका विष्णु-रूप-
 दय दूध ? ओ कान्ते हमर बेटा अछि ! पिबऽ बत्तीसँ दूध ।

पासकर आदिना गिलास एकट्ठे लाई रहल : किन्तु कातक बाद बच्चा
जहिन हम तहाँ बंदा छियौ लहिन एकना चलितरक संग छैक प्रहस्य शरित
चबैत ओह अकरा घाव पूस वैत दैत छैक दूध वैत दुहेन अछि तः सका के
किपका नहि पितैक दूध ?

माय गम्भीर हंसित करालही— अपन-अपन माय, पाँउलत बन्मक पन
होरो भरलल हंस, ओकरा नहि पैद ।

प्राचीन जन्मकाल अथवा आभासकाल किन्तु नहि बुझनकै भासकर ।
 प्राचीन विद्वान् अहि सन्तक 'काकर' पिआ दहोक ने दूध सय दिन हय
 कय नः अहि

“यद्यत्कस्य चिर्गच्छतल्लैकं दूरं जां ह्यम किरक पिरलैक ओकरा >
 तल्ल अमल्ल चिक्क-पुल्ल नल्ल अलि काने ! बल्लो पौबि लैह दय ।”

गद्यक ताम्रसमर बिना कान ध्यान हने भास्कर कहावतें ' खाली अपन
 नदर दलक' रूढ़ पिअकेत लैक न्याक समक शोधो मृतक' नहि पिअ सकेन
 के ३१

बाय अशक कोन उता न्हि फुलनि गिलाय जकदंस्तो आंकरा मुँस
 बाय बचनरी शोश गल मारका बाय कोचरम आंकर मुँस पणैत
 जकदंस्तो वा नत मुना नेह मुन्नी जवित हेथुन नहा सुनाकड बंधा ल
 ह्य ह्यपय स्कुबा मयबाक चड आंश आंकरा टरका दालकै तकल भास्करके
 ह्य भलेक वनचप जातडसै भाटि गल न्हि सोनाकड दरबन्तापर गुरुवीक
 ह्यपय शोश गल पुरभी आंकर एना प्रतेश्चम बैसल देखि चौक गलधन
 कं बात कै आड ? पतिनेसै पोरसैक ह्य ' '

“है एकटा नरत गुस्नो । कहांसे किछु पुरुबाक भक्ति ।”

भास्कराक सम्पत्तेर स्थगपर लक्ष्मकनासै मुसकिअइत गुज्जी कहलथिन

—“साग चकुरा कहीं सेक मरुजो ?”

संस्कृत मुद्रकों तैसीमें बदल गये। 'इंद्र' पृष्ठों में भांगी बैल
गया उन्हें है 'लक्ष्मणाहक' समक कपायें लिखन लैंक फराक फरुक
द्वारा वे संतक धनिक अति आ क्या खम्बो लेल केवल-

मन्त्रका ॥३॥म जातय. 'कहौ ककारो कगामे लिख्यु देखै लियैक
कनु कग न। समक एक गंग देखै किरक. फेर भन कोना म। जाइत हैक ?
कह न दूष पोयै को, अ बलित्तएक होय माह. '

पुस्तक: मैं बिन्नी नेमन विद्वान होत कहलथि. ' मैं पुकड ह
 ५२५ = श्रद वन्नी छड लखन । युवावस्थास्य एकदं राजकुमारके इषा सभ
 ५२६ = नत उरि लखन । आरं. अंग रैव प्रश्न. मृत्यु युवावस्था वरि नहि

मेटलवि इतर तकवाक नीन ज्ञान पु दर एकी ओ कवाक मेटलक सतत कने
पर्ये बाहा प गलाह कतक सम कौनयनाह सम किनु छहि दखन कने
तान मेटलवि ।

"की ज्ञान मेटलवि मुकवी ?" भास्कर उपकुटारी मुकलकनि ।

"अखन से वै बुझबएक तो । बट बखत छः ।"

एदा एकी ओ ज्ञान घामे नहि मेटलवि न कत मेटलवि मेटलवि
समक लहि इतक बाद चोकक ओ नखन इन मेटि हट्टा छैक

गुरुजी निरुद्ध भऽ गेलथिन । चिंतित भवे भास्करक देखैत हल्लि
चहल्लि बना अछि साटि गेलथि । अदुपन रूप उतर के बंदन मेटि ।
एकद निश्चल रूप निजामा गुरुजी देखैत गहि गलाह अपन बाम कंधा मेटि

भास्कर उपकुटारी- "की देखैत छी गुरुजी । हनर प्रश्नक हनर के
देखैत ?"

गुरुजी ठहैत कहलथिन- "अनेरो प्रश्न सभसँ पोर भारी अछि ।
जिसरो एकद भारी सोझ छैक ओ उदय कतिपय कतेन प्रश्न मान्न अनेन के
छैक सभक उतर मध्य अपन कतेन सत । अकर उतर नहि छैत छैक उर
इतक सौख्य मेटि पछ मुकल के अछि । ओ ज्ञान छः अपन मन
भकार साह मनम बहुत पोर प्रश्न पाल छै । अपनक बिचरी हल्लि
सह्य जाह । अपन कतपर ध्यान देह ।"

गुरुजी चत गेलथिन मुदा ओकरा मेटि प्रश्न सभ कौनछा कहल
कतरो बाबलाक ज्ञान ज्ञान पहेन छलैक । निरुद्ध जने बुझल गेलथि ।
मन कतरो बाबलाक अ हति न समझल मेटि कि इति नहि कहल ।
बेट छकता काहुन अपनक कतेन न छैद कोखन बघारन बेतन
भुजुग भऽ छैद । हौनन गक्य फातर चकई लानन छैद मन नेन
चंतरापर बडोरा अछि ओ अइ कहैत ओतुम प्रश्नक छैद भुज

भुज ओकर भारी गेल छलैक । पनसकर ज्ञान प्रेकक कहलक छै
लेल दिअ प्रेमा पोसी । स्कूल भव्य ।

प्रेम छैद कते पसऽ छलैक- "निअऽ बीआ ! भऽ गेल अछि ।

प्रेम शीशक दलिकऽ कर कतेन मेटल ओकर मान्य भुजिअन

द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा

"आह भुज नहि अछि ।" भास्कर कत लामल

द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा

द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा

द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा

द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा

द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा

द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा

द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा

द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा
द ओर नहि मेटि किछ छैक । कत मेटि ओ अइन छलैक चतरा

प्रार्थना करें। हमर कांठली बदलि दिअइ। कौनो सिंगल सेटवमा दिअइ।

आह " राधया इति नाम्ना यद्वै विना देव्यः कथमस्ति न
 भूतान नहि ज्ञातं यं हि विना कथा विना मंत्राणां कान्तो नहि देव
 तैक एव कृपा कलाः विना कौं मंत्राणां कथं कलाः कथं कलाः कथं कलाः

एक सत्र में स्कूल की व्यवस्था कि, जो बच्चों को शिक्षा देना है।
 जो बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं उन में से कुछ लोग जो बच्चों को शिक्षा देना है।
 अपने कार्य में काम करने वाले लोग जो बच्चों को शिक्षा देना है।
 सब लोग शिक्षा देना चाहते हैं।
 और जो लोग शिक्षा देना चाहते हैं।
 और जो लोग शिक्षा देना चाहते हैं।

हमको भिष्यो उल्लास नहि नाश । धनक दृष्टि नहि बाध ।
'हम कोनो निषेधक दलान्ध नहि करै छे ।'

सुपरिन्टेन्डेंट साहब कोषी गरीब ५ जवानों से एक ही छोर पर
मजान २ अखन हथ तोरा हांस्टलसे कहर करैत छै । तारा गहलामे हांस्टल
विद्यार्थी खराब थेऽ अकल ।'

मायका अनाक रडि मेल । गोपाल ओहिना मधिवारा अगुवा हुन
 भोकार पसल चल चढेपछा एकजुट कुरिने हुने घरका अंगु रानी का लो
 गेल । बाटिछा बिस्तर लड काम आदि मेल ।

कक्षाओं एकत्रित रहने से, गलतियों का अन्तर्गत हो जायेगा।
 स्कूलों की शिक्षा, नाम दिए गये हैं कि स्कूलों में शिक्षा के लिए

घासका बावलांक^१ [भरीत कहलकहे] कन रंक अह^१ न^१ वा^१
 न^१द^१ न^१स^१न^१ बह^१ लुगल

काबूजो आकरा बरिहो हं नलनक कनप निह डण्डिय जण्डि सु
बहियो शजान लूक बांडियो हल्लक एक काबूज हैक कल अ डण्डि सु
नयान कलतो सुन शजो जानवाण अउम्य एकदह रडन कलक सुन
माफ शेरु बांगी मय्योमम हैक कल अ डण्डि सु

प्रांशुकरक मान नैषे नहि ललैक : बेसोकाक उदासे खुन । नाम ॥ ॥ ॥
प३ गलैक : बान लंगक १ नद नुके अंठेयै गबान अंठेयै ॥ ॥ ॥

कृषि पाठ्यक्रम में यह शिक्षक 5 इकाई में 5 अंक का वजन रखेगा।
इसका नाम है 'कृषि शिक्षक'।

कठोर भर्षा अंकुरा समसं बंशौ चान्वितम् । हुत्कारसं पृथिः पृथिकः अपने
 कृतं ज्ञानं करय भान्करं मुदा जोकं जिह्वासाक अन्तं रात्रिं छलैकं तदासीक
 मंजु छलैकः । कौश्लन अन्तं तदासं बैभल रति जायः घण्टी

फादा यफो एक दिन पुक्ति बैसनैक. खादस रींग विद यू माइ चौहन्ड ।'

नाम्बर सैनिकः कदलकैः । किन्तु न फादर । गाय मोन पदि जाइत
गानके लाव मान पदि वाइत अकि एकटा आत पूछ फादर ?

संस पाइ बाइल्ल

इंसान* एक समीक्षक के अंकि देन छनि फाहर ? किएक अंकि देन

५११

जादू गणेश ४३ सतलजिन 'वो हैव उन इट मय चइमड वो हैव
जवज हैव डाव हू लाइव टू टेम् अमि दि टूथ वो हैव आलवेन क्रुसोफाइड
जवज वेंगन

“है फरद... ३ भा...”

हाइ किशक २ बाबकरक सभय विद्यामा अहो काम आबिकऽ उपाय
 कहत छैक: एकर उत्तर आकरा कतहु नहि पडैत छैक कथे रहि दैत छैक एक
 सभयमात्र ठकनक भैया गाछमे उठय लटकाकऽ पारने कतरिमा पाबल
 जेकर ऊपर तर दवाइ ताकऽ चारु काल दौड़न छल मुदा बाबजी आकरा स्कूल
 न छलनि भूषणमे भुलापर सँझखन बाबिक सङ्ग आगबसो लग बैसल
 छक एकर एकदम उदास नैक: बाबो बर बर टाकलक सङ्गी साथी सभ मेला
 तकर चला कलक मुदा अकर मुँह निरुक्त रहलैक बाबो बोसैत कहलक
 एतए हान छान बातए एना भान उदास रहि करे । एना तऽ हाइत रहैत छैक

गन्धर्व जनोंक बातपरा आर मुँत फुलबैत बाबत: 'एकरा ती' छोट बात
 ४८= ज्योतिष ब'बो ? पिरपरास ठकुराक' भारते भारते बंहास कउ देसखिन पैथ आ
 ४९ प्रकृत अउर बल कहैत हकीक /

बहु तंत्र चल सैक बीसा एना तँ नइते सैक सैक सांस देखले की
 तँक परत तवजोप काउम खुदाय आ बुनसई करक कशर फाई देल ज्यौक आ
 बसु-जक। बसु बटोक क उत अन्नैक तकर हिसाब नहि चलैक ?'

“बहु-बेटों” किएक उत जनैक ?”

भास्करक विविध प्रश्न छलैक : बाबी हँसत नगलैक : “तँ अखर जे नुसबतक बाद बहु-बेटोंक इन्जितिक लतबुद्धि कएक हंडू छैक तँ नहि नुसबतक बाद हयराध अपना आँखिनी देखने छियैक : बौध्दक खोपदानक ई पुरान हाँस देखैक बहुत किछु देखने छैक बाँझ : ई सब ठी नहि बुझबैक तँ हवल्लेक उत लेयकऽ एकर लोक सन नाँठ छै तँ तऽ जेना काना दोसर दुनियाँक जाँज छै”

भास्कराकँ त्रिद ताँग गलैक : किएक नै बुझबैक बाबी ओ नहि देखै तऽ जाय दहिक मूटा निगप्राध ठकेना किएक सगँ लघुनैक ? आका अन्धकार दवाइ किएक नै लम्हौक ?”

बाबी कहलकै : ओ गरीब कछि छै । गरीबकँ दण्ड देबा लेल अन्धकार विचार नहि हाँडत छैक : आका गरीब पोसा दयान कएने छैक ई अन्धकार कएने शोक छैक । कखनो ककय निगप्राधो दण्ड दऽ देब आँकरा बलरा रई देब छैक ओकरा तऽ आनन्द भेटैत छैक । तँ किएक धेनकँ दुखो कयन छै ? अन्धकार एका देवतक, तऽ इम देबो । दऽ आबिबतक घेरे ।

गौर दौडल गेल खलबंदीलो : अकनाक माय अपन खोपडोंक बजारे देब छलैक : भौंका रौदये । ठाँका सेहो ठाँका रई बैसल छल । बेस प्रसन मूटा ओकरा मुँहपर काँतो ठकलौकक रेल रई छलैक ।

भास्कर हाथक दमकहो ठकेना मायक हाँस देब कहलकै : “तँ एहिमे ठकनाक दवाइ कए विचरिबैक : हाथक दमकहो नेत ठकनाक मार कए लललैक : बाँझ तयमब अहोँक भोज छै : इहो मब गले जोई छै : ठाँका मालिकक मंडा काया दाब रहि हानि : हाँका तँ घाँसु देन गेब जे : काना मधुमखिन बात हममब गरीबनो कानाँक बेटोंक एकहोँक न केवेन छै”

भास्कर ई सब सुनि बड़ संवेदे रहि गेल : अन्धकार काल्हिये पीब लललैक लका आँहि परिआकर एतक बढाक मंग बाजब मनि भास्करक मीनमे कएने नहि लगलै : ठकनाक माय गहि जनि को तप बाँड रहल छलैक : काना तँ छैक चलितरा बहट बकौ दिनमनि छटैत गैत छैक : लखन अनकर रेल कान छै छैक ठकनाक पाप ? एक छे कानो मुन मगल रहैक आका ओँअय तऽ पय न दिन तक पट्टी बन्द रहैक आ मतहम लानेन छैक : लीस रह काना ले काल्हिये तऽ आँइ मधुम तँक कहल नऽ ललैक ? ई देबो कलालियुन नऽ काना गबै छैक ठकनाक माय / भास्कर मुग्धुन कएत चुपचाप घुनि अखर

हाँसकँ सभ खबरे तऽ गलनि भास्करकँ बजल हँडलौधन : “अखनसँ फुल्लन दुखकयानी बीआब लगलऽ छै” । झंटाका लोक सभक संगति ! तँहए एतँ दण्ड आन अनिच्छकर छैत । आब राहरेमे पहबइ छै” ।

भास्कर भुधे रहल । दरभंगाक स्कूलक हाँसलमे दऽ दलधिन तैयो सुपुन तँ गल्ले आँइ तन जायत आ बाँझा कएक बात कहलौधन तैयो जे चुप न छै पटना दऽ अयलमिन तैयो ओ चुप रहल

भास्कर गनमे मुटा सँदखन प्रश्न तँहए रहलैक : हाँसलक काँतलक अन्धकार ठमकल गंगक ककरेमे : गाँधी मैदानक घासपट्टे सभतय ओ प्रश्न सभ कए नऽ गरीब आँइत रहलैक : काँदा मर्का कहलकै : “वाँ हैव आनयोजे अन्धकार आवै जौसर...” । अह भास्करक मोनमे गौंगिआँइत रहलैक— छाड़ ?

किएक ?

अन्धकार मँहक पम्पी करिआकऽ भनगर भऽ गेलैक । आँखिमे, कानि नुसबतक पैघ पैघ आँखिमे तात तात घाँगी झनका लललैक : बालिमे एकटा अन्धकार गलैक ओ हाँस-परावे गल्लत चिकनाहटि : लम्बा छिचकाऽ पाँच तँ गल्लत इध अहि पाहुँच गेलैक ओ गौर झंझोर कानो-कानो कंस बहयम लललैक

हाँसकँ पाप जावल न पाप भुधे इन्धिये रहै गेलैक आ बाबी जपन नऽ मुटा कहलकै : “छै” तऽ बकान भऽ गेलै रै । आब एकटा कनिषी तऽ जे नऽ तऽ

कनिषी ओ बन्धारे तऽ अनलक । ओ को अनलक सभ मिलिकऽ एकटा कनिषी तऽ अनलकै

एतक जौन पास कयलक : बीजो पलेइ दऽ ललधिन : जपन तँहए गुगल नऽ लल नऽ ललक दूँक काना ललिकक : छैन छै हम बाबु आनि रिउऽ पति नऽ

धामकी कनै हौरी करैत कहलकै जान मूलबाने जति अ. इहें क
कनौ ? पहिले कनै देखल न ?

मौजो अरु अरुन वंहरा जाणू कदा भौंति पुरिऊ कहलिन हं न
देखि भिअर पसिन्द जति न ?

धामका सज्जल कहलकै जान ?

मौजो हौमिक कहललिन वन कदम माछ भलि हनै कर कहे
अछि बाहु केक नर गिलांग चुकल लखि बाहु पसिन्द जति न अहं न
आकरा देखने छिरक ।

साकर आर बरौ लवा गन मौजो अकरा चुब पसिन्द कहेन अरु
सुन्दरि ततबे देमदुख

नहि जानि इकर कौ मउ गल छनि हसद नुनसुम जा रनन के
छथिन हुनकर बहिनक नचलौ धामकाकै पुनरु हनै नचलैक नच न

उपरसै कहलकै बहिन बड कानन पल लखि सज्जल हनै नचलै
छौ ?

धौबोपर जाइ हौमोक कानन अरुन सति पसिन्द । मुच दल कहलकै
ई हमर मानक अभिनाय अछि बीना । नूच जाइ हनै अहोत्कलिक
गम सोता नय.

धौबोपरसै जाइनसै धर्मिक कानन लखल हनै अहंनै नचलै
छलल बहिन कतबो गरि हनैह नचलल हनै नचलै नचलै

गम एकरेक अपन नचललकै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै
एहन गमनन किहूक एहन कथा मयनन नचलै छलै लखल नचलै
अहंनै अहंनै

धामकर कानन पुन कानन सत्य नहि छलैक । र लपक नचललकै
स्वपौवनक भुवामक आंगमर नचललकै धामन सज्जल हनै नचलै
पेटिकाम सज्जलसिप भति गन छलैक इधम अणाय नचलै नचलै
फड नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

बाकै कहलकै "तउ मना कौ करैत छोक ? नचलै नचलै नचलै नचलै

नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै
नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

धामका कहलकै "तउ मना कौ करैत छोक ? नचलै नचलै नचलै
नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै
नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

धामका कहलकै "तउ मना कौ करैत छोक ? नचलै नचलै नचलै
नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै
नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

धामका कहलकै "तउ मना कौ करैत छोक ? नचलै नचलै नचलै
नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै
नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै
नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै
नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै
नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै नचलै

खुब कमी। खाली टेंदक पांशुपति कुण्डल जैत हैक। धास्काकें पाकर मल्ल
अगैरु वन गडलैक जहिने बदकाय भुत्र गडलुन आका दूधक गिल्ल
दुकरको जमीन गडेन छलैक। अहि अहि जैतुने कान मल्ल जैत छैक। कान जैत
जो अलिख्य नहि छैक। ओह कान मल्ल मल्ल आ जगल छैक। ओह कान
ठकना आका दूधक गिल्लमरी गामन गहरी बगो बगुन भ, गल छलैक। ओह
घारी घांटा ठक चौहल गम दिस किछ भइ गेलैक।

ओकरे हाँसमे नहि सकल भास्कर। सभसँ साङ्किल लेने बलास
आपन छलैक। ओकरा भुत्र टेंदके गेदम अलिख्य दुकरको जैत। अपन दूध
बडैत गल पास्का चिन्हास लक भए भए जलैक। ओह आन गहरी
भाकिमेध। स्टेशनसँ भैत कायका छलैक। ओह गहरी मल्लमरी गहरी उल्ल
मडक छलैक। हरदप भुत्र गहरी आका कल्लु बल्लु जैत कान
स्टेशनसँ ठकलो धरि अखैत-अखैत सभ दस भइ बाहर छलैक।

आब हालति बदलि गेल छैक। स्टेशनसँ गाम ओ गामसँ दोसर
एकटा मडक बलि गल छैक। नहिने गेल गलेन छैक। ओह गल्ल
किशोरना गहरी किशोर जलैक। ओह आब गेद मडकस बल गह चलेन छैक
हरदपसँ विरा हडत छैक। ओह मल्ल गल गहरी आका गहरी बल्लु
पनि गहरी अलि छैक। ओह गहरी बडक बड गहरी गहरी गहरी
ओ बल्लु चिन्हास घुघुरु गहरी गहरी लक भए छलैक। ओह गहरी
गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
दिकलक कान काज नहि। भुत्र गल्ल गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी

तखनोसँ पहिने हाथी अखैत छलैक स्टेशन धरि। बासकरी देखने छलैक
एकटा बलास हाथी। ओकरा नौक कर्को मोन छैक ओ हाथी आ ओकर
उममान ली। गमन रहैक। गहरी ओ गहरी चौडा भुत्र गल्ल
घनग। ओ चमकैत हाथी मल्ल। हाँस लीने ओ गहरी चिन्हास गहरी
गहरी पिजैत चला तुको टोपी आ लुग। उताहि चुल्ल गहरी गहरी
धास्काकें इतिहासक पोछासँ बाहर काने भुत्र गहरी गहरी गहरी
हाथी ककग मल्लमरी नहि अखैत छलैक। एकमा उममान गहरी
भाकर इशारपर आ हाथी दूधक वेदल छलैक। ओह हाथी गहरी
उममान मल्लमरी ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी

ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी

धास्काकें दूध गहरी भुत्र गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी

धास्काकें बाबू कहैत छलैक। ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी

धास्काकें हाथीक मल्ल गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी

ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी

ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी
ओह गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी गहरी

छलनि जवन आ गहुन एक नल वैसा । फुलक चर भूत खूब चले
 भौंटेन मजने मजने बेटी आ चुनल चुनल नद लकड़क कोपड़न ललक
 मुन्तर खम्मा सभ भुदरसे गेल-बोरल कुनो खूब जैसे ओ गहिम एन कने
 सोपन कसम सोही सौखे आसने धरि साँझ कदल जाहिपर दू टा भौंटेन
 हातांको हरदम बिछारन एक कान बहका आरज्जुमो जाहिपर बहल कोन
 आपन बैसत छलाह आ दसम काल दस बहल टा कुनो । चरम छलन एन
 आकारक लाडक पंखा पाहुन पज्जक आ वैभारक लकड़क दू टा जेन दू टा
 होकीन छलैक । इतने राखिने लखा बनल कोन कक दू कान एक क
 कोठली छलैक दक्षिणवांगे कातलाप दकाही लोकांकर कां भैल हुन
 आ उत्तरवांगिधे स्थपम पाहुनवाछ कोधी छिआप कोन कलर । हुनकर घन बहल
 गहुनला लखतपाश छलनि आ तयरी बहल पंखा छलनि । भेटनल हुन
 ओकरा एकटा जन बाहर बैसल खोजै छलनि । इ सभ शास्करके अंगन
 छलैक

अही जंगलीक पुचारी काल एन महुक बड़ल छलैक जाहिपर पतिर तह
 पोडा छिड़खिड़िया आ पैरल शरार चलैत छलैक आ आब बम साइकिन गेल
 मोंटर बलैत छैक

भास्कर पैरे बिया मेल छल । बिहार सांक सभ भेटल लागल छल
 तीन कायिक रक्ताम पहिले गाम छलैक गनहाट जवन उनीटरीक
 काहिआ आबो कोलाकाको जमोड बाँचल छैक दू टा भौंटेन छैक
 क शरी भौंटेन छैक । एहीन भास्करक भाविक काय सांक नल छलैक
 मो कहैत छलनि हुनका लाक आ गाणक गाम कहे छलैक जाहिपर
 आबि चय छैक

बसोम मुसलमानक सल्लह बहल छैक । हाटम आ गमे-गाम पु
 चूही आ टिकुली सन्दुर बेहसम बचैत छल हाटम दकान छलैक
 वै सभ मिचैत छल । रनोहाटक दुहा आ सिन्दुर टिकुली लखा लाकन
 साहामक इतीक छलनि । परि इलाकाक स्वीगण एतहि खानेन
 चूडी-टिकुली मिनु । उ लोकनि हाट नहि जवैत छलैत जवन
 खरोदवा का भौंटेन छलैत । अइ गामक चूडीलाप को बर दैत
 छलैत

आबादी एकदम भिन्न छलैक अइ गाममे । अथवा हिन्दू
 मुसलमान । यो सभ एकदम भिन्नमूल, फरक-फरक छेल नहि । केन ज

यह बिलैक, फरी लगबलस सभ हाटक बगलमे छहकक कारेकाल
 छलैत नलक । नुडीक टांकाभ टिकुली मिनु आ रिबनक दकान
 छलैक दकान कपडक टांकाभ फरी लगबलस चूडीहार गोटक आधक
 छलैत

एन अइ गामक लटम अवेन छल पायक । काहिआ इन्तार हाथीपर तऽ
 छलैक । आ घोड़ापर । काहिओ कान पैरे ककरो संग आबि गइत छल । कने
 लख एन तऽ लखिल्लास लाबऽ लागल । इ गाम आ हाट बड़ पमिल
 छलैक । लोक सभ बड़ चौकैत छलैक ओकरा ।

झड़प जावग पैरे जइल दमि लाकसभक चिन्ता दृष्टि अनुसरण
 गेल । जेन गाम कलक कय आबि । जम्पन भियाँ अपन कपड़क
 लुका । नलक टांकाभ लपटैक । को बान वै हुन । अही इती दूर फैल
 एक लख टांकाभ । यहीन पसीन हो रहल छ । अर क भुझा भू ! जने
 तहने रो रो भू ।"

पायक ओकर दकानमे आबिऽ वैसि गेल । जम्पन भियाँ पंखा चलबैत
 छल । अर तऽ लख इलाकामे बिजली आबि गेल हद । अहुँके गाममे खम्भो
 लल छलैक

भास्करके ई गाम कने सुन आ ठास सन लागि रहल छलैक । पुसल
 को बान वै जम्पन कक । रानीहाटमे पहिल छैनक नहि छलैक ।"

जम्पनक होमि अकूत पकड़ के पिडा नलैक । ई न पुल्ल हुन । गाममे
 बल क ई बे लौक रहल । सभ तऽ भागि गेल ।"

भागि गेल ? भास्करके बड़ अलचर्य छलैक । गाम छोड़ि पड़ा गेल सभ ।
 काय जवन काका ?

जम्पन अवेन राहमे स्वयम कहलक । न भौंटेन तऽ भागल जाइत हुन
 लखिल्लास आबि पमिल । ई आदमी आदमीक खून क पिजासल हो गेल
 न । जेन सल्लहक इन्तार लूटे चहैत छै, मासूम बच्चा सभके संगीनको नोकया
 छलैत छै । 1947 के दंगमे ई गाममे लौक सभ पाइ पाइ लेखा रहल । याकि
 छ भल पाइ एक दोसर के बान के दुश्मन हो गेल ।

भास्कर व्याघ्रसं भुलनके एना कोना पैरेक जम्पन काका ? किएक
 फेर को ककरो ?

कुम्भ भविष्य १५५५ धरम कहैक पवन भुक्त क गहवरा मय क
लंग अपन स्वारथ चरतं मिला के लागि प्रसारन छवि हुवुर ।

भास्कर विह्वल होइत कहलकै- "मुठ भुम्भ ककल । एतऽ गम्भारऽ
रुमन मंग हउत छल कहा मंग उठेत छल इत मनेत कुन दोगधल भन्ने
छल । एतऽ ई सभ कोना भेलैक ?"

अहाँ मामून् कहल छी हज्ज । तूअन कहैत गेलैक ई चिन्ताक
जेनमें अहाँ हज्ज गहाँ कुञ्ज स्थान में छल । तू क मय मन्त्रालय के
उजड़ै रूप मसूम बच्चाक खून में हल्लो लुने हउ । तू मय चिन्ताक
अउ चन्तोमें लं आबल हउ । हम आका हउत रहल । ई हउ क दोगधल
अथ धिन्ताक अणि रमयन छवि हुवा । मन्त्र रनि लं इत । कहैत था उल अ
चात खाली पडल हउ । एह बुढका केही अणि दू दू क कान बढक लहल अ
हउ हवुर ।

कुम्भ मिसौ कलऽ लगलैक । बड़ी कल तक कनेत रहलैक । पनेत
एकटा छौरा मन्त्रक गिलास दऽ गलैक । अहँत पनेत मन्त्रक, एतऽ था
भास्कर । कहैत था कुम्भ ककल । अहँत बन्नेक नकारक अणि मंग क
मनेत अणि । एतऽ मन्त्रा अहँत मय लल रहै अणि मंग अपन अण दू दू
बन्नेक । अपन हाथ दफन दलक बाज भास्कर चौध लल स्वर गलेत अणि
आका मनेत । मन्त्रक हाथ मन्त्रक लैक । मन्त्र मनेत अहँत मन्त्रक मय
मन्त्र छैक । ककल मय इतिहास आ धरा कहैत छैक । अउ चन्तोके पापक
कहिअं हाडि नहि सकैत अणि कुम्भ ककल ।

भास्कर अणू बईत गल । पान बड़ी कल छवि मारी रहलैक । मन्त्रक
चय नवतन आ नवतनक बाद पोपाचण । धिन्ता लल मय हउ । एतऽ
अहँत मनेक आ भास्कर मनेक प्रत्युत्तर मय जड़त अणू बढेत मय

अपन गाय हयचन्द्रपुर लल आबि गेलैक । हवेलीक सिंहदर रसल
मनेक आ अहँत सिंहदरक पाखेक डंच डंच काठक लल मंग हउत दू
लगलैक । भास्करक किरणक बिटो पान पडलैक । भूत आका हउत अ
किन्तुओ नहि लगलैक । खाली अणस अणस आ श्रीलोन ।

लय अणि सिंहदरसँ पीतर अणिमने पैरैत कल हवेली अणिमने मन्त्रक
आ अपन मय मय मनेक किरण बढहि छैक । मय वक्क मनेक मय हउ

एतऽ मय अणस अणिमने छैक । एकटा अणस मय अणस मय किन्तु हराओन
लल रहैत छैक ।

हयचन्द्रपुरक हवेलीमें पेर दैत किरणक मनेत कोनो मय नहि छलैक ।
कुम्भ मनेत आ स्वयं छलैक । मन्त्रक मय मनेत । भास्करक मंग जीवन बढ मयूर आ
हउत मय बढल छलैक सोलह दिनमे ।

जिनमें आका अणस लल बढ मयूर आ हउतक चीज छलैक । मय
कुम्भ मनेत कल आ हउत कल फल आ हल्लामुल्ल पनेत गैत लल
मय मनेत मय हउत छल मनेक पुनाक । बढकी अणि होम वक्क पांहेने मयूर
मय मनेत बाद पनेत मय अणस किरण । मनेक मनेत छल आ

अपने चर लल नहि मय मनेक । मय मनेत श्रीआयव, लल रचीसी
लल मनेत अणि अणि मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत

हउत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत

कुम्भक हल मय मय मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत

मय आका मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत

किन्तु आब बढल मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत

मय आका मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत
मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत मनेत

हैं। यों सों नहा लें परति करबो जल नांज आ धा: हैवै नै । बनें न
 वयन करेते छैक अपनै रग बाज संहर सौ गहव पयोऊ हस लें पण्डित
 धरखसैं यासुर वपै लें तंग अपनै आ गुहम्यां हतौ राजकुमार सनै स्वानै लें
 फल मन-मन बंद्य-बंद्य हतौ

“मत्”-कईत लबाकड पद्व नाव विभज ।

बंदों ता कसौखनसँ लखलखे आनकाक' हूँ मैं वहाँ सुखी मैं
गँवैक भावक बात मान पड़लैक रात्रकुंधा पन खन हँलैक फुल ३ =
बंदा बंदों हँलैक

पन्द्रहमं वयसं सौक । सोलहमं दिनं द्विगम्य च गौक ।
 हवन्तोपं दै रे च कालं गच्छां चोत्तमं पुत्रश्रवणं च य सौभक्त्यो नाम ।
 अथ रहस्यं किरणं देवुं पश्यं कृमि गल रौक । एकं सुखं सुखं सुखं ।
 दं पश्यं छानैकं ज्ञाद हवन्तोप । पश्यं चोत्तमं अजगत् सुखं प्रविष्टं जगत् ।
 आह्वयितं अं वर्जमानकं सुखं सौभक्त्यो नमोः ॥

कलत्रमे अङ्कत बुझनुक सन गप्पपा हौसी लग्गि यद्द भास्करकं" -
बिगहि जात ।

“—एसा हौसै किएक हो ? कांते बध्क हो इय आव । पन्हुम उठ
जहि य जगन को बडका तहा नाम हो । सोने कथ से ईत छ मुन हो
हाय पै नाम-नाम अलि तउ बडका छ बसै हो अपनाई” ।

धायक अंकित अपन बाँतिमे समष्टि अंकित अपन ओछुपे सकौन जेने
 १५६ फलन वच्चा से हन कलक छीन भ जउ छी जउ नह भई जउ नह
 किनु मृगिनि रहि ओछु मरल्लन अउ नह नहि कलक नै छी नह नह नह
 रहन छान भभ होयत से न कल को लक ने छानि नन छी जउ नह
 छान नै कल पान न करेन जहि अउ नह नह प्रभु कलक नहि नह नह
 कलिह जयबाक अलि ओ भौन ललपसे कोनादन कड गल्ल अलि

किरण विह्वल पद इत्येतक- "कालिदास कत भाषण अहाँ ?" को क
काल चुप- दल इत्येतक- अकर तातोप अपन मन रगड़त कहलजै- अहाँ
हम सोन रहक ?"

पास्कर कोनो क्वाड नहि देलकै , अंकुरा अपन बौद्धिक क्षमता बख-
पावगै आश्वस्त करैत रहलैक , अंकुरा मरगरी आश्वस्त कोन कहलैक

एक ही वंश के अनेक व्यक्ति एक ही प्रकार के व्यवसाय में लगे रहते हैं। इससे वे एक ही प्रकार के व्यवसाय में लगे रहते हैं। इससे वे एक ही प्रकार के व्यवसाय में लगे रहते हैं।

[illegible]

३. कालजने भेटत रत्नेक आनसेक कलासस बहरादल मध्ये, किरणक
हृदयक मन वेळतात अशी बिंदूस, त्यागल आम्हण्ये आगली उगांन हल
जेक. शिकि देखके "ककर चिट्ठी जळि भास्कर ? एकसरे थडि थडिआ
कल गल जे ।

अथो सिन्हा अंकर कलासफलो ह्यैक । अंकर एकयात्र प्रतिहन्तौ ।
अंकर-सुखः नरः अंकरः सम्बन्धः कृत्यैकः दृग्गुणः अंशो पविष्टता पति मूढः नैस मधुरः
अंकरः = अंकरः

धर्म का चिह्न आकाश में बहने कहलकें बातें नहने अछि आरता
 "हम चन्द्र सूर्य । हम आप बस जा रहल छी ।"

कहकर जना जिन्हें नांक बुझाने के चाहती फां बूझिकऽ करे लीआ
नल्ले ओ देवास भर मऽ ठहरैके- "कहाँके बिबाह करिआ बेस भास्कर?"

भास्कर कने लबाइत कहलजै- "सौरी अरतौ । अहाँकेँ मधुर नहि
होखे । गंधार बग पय्य में रहों तऽ कोनयो आनकऽ भुगत रहि। बाप बन
जऽ शिरास दन पसर एकिकेँ बेर खाव्य देब ।"

* श्री स्वच्छन्द संतो कादर †

मास्कर राक्षसोंय गम्भीरतासे कहलकै "हम अहाँके" बंबो मन लागैत जे सँख कोट प्रभुसङ्ग ईश्वर ध्यान 160 पीपल, सीता चालीस ईश्वर

आपनी आकृति बची जाये कह लक्षण हुनैक ओकरा कृपा से हल
छनेक आकृति होइत हुनैक ॥ संजय कहलाय अकार्य करी गलत आनंद
प्रमत्त काना रहैत छनैक आनी अ मकान मऽ कहत नै मुँह लटकै कहैक

एमए. ये नाम लिखोलाक बाद एक दिन भास्कर आरतीसँ कहलकः-
अहाँक हृदय कनेक पैप अछि अपनो अहाँ मन कयौलाक पैप मरलक
छो हय ।"

आरतीक ओखिमे नहि जनि कने कय अछि सुनत मऽ बसेक । तँ
कहलक- 'सरे । इच्छा बल बूझि लेत छियै अहाँ ।'

भास्कर चौकिकऽ ओकरा दिस देखलकै । आरती सप्तरि बेत तेर
'एना चौक नहि बने कय' होमो कयल कहैत हुन जहाँक होमो कयल
रया आवि जाइत अछि आ मधे परीक्षा करि देन होमो कयल तेर ने होमो
काना लखन कर हुन चौकसँ नो पाहुँ रहत छी म हय कहतुर लख
ए बोल गलै

भास्करो कने दुष्टसँ कहलकै- ए बोल नैत स्योत मल ।

आरती बनबरी कोधसँ कहलकै- कनियक विदुषि लिखि देब कह
फादर

भास्कर अपन चिट्ठेमे लिखलकै- "परीक्षामे नोक बका पम
एमए. नाम लिख नैतहुँ गान नहि आब सकतहुँ दुष्ट लख
प्रतिभाशालक फांसे भनि लख छी अहाँ लखमे नहि कहत कहैत मऽ मऽ
कऽ रहत छी । एकाक 'फया' कहत तँ हम एतहुँसे मुनेत छैत छी ।

अहाँकें तँ हम बहादुर बुनेत छौ । एतेक हेतुक कान मऽ न
अहाँ ? इवलोक कानो अनिष्ट नहि होतैक । अपन पानसँ प्रम बाहर कऽ दिख

पेय लेब अहाँ चित्ता गति कर हुनकर स्वयम्त सुनत नहि कह
धौआ मन स्यो पाबिवाकऽ नहि बदललाह इच्छा हुनकर सुनत मऽ छी
बाबुजोको हुनकार्य इच्छाक कानो कारण नहि छनि अहाँकें प्रम मल अछि
महि दुष्ट गानेक स्वयम्त आ व्यवहार मिलैत छनि अहाँकें अछि कहत

धौखी लेत इमरो चित्त छैत अछि । ओ एन गुप्प सुम किछ
मेलोह ? हरदम होमैत होमैत रहैत छलाक धौखी चित्त मेल कान दुष्ट मऽ

हुन को कह रहत छनि । पैप लेल नहि होतनि ओ दुष्ट । हुनकर आरती का
हुनकर अमयत मऽ बेलि छनि ओ भास्कर चौक-पूरा नहि बेबाक दुष्ट
हुनकर कानमे दबल गेल दऽ रहत छनि । कवस भेलनि आब । अहाँ एकाकें बेसी
हय हुनको लख छाँह दिजौक ।

किष्काक रोम परम सकट मारी विस्फार होलैक जकर हर छल सैर
हय पार्थी करैत निश्चिञ्जल ओगनसँ चल गेलोह हुनकर गैलाक बाद
हुनकर आ अहाँक संगे बहा इच्छासँ पैपिक पैप बाबुजो आ मौसे चौधरी
हुनकर गान कऽ गेल । कामसे बताह मऽ गेल छल ओकर मायक
हुनकर मल्लि भलैक हवलाम आ हवलामे अगि लख दब, पाईत छल पैप
हुनकर कान मऽ गेलाह बाबुजो गिर जनि कान बरौत कयलाम हुनकर
हुनकर सकट पराजक पाय हय दखलियनि गति जनि प्रम पीसी आ बहाक
हुनकर

होम होम लेत आब किछु बौकी नहि छनि । प्रेमा पीसी अपने हय
हवलाम अह हवलाम हुनकर मध किछ फाँसत लुटा गल छनि दहिने अहाँक
हय आ हवलाम अहाँक पैप प्रेमा पीसी पाय मऽ गेल छनीह । मुनिक हमर
हुनकर मिथुरि गेलहुँ ।

ई लख कहत होल मुकाकऽ आयत छलैह । कनेत कहलनि- "आइ
अहाँकें वमर करम कनिषा अहाँकें वमर कहने आप छैत गति होल भास्करकें
हय इच्छा इच्छा संध्यामेक अपन बहाम बेसी दुना कहत नऽ हाइन गन
लख मऽ मऽ हय कयौलकै अह हवलाम संधक लख गीकल बाबरक लख
हुनकर हुनकर अछि कहत हवलामे मानक एक दिन एकल दामर आगिमे
हुनकर हुनकर अछि कहत हवलामे कनेत कनेत अहाँकें मऽ गेलहुँ फोर
हुनकर हुनकर अछि कहत हवलामे बग जौ दू दिम अछि कहत रहलहुँ गल्ल
हुनकर हुनकर अछि कहत हवलामे आनकें गेल गति जनि किष्काक अछि
हुनकर अछि कहत हवलामे कनेत कनेत अहाँकें पैपूर तँ मोन विद्रोह कऽ
हुनकर अछि कहत हवलामे अछि गान बूँह दल आब कान हय नहि रहल । हम
हुनकर हुनकर अछि कहत हवलामे हय नहि अछि हय अछि बहाक । अछि
हुनकर कहत छौ हय । अछि कहत पेल अछि । हवलामेक अछि कौ बिगाइतैक
हुनकर कहत कहतैक ? अहाँ भास्करकें निश्चि दिजौ कनिषा...वैह छ बहा
हुनकर अछि कहत

तुम्हारे ही जगत् का यह सब है जो मैंने आज
आज कभी नहीं किया था मैंने आज ही
ही मैंने इस जगत् का सब किया है मैंने
ही मैंने इस जगत् का सब किया है मैंने
ही मैंने इस जगत् का सब किया है मैंने
ही मैंने इस जगत् का सब किया है मैंने
ही मैंने इस जगत् का सब किया है मैंने
ही मैंने इस जगत् का सब किया है मैंने

किरण प्रतीक्षामे क्वलि ।

दिने दी दिन बिलब जा रहल छलैक बाधका न कोण किसे रहल
 २ ममाद दूगोपूका दयाबाली लथ बंनल गेलैक : किराजक सेवन रहल रहल
 कभिधान छटपटक रहलैक ।

हवनोम आदि एकका कथा व गाल आदि चैक आकर । सद्विधन क
भव उपार्ण हवनो वठ शक्ति लगेत छैक प्रसा रैवाच कण्ड आ वठ
विश्रुत आ दवाप्रापक कट हवनो आ फल वर ल डुवैक हवनो क
आर्चना कय छैक प्रसाः हवनो चत्रं नैकर वन । सद्विधन
हवनो कल छैक— सद्विधन सहायक ।

पहलानच चौधश्री लखाम छानि गणिय ओ हउय हुनक न
छानि प्रनकर काना कज ओ नह करे छन ओह चौधश्रीक ३ न
खकमिनी नहि छथनि पन्नायक कज तौन हुनक गेन केन रज
केल टिकोर करैत छति । सजिक लखाम छानि सुरज आ लखाम
यकर दहिउ पुता गमाय खकम रहनि बहुरा ओ छिन्नाक छुबिपनी
गान पहलान चलिथोक सङ्ग श्रीक वट मुकक न पुबरा गैत हुनक
दोसर खकम गैत हुनक । लखामि कज कछी वट माल हुनक
बानधरा छैक

अपने धार्मिक कांठलीक बगलमे किरणक सोखरी छैक । कतए ठाम
कोन गम्भार कांठलीक धर्मग्रन्थमे गैन छैक । सुक सुक कांठलीक बगलमे
एकए खबामक एग कांठलीक दिनरति सोखिआयल छैक । बाबू

[illegible]

दोनों ईसाई लगभगक : "आइ बहिन कोना मोन चदि गेलैक ? बगलक
जानक लीक । कसरी पढ़ाव गेले लोक । निपट करिअजा हूँकिश दबाक मोन नहि
लुक । उ मण ही इ हात लीक । लाग्य किछोयुप बेनेत किमन कहलौ

१५ नर द नर छार बरिह सिरो अपन जोर लगा यह हवलाम अनरै ;
कन १ नरिउदा अ नोन हवनेह कसै उमर गेन छ कहिअ घुगिक ५
कन २ नरै अ ओडिलोक दकानम नहि जावि कांन तौल पान नहि
नर ३ अउ कदंस्त्री हमरी बल आयल छियै ॥

॥ तत्र हि त्रैलोक्ये एकस्य विद्या करतं वाजि उठलैकः । नहि आ
ले तत्र एसा इ वंषर दवलाक जइ जानाक संसार सांभरात तैकः एहिमे हंप
हं ॥ ॥ तैं अपन दुखियौं असन छ । इमठगका लया त्रक स्पर्श नहि कर
॥ ॥ तैंहि इ एहि कांठलोक एकान्तम् ॥ ॥

[illegible]

मरण छोट रहितक बूझक सन गणपद स्मरणकें हईसी लागि गैक.
 जत बहिन सबक दुखत रहि नुकरमल की । तें छोट छोट बहिन जैह । अद
 जत बहिन सबक दुखत रहि नुकरमल की । तें छोट छोट बहिन जैह । अद
 जत बहिन सबक दुखत रहि नुकरमल की । तें छोट छोट बहिन जैह । अद
 जत बहिन सबक दुखत रहि नुकरमल की । तें छोट छोट बहिन जैह । अद
 जत बहिन सबक दुखत रहि नुकरमल की । तें छोट छोट बहिन जैह । अद

किंश काष्ठ तहकि रत्नम् जाबड दक्षुय लोड जाबम्म पुच्छन्ति ह्य
 जाबम्म पुच्छन्ति मैस्र छवि वन बहिरां छवि दनु तहर् अक्ष
 जाबम्म पुच्छन्ति हुत्तकामै वे रं राप्ता रत्न तहकि प्रहोकिं / धरप
 जाबम्म पुच्छन्ति पटान बास लकीर गैत जांकि आ अक्ष जाबम्म तहर् मैस्र

पवि ज्ञात शैल गाय आय एत मम देशां बका ७९ ज्ञान
दाशुन मेय समक एहि नल नहि निवर्णन्ये व तुन निवृत्तक कां क
कुः नौकरी बकायक अत घाम नः व निवृत्त कां चांनक कः
मयानक देश सम किं कः

[illegible][illegible]

हमरा यह है सम्पन्न होकर, तब तो अब मुक्ति देव । कहीं क्यों ?
 पान्थों में ही देख नहिं गहो । अर्थात् 'पञ्च जन्म' निरन्तर होकर ही मुक्ति मिल सकती है।
 रहता है। एक ही नाम जपि हमारा मन ही व एक ही बात सोच कर ही हम
 रहें... कान्ति चौधरीक हठेनीय नहि ।

अधेन, इधेली हम्मर प्रिन् सेहं अलि । हम्मर शानो हम्मर मंथे, हम्मर
अलि मंथे । हम्मर नगपन हम्मर अलि । आ हम्मर गज गज चं, हम्मर हम्मर
हम्मर अधेन यम मंथे हम्मर । अलि हम्मर हम्मर हम्मर हम्मर हम्मर हम्मर

[illegible][illegible]

इसके नमन प्रयासों और अहंकार निरहोच हुनकर गण्य मान गति
न करु मानत इतरह दमन विमानध अहंकार मायात सपट दलति आ हप
न नकायन गयहु हुनकर कथ मुनि अन हवन्तो आ बाप प्यइसे मुणा
नहउ चणन मैत ट त हम मध बज्रत छल्लिथान । पुदा बाबूजी । महंकर
ऊँ गय अवि स्वर्णि गेल कल । अपने देशक शोणितसे मुणा भैल कल । प्रेमा
कर शान्तनकरिह । हमर धम करनोह वा नहि में गि जैत छी । पुदा यहाँ
हकर अहं ईशति उ तपत अलैत ब्रह्मिक काया आनष्ट गहि हनीक हम अबन्स
नकर नविक पाठन कया हमर दास्त अहि हम गोबिन्द त्रियक आकरा आ
अं किनहु ने कउ सकैत अवि

ब्रह्म वेदः त्विं सर ऊर्ध्व आड भुक्त तैक अपिना उर्ध्वकः चो गम
वेदः ब्रह्म वेदः त्विं सर ऊर्ध्व आड भुक्त तैक अपिना उर्ध्वकः चो गम
एकक ब्रह्म वेदः त्विं सर ऊर्ध्व आड भुक्त तैक अपिना उर्ध्वकः चो गम

गुरुदेव ! तुम सब दुर्गाम उतल भण्क्क आबि रहल हव आकर
 सब कवन अरु सब मरि बैस बाहर नर आब तैक ओहिस कर्णोदशन
 सब रोक आ । अपना संग अरु हवेलोई बाहर लऽ खनैक

सुशोभित चित्रण लागू किये । राजाको कोठामै उक्थे छवामै फेक्यो
गोठामै फेक्यो बाजा लाग्यो ठेक ठेकै हुँदै फट्यो । माथ
देखि ठेक ठेक ?

५७. चम्पारन शिला लालकै किण्वा. ५८ बज्र आऽ बह गुप्तां हिमौ

हम तब पापा आदि जल छद्मन में हमारे लक्ष्य अदृश्य में वे-
मात्र इनके संग रहने लगे।"

यथा प्रसन्न होइत प्रपन्न लपटि गेल- "सह माँ "

राम्याकें नईं जनि किएक छद्द बेर बेर मोन पडऽ लागैक छे -
बोति गेल छलैक, जे पंर धरिकऽ नईं छलैक कहिबो ।

पौर पदस्का गाड लागः अदिन कुनैक गड पदस्का लागः = हरे
पुद रम्मा बिलीनपः पदलि हांत दह अस्मायल कुनैक अ पदस्का लागः
नाल लाल डार गृका नराक अपांर अस्मन पौर प्रोवृट कुनैक पदस्का लागः
सम्भरित ददि वैपालः गडो अदिन कुनैक गड पदस्का लागः

भासकरक खोरपर दुष्ट हंसो परति गेलैक- "अखनो धरि नैह हान अउ
मौजो अहँक दिन कतक बोलि गेलैक महा हाहा ने गहन रुखि बुझा मे जनि
आहँक" देखिकऽ अश्विनो पाकक दोन रश्मिक खबरि बिबरि अकैत तैक

गणेश जी का अंश दूध है। पानी में डालकर अच्छा चलाएँ। इससे बच्चा ठीक हो जाता है।

'गड्ड कहाँ देसहूँ श्रीजी ! इन्हन सौ कहिजो । अहाँ पुनू कहिये -
कामरु कण्ठधारी वादू सांगुं जायति ।' कह्यो कौन 'सुन बहो देस कहिये
विजयनं बन्द कइ है । शिरानं मलाम छैक व जहियं इहल अंगन
खड्गफडागल ?'

आंध्र प्रदेश परम्पराक हस्त किल्ल गेलैक । एकदम तदास थोडा
भास्करक अपन बातापर अपने गरमि लाम । समसैक । काता बज गेलैक
वात ? पैग एनकर सामर हौआत छेधन मे समझ चुकल होक
मौबोक पोस नहि पावपीयन मता गधके आनन होक बहुत होक
अपलास कउ होतै भास्कर ?

मुदा शास्त्रकारक ई संकेत जे भैख कहिअन मौजोक पंस नहि
एकदम अस्तव्य वलोक : अरु अरु सथे जानिये वा नहि रखा नीक जउ र

[illegible]

मन्त्रालय* जमिनी गान हैक नमरा किलुकी विसमन्ना नोह हैक सचिवक
 २२-२३-२४ ३१ पन्थपन पाल दुभार मुया लगैत हैक अन पोरुना जन्मक
 २२-२३ ३१ पन्थपन पाल दुभार मुया लगैत हैक अन पोरुना जन्मक
 २२-२३ ३१ पन्थपन पाल दुभार मुया लगैत हैक अन पोरुना जन्मक

मन्त्रो मुदा सांचिकः इत्यः श्रामः पृष्ठं माग्निकं प्रवृत्तिं गौकं कम्पे
 ५५५५ मज्जि गेल जल । अण्णामे पैस पैस पीरी अमक बाप्का लागि गेल रहैक ।
 ५५५५ मज्जि गेल जल । अण्णामे पैस पैस पीरी अमक बाप्का लागि गेल रहैक ।
 ५५५५ मज्जि गेल जल । अण्णामे पैस पैस पीरी अमक बाप्का लागि गेल रहैक ।

पहिल बेर पकड़वल तऽ लाजे काठ मऽ गेल सचिन । पैर पकड़ि काण्ड
 मऽ, खासो मांगऽ लगलैक । रम्प बेगी मान नहि कभलकै । सोमर बेर
 तऽ कन कब्बर मऽ गेलैक, केना किछु धेरे नहि कांड । कहऽ लगलैक-
 गेल अरि रम्प ! अहीक सप्पत, अहीक स्थान ऊपर कसो नहि लऽ
 जे कांड करिआ नां । इ लख तऽ मौज मस्सो धिजेक जवानीक खेल
 कऽ कबल नहि मान ।

रामाक' कोचरन लगनैक ओ निषय करिहै रहनैक मुदा लखिनक
नबन चंदन एतेक शोहन बागनुकाकऽ करैक फोर घिनीन घिनीन मोगोक'
ककर चंडीनर लगनैक लगनैक तऽ यान आ कांधसँ अकिर छाती फाट लखनैक
त' पंच लख घनसन ओकरा लगनैक नहि करैक अ कायाँ गेच काज कऽ रहन
अ अकन सेत ओ अधनौक खेल छनैक मौल-मस्ती छनैक ।

अ आदि शीत प्रत्येक चो ३० ३० वांछाक सं तहो गेबे ३ गुण
आहार चान्त लऽ अनैत जेनैक कोमरी विरंगो गराब । रम्य पल कोक
पूतवखी सट क देक बांतल रतऽ कोक रूक ३० ३० मन्त्रनर कवां चोचो ३०
गो ३० ३० ३० ३० अदि शीत प्रत्येक चो ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३०
जाण न नृनि देन रहैक कणन तहो ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३०
चोकरै-चोकरै बंदन ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३०

फॉर टॉपे टॉपे आंकरो कण्ठ वर नाम लग्नैक ओ ताल फदार्च । ५२५
उधनार गदि लीक कान आंशु गदि गदक गदु न गदु गदु गदु न
दंढर कानिच मन उप्पद न गदुगदु गदु न गदु गदु गदु न गदु
लग्नै लीक

पास्तकध्वं नदि बृहत्त त्वेक ई सप्त । एषा नैक नकां नैत अदि

संगे ५३ वर्ष विविध राष्ट्रीय संघर्षक पुस्तक संग्रह करके श्री शंकर लाल
सौतक प्रौढ-बच्चोंमें जो आर्थिक भयन होता छन "रामचर" जो अत्यन्त सुकु-
ल्लेखक तथा सूचन साधक मान जांकर काम अंगक कह्य अन्वय ३-४-१९५०
नारीत्वके एकटा शब्द हमी बनि मय रैम सौतक राजक पुस्तक अख्यान १५५ सं-
वादा छल- सचिन्क सध विचित्र-अनविच विनयि बादा छल ।

पुनः एकद्वय तदनं नाति अवनेकं नै रम्यक मपय सुखं तद्वत् ।
 गन्तव्यं सपितृक प्रेम आदयं वधि गन्तव्यं । एषाक इन्ने गति आदयं दृष्टि गन्तव्यं
 गौतमक मुमुक्षु ज्ञानेन आ गन्तव्यक तपसा विन आ मपय गतिवत् ।
 गौतमक गौतमक गौतमक अयं कति एव च नैनाह विम्वयवत् । बहवः एव
 दौर्भाग्यः अयं कान्तनामै बहवः एव अ हुनक जात एवैत एवैत ।
 एवमपि गति ज्ञानेन कनहर्षं अनेक मीचन मेट । एवमपि एव एव एव एव एव
 कान्त एव अद्वय भगवत् गौतमक । अयं दृष्टि गतिवत् । एव एव एव
 दृष्टि बहवः कान्तक एव गौतमक । एव गौतमक व सचिन एव बहवः ।
 कान्त नाक देव । पुनः आ मपय गौतमक एव गौतमक । एव गौतमक
 गौतमक । एव गौतमक । एव गौतमक । एव गौतमक ।
 अंगाराग आका मय एव चलेक । पुनः एव गौतमक । एव गौतमक ।
 एव गौतमक । एव गौतमक । एव गौतमक । एव गौतमक ।

अशा चौथ्यांदा नवी कालधरि ओस्तापर घडत बनति छदि ॥२॥

ॐ कृष्ण चक्षुः ॥ गङ्गा नमनं गङ्गायै ॥ सामंते हृत्पद्मिण्या काठक जामागुपं ठादि
यत् एकलक अपन सासुके देखि रहल छलि ।

बड़ी कान्त बाद अशा चौधराइन आन्ध्र तकलनि । गण्डाक आन्ध्रमे पोहा
 गेल । एतल २५ जयबाक आदिक आ ओ छलैक । अशा चौधराइनक आन्ध्रमे भूषण
 गेल छलनि, छलनि मन्तव्य आ बलकलाइन गेल ।

राम की लगतक जेना आकर सामु ओकरा घुणारन तखि रहल छैक ओ
 ओकरा ओकरा गले कडा डोंडक, लग नहि गेलैक जाणा चौधराइन अपन
 कानन नव इलाक हारन नाक नटि छलनि, नंगरी ओहि अन्दरायल छलनि
 र दान ओ आपलसँ मोव ।

हमारा घर जहाँ एहि धर्म आया है छत्तीस बार पुनः इस बहुता प्रजावा
हमारे घर में : नरन क्रायों चाँदों जगि रहिन तौनुके भवि कहना
उत्तर नहि मर कलाह पंचपनक शककः गह्वि एव रहि समसं छोटि
हमारे घर में दय प्रपक रहि व्यस काजुल धूब नुपियारि : अहाँ ययसमे
हमारे घर में मरति पैर रहि खुब मयवून कारी रहैक अँखियः न न
हमारे घर में नहि रहैक नुहा रहैक कगे घूटा सा अपन कोइनासं कारी
हमारे घर में रहि नहि अँखि पाच खुब मरि रहैक अँ मरु इतको बहिरियरक
हमारे घर में रहैक ।

[illegible]

मन्त्रा कर्तव्ये आपत्ति नैहरसं । मरि बाट कनैठ कायलि । राम आ
— कर्मके लखने करज जगते भोजन बहइनाथ चौधरी वैदिक तपस् विदकल
कर्तव्य कर्मका हुन्छा नहि मोक्षदात्री चण्डिका गान्धर्व पुनि फालौन

इसलियन आशा करने लगे। इन इतने धीरे से आँखें नहीं उठाते
आँखें गले । आशाक आँखों में भी आँखें ।

गोरी चौधरी अपने अँधेरे में उठि बैलघन मगल गे। सपना बंधे उठे
तना करे। लिये उठा अपने बड़े हँसि। आशाक आँखें नहीं उठाते।
श्रीधराइन लहम कहलिन। हलम बड़े रीति बँधे। अहाँ बड़े हँसि
फेर नहि कहल कहलिन ।

फेर अधिक नहि गलि अपने रीति कहलिन। आपन अधिक कहलिन
घंटे कऽ बड़ल छलिन। आशाक विवेक लहलिन। आपन तें बंधे बंधे
मंदिरमें आँखें घंटे कऽ पल्लव। अहाँनाथ चौधरी न आँखें कहलिन।
ने अपने स्त्रीकेँ जाम हँसि ।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
गोरी चौधरीइन दुलारमें कहलिन। आशाक पूर्व जन्मक बंधे हँसि।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशाक आँखों में आँखें भी आँखें ।

आशाक मुँह आँखों में आँखें भी आँखें । आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशाक आँखों में आँखें भी आँखें ।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

आशा हँसि। आपन रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।
लहलिन। आपन सपना रीति लहलिन। आपन भानुमें सपना कहलिन।

सौभाग्य: अनुसूचित आ आरक्षण मन्त्रालय के तहत कक्षाएं सजाई गई हैं।
करवाये जाते हैं।

नविशः दशमं पठ्यः विगतः कथयि, आरः तनिकः तदि
गलः कथयि नै इ तनिकः नदि नै नतनयः नै नतनयः नै नतनयः
दशः तदि तदि नै नतनयः नै नतनयः नै नतनयः
स्कूलः पठ्यः ।

पहलूनय तीभंगी इहें नकासिन रीत लगीं रीत पडा इहें-----
 लोका मय भंगी पैच रीत नकाक घायलन रीत पैच एन कउन रीत नकाक
 भंगीत हुतेक नऽ कैसु पैचुन इहका बजलारेक पैच नकाक हुत

भास्कर पाणि अफनैक हांस्तरां तत्र आशक्तं चैव भवति च विना
खलम पुनः पशुदत्तच बोधः । तत्र एकैकं सन्ध्यं "जात्र कलः" ह-
विशान कलपं बद्ध्वा बद्ध्वा गच्छात्कलक क्षेपणं कृतं छै आह-
पुनः अनिशान शुक कः क्षेपणं "जात्र ह, तत्र सन्ध्यं कलः सन्ध्यं कलः
सन्ध्यं एकसन्ध्यं क्षेपणं कलपं बद्ध्वा बद्ध्वा गच्छात्कलक क्षेपणं कृतं छै आह-

सम्पूर्ण बुद्धिनिर्धार जगत् सिद्धोक्त धर्म की भाँति है। यह निर्णय है -
H.C. जहाँकि गण है। नवक संस्कृत देश और यहाँ छात्रों, गुरु

भास्करा स्वयं गंतैक आ आगतक अर्थछमे फेर लायी नेरे सं सं
गंतैक एकद्विज बृहते जेत जेत पर्यन्त कथयै, उ अंगणम एकद्विज सं सं
पुतहु आ सोम सन पौत देने गैलचिद ।

[illegible]

इस रजःपरा शीलने सिंहआस छत्तेक रास रम्याक काठली लग रहैच
 २५ इ नखन बाधक रम्याक कानुलंगी बहाइत दसत्सक रास दिन बाहउ
 ३५ इलायतली कालिल अपन धियहिब अपक रास शीतल गिलास लेने बैसन
 ४५ इति हुनका रम्याक काठलीने हुनका बहाइत राख विचित्र दश ५५
 ५५ इति हुनका बाहउ इति हुनक एक रास घनेक परखी रम्या बहार धौक
 ६५ इति हुनका इति हुनक ५५ रास १ पंचनक योतमे बाधक लहुरि अयलेक न
 ७५ इति हुनका दधि दौडिक अपन बापाक पकडिक चोरि दीअ धृदा अ
 ८५ इति हुनका एकमे रगिली हुनहनउत बाहउ ५५ रास

अशावे अर्थप्रथम नर नाग छत्तानि इतरबनिय काउमे जा रथ्याके छतीस
 = नुकावे कि भलनि अथ जामगामरस दखैत रहलाह आ ओखिमे बगबग
 = फेकैत रहलनि ।

उदित दन्तैः गहि जीह्व लब्ध अणुः । रक्तनाक आ प्रतिवाद कण्ठ्याक
 ५२२ गौर दाह्युत कुंठ नाल्लभाष जौधरो कई छयिथ चुप रहू अहाँ
 दह्युत कऊथ दह्युत गहि गिअ बयौबन्धक कटोक मुँठ पैथ पैथ अत फहलदन
 ५२३ जाले

[illegible]

महदनाथ चौधरी डाक ठेका देने रहथिन । मौत-मौत बेहम का देवे
 जात अके हन पठात मे हमरा कुकु काज सपन औकाति बिभनि गेल
 गेल ५५ पंडित अंडे बज पुरहु दार दुग यथ प्रितु अरि अहोमे रहू बांसरा
 न नज्ज-ज्ज आशिरा नहि करत । इमर काजमे देखल देब तऽ एहि बयसमे ओ सप
 न । जी धन अलि ।

यत् तत्र धूलं दंड आ ग्लानसौ भरल गूँत चने नुकायनल रहनीह अशरा
नर लंडो जयबाक एगहसे बडि डोनि । रोम दिख तकले बडि जानि

कविता ॥ जयलाल कांतारो ॥ उपचार ॥ आना किशक पडल हो
॥ नव नव हसक येन खुल्ल पंढ कक ॥ हमर इज्जति गेल ॥ आब धरत

गर्भ ग्राहक विद्युत्तक इन्जिनियर आहुता मध्य निर आरुत रहैत छैक कए
बौचल शैलीक दिन स आरुधर गम्भार ते कय गम शैली कहैत छैक इयन आरु कय
आधिकतम लुईबाक छन ग्राहक विद्युत्तक इन्जिनियर जेते केलक शैलीक
मालिकक ज्ञान तऽ नय दिअ हुनकर सुधारित विद्युत्तक वीरि आरु नुक स
कृपाते आरुदेत रहैत अछि ।

प्रेमका आश्रय में ही रहनी । सपना में बसनेका आनंद नैकाला
आश्रय में ही आनंद रहनी ।

अस्य फेर सम्यक् योर हुनके अधिकमे कवि गेन कृतनि । रघु
आसारापर आदिना स्तम्भन ताहे खाने जनका अश्वमे नाम बहे हुनके
बलवानकऽ बहराम नामे कक्षा वीधरात्मक अर्जुन अन्तर गेन कृतनि
खनि पडलैक, सहाय मे देखसनि को

बड़े कान बाद उठे, आदि धनी, अपने कठलामें छिड़े हुए (= पहन छलाह छहडनीय जोधने आलाकें लोखरामें जग कानें शानकें मयु, स्वरूप छ, पलंगाम यमों मित हा भुषणें मुँस धुँक हकक डहल धल्ले के से नहि कउ बेलनि । मुँसय एतल बहलन्ति- ककर

महानाथ जीवरोक काननं आं शब्द परिरक्त गेलनि । एह कानं आज्ञा
उठेननि । एत इहल सनाह । पदल सनाह । मजा पुढां थगदरावन अउं इह
लग ठाकि रंलाह । आ बेर बेर बजली- कुकुर ।

मरविषय मन्त्रनाथ चौधरी उक्त गति भेलथि । अन्त्येष्ट पढन पत्र-
अभिध बगलवन्त कोठारीम अपन बिर्छेनपर बलि गेलोथ ।

शक्ति न्यायिकता पहलू सेन चयन केन्द्र के निम्न व्यक्तियों को देना होगा।
सचिवक सभ्यता भील-पुत्री है। गेल जलपे।

प्राक् प्रयोग गिनेन छै॥ प्रत्येक जेना प्रयोग छै॥ एत प्रयोग
सांझ सनैक प्रयोग केन मप्र-११ प्रयोग छै॥ एत प्रयोग
बकरा मोन सांझ जेना प्रयोग केन प्रयोग छै॥ एत प्रयोग
छै॥ एत प्रयोग जेना प्रयोग केन प्रयोग छै॥ एत प्रयोग
मोन प्रयोग ।

पहिले उलेबनासो सागत १५ मेल छल ओ । खून के देवाक इच्छा
छलैक । पहरि राति गाममे जोइइइ रहल छल ओही उलेबनासो ।

ज्ञान कृत । अपने कांठलासे नेपाली कक्षा हाथमे लऽ लेने कृत फेर अपन
गदर जस घरि अद्यावत कृत ।

बिहीन खाली छलैक । यीपान्तर गम्भा अपिनायुन छलैक । जामल छलैक
 क' जवन से कनक मस्किता । आकर इच्छा छैनै ज' गहिना सुतलमे परदिन उका
 भू । हाथ लीनवा गलैक धुन खला नहि धनैक । कता आकर तबल हाममे
 ब्रह्मरूप छलैक । ओ पडाकड फेर अपन कोठलीमे आबि गेल ।

बड़ा कालक बल फी जयन शयनकक्ष द्वि गत अइ बा हाथमे कता
 नर हतेज रम्भा ओंकिना ओंघरयति छलैक संयोजनस भुचिन लग वैम गल,
 लङ्का डिङ्गजयन कंशक संयोजक आकर पीत धपयक इबाक पुँड कान
 दैशकक दुनार कन्बाक इच्छा भेलैक मुदा ओंकर हत्य यहि उठलैक, जेना लोच
 न न होइ पुन इगक हथ खोजि ललक । लोचक जेना कानो असर
 उठल हथ यहि जा रहल छलैक मौसं दह घुणारी क्षभर गतलैक
 अर्थक बैसि रहल चारि डंग पाछाँ दैटि पेल बना लांकर हाहा लपशं करतैक
 न बुझा जयते अपदिइ एउ जायत आं पड़क अथन कोऊनी आयउ चाहैत
 जे नुन ये मण्डिमे सटि गलैक रम्भा उनाटक, चित्त भइ गलैक आकृति
 नित भाने मुदा मने उन्का एउ गल छलैक जेना संभटा शान्ति कया मूड लउक
 लोच नर हर दहसं गिह कज्जर आ परचातापक जागिम बैल ओंखिमे
 बज्जर करैत नरे । सखिन पड़ाय चाहलक रम्भाक छोरा धरायश उठलैक हमरा
 लो विऊउ जनस ।

[illegible]

श्री मुक्तिकः अपन कालोमें अन्वय रम्या लग जाय चाहय श्रीकर स्पर्श कर चाहय रम्याक विषय पुनपर नानो धुर नगैक निरुद्ध आकृतिपर फेर रम्याक अन्वय मूदा लखन सचिन जोगरी चित्काग करैत रक्ता जाय मूर्धन करवाक कहस गहि हाँ । नगैक बना काना अर्धवित्त अर्धमृध श्रीज राखान हाँ । लखन काङ्गलोमें जो कर-बेर अण्ड कोटस्थीमे जाय अ-चर बेग पदा आबय । रङ्गक फेर मुरि अन्वय । स्पर्श रेल बड़ल हाव भरपरकः रति गाह ।

रम्यः तं जवज्य आह किन्ना बाग न्हम हेवं इना एतक दया पना
ककर होतै ?

कतार कानून लगेत छल- "दवा-पत्रक रहितक...तउ ऐन बान हिं
जाकर 'काम कतहु एहन कामा छान्त ऐन अबरम कानो अन्निक दुखन छ
होतक सचिन बाबू ठीके कहैत छथिन ।

श्रीकृत इति नरि ब्रह्माद ऐक्यं ते कान दुस्तु जैव रहस्यं कनियं कं
मुन्यः घा वर ऐक्य बाया मुत नरि ऐक्य तहिय अवन कान इतक
लेल कवी ऐनः कान दैत अलि अवन ?

बतहाकें क बूझ क, अहो क ज गम्प किरक ज्ञान देन छैक ?
महायत्न फोस छैक बतहा कान बूझैक क ज्ञान दसु छैक बतहाकें क

बताओ और कहि चुकल छैक- "अहाँक" कोन कमी देने छथि नाहूँ।
 ई अघलाह चीज हाँड़ि लिखत ई जकरा य सोच भयन छैक उठत छै। अहाँक कोन
 कमी हमत कहूँ अय्यन दुख, ई अय्यन कोन न कइ अहाँक दुःख जव नहि
 देन देखय मनुष्यक कोन चार ?"

बहिष्कार बतहासक मनो व्यवसायपर दण्ड सहि शकैक... हारनं चले गच्छेत् ।
 भजिन अधिकार कांतात्मानं ध्याय दत्त दैक सद्गुरुमै सहि उठेत् ह...
 सहि दत्त मन्त्रोक्ते ।”

डा. रमनाथ अश्विनी का वैह ५५०० रुपये बचक उठे त रि. ५०००
रमनाथ "

जिज्ञा देवकः साधस नहि कलैक मथिभ्ये । चेष्टा यो करैत लल ।
 निश्चयक सं जाइत चुल न म्याक वीरप संति सुखी जक । पठ
 आकरा जिज्ञा लैक मुठा आकरा ५ पठाने जाइत हरि ५ पठाने जाइत
 ललैक रपशे नैन उल्ल नय लय प जाइत चुलैक आ बिछोप न संति
 शोकरा समवित्र लल अमरुच लागत ललैत ललैक ।

यास्कर याम्ये किञ्च वैश्वेदिन सङ्गि मंगल शुद्ध भवे ।

किरणलक्ष्य प्रकृति बहू विन्ध्य प्रकृति गोल गोल । पर्वतलक्ष्य अंगुली अंगुली ॥

॥ नमः शिवाय ॥ किन्तु इन्द्रास्य मन्त्राणां विना शुक्रेण हवलीनां प्रवेशः कर्तव्यः ॥
॥ अथ किञ्चिद् विद्वद्भिर्वाक्यं साहाय्याय लघुः लघुः ॥

सगजनां माय, सौजे सखकं गांठु ललक ॥ बाबूजोकं प्रणाम जां आथल
 २ बाबूज क सखकं गांठु ललक पैदा भइरि रहि छलकिन सपन कातलीम
 ३- तुइ विरणक कोरासै ललक कइ एवा बाबि ठठलैक- एण्ड ॥

उपरोक्त आग बिला गैलैक । कागस राज। छलैक । भास्कसक" सौम हवली
काल कऽ हौम शशलैक

किरणोंक प्रसन्नताक अन्त गेह छलैक । भास्वर आबि गेल छलैक आ
सुन्दर सुखक आ आस्थीये

आंकर तन्मयोंक अन्त भटि छलैक । आंकर म्येनक आहत अभिमान
छलैक हन छलैक । आंकर बं बं चिन्तुं देनापर भास्कर चुप्यो सघने जलैक ।
जानैक । आंकर नांन दन छलैक । अछबामे मय नौ टिन पछिन चुप्यो तोड़पछी
ह जखकी छ जैकिपल देलकै ।

॥ अथ कौटिल्यस्य मनुष्येति शब्दे भौतिकः । एतत्परं भविष्यति भौतिकः ॥
॥ अथ कौटिल्यस्य मनुष्येति शब्दे भौतिकः । एतत्परं भविष्यति भौतिकः ॥

पायकजो कोण उत्तर न्हि फुरातेंक शुभ रात्र हीक ब्रह्मपूजेक खालें
 "क" हेंचें जालेंक दुलारमै सुबेन रहलेंक सध ग्राम नैस देह : पवित्र हा
 इत आन बांग रेह अकडन रहलेंक किरण फेर निहार जालेंक शिबरेत देहमै
 जांज जेक ओ फलपुसाक जालेंक बहु हाथियार घडक्य आयल छी : के
 निबं कल ३ सप २१"

पाठ्यक्रम, दुर्गम, अज्ञान, कहानी, इन एक ही शब्दों में यहाँ

कणक स्वयं आहूत किया। गैलिक, खुली हमुहें टा किरक राह
 ३ वं अधि से तू सही ।

अनन्द शैल धास्कर गण्डीय मुद्राय कहलजै. अहाँ काँना चिन्हबनि
०२३ दस

किरण आकर दहसै तँई ग्लैक आ दोसर दिस तकैत पुरुनकै. कहन

[illegible]

कालेजमें आ पताक बैसकी समय बहुत कम समय हाइन छेकि
आन आन देशक रहलहुन हने जाइन हनेक पातल कालक पन हाइन हनेक
हनेक पहलपरा समय हाइन हनेक अक जालाक पन हाइन हनेक आन
देशक रहलहुन वाणिज्य पन हाइन छेकि पूरा पातल समय हाइन हनेक अक
आ जालिना वृद्ध पन तस तकना तकना बुढापन आ पन हाइन हनेक पन हाइन हनेक
रहल छेकि । ओ जामुनि देशक कोन भागमे नुकसल छेकि ?

[illegible]

पानी बदलते हैं वक़्त बदलते हैं नूतन ज्ञान जल्द ही हमारे पास
रही जायेगी ।

कहिया धरि ? कहिया धरि अन्तर देत हथियार सा अन्तर कहि
आकाशमें काज चतुर्बल रहत ई मध १ कहिया धरि काज मयका हय नर
शापनक नक्कल सहानुभूति आ काना नयाककृत नंदाक इयाकत सोकेत रहत ई
वग २ लकना वा गनपाक औखिम विदाह आ प्रतिहिंसक भवत कहिया अन्तर
प्रतिहिंसा गह आनो विदाह दतमान आकम्याक प्रति विदाह नर काकम्याक
स्यापना लेस विदाह ।

ब्रह्मा विद्वांसः कथमेकैकं ब्रह्मणः सैकं ब्रह्म पुरा सत्कथितं आसीत् ।

[illegible]

इन्ना ओ अंकर प्रत्येक बात एंगेरे भाषे एक बेर फेर प्रेमा पोसी घोन
 दुनरा ओ दबनमें बहान गेल ककरा भंग यह कमलक ककरा किछु नाहि
 जहाजें । सोई बहाना ओंगनो गेल । नेनपनमे अनेको बेर गेल छल । धर तकउमे
 ऊपर चहुँदपा बि भलेक सोझ ओंकर ओंगन पहिचि गेल ओंगन एकदम
 चहुँदपा इना ब्या नोट हल घनम प्रेमा पोसीक कामो यता यह छलनि टारक
 धर माय सलैक । बाँकी तीन दिस खाली । टारसँ तीन काठ घेरल ।
 चहुँदपा घनम दू ट काठनी आ ओंकरे ओसागरपर घनस बात । पछबारी काठ
 दल बजाय भाङ्गा दखन छलैक दु मय कइ बेर एहं ओसागर बैसिक
 क गल जल्ल त पति दहाक जाकी जेहे छलनि अपन लग बैसा
 दुनकरे कलथिन हुनकर बग प्रेमा पोसी अपने । अन्तिम बेर बहान छिरागमनमे
 छल यूँ देखल दइ गेल सैक ओंकर अनिर्योके ।

इन्का घातकता प्रयत्न एकदम मूल उत्प्रेक आठ ठग ठगौनाहं छन
 कइ केर ५५ ठगौनाहं वन कछपक बनागें वं निवृत्तक ठग मउ गलेक
 ५५ ठग एकठ पीढी छसबैठ कहलक- आठ , बैस ।

जुएपर कल घाघ छलैक मैह खुब साफ रहि देखइ । धक्का बैसल
नहि उठैजई बुझाए माएत नहि गलैक व हड्डाक स्त्री छैक वृद्धा ताम राम
अम 'चम' लपल न्नाउजक बाँहपर संह दिखी खुकर पैत गूदा ओइ
सैह नूजक छोट छोट चंचल लम्हें ओकर गोर साकुति झलकि रहल छलैक ।
अथर नैक मंजल धास्कर प्रशांताधुनिक देखइ रहि गेल पर अपने लजाकऽ
दंड ह्यो लेतक म एलकै- हेम पीसी नहि छबि पीजी ?

ब्रह्माक म्नां ताथर्न उग्रम कपलकै ३० अंक प्रपुर्ण सुखीय कान्तं
 गंत दिव दक्षिण ओरध उग्र औगम सुखी गेन आ इजोन पुनैक कपलकै
 किञ्च सुख नहै कपलकै । एकदम अन्तःकरण । फल आसतं आसतं समस्त फलान्
 धनकै कपलकै मन्त्रिण प्रण प्रणकै बसन्तकै आसतं ६३ दृष्टकै रंज
 कनो वम्व नहै एकदम वाङ्मय मोक्ष माध कपल कपल म्नां गणपति
 छायां तापमं प्राम्कै जगमं जगमं ७३ ४ को प्रेजो दन दक्षिण किञ्च
 म्नां चिद्यमि प्रेम पीमिकै ११

बड़ा घरे आसान आ सोंने फार्म नॉक ११५ बयलेंह बसुवा मंत्रीक आँखें
अविस्था लैंक । अर दहि हेंद लेंक

भोग्य नेना बह रिक् कयने छलीक ।

मुँहा छोटलक, गँह गेल छीन्ह जवन गगक एक मुँहा मुँहा सभ
एक लल गँह छलैक जवन चित्त ओकरा नहि छलैक चरम बाकलि बरह
सानुआक चित्त ओकरा नहि छलैक मुँहा जबाघ रन ओकरा कान पगलक
कोना देखल बलैक ओकर भूख सुखायल गँह ?

बाणक बहलम रखल छैक मम गोन नामसँ ऊपर बलैक जगल दिन
खेपलक अछि सँ श्री बुझलैक भाँक / पोरे उठि बल्लो भट्टक गँह दूल्ह
सजाइ हुनका बाढलम स्नान करीनाइ : मुँहा नहि घनि बहलम । काना बल्ले क
हुनकर पेलम दूल्ह छल ओ दू श्री अबाध ननाक पदम अपन सुखे पति पति
घरे घर बायल कुटाइ पिसाइ करइ पतिम मात काब, कण्ह लना सुखे दल
ककरा मिलाइ कऽ दन ककरा किछु कुटे दँइ एष काब कऽ तेल छल सभ
ओ ठखन गँह चढ़लप एक बर घनि जौन अवेन छल ओषा ए एक पल
भात का हाथमे कनेम घाँते राने ओषा लेन दूगोक गुवा हाँडल छलैक

जाइ सँहा नहि मलैक मम जौन पुरि आयल ककरा खल्ल नहि छलैक
जाइ ओकरा छलैक सँ दू एकटा बंगरी कर निवेदन पऽ गलैक किछु
देबाक चर्चे गँह कवलकें भ्राजयल छँइ ओषा घरमे छलैक मम अपन दूल्ह
पछाँइ घन छलैक लालकक, दू चाट पऽ दनकें खाने दोहरा गँह ओषा
वखल गेलैक

कनेत कनेत छँइ बँहल पऽ कलैक ककरा लर कहुक जौन अल
कनेत दुलम मलम कवलकें मुँहा कनेत मलैक छँइ छनिने लल कनेत न
खाय लेल नहि भोगलक । निनोमे ओकर दिवुकी बारी छलैक ।

आ मुँहाक छाने फाटल लालक कहल पलैक न, एतन छँथन ईगल
कहिओ घुनिक ओनैक एकर बाप जग नहि छलैक छलैक एकरा एकर
जिम्मेदारी ओषा दिन जौन अदि कने गलैक माझर एषो विन नहि कन
भीता ब्रह्मा पुरि आजात आ देवा पौमो मेकें एष इदनाइ आइ पल्लक
छहिने बाँझ गल रहैक मुँहा तैय नहि जौन किछक सभ रिज अर लक
लागल गँहक ममिक छँइइपे दैक मुँहा रिज ए रिज बिनेन गलैक ओ
ब्रह्मा नहि छुटलैक ओषा दिन जखन भान्कर ओषा मेकल दैक छँइक
कतहु बाहर खंभाइत छलैक ओषा कन घाफ्फाकें दखलकें जवन मरई
पुनलक ई कें छलघिन माय । मरना जौन किछक ओषा मेकल छँइक ३ न
हवेलोक छलथिन ।

मुँहा कहलकें रजनीएक जौन मुँहा ताँहा बाबूक दोहरा छथिन ।

छँइक दूल्हा गलैक तौ रिजक कहन नै नाय जे बाबूक लऽ
अथिन । नहि बनि कतऽ लऽ गेलनि सभ ?

मुँहा ओषा काँध लेन कहलकें ' कहलिन अछि चौआ ई अबस
छँइ रघुन ठाँहर बाबूकें'

आ लऽ मुँहा नेनाकें फल्लबाक लल सँ कहन छलैक मुँहा । भाँकरक
छँइ ओषा जौनक पल छलैक एत पल जाग बल्ले गेल छलैक जवन
छँइ ललिन हुनका ई

रिज बिनेन सभगल चाँति गलैक ब्रह्मा गँह छुटलैक । नेना खाइ लेन
कि कनेत छलैक आ ओषा बयले कट लला रैनकें ।

मुँहाक मम इन्टर क लल छलैक दू आँगसँ माँगि पुरि आनलि
जऽ नम सभर ख लल छलैक जक जतना मुँहा आँगक अरुनबा गाससँ
इन्टर मरनवा ललक लगीसँ । ललकें काँटि ओषा ललक आ नून पिया
नलकें सुआ अथलिन ।

छँइ ओषा लल छलैक गँह पऽ गेल छलैक मुँहा जग दभलै
जग जे बाक छल ओषा पल्ल दनकें ओषा अपन दय ओ अमल अरुनबा
इन्टर ललकें आइ इन्टर छल जे बाक कान्ह अबस भात राति दनकें

छँइ जतु नै बजलकें नुपचाप खाव लालकें मुँहाक ओषासँ नो
कऽ ललैक ।

छँइ ललकें ललकें नै पकल छँइ गल हम नहि कि करबौ
कहिओ आब । कने नहि ।

मुँहा आ जगल माँगि आ बयकें कजससँ साँट लेलक हमहो
इन्टर छँइ । ममहो लल जगलें मुँहायल ननाक पीठपर चाट धारनो डाय दूटि
जग हम ।

छँइक मुँहाक ओषा जल्लो जल्लो चारि कोर खा लेनकें आ कहलकें
लल पट घरी गेल पल, अब ठोहू खा ले ।

अपन हस जौनकें ललकें मुँहाक ओषाक नो आ नहि गलैक
ललकें कनेत दू कोर खा लेनकें ओषा, हसल अरुनबा लेनकें सभ ।

कांनो उतर रहि ब्रह्म किन्तु थु गेल भई किए न छै ता न मान । हम आबि गेलियै ।'

तैयो कांनो उतर रहि ठठवडाकऽ मीन देह छली हलकै । सट हसन देह निम्बाग ब्रह्म नन्द चरकल कयलक बना कया भला गति रहल होइ

मुधा दौडसि अणलैक पाचक देहपन कुकि गलैक उठयु न । 'बुद्ध हिनकर बेठा घुरि अमलधिन, किछु कहधिन नहि हिन्का ।'

प्रभाक' आब कइगामे किछु कहबाक नहि छलनि मुधा हुनका तैयो नर शकछारि काय भगवो 'ने न नहि हजनि बजयु ई इ ल. थय' अकलक देन काइ छधि हमरा गामक लोक ओ हिनकर बेटा कहनाह के किछुअ नै नटे सम्भारि एकलियनि हिनका हिनका बयक' का बचक देखनि हम ? हमर फेक मैथ दण्ड नहि दधु बाजयु किछुअ

बजानहारि १५ छलार नहि भधधिन नल गुण १५ इन छलार न लपल बुझिहो गोट पर जैतधिन अति अति अहुँ नब हल इच्छा न किछु खाना हम बज्याक' जाहि देखैक आकरा जाहि आ कय पति अछि हल क करि छो हम

ओ चाम छनीह आ समधिन चुप रह जाना इय गेहो मुधा किछु क. कानि रहल छलार ' ई कुटिल गदि घेलनि हिनका हमर अछि न पहरतिक ई दुबाम १५ फलक ३ किछु पति तन गलक धरि अकलक

बह्य मरु कान नालन अहो इयधौ धर रहि का इयधौ इय गतिमे । हमर ऐछि लेन न बधि अइत पाय किरक १ पट जग इयधौ गल नाथ ओइ माग नुडल पदधि छलि ज हमर लोकाज

मुधा आर गाम' कान लमलक स क जान ऐछिहो हल न न ज पाचक' आन अहोइ बनल दखनि न गतिधेन कार कान ५ इय पतक पैथ भयह निगुल छल हमर भाव अहोविधु नाव १३ चरक अनेनध

बह्य उता ललकै कान १५ यय कांनो खुलेर छलैक अहोइ क निजोय शरीर जाइ जाकर कांनो छलैक वा न अहोइ गल ३ छलैक आकरा विधरि हमरा होइत गतिधेन एतक पैथ कयने छलैक अहोइ अपन पाथक' गमन छल अहोइ अहोइ कफारमे । मुधा अहोइ अहोइ

अहोइ गल मात नग दलैक ओ नहि बज्य इयधौ अपन पाचक' आन मुधा मुलमोचन नग पाइ दलकै ज लम कस गल मुधा बैसि यलैक नग आनमे गैर यय गल छलैक मुधा अपन ययमे दिस तकिताहें ईय गेह । अहोइ ओछिमे फेर कांनो हिनक ज्वाला सपलपा रहल छलैक

अहो चौधराइन अहो पांताक' खेता रहल छलीह ।

जैत १५ गेल छलैक । सोध्र नहि राति १५ गेल छलैक इलफल चह्य मुध सगल गैक आकाशमे । चन्द्रमा नहि पांता अहोइ किछु नो निकलि न इय न शकिकऽ रहने छलधिन । पाचक घरेम छलनि किरणीक' ओपहर पठा दन छलधिन बह मीक लागि रहल छलनि हुनका अहोअहो छंदका बेडा आयल छलनि मम किछु बह नोक लागि रहल छलनि हवलोक आ स्वप्न अपन ओछिइ कलैक दखल ओ इयकान स्थल हुनका बिधरि गल छलनि मांन नहि राखऽ गलेन छलनि ओइय

मेन हुनका ओछिइ किछु न रहैत छनि विवस्सा पिहानी तऽ आर नहि जवत आ अहोइक' तऽ पितागहय गेहसस कहलधिन मम दिन आव ओ अपन पितागह बज गल छलीह ओ गजो इह भयमे छलनि

किछु न कलकान तऽ हुनू टांग पमांन ललनि आ ओहपर गवाक' बैस हुनू दध बज्यो झाकेत कइत नगलधिन

हालि दइरी

भरोज दइरी

बह्य पोखरी य कलैक पछरी ?

राज चौधम टोकलकनि ' काकर बाबाक पोखरि छैक बाबो ? '

अहो चौधराइन सगल कहलधिन तोहर बाबाक

ओ दध १५ सुँठ दलकनि हमर बाबाक' क दलकनि पोखरि ?

अहो चौधराइन अहो सगल कहलधिन हुनकर बाबा ।

रावा फेर पड़न कऽ दलकनि आ हुनकर शकक के दलकनि बावो

आपन चौधराइन कहऽ ज सन उन्नयिन बे "हुनकर बाबा", कि आँगनमे गरजत महंन्दनाथ तेषरो बैसनाह । गोन निजरा अपन सुपुत्र भण्डक कावो एक बंश अइ दिन नाक कटौलनि स एकटा पुर पैर अगिनय जलि स पहि गये । आब दाका बंश आकर पैराका बसल छथि । जमानि दिअ इन्तज्ज नम मभक कयल भौकलपुज" धुत मोकल जगनह आ छोथ कन मभक देख-पुछ १ परोनक ठगारक बगलह । अपन औकाति की छनि ?

भास्कर काटलांमे बहर जनि त किछु केहीत छामुं कबूत

महंन्द चौधरी अक्का डगिनाह आ नरनै गज ललकह । ईश कटनह अइ हवलाक नाक ताहा न । ते होय किछि जन्म ननयनई । ते आनक दू दनिआह रे पुबंइ हंतह । मुदा पहि निश्चिक, मुदा बहरलह ता अपन माय बापकें भागि देब बलाकें दण्ड की अघनह । आकर इहोपई छह पनहक

भास्कर हर्षित हिन बाजल कहक बमानले स लेलेक बाबूत

महंन्द चौधरी अपन मरोप मुडकभाह । छिनि निजरा अपन मुअक हल । बेरा इहलन स । सन छथि वन अपन कत पाव छनि गन हर्षित । ज जग चल जा पटना तै । तोर गपमे रहबक कोनो काज नहि छ । वो गेह ड अमोनरिक काज बुझा बोस ।

भास्कर बह देखई कलकई । बसि बघब बाबूतें हमार न सलक अछि । छुटनमे सानि गन रही । हमार बुझत छथि रे हम जयंत छे । का कहक नहि छौ । मुदा ई नहि बुझत छन हमारे बुनेयय हमार आनर सन की लपेत अछि अलौलाकसिके ।"

महंन्द चौधरी कने नय पहनाह- "सै कछन कहलिअइ हय ? अपन प छे । सखत जा मुदा अरब बच्चा नहि छे । खुसो बाजलें काज नाह चने । कहत हमर अपमान कयलक कम पुआकें गांरि जगनक सकल कन दुइटा कनन दलहक ले ? हमर अपमान छेहर अपमान नहि सेतह ?"

भास्कर दुबतापूवक कहनकै । अबास घन । मुदा का इराप नहि ह । जइ हवलीमे आकर पावक अधपान पैमैक । आकर इज्जत नून गनैक । ज अगिनय ककरो माथा जगन स । सकैत छलैक । कहत सन सन दइ इहो मुठक कंसपे पठ दलियैक आकर जहल । नय दुख आ अपमानसै बनि

वा लेह । जो वन अरब बलाक मारे रहल छैक । ओकरा छाडाकी ? हम कोनो कलैक कयने छी ? जही कह बाबूती । मय सोहो बाब ।"

माय किछु रे बजलैक । मुदा बाप गरज उठनिनि । " रे ताँ हमारो पुलैत छ । एहन काज करी आत कयन रोह । गदनि छापवा मेने रहितियैक

भास्कर गदनि हुका रलकै । नइ गदनि कतबा दिअ । बाबूती । मुदा जा का जवत छे । अन्तय हमरामे बलास नहि हैत । कय कय बाबूती आब बहुत भेल ई सप खेल । युग बदलि गेल छैक । कावो गुणम परोनकें भरोपल नीक काज नहि कहल गेलैक अछि । हमर अइ आत्मतानिसै बंश बाबूत । पैराकें लहल । जिनक स प्रणय करे छी । न हनर आनरक पात्र छी तिनकर कमेप । नय न देखक ताह । एहन किछु न करथि अलकनि नाहिमे भूही नहि ववा भको हय ।

माय ओकरा ठेगिकऽ हेटऽ लगलैक- " जा भर जा बाप पितैक मुद नो नयन

सला पहिले छे ।" वन गन छुभैक घाय लग । आकर हाथ एकदि किगणे जय बजलैकें बाह्य अछि गन छनि । गम मरो आभरापर आब गन छनि

आँगनमे बरस कोन महंन्दनाथ चौधरी छह छलाह- "अही दिन लल लल गेह पटना छह । अइ ताँ बापक मुहपर कम कुकपेक ज्ञान बघारि रहल छ । बलास इरबक एकटा नम हाड छैक । पा करहमा एहन बात आन कि अन्तय न । जमाने शुभास जोक दुनियामे नहि पयतह । छनि जा पारे नह । नय न । ज छे गि निश्चिक । नय मयवाक काज नहि छ । हवली, कुल छलदमक मयदाके नष्ट कऽ देलह तै ।"

भास्कर गद लागिकऽ छह स गेल- लोक छै बाबूत, कल बलव = हन । मुद नहि इरबयब बाघि नाह निखरि अही । मुदा विशवास छे । जे कनह कुलक मयदा इरबक मयदा नहि नहइ हय । अन्तय किछु नह भलासै । सय सय लइलामे कुलक मयदा बदेत छैक । नहि नहि छैक ।

भास्कर अपन कांठलोमे चल गेल । आँगनमे तामसे धामयह महंन्दनाथ चौधरी आ सकपकामल आपन चौधराइन छह छलीह ।

किना डीरन काटनानि गन । माय हुन हाथसै एकडन दिखीनय बैसन

उत्तम पाठ्यक्रम : शिक्षण तथा शोध कलाओं के दार्शनिक अन्तर्गत पाठ्यक्रम के विकास में

धातुका मुद्रा ऐतिहासिक आर्थिक विचारों के लिए विस्तृत दृष्टिकोण है। इसमें कहा गया है कि एक मुद्रा केवल एक ही चीज को मापने के लिए नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा मापक है जो एक ही चीज को मापने के लिए है।

किरण तम जैसे कहलकै मनी, नहि रहत कोनो मयक । अहिक
माय बाबु लोभ भैया भौजो छाँच तमसाक । किन्तु एन रूप सम्बन्ध दूर नहै ।

भारत के शाल हाइत कतलकै सम्बन्ध मटि मृग घन रे मृगकै
किसु न बाजन सम्पर्क न हुत तः एतन्क नाकः बजायसै नरा भन्त्यब युग
आयत ।

किरण सम्मोदितार्थे प्रथम कवचकै- एतुका नौक खोजवर्म प्रत्यक्ष
 जगत् मुदा अधस्ताद काज नऽ गम ग्राम हाउत ऐक आनहु पै पहा ज्ञान
 अन्तरात्मा नहि किछ कहत ?

शास्त्र अग्रहण जहाँ बाजल तबुन को कर हय । अहो कर ॥
मनहरी अकर बांध मोहोहो कर जहाँ किन । किन जहाँ जहाँ न कर
शास्त्र भुकर दिव । बाहू पौ कहनहीं तबुन बिमरि बाह ।

‘मुदा सहीं कइ किरण ! अहाके’ (अहंकार) दंतमये कांनो अस्वय मउ
हमपासै ?”

"से कहान कहलई हय ? हय तऽ खतो इहू कहैत जे से वच ।
कहालनि से बिसरि कहत । अंत श्रेष्ठ ब्रह्मि, हुनका अधिकार छनि ।"

आहो अधिकारसे आइ धरि हमर मुँह बन्द करैत छायाल छथि । अउ
 जसगढ़ पः गेल कहीं नः निखलने ही अपन चन्दादे इमर जसगढ़ बन्दैत
 गेलौत सः अहाँ रहि निखलहुँ कहवा रहि कयलहुँ बाकी कहन सोय जे
 उ अन्धाय अर्पणिक" ॥ योकाग दैत छैक ओकर नि गरी धरि, दह सोय

सं० २००० भ० एडुत ०००० भ० गडत किण्ण ०००० सपय मयक्ष दखि
गन ०० ०००० गेय ०००० किण्ण

किराजकीं दर होना: सवालक- "ई को सभ भाजि रहत छी ? किहु न
हेर नैनमें एतु मान प्रिया करू

॥३॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ हमारे शील स्थिर जांचे किण ! चाहे हम
हमारे ।

[illegible]

येहारी मउ चुकम जूनैक वाय कांठस्थाने तयनाथिन. जिद गहि करऽ
का चउ गौह ह। एमा गनि और गमोह, किऽयाकमं शरि रुवि वा। कने
उत उरैगल का देलहक जे काने उपपस्थ भैलैक वा नहि।

भास्कर असाई पाठक पुँह तकीत 'हृष' क अहैत हूँक जे अइ हवन्तीमे
न लेऊ हउ प्रवाह नाथ हेत वैक जकग काना छोर धिवात स्पष्ट रहि कउ
कउ हउ मयक देउ नूँच लेखक पास्कर पाय हाथ पकडैत कैलानधिन. एता
कै कौत उउ, नहि मानवउ लखबे कउकउ ?

नरेंद्र प्रसाद स्वतः आशीर्वाद र संगम स्थल जं भक्तिक बाधया चर्चित स्थली

पुस्तक सौजन्य प्रेम पब्लिक घर दिवस सौजन्य

पञ्चमः श्रावणमसौ पुरातनः तदा यदि भविष्यति तर्हि ।

कांग्रेस में अविभाजित भारत के संघटन सामान सरिया दिअ क्लिपण गांधी ने
इस में आते

भास्कर ताक. आकर पैर नगा प्रणयण भूति कफलकै. तबु तबु
मौजो. कोनो पल्लवाक काज रहै अस्थि साजर बाध दण्ड लेक. कां दण्डो का

अंजन शीर्षे याथ शक्यते कालकौ ने तप र्नाह दक्षै ककरा
ने चर्चनै कर्हिना आञ्ज देविषां न सकदैक मुण तां बचा सकैत छहिक
आञ्ज देवि नकैत छहिक आइ हर्षनांको बचा सकैत छहिक यहि जति किएक
होइ इह मः रात अछि लगेत अछि इन घरो अगिद होमजला कैक
मः दोऊ बड दुखो छछुन परस्पर हुनका इन्द्रियहुन

मम्कर अवाक धैयाईं अइ जा पर गल छति ? सचिन हँसैत बाउन एत आशय नहि कर मम्कर । नशाब नहि छ अइ बहुत दिग्गज कहल छी । तेना कहैत छियौक तपई नमुक्य छी । जनवरगँगा तस मुकान काज इत्य छी तेना मनुक्य छी । समा कऽ गिहँ हमार बिबाई ईहँ हमार कान्की । अउर भीजीकें देखिहँ...ओ निपराध छथि ।

एकय बात पुहु धैया । "माम्करकें भइ धैयाक ई रूप देखि किछु सहस भलैक ।

पुहु नं सचिन अशुक्तताई कहलकै

भीजी एतक सुना छथि आ अहाँक मोन एतक विचल जाइ तखन एन किरक ? आ एकमहि दुखी इत खेत छति आ अहाँ नरगन नांन के छी । एकरा धौकनक उपाय नहि छलैक

सचिन जना काना सांजन पंडे गलैक कहलकै 'आब गँर छलैक मम्कर । एत आबिकऽ समकें भाग्यजन्त बन परैत छैह । इत पर तेन भोगवाडकें भावैत रहलहुँ । ताहा भीजी आबि लेबैक पैरा आ अलिकर एत प्रवर्ति सति नल । चरना माने अँतर औचित्य नकि लेत रहै । तँहार सँवेर निवधार ध्यान गहि सँवजन । तँहँर ध्यान गँल दाम कान चर रहि छल । अही बातस बदेत चल गेलहुँ । ई अने ५ इ हज्जा एतस मुखक, एतस अँतर नमलहुँ तकर अँतर दुख नहि भौछ मम्कर । एत पौकड़ा आरन इहँ निगड हथ पाप हुनका न हबलनि । हथस हथ हमार अँछि ओ अँत जँतस अपनाकें भौ नल छथि आत्मतत्वा क रहल छैह । हुनका बका लिखैत रहल

सचिन एवकें सँमयें बगिअकें धौक गल जेन । अँत मान नहि न छँ भाइ दिस तँकैत रहल । साम्कईक अँतैत एतस महारसति आ इ एतस छलैक । बड़ अँतैत आ सारवान स्वरप कहलकै । अहाँ चिन हँ कह धैया । भीजीकें भाइ हथपाय रहल । मुदा अँतन स किछु दैत छँ हमार । एत अखन हऽ अहाँ लौक...अहाँ देखबनि भीजीकें

सचिन कहल स्वरपें कहलकै । हन हैबाक शिरतें नहि कर । एत नि की देखबनि न अँत हथपाय । ते हुनकर पर पाँस लेल । ते न बड़ हथपाय लेल । नहि ज्ञाने किछु । कछु दिगम लगेत अँछि । सँ अँत । चिन्ता, सप पशपाशमई मुक्ति भँटि बाण हमार

मम्कर अँतें कि हँकै । एत अँत नहि बाजु धैया । अहाँकें मवाक अँछि, हमरायकनिक सँग बीबाक अँछि । अखन आब जाइ छै हम ।

सचिन जना हडकदा ठठलैक- "बाइ छै ? बेस जा

मम्करकें दैग जँत जयेंतें अँत गलैक । दैया जाइ एत किछु कऽ एत छँह । एत दाल आधान आ मिरास सन धैया एकदम अनचिन्ता छलनि । अँत लेन । बड़ भाते धानस काउरसोमं बात आयल । चौखलैक बाहर भीजी छल अँछि । मम्कर पैर छुईत कहलकनि- "बाइ छै भीजी "

गम्मा कनकाम गुप्पुन रहलैक । किछु बुरचुराकऽ अँतोपाद दलकै छँह । फँ स्पष्ट बलैक । 'अपन धैयाक हालति त, देखन जाइ छँ

मम्कर कहलकै । हमरा तऽ हर मऽ गल भीजी । धैया तऽ एत नहि एत । हँरन स्मृति आ वचनसँ धल गेल छल । अँत तऽ चिन्त न जाइत छँह । एत दोसक घटनक सचताप छनि । किछु दिगम टोक मऽ जयति । अहाँ छल गेलनि । ओ हमरा अहाँकें अपन मवाक लेन करैत छल । मुदा हमरा त, बल छल । गल । अँत हुनक हालति सँन अँछि

गम्मा नहि कहै सकलैक । नहि कहै सकलैक । जे कारण प्रप पीसो नहि न सयम अँत । अँत काना गँनक ई हल भल छैक । पा सँघट जँत । एत काना कान पति सँवेर नैक । सँधन न कहि सकैत छैक ककरा नका कान बलि सकलैक ई बात

मम्कर अँतमें बहारा लाल । गलीमें राजा जोग्य कहलैक । पापा अँतें बल्ल गय

किछु नहि दैतकै । एतमें नहि नकदाक साँत गज

अँत चौखलैक कारणकें मना कयलांभन । नँ डोरियो छँहिया नँना । एत अँत जँत गलैक । एत

कहाँकें एक सँध हाथ हिलबऽ गलैक- ठठ पाप...साइ... ।

एतहि आबिकऽ भस्कर हरि बाइत अछि । अगलोक छैह सहबो आ
उठान सगलता मग नभमनक मग नइत अछि आ सगु सगु बहोकरन मग गले
नारुकातसँ लइका लइका मग निहयऽ नगन छलैक अगल आगि छुमसँ लि
ध गलेक तऽ कानिह चोईक कार्यक्रम भक्त

धामकर आगु बदल न लौडा सभक कसएत कायं एहा लगने भुन
हई बाबु तोरे... भरमे बाबो आ एहा फुमसँ छै

गुम्मा पुनि नऽ बह नऽ निकललैक अगलए मात टप रैनको
कमल आगि कऽ घाँ गेबै हो सोन र बाबु घाँ

धामकर छुटैक आगु लरुक सभक सुखैक कुरे घन । लकनक नऽ
पकड़लैक आ दामक कइ। बाब १० होई की बडैत छै

नमर लौडा आकर हुनु हाथ जलैक टनकै । व र बाबु किनह कन र
दवागिरो तथा बुन नहि हनैक दुहा हाथम जलन मुहा लखै

तौनु चारु लौडा युनिधमभिनिदक छलैक कन अन वैचरक । वर
चौहैत छलैक धरक एतब धंघ छलैक एहा पपक धामक क व प
नपत चरक एकटा छोडा अछि गुहिक वजनैक एकरा छौड नऽ
दामर क नहि छौडौ पंगुन जिनह वरा य जलैक एक रचन बाबु
अपन रमन गुप अ कितबज पनो वर

धामकर लैक पल आ एकस छल आ अकरा आ गुर लनैक वर
सधैर जयन अकित जयन दैक रं जयन आ अकरा हटन पन बाबु दै
धरम कोप हल छलैक

भयन पाहरक कलक १३३१ मग गुन लैक वर
आगु मरति गन भस्करा अगि रनकै पन बाबु कइ नइह

आगु पुनिक पन लग अपनैक ई कन बाबु का लन नऽ
अहाँ गुहा अदणतक मूँड नहि लगलक बाँ

धामकर पुनिक अयनकै एग तऽ अकरा सभक भय बाँड हलैक
हाक अंघ सग अकरा टकव नहि अकरा = मरन चरन अयनैक अकरा
सभक जहू कौमस गुहा मरै बडबक ५४ काय छैक अकरा छल वन
लैक टकबक माहम नहि छैक कइ पन ३ निशानेन न छैक ५४

ए २४३३ धाम ५४ मग गल काला नहि छैक ककरो गंठभक्त माहम नहि
छैक दम गंठ म गुहा सग कौमसक अयनैक कयन रहैत अछि आ हजार
नहि हनै सभमन नमोरा एहेन अछि त एग रैव करैक

अगल कन तऽ लख कइलकै सग सभक लक नन लिबैक जहाँ
ज एहेन ज कौन छैक अहाँ नहि चोहैत छिबैक अकर सभक किछुआ
क जँ अछि ३ सभ नम पनक किछुआ भँड ई सभ चकू कृा चलायब
एकर सभक असनी काय छैक

धामकर कैड अविभानत रहल । एतब कइलकै 'भगरा बुन इ बाँड हैत
अकर नवदम बाबु छिगमा कहैत छल कठरी बाबाबोच चागस मम राग
अकर नम छलैक कैड आ सभोत टाकि रंघ करैत छलैक कं थिका कहाँ
ज ए. हमरा नहि कहै छ । व अन्ध आ अन्धिक रंकाश दैक तकरा इ
छल उरदह पडैत छैक

आगलै एकटम बिगडि कइलैक अहाँ रँध उदयब कोनो लखार बर
हम कइ दखै कर एकरा सभम लागि नऽ बंजाय बाब ५३ आयत

अकर उरक अंसा नहि कजलकै आरहा कइ जाइत रहलैक फा
दवागु रं नहि छलैक अकरा लन अकर सभ आ मरु बडित नलैक आइ
नऽ लखन नइत रंछ अस्थिर भऽ गलेक

धामकरकै नहि कवि किएक बिद माग गनैक आइ आगलै लल लुगब
रं हनै ज गुहा सभ आ आ अकरा क लनक आरतीकै कोन कोनैक
= वन

अनौ अन्धक बत नऽ नहि छैक गुनिधमिरी कौमसक हानि
हाने तऽ छैक गुहा लखक अपनता मग रहल छैक सभ छै लखक सभक
छैक बाइल धाँला प्रियन ककरो पाट दैत छैक लाबा धुलिस जवैत
छैक गु जाँ टाक पकडैत छैक मरु लगल मुक्त शक्तिनाला पोषक सभ फा
अर माह अणकै कंटा कौमसम कुरै कौनै ई छैक कालज या युनिधमिरी
वैक कनिय कडाइ भनैक या रंभिकर क दल गनैक या फागन धनैक त झट
हलै बडको जुनुम गुहा लखक पाकी पाकी चिरोह विधायी सभ सेह हन
या अउर अछि दमटा छौडा गट बन्ध क गड भऽ जाइत छैक आ ककरो
कनय लखक मरुग नहि हइत छैक

पास्कल के प्रयोग तब तक सार्वजनिक नहीं हुए थे : अर्थात् रहने के जे काना स्थिति दिनांक दिन छः घण्टा के रहल छैक आ सभ तबका रहल अछि ।

पुलिसा उमरावे देखैत छैक आब । कसो आकर खोपे तऽ घण्टे छैक तऽ कसो छप फाँकि दैत छैक । ओ संवसंभ नैन अछि । किछु करैक तऽ इत संभ पुलिस जलमक खिलफ जलम कहल थ । प्रत्येक आ विमल दिवस पुलिस आधिकारीक निलम्बन आ न्यायिक गौनक ओग छैक । तैयो बलून नहि सदन जाइत छैक गंगा छप खपल खपल पुलिस चौकता जइत छैक तऽ अनिष्टन नहि चलैत छैक । उनकर फायर कौन छैक । बदमाश आ नुकापरी रहैत अछि क निरपराध लोकक जान जाइत छैक, राहगीर घायल होइत अछि ।

आ तैयो जानते अइत छैक चुप रहूँ । कसो कारू माफ थ जइत छैन जे गंगा कान मतलब छऽ अइ न्याय अन्वयार्थ । चुपचाप तऽ बिछुड़ ग ।

पास्कल बाबुजीक बाबू रहि नालकनि अन्वयार्थ बिगडिह क न पतैक । मुदा बड़का अन्तर छैक आनी आ बाबूजीन बाबुजी सदन अइ अन्तर आ अन्वयार्थ बड़ रहल छथिन । अन्तर सुनल जइत अछि आका गौनक रंग सलैक । ओकरा सुनल दिस नहि कस देखऽ चाहैत छलैक ।

प्रती घने आरती गुमसुमे रहलैक । एकरो बर घण्टे ने चलैक । अन्तर बाबू पास्कल देखलैक— बिगडले छब ? बाबुका नौन कमिल ।

आरती हंस तगलैक । ओ लहलु कइत अई खपलक नाल नि पकिर तामन बिगडि गेल । घोर डेन पूई कुलीन रहै आ सँझवन गेन ओम नहि गेल । नू कर मोस्ट खेलकथ बँबी पहर ।

पास्कल नहि कहलकै ३ मूँह तऽ आरतिर कुलीन ललैक । नहि बिलम्ब आरतीक होराप गेल । बड़को ठाँ कल्ल, अइतै पैब कमपडल । नैका अरुन एकदम साहबी ठाँ । बंगलाक बाहर बड़का नमस्ते छलैक । ओ ओ किछ आइ.ए.एस. आरती बाहरप अइ छलैक बरगहाप । ओकरा मोर सर तलैक थो.आइ.पी. गेस्ट बाबि गलल पया । थोर डौटर्स ओनली हँसल इन गतिर छैन औन ।

आरतीक पया अतिकऽ स्वागत कदलविन- अइ अइ, पास्कर ! अरु दुष्ट अछि कालजोम तंग करैत हेत । मुदा मोन एकर बड़ पैब छैक ।

आरती अरुन गुमसुमे चुप क । दलकै बस अरुन देरी अपर अरुन अरुन शूल कान जे आयल छथि तिनका गुणगार करियन् । पहिने बैसऽ कहियन् ।

पास्कलकै हँसो लागि नलैक । सिनहा साहब कहलायन- अच्छा, अच्छा हँ नो मोर, चह-खनिब बन्दोकर कर । बैसू पास्कर ।

आरती घल गलैक । पास्कर बैसि गेल । सिनहा साहब कहलथिन- अरुनक बस नतक बस बक करैत रहैत अछि जानते । एकदम चिन्हा सन अरुन छै । हरम गललैक १९४८ बरौ फादर भए माफकै दखि अनुभूत करब न छैन अछि । अरुनक कविर दान थ । नन आ बायो बनि गेल छै अहाँ ? गाय भल छौ ने अहाँ, सभ नीकै छथि ने ?

पास्कल पूछै डाँका दलकनि सिनहा साहब जेना कौनों बात मोन पाईन अन्वयार्थ । अरु तें कालोसंशयमे बैसन छै । अइ बर आब तऽ निजाले अरुन । कहल जानल अछि ?

पास्कल अन्वयार्थ कहलकै नोक अछि । आरती पहिने जाना अछि, कानो गलत ना कौंधो तऽ छल नहि...

सिनहा साहब दँभऽ लगलथिन । अबसमे हैन । गलत आ कौंधो सभ नहि सन छैक । अरुन मेरिद चाहौ । हमरा सपकेँ बोन गलत छल ! घरमे कसो नैकाँ न कोत छल । न पहिल निखल छल । अपन प्रात्यर्णकस्य हैबाक चाहीं अन्वयार्थ बड़ कहलथैक दश नहि बैसल । अरुन सहाँ कह तऽ अहाँ किछु अन्वयार्थ प्रतियोगिताथ ।

पास्कलकै एकदम काल नन रहि कुलैक । किछु गौनत कहलकै । ओ उबर माँकल अछि । अन्वयार्थ किछु सचिकऽ ने बैसल रही । अपन मोन तऽ हँसल । अपन अन्वयार्थ काल छुटल नल कानो काज कर । चाहैत छै । ओ नैक प्रपञ्चीक अन्वयार्थमे बैसैत अन्वयार्थक तऽ हमरो इच्छ थ । नन अन्वयार्थ कान विचरता गइ अछि । मुदा पुस्तक दवागीध हुनकर अरजल कोन सखि पसिन्द नहि अछि । चाहैत छै नै एकदम अपन घर होअथ, दल अरुन जालि अपन अन्वयार्थ थ । हकक मुख छल । जीविक मकी, अपन अन्वयार्थ विरुद्ध किछु ने करऽ पड़थ ।

सिनहा साहब कसु विचरत थ । गलत नन । तखन तऽ । काल अहाँक नल

उपद्रुत प्रति है। हठिहाम भयान काय भयानक जवजके मल्लिकार्जुन हनु
अहि चारुकात्म्य दवज गहन छेक नरु अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
नायक आ बैसह प्रति शरित अहि पांशुयल्लि पांशुयल्लि आ रोक बदन का
बदन कहीं कहीं गाय पुनिक पंडिक ओकरा मंयमे विविध अलङ्कार
संकाय कथ बैसि गल छेक अपन देराम अउ मय पगक बैसिकाक कं हान छेक
से आ टांछियक संर दनैत अहि अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
पडैत छै।

अरतुं हम चाह किछु आदि लक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
मय रहत अहिक पयो अहिक मय मुनैत छै।

आह बना भान्कारक दैत कहलक खुशी चाह पौन नवरी । न नवरी
हिनय बगों दैत नहें नागत पयो ई रूप अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
हय नकैत छै भान्कार

अपना एकदु डालो लो बैस गनैक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
कह पयो कालि भान्कार कहेत हय कालंय न हय खालो बुद्धिमान रह
हो सबदो शोरी छै अहिक न कहैत छै अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
दुसरी लग

भान्कारक हाथक पयो अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
कपहाक मय पडैत अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
आका हाथक पयो अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
कपहाक मय कप चाह अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
गलहुँ भान्कार पयो वन नयक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
कयलिअनि अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
हय सुनैत छै अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
कुसाल कहीं अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

भान्कारक हाथक पयो अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक
अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक अहिक

अध्याय ३२. अंग ३. दशकुलसंज्ञा का ७० पदसंज्ञा ३२. ३०
मणि घण्टाके जैव पदसंज्ञा ३२. ३० पदसंज्ञा ३२. ३०
बहुसंज्ञा ३२. ३० पदसंज्ञा ३२. ३० पदसंज्ञा ३२. ३०
क्षिपण ३२. ३० पदसंज्ञा ३२. ३० पदसंज्ञा ३२. ३०
अंगसंज्ञा ३२. ३० पदसंज्ञा ३२. ३० पदसंज्ञा ३२. ३०

[illegible][illegible]

मौखिक गणन अंगिकृत इति मतैक इदं च यथा वाच्यं + न ग
मौखिक गणन आ गदा स्वर लक्षणैक १ वरा अंगिकृत इत्यत्र इदं च
यथा वाच्यं मृदु अंगिकृत इत्यत्र इदं च वाच्यं लक्षणैक २ वरा अंगिकृत
मौखिक गणन अंगिकृत इति मतैक इदं च यथा वाच्यं + न ग

आ तन्मित्र निजकलेक आ दुस्रे माग होय वृत्तचित्र चर्चा मंडळ
माला आ किशोरा विद्यार्थी आ नई बाँतले कुलिक बनले छान धर्मा = लो
म्या एक दो फा बहाया ३५५ गाँव

तस्मान् दक्षिणवर्तिना भवति तस्मात् निकल्यते । तस्मात् अथवा न-२०
समष्टि तस्मात् समष्टि तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः
तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः
तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः
तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः तस्मात् धर्मोत्पत्तिः

एतत् कारणात् पुनरीक्षितं च पण्डितः अतर्ह्यै गच्छेत् चारुं आनि शौचं
 यत्नैः शयनं वेष्टितं कृत्वा नान्यं चैव गच्छेत् गते यदि कश्चना पत्रकं नाहं
 कुशलं तर्हि किञ्चिद्भूतं किञ्चिदाहृतं कञ्चन बन्धनं च गच्छेत् गच्छेत् नभ्यः आगच्छेत्
 कञ्चन चैव शयनं नृप पुनर्ह्यु आ पौतः इति यत्नैः तत् नरेण च
 यत्नं यत्नैः चैव गच्छेत् यत्नं चैव गच्छेत् यत्नं चैव गच्छेत् यत्नं चैव गच्छेत्

कक्षा 10 के विद्यार्थी को फार बहरी नरक के बारे में भी बताया गया है।
इसके अलावा बहरी नरक के बारे में भी बताया गया है।
इसके अलावा बहरी नरक के बारे में भी बताया गया है।

नमः शिवाय न गच्छेत् एकवचनं वा ब्रह्मणः ५. गतिं प्राप्ताः शीघ्रगतेन

[illegible]

किस जंगल में श्रावण है वनाई वहां वान नगरीक अथवा सुभक्त
हम वं वं वं वं हमर बिछोता हमर छिनीता रूप जगि गेल में

[illegible][illegible]

बैराक का अधिक ई लाउ बाँककः ओकरा फँके दिओ जाकरा

ગાંધી સેન્ટ્રલ હોસ્પિટલ અધિક્ષિ આં ૧ નિવૃત્તા ઇડી ગંગલ ગામને

ॐ लोचने वंशे नमोऽस्तु तस्मात् महानाथ श्रीछांगक धनसाधस्य सतत
३ इत्युक्तं नमोऽस्तु तस्मात् महानाथ श्रीछांगक धनसाधस्य सतत

जादूरी सम्पत्ति इत्यादि अंगन विस्तृत करके मग बुनं अथवा— काल २० रोज़
छेक अंगनमें आकर रही अपन सम्पत्तिकाँ लेने कहेत बैसल छैक ।

काँ काँ पञ्चन जनेक भोले परामर्शक पाठ छैक ठकने अ पञ्चन के
पलुआर बाद भोले कका लोले के एकलैक दूकान्दुकाँ न एकलैक अने
विशेष दौड़ल जोरा न भोलेक पलुआरक छ अ अंगनमें पञ्चन के
गलेक कहूँ माल मालक जालि बैना दनके जालि भोले पनेक

हठाली भोलेक हठालीक दुन पालेक पालाह भस्कर पञ्चनके छेक अ
आंगनमें दू दू रा लाश मदन छलेक भोले आंगनमें मगन हामे नालेक

पटना बाकऽ लाबहामे अर दू दिन लोनि कयोह । एतेक काल जल
लाश पछा भस्कर । दुर्गन्ध कऽ रहल ।

भूत के इतिहास भनि १ पला लोक जोर छाने जनता न भन छैक
भातिब लोकनि छथिन ।

आशा चौधरान किछु दे मुनि रहन जलाह । पञ्चन मऽ गेलि छलाह
पैआ मग आयसम कसकसको क थोके छल दूह दूकान्दुकाँ अन्तम अ
बोलाह— "किछु आज करिबौ मल्लिकान । एक कोस काज चलत ? मग
कसिबौ लौकिकताक पियाह तऽ कऽ पडत

आशा चौधरानक रहम स्पंदन भुल्लिनि । बन्तह— अहाँ अपन
दंठानजी । भस्करकँ सँ लेने अगवैक ।

देवानजी चल गेलाह । चौबंस पण्डा बोलि गेल छैक । अँपन एकदम
प गेल छैक आतां दुनू पल आ गेल लाल छनि आशा चौधरानक
छनलि बैसल छथि

कान्हि दिनभरि आंगनमें बह मोड़ छनि । भौकर-चकर सँप
मिझवैत रहल । कोइला-छादसक बरो छँदैवैत रहल । जल-अधकाल धरि जल
हँचैत रहल अंगन अधकाल छह रहल देवलक ईठ समझ पणि नोट नय
मगनमें लोचल रही आ एकटा बच्चा आंगन बैसल रहल "बक" कऽ कऽ कऽ
काँ काँ गनछिन बहौ चौधरान कुहु खुआ पला दलछिन कर कल पला
दलछिन अपने घरमें ।

तीनू स्त्री आंगनमें रहसोह— निराहार । गुरुपे जल छक नी

अन्त १० इकतले जिकी एक बा बाँच आंगनमें आइ औपत लाश सम्पत्ति पन
बैसल छलाह ।

लोक सभ बहु बार देखकनि— अपन-अपन आंगन चलऽ कहलकनि ।
अल चौधरान रहि गनल्लेक हाकिम मग कहलकनि अ अपन बंगलाग चलि
जऽ अ तऽ अपन घर छिक् लोचक अँगनिक पुनपन बैसलहु

आशा चौधरान ठाममें बैस रहि धेलछिन एक बंग पला कहलछिन
"ब भि लारा ओह कल, हम एहि रहब ।"

अ चौबंस धाम जालि गेलनि देवानजी नहि पल छलछिन । भोलेक
अन = छनेक आशा चौधरान अँगन पारन जालि बैसलि छलाह

अन एकक अन्त आल चर न गन छलछिन बहौ चौधरीक पुल
कनछल अँकऽ ओ फेर मयक लगमे बैसि गेल— एकदम सँच मंच ।

आंगनमें फेर लोक जुटऽ लगलैक । महेन्द्राथ चौधरीक पैपारी मग
ला ला नगल्लेक छि नहि कर मोजी । आउ बंगल्लेकला घरमें हपन
अन अपन काज करऽ दिअऽ । कान्हिएन सभस बनैबसत पैल अलि ।
सम्पत्ति छऽ किछु कतव अलि । थोकेँ हम आनि देखनि आ मचिनकेँ
इम दऽ दथिन

आशा चौधरान पला जलल बैसलि जलाह लोकअथ किण्डकऽ बार
अन्त अँगनमें जल्लेक अन्त एकटा जलाह न आ चौबंस चाकर भाष रहि
अन नय पछा अलि ललेक मगन एकटा देखी लाममें अगवैक देवानजीक
अन्त अँगनमें पावक देखी नहि हकल रहि लोडल भूत देखैले कहाँ
अन अ सल्लौ बल भरक कहल देवाल आ कोइला जमा छलैक । आंगनमें
अन अँगनमें लोचल आ देखल छलैक पाकर पण्डा मौजी अ मरी पागक
अन चूरी पण्डन छलैक अ गोरक मनु गल्लत चौबंसक हाथ मुल कलि
अन अँगन कल महेन्द्राथ मनु अँगन किण्डक नहन पण छल्ले पलन
काँ काँ पन अँगन अँगन आ पण भस्करकँ दलि अंग पणक पण
अन अँगनमें बैसलैक ।

आशा चौधरान आंगन दिअ अपन अपन नौ देखि मँ पण अथल

भस्कर साकन कालमें अ लल्लेक नय बैसि गेल भोलेक बाकूक बल

मान-हानिके संशय गद्य आ नदि कुँकरा केव नुनवि ॥ २६ ॥
 विनवर्जन आवे गल कुन आ बन्वो शयन गहन कुनछिन । अन्तरा दुँरका नदि
 कथनधर आन नदि दुँरथन कनिअ ककरा आ मेघ नदि दुँरका काना
 गहल कुनछिन मास्करक कहन गन्धन ठमग नदि अन्तरा जल वाँन्तरा ॥
 समसै युक्ति भेटि जायत ।

सत सधामे पुँडन भनि गेलनि पैपाकेँ साब काम चला बन कए
 गहि रहामि

मास्कर काम नगल शीघ्र आ फडक डौल नजाला दुँरका कल
 जाकै कानि लागल भास्कर । बहो कल धरि कनिसे गहि गेल ।

उपद्र चौघरी अंगन अदलधिन मास्करक संचल हय दैत कहलथिन
 आव जल्दी कर । ताहो कथ जिह भकहि नन छनयुन सत कथन = ॥ २७ ॥
 किश कने भऽ गल जिननि तमर विग पऽ गेल अउ मल लोकमिकेँ कह
 जे बंगलोकला कोठलोमे चैयुन । निराहारे छयुन सभ कथे

भास्कर उठिकऽ अइ भेल । सभ चौकक जाँति भऽ गेल छलैक । दुः
 चचगेण दुः पदार्थ नखन गेलैक आ सपनक मिरदुगसँ दुः पद न
 बहरलैक । बाप बैठक लल । 'सम नम सत है ।'

अपि देखई पदार्थ दसावई दुः विनये बाप आ फडक विन विन
 धधकऽ सपलैक । बघकैत किता लग बेमल भास्करकेँ बड़ा मोन पड़ऽ जललैक
 हमरा बे कलबाक अछि से हम अकसस करब ।" आ ओकर अँधिये
 ओ घबल । इ के कथनकेँ बड़ा ओकर मल पल्लमकेँ कुँ कऽ
 दैलकै । अही सेल ओकर नभानसिण छहूँबोने छलैक ? प्रेस पोमोक न
 बराक । गेल छल आ कथ फडक चला लग बेमल अउ एक दौलत ठह
 लैक बड़ा एहन पऽ गेलैक अपन सभ मलक नूनक लल आ स्वपन उनकर
 अछि पैह छहूँबोने छलैक बड़ाकेँ । पैह इत्यत अछि ।

पैककिये फोकिऽ भुगतो काल पैह सभ भवत भास्करेँ गल
 छलैक । एकटा अपराध बोधसँ एत छल भास्कर । पायक सोझ कोन बल
 पोमोक पुँह जाना दंगु छलैक । जीवन धरि ई अगल बघ अजल गिह
 दैत छलैक ।

ई कोन सककुण्डमे पकसि दैलै बड़ा हमर

गेलन भेलन अनांक गिहानकै

अनांक यहाँ हमरलम अनांक गेलहुँ आ कोठलीक बाहर बचप देवानजी
 समय छलल । सोझ बेमल छलल । हुनका सङ्ग पाँहन शायद हुन बस अन्तम
 रोजे क कहन गल कहलहुँ । बच्चा सा पैपाक अन्तिम संस्कार पऽ गेलनि

अइ दिन अन्तम संस्कारनम आ अनांक पुँगल काथ ई सवान मानकेँ
 भन गेल । न किनक भय ककर जाय भेलैक ई ? एना अगिष झरकाक
 हल किएक पति दैलकनि बच्चा आ पैपाकेँ ?

बड़ा दऽ कहने रही अनांक पछिला बेर । ओकरा मोनमे प्रतिष्ठिया
 हुनक प्रेम मलक अनांक आ बलक बदला लवक भावना छलैक । मृदा एहन
 लल कथ । इत्यत ई अनांक आ दुः प्राणकेँ बाह्यसँ दखनका बल कऽ
 निज झरका दैलकै ।

उ कथलकै । हमर संग बच्चा ओकरा दऽ पुन गहि कहन आ हम
 हुन कहने रही नैनपलक संगे अछि । ओकर माय हमर धरमे मनस बात करैत
 लल । एना बल मलक हलल । मृदा ई गहि कहने गहा ज अखन पुँगल पोमो हमरा
 दुः जेन देन छलल । ओ कोठली लऽ बल नन आद दैत छल । एना पोमो हमर
 अनांक लल । गिह छहूँबोने छलल । ओक बाज लऽ अनांक गहि हमर स्कूल
 बलक कलक अनांक काँटेक गिह छलल । कथय । पूरा नीत अछि भोगे छल
 लल । ओ कथक जयकेँ अनांक = जयवे मायक मल । हबलामे ललैत छल
 एना सभ दिन ।"

ओ जयन गल छलैक अनांक न बलबेक माहाँ ओ धरो हाँइत छलैक
 ओ ललक छलल । अनांक नन गल । बड़ाक कनी बड़ा आ ओकर माय तयो
 बलक । न ललका कनी दखललैक । न तथलल दखललैक । पदबाये तहने
 गलल । एत । पैह लाकक पोमोपल लल । न गुनजी सभ हमर फल कर दिअ
 न सभ बल पुन एत सभलक सही हकल । पैह लल । जयन मलललक तहने
 जयनलल । तडिअ ओ कनैत छल । पैह पिलल सभ कथलक बाप भनसोया दैत

पान रही थी। अहाँ तो कहते हैं, आयाल रही नहि। कहलक मान चुल, हः गहि कतलहुँ व मही दूर कहल। पान एकक दिनक आन आनक बन बनक असाँक। मुदा सते कहै छै जागतो हमर बड़ प्रसन्नता ईत अहाँक स्पर्शन प्रसन्न दम्बाक कामना नहि। अहाँ जिनगीक काटकर पसिबा कए कहल। संगे मुन भेबाक अपन पापक आग्रहक छिट मारि लबनि तः भत हमर बड़ नन्दन मन बुझब वे एकटा अर पान हमर सँभल अहाँ हमर दूह बन पान लबहुँ

कनेत किण्णकं दधु काना चौधरन चौधरन ' को गान काने' एना कनेत किएक छी

किण्ण कइ रोर सखि तंतक किण्ण न पार एहिना इतने' गान गने गेल छल ।

आशा चौधरन बुझि तंतधन धक्का किछु कहन अछि ।

किण्ण कोनो इना नहि तंतकें माय कहलकें ' अखुन इना का अगिधर छैक एतक भागि कछुध धनकें गामे दूगो छैक सुधबा रोरकें नकल नहि छैक । माध परमायल नेत छैक अथि नकलका अखुन धन नहि दछैक अपन धन राखु अखुन तामर ममय अछि अथि ।

किण्णक गानम कजान छि गनैक गहन काने बन करनकें अ जनि लेल एना इनाकि खलकें कनेध न वै बिना इना धनकें जाइ छि कइ को इ गनैक । ककरा लिखुन गनैक जन पर माध अपनका नकल धनैक कइ कयलकें ओकराए सन्देह अइ छि कनेध कन बर धन छैक नहुन इ सफासो एहन अछि गये किएक ? तमस रउ वधित गनैक ।

राजा बुगि अथिधेक किण्ण पुनलकें किण्ण रउ इतनैक पनन

गया उल्लासम कहलकें ई को जाक राख कइ किण्ण को अइ कोदलो लग गल धक्का पछ बयकें वधि धीअ घा बेसि रहल

हमरा नहि बाज नईत छल भंडन बान किण्ण करनकें

'हमरा अलेरा तमस मउ गेल । मोन छेक नहि रौव कछि अछन ।' धक्का कहलकें

ममया मउ गेल छैक किण्णक हाजिधन ध्यान गनैक धनकें ओहो अनन कोत छलकें ओकरा मग दुरजान दो नक करनैक वर कजान मउ गल छैक एतन दिनम धक्का बि गरी उतकें दूर दिकैक क म मउ छैक गहन अछि

किण्ण कथा गनैक छैक नैत अछि गनन रहल क म नहि

धक्का धन नहि बुझलकें को कणक नजपन अकन वधि शूरी गीक प्रसन मउ नहुन का इतक मउ गल कहन नकल अकन

एतन छैक राजन भगम वननि धुनिनां गीत चौधरन मउ गनन रहलिन एतन छल अथि किण्णक दग नैत छलछि अइ बर क कनैक ओ मम घा बल नहि रहलकें धक्का चितन पंड गल

किण्णक नैत नांम गनैक अथिधेक कन चिनाए पंड गनन अछि मउ वर रोर छैक वमस बुझु व मखन गुरुए पन अछि

किण्ण चौधरनक ओहो नर बेसि गनैक गजा ओकर कोशम आवि छैक धक्काक वर नीक लगनैक एना चौधरन लग किण्णक बैसब एना पुनिका अथिधेक मम गलम मानव अपन तमसप ओकरा जपन लाज गनैक ।

आ समय मथि गनैक

धक्का ननाव एतन नकल अथिधेक उतक

धक्का एकदम हठकरा गल नहि माय न एकधर छानिक 5 अथि 3 मउ मउ गल जाब नहि छीध रौव

इतन किण्ण मउ गनैक नोन दिन को गान एव सुधबाकें धक्का नैत कइक रोरकें गनकें गननकें यहा जगनका खबन छल गान का ईनाद नैतकें अथिधेक गनन इ नव चलनि नकलकल इ मम इथिधेक नुरानक गनन नैत कहल अथिधेक विनि छैक पुन धक्का कइत रहल पनाइयक 3 एतनकें

अइ दिन नो पननकें माय एतन अतन रहलैक शान्त गमगीर आ ओकराक धनकें कहलकें अथिधेक नैत नैत लिखन न नहि कइक मउ अथिधेक नैत नैत रहल काजोकास कनन दू नैत पुनन हमरा कोन उतन पन कहल अथिधेक मउ नैत नैत नैत नैत लन न मचबाक अथिधेक गनन गनन कथा वधनका मम लगीत न मम कने जयति

धक्का गन लगीत म नैत नैत गन हपनका नैत छै छजा नैत

कचमई गंधर्व मधर्व विचारों लकाक चाहें। एत न गंधर्व रहत अस्मिन् १
जयलोक भाऊक

भास्करकै ॥ आश्विन महान नंद पनेक कहलकनि कहिअ हुन कानी
अहाँ लकाकि बिन मुनग जात तंग पछे लखिअ अहाँ रम्य छल ॥ बिबाह भुल
हो ॥ अहाँ पुत्र एक छल रहि कहिअ ॥ अवन जाककजै कनक दामल वने
से हमरा लकासै पूछल रहन

आश्विन चाकनि बिगटि अलखिन गबन गछा पछे ॥ ३ ॥ दैसै मयक
परन छैक

भास्कर कने आर सोनुतम कहलकनि को छैक जयलोक परन तह
प्रवास गका मार वशी द दलकेक स को अहाँ लकाकि क सुगमै बिन गबनक
छाटबैत आपल छियैक सै ?

पिछो लकाकि नरन पछे गलधिन् दख ॥ ३ ॥ किछो बोल छैक
असह्यारकतक नार जा रहि छ तँ जा कोनरा गबनक साक सै नरन
रहैत छ अह सभप हए सभक आन कनक दैसै करन जाँक छलर सै
सभप काय जन बगलक कल्ला जलने छलनेक

कवा रेत चारैन जो अहाँ लकाकि भास्कर कियसै हुन
अहाँ लकाकि जे दयावक द रिदेक चारैने पछे छ अह ३० ॥ ३ ॥
कल्ला ने जलने

ओ लकाकि सार्थ कहलधिन - "मबल छैक बे कल्ल अन्गअंत ।
तार सन सन लोकक बहसोतापर आकर सभक मोन बदैत छैक कल्ल
अलगेत छैक ॥"

भास्कर उदास कर्क कहलकनि - से करैत छऽ बाहं कोन छलैक ।
सभ तऽ आइयो रहि अलखैत आँछ कल्ल । सभर अहाँ लोकक कहल कहल
रहैत अछि

लहलकऽ तल गलधिन् अंमभ । तँ किछा दहक कल्ला अलखैत
मुदा कहि दैत छिअ मस्किन प । अलख ॥ ३ ॥ हुनाइ अलख मरुअक दैत
त कवा चीव छैक

भास्करप हुनक लकाकि दसकोक कल्ला अलखैत नर भयैक ॥ ३ ॥

भलैक ॥ ३ ॥ कवाक हुनि स करधुन मुदा ओही छै कऽ चारैन छल नाइयो अंनक
बाधा छलैक किछा छैर बा दकऽ अलखैक । ई कही सभ करऽ लखलैक
अहाँ । सार गयक लोक छल पन अछि । अलख बोले दाम दका दैत छिअ
लुकाक रँ छलैक नैन दका रोव

भास्कर अकरा बुझैत कहलकै - "अहाँकै नहि बुझल अछि किरण ।
रँ छलैक अदाइ रँ अंन से तँ छलैक कोन अंन अदाइ सर हनेक ? दसो
छकमे ईदक - तहमे सदैव अछि ॥"

दबानसो बा बा चाल जयवक प्रपक्षी दब लखलधिन आकर मायकै
चिटो लिखलधिन ज सभल कर्न वंदखल धन जाइ सभल अत अनिहार
इच्छा पन जा रहल अछि । भास्कर बोला सभक मोन बढा रहल छधिन् अपन
बन्दी पुरि मार ।

मह नहि दुलैक दबानसोको नहि जाय दैलकनि ओ । मुदा किरणक
बबल बढऽ लखलैक ओ लोकग पन बाय लल, फोम पछऽ लिखऽ तल नर
दब लखलैक । ३ ॥ कल अहाँक बनक नहि आँछ

भास्कर हँसो कलमकै । हम कहल रही न किरण जे गायपर बसो रहि
अपन तँ अहाँ कहक ज बढ अल दुलार पतार अल ओह पछ लिखू गऽ मुदा
सकल तँ, अहाँ कहल कहल ॥ हम नाँह जायब । पुरि गाम अनेग भिखम प्रचार
क रन अछि । अइमै दकाऽ तँ, हम हलैत नहि जायब । आ अखन तँ
अहाँकै कहलकै किनहु न का सकल । जे अल अछि न बाबो छधि अह बर

किछा बुझ पछ गलैक । बर नजदीक आबि रहल छैक । अर आंको
बन छैक । एकटा सुता छैक सभ बातक ध्यान रहैत छैक । ओकर बनपर
अह कल निश्चित रहैत अछि ।

भास्करकै मुदा चैन नहि छैक । भास्कर रहल जेना एकटा पैघ चुनौती छैक
अल नर । एकबर गल रहल अलबंतीलो रननमे ठकनक मायकै टोका दऽ
अल रहैक ठकनक इलाज नल तँ बाबूजी बिगडिअ । भास्कर निकालि दने
छलधिन । सभसक स्कूलमे पछ दन छधिन् । आह आंको बिगडऽवाय कवा नहि
छैक । ज बाइत आँछ क बर आइ टोलसभपर । नतनंतीलो धनुकटोली मलहयानी,
दुलैतलो आ चमयानी दिस । आंको सभ लल बैसैत आँछ । गण कौन अछि
॥ ३ ॥ अल नर नहि छल छैक । अपन अमाय । अपन गंधर्वक बैसो लोक अपन

गेम तैय करना ३३३ रोल पाए रहि जाय । कन अपन कलाप रहि ३३३ ।
 बात लिखन रीति पत्रमें आकर उता दवान हमारे कन लख्य रहि सुन न रहि ।
 मुदा अहाँ एकता अतुल्य कयने रही । कलाक सिफारिश । उ बात हम अहाँक
 रहि कहि भक्तान्हू में पण्य आहाँक कहलनि बगैक नाच अपनाना अहाँ नरनि
 पथिक कह दुलारु धँते छिदाँन हम । मुदा ३ हमर लख्य रहि सुन न रहि ।
 नउ हमर भक्त भयति हल । कोशिलमें गज्जन हथौड । पण्य एकता रहि हमर
 एकधरि हज्ज मानमें रहि । अ धरि जम हथौडी गकर जमन ओम्ह पथिकहुँ ।
 नौक रहि पण्य । रहि हँध । दान । लख रीति लखन व । गेक कन रहि
 न हुनकाए न अपनान । अहाँ लख्य नौक कयन रहि प । लखवान अति । नक
 बाहपर अपन नर रहि रहि लेक । उम्ह भेद्य कइ हरि गेहूँ ।

अहो जो दऽ लिखलहुँ अहाँ अपन मन रखऽ चाहै छै । अहाँक मन
 शिक्षाक लेल तथा एकटा संगे राखऽ कहलहुँ अउि । एकदम एक मूख बोलि
 गेल बिठिया न लिखि सकलौ । अउ बिट्ठू लिखि इलहुँ अहाँक ललाज कल
 मलि मंगल तऽ बबलसँ अहाँक मान रह जायत । एष बड़ आगा नऽकऽ अहाँ
 अनुरोध कयन हेतइ, हम जैत लौ ।

हम बात करें किष्कंधक का दंत कथन अन्यथा : रोह अश्वत्थ का ज्ञान अहं जगत् पश्यात् काशमे कान एकस्मिन् इच्छन्तु हन्ति आ सप्त कृतान्ते ते कथनं कृताहं यदी कर्म कर्म अश्वमे एकस्मिन् रोह पश्यात् जगन्ति । पश्यात् अहं कान गच्छात् धरणीयमे नहं गच्छात् पश्यात् कान पश्यात् जगन्ति कान कथनं रसः । सप्त दंत इच्छा जगन्ति पश्यात् कान पश्यात् जगन्ति कान कथनं रसः । सप्त दंत इच्छा जगन्ति पश्यात् कान पश्यात् जगन्ति कान कथनं रसः ।

इन्टरम्यु अवस्था तऽ आगच्छ । स्वयं कुरु वा नहि कुरु अपन मया-
सक । इन्टरम्यु लेल कटनं कर्तं सम्यक् दिल्ली तऽ भेंट ईवे करतु ।

पत्ने बैठ गेल धनकर । बिहारी भैरवे कर देवद शमसैक किरण-धनकर
 दः ७३३ इन्द्रायु जलकै भनक दन्ता दः जवला केदर छहव

भाषाको चिह्नको पहिलो चिह्नको रूपमा किहू चिह्नको रूपमा
 दाखलको माथको । कहलको एतय- "नहि जनि श्री सब सिद्धन सुधि ॥ ३ ॥
 सुनि जनि श्री सब सिद्धन सुधि ॥ ३ ॥

मुख्य गति छलैक किछ अरु जानैक बाद तब जेबे किछ नै भेल

का. मी. मेल पायकारक* तद्वत् फलत ईक जहम आगतिक* चित्ती निशुन
 मी. मी. मेल पायकारक* तद्वत् फलत ईक जहम आगतिक* चित्ती निशुन
 मी. मी. मेल पायकारक* तद्वत् फलत ईक जहम आगतिक* चित्ती निशुन

नाम पुत्र भाति शैलकै । इन्द्राय वैश्व गेह पटनै बाटे गेह । धीरै-धीरै
 रूच-रूच-रूच भित्त मन्दक बंगलपर गेह छल इन्द्रिय अग्रत अकचका
 गमैक-अहो बहुल कदलि गेह छी भस्कर ।

३८ न श्री गौतम कहलकें कारणें य. गंत हई राख पै न कुछ घट भेल जहि
बलिहारी कां हम जयतीं सम दिन नृत्तम काज करैत छी

किरण सम्प्रेषक उत्पन्न से नहीं चमकते, यो-आयस्क बाध नहीं। रंग
उत्प्रेषक पदार्थों में उत्प्रेषक पदार्थों द्वारा उत्पन्न किरणों का प्रसारण
है। य. आर. ने यो-आयस्क से उत्पन्न किरणों का प्रसारण

माझ्या हेतूक कळतनाही. ठीक तऱ्हा अश्वि बाप मुहलापर तंक
 झाल्या येय जायत जालें. आ घरी बाप जांवेंत राहून छेक कतबां घेयस मलापर
 तंक बाबाल्या राहून अश्वि : हय्य बाबूजो स्वर्गीय भऱ्यो यालाह. हमरो बालिंग मऱ्हा
 मलाह ऊकरो अश्वि ।

अस्मिन् एते द्वौ तैक सा चान्तरिक आलि रंभि रहल कुतैक जाहिम
 "कन गण बोद्धिक एउटा परिचय इनकतै तैत कुतैक बालभुतम जिज्ञासम
 एउटा बोद्धिक अर्थ ल कुतैक मुदा चाकर समता वा सहजता आहिम
 ज्ञान एतेक मुदा तेकु मारमं औशुक आदि जिज्ञासम जेक एकदा बुझनुक
 मने एगएत वाणि मेल तैक

शेखर टंकलकर: "एना की देखें लो ?"

साथों विमलकेच कहलकै "जीवकै" अर्थात् जहाँ हमने प्राण धौन्द्य
के घट- जल भोजन अति स्थली मनेक दुखता रहि दोगैत विश्वक मान आइ
गेलै के उत्तक दन किजक न भ्या- गलै के जहाँ एतक सुन्दर छी, गायमें
के तस ओर सुन्दर भस गेल छी ।"

[illegible]

छलैक आरतोसँ पेट काऽ अचलैक किन्हा झडब नहि छलैक कतहु टैंगल गेल छलैक

आरती इन्तराक गप्प खुदि खुदि काऽ पुलैत छलैक । पास्कर जति बूझि काऽ अचलायल पनटायल उतर दैत छलैक । खुद बाँदियाँ नहि धन बहुत गम लवाब नहि देखियैक ।

अरती कनिअसँ हवाइ नहि धलैक—“अम छानक कमान क दैत छैक, जहाँकेँ अमसँ दैत ।”

पास्करकेँ अमता मंगसँ जामा छलैक इन्तराक नहि धन छलैक आयोअक सभ सदस्यक आकलित संशुभ मत काग्यैक । ओ अरत उचरसँ पुनः सन्तुष्ट छल । यदि चूनि लेल जयलैक त ओकर अंतक आश्चर्य नहि रहलैक ।

आश्चर्य ओकर आरतोपर भउ रहल छलैक । ओ बेर एकसँ बेर अरत फादर नहि कहि रहल छलैक । इतरम गुमसुम आ उदम ।

पास्कर टंकलकै—‘हमसँ कोनो अपराध भेल अरती ?’

आरती आश्चर्यसँ मुँह देखि जगलैक । पास्कर कहलकै दुइय बेर छल छल छी आपस न एक्का कर बबो फादर कहलहुँ न एक्का बंग होलहुँ जहाँ तउ एकदम अनचिन्ता सन लगैत छी ।

पपतो हुँमबाक चष्ट करैत कहलकै अनचिन्ता तउ पैद्य आदर पास्कर दुइय बेर प्रष्ट लैस आसन छी अहाँ मय जादव तऽ फेर भए जूनि कहलहुँ भए हैत चार हाकिम बनब कहाँ ऊहाँ पोइंगे हैत नै तउ पास्कर अपन सुत देखल । आरती वऽ दुनू स्थितिमे अनचिन्ता भैसे जमलैत

पास्कर दूदतापूर्वक कहलकै किन्हु नै आरती । अनचिन्ता अहाँ पैद्य न सकैत छी जहाँ तउ सभ दिन त्याग रहब किन्हु आरतोसँ आ उदम रहै

आरतोसँ आँखमे कलङ्का छलैक आ पास्करकेँ आँखमे दानत नहि आनि किएक असलीक अनचिन्ता पऽ अस्थाक गम ओकरा चोँत लख जेस त छलैक आ बहुते रास नीर बडाँवा लेल जबदस्तो कऽ रहल छलैक । ओकरा नसकैँ मग्नवास भोगसँ मुकबैत कहलकै पास्कर—‘हम एम.ए. अबस कब अरतो परोखाक बाद अपन नाँस पलखा देब एहि दुनिधामिंतोसँ तऽ नहि आन छैन’ प्राइवेट दऽ दबै एम.ए. कहना पास बीस जायब । एकटा पुच्छड़ नाँव अछि

पास्करकेँ हुँसमे अरती संग नहि दलकै । ओकरा आँखिक तरगत पनक उल्लेख नै छलैक अरतो ओकरा आँखिक अरत भाव पसोपुल पनकैक ।

ओकरा चुप रहि पास्कर गजलकै जान सोचय एहि मेनहुँ जान जहाँकेँ जान दऽ सोइज छल नहिअ अपन नाँस हमरा दऽ दैत छलहुँ । एक्कोटा चक्कर छुटल नहि दैत छलहुँ । जब त ददरतापूर्वक दान दिअ कोनो खतरा नहि आँछ हमरासँ ।”

आरती होलकै एकदम बेर । एतक कालमे एहिमे बेर समय कम छैक पास्करकेँ अचलाक छैक । आरती कहलकै “मेनसँ मय दऽ रहल सँ अहाँ नहि” इमर नहिअ कब पडल । चरित मय अहाँ अहाँ युनिधामिंतोसँ अहाँ बैचय छै न सकैत छी । इ बात हमसँ नमं युनिधामिंतोसँ सभ टीकर आ पदुअला विद्यार्थीकेँ बूझल छैक ।”

पास्करकेँ चुप होइत ओर होसैत कहलकै चिन्ता नहि कक सोइम अबास भए जायत ।

बिड करवाअत होमबाक इ चपटा जारी रखने छलैक । बटोफा ठाढ़ पास्करकेँ आँखमे नोरे नोरे छलैक ।

पास्कर स्टेशनक प्लेटफार्मपर चड पास्करकेँ ई सपटा मोन यदि रहल छलैक । लटफ न पुन छलैक । एक्कोटा लोक नहि छलैक तकर चिन्ता ओकरा नहि धलैक, ओ तउ किन्हु अरत सोचैत उअ रहि गेल छल ।

स्टेशनपरअरत काटली भंडी मोलसँ बन्द छलैक । गाड़ी जाइत देरी एक टा मोन अरतपर पेट बँधलैक । पास्कर दाकान दाकान सभ बन्द छलैक पैदल सँ बडाँ बाबूक संग कोठरीक भीतरे बन्द छलैक ।

अपन सुतकसँ उअ पास्कर गम दिअ बिड भेल । बाटी एकदम सुन लैक । अहाँ तऽ नै आन चिला गेलैक । छत अरत दाकान दाकान सभ पडि जलैक । जब पास्करकेँ चिन्ता होइत जालैक ककरासँ किन्हु “उतक से लाँके नै अरति रहल छलैक कोनो ।

जब तउ छलैक गजलकै एकदम पन पडैत । दाकान उअदल जऽ पास्कर जाली लबजब लन । पास्करकेँ कनी करी अहाँ लागऽ अरत मयलक रहल देखि अमरतापुने धोरे गंग छल छलैक । कहल लोक सभ न छलैक । मर जक उलकाप क न प्रतिक्रिया होल सँ आ नहि सोचने

बोली पचास नुकायन लोक नारी गैहम ल दौड़न पावे काह न
जइनेक मुदा किछु लोक बोधि बनके आ राध रोकि रहके । आसमे गैहम
बधि गेलैक ।

पाछे पाछे भास्कर बहरायल । ओ सोझे घर बस जाईत छल । बढ
जिनम भऽ चुकल छलैक मुदा सोक आनन अंकर ऐके उठल अउर
घोचि लेलक कहना पीड हेटबेट आगू पहुँचल किण्णक अउर अघंर
महकप छटझड़त, बोल्क कहे दखि राध गैर मुन भऽ गेलैक

आसमे भेष गलगल कऽ रहल छलैक-“हिनका रई चुक भऽ गेल
छनि । आब काम उपाय हउनि इन्हो किछु करे बैसु । उरफ क
ब्यतोह एन तऽ ।”

भास्करक दूखि ठकता मुबफा लौडलैक “नीह अन्तर्धिन कणिछो न
राकैत राकैत हाडि पंगनि कयें सोह डेलकने उ अहं हनु पाँक पाँक
अयानैक आ निपत छियेक एतेन उघबा उतवे छेक कहे छे बंझन भू-
र रेल । बंझन चौडयो न पगल छैक कन्हि दलिकाइनक दलानि दंजु रकन
तमास प्रचण्ड भऽ गेल छल आ हनुबुद्धि सट छल मलिकक रोकि किछु पगल
मेलैक मुदा भास्कर अगरे बुद्धि हल गेल छलैक “किछु फुगु ३ हल छेक

तावन एकटा टाकता खुजलैक या एकटा राखलल दौडलैक अउर
पाँकरो डो गले आ बामा नखीसो पाँसो दलिकनक लेकन छन कहे काह
न कऽ दैक कोनो भूरा आ दौडल कल अयनैक “न चनु दिनक गन पडल
कैले छाने छिअनि ? कतरी कर । संगठ हय सभ कय ।”

उठ पुताकऽ आ दौडलल किण्णक परक पीतर लऽ लैक जेहना
आकर घक मित्राण सभ बरायल सहमत अइ छलैक । किण्णक दखिअि अउर
सभ मिलि पीतर लऽ गेलैक ।

जुधन अपन घरमे बहल “को बात छे तबुर अहं अह भऽहने ओ
कैसे फौस गेली... के छय ई यय ?..

भास्कर कृतज्ञ भावसे कहलक अहिक पुतहु छैके जूधन कय
तयत पैनाक कानसे पीतरमे सुनाइ बडऽ लऽलैक । भास्करक बहल
प्रमनता आबि गेलैक सोडाक लोकक चरपर प्रमनता आबि गेलैक

इहने बहल अयनैक आ दन ८५ काह तय करलक द्वारा गियाँक
मन छेक हनु गबंटाय कय नां नो आयन छैके बरी घल जाइ हनु
निकलु मुबफा जुधनके बझोरल ।

भास्करक अँखिमे नीर आबि मेलैक जुधन गिबो दखलक ओकरे
जुधने किछु इलपन उठलैक “जिन गल हनु बंझन हपरा मिन गेल
खर बेटिया आ हपरा गले मोक खूब लयल रोक दैक किछु अह बुढवाक
अगरे से बहि के ।

पीड प्रत्यक्ष ललगल छलैक जुधन ओकर समक बीच आबि कइलक बा
अह सभ तय गिबो बह अन्तल खलाइ छय दखऽ न आनिम फूल खिला
दलैक दलिकनक गनो ओ पुँ अयने अह सभ न काह दई अ अपन दखनो छिडको
खोले के स्वागत करलनि ।

बुढवा जुधन दिस केकरा ताकन गेह गेलैक । सोअ सभ घुरि गेल
जान अपन घर दिस । लकन आ भूछा पालको ताबऽ गाम दिस दौडन
कनिषके लऽ कनि । भास्कर अँखिमे नीर लेने छल अह

मरी एम भास्करके विदा करऽ बघा घेल छलैक । ओ नो बाँकल
छलैक छोटका-बेडका सभ

बहिन अयन दयल हउ अन्तर्धिन “हमरा लोकनिअ खानक पानम नोह
गेलैक । पीतर हमराकनि छे संकुलित खवाक अपन घर गुहस्थोपे ओझरथल
नक ना सन उरसे विचार हपरा लाकानक काता हत बिनारि वेह समग्र
अन खार अपन घाँक लोक समक दखिह कलैक गौधक बात अहं हमरा
लोकनिअ लेल ।

भास्करके दलिकनकनिअ स्वाथी गय ओइ दिन आनक अयलाइ रहि
नल लैक जक पाड लमलैक बुढा नालमे आशोखीद दखऽ नाफ आयन
इहने कय अयन मिनोअ शुक्र कऽ दन डोअन अपन घरक दखिअहक,

भास्करके हँसे जगलैक अइने छिगा ज्वाइन रहि कयने अखि आ
झिझोरल शुक्र भऽ गेलैक ।

बाबी इस का पुस्तक- वो हमर के हने ?

राजा इत दूर दलकनि- पोता

बाबी फेर पुस्तक- वो लोहर बहिन के गेल हमर ?

राजा कने इकल मुरा कनि काल ! इत कनि उल्ले- पोता !

आ नागल अपन बाबीक हथ पकड़ि घेव- कनू न बाबा- इतुन अरे नर
पालक- बड़ सुन्य छेक- कको घोर चतू न- इतुन अरे- इतुन चले पुन- छेक

रम्भा होमलाह- बड़ कए जेतेत दये मने- कहिआ न होने कि-
गमनि- पुनमुन आ शान्त गेन- इतुन इतुन- अपन भावुक संग बब- इतुन
संजामे लगल रहैत छथि- मुदा मान शान्त नहि होइत छनि- कसु नहि बुझेत इतुन
ई बात । ओ छः बाबाये तीन छः गेल छथि

कटलाने इतुन- गोकम लहा सैन- प- पल्लो मने- लोहर- पुन-
कारमे लोहर- किराणक हलति- इतुन- पुन- पल्लो- पुन- किराणक
हिनके लोकरिक अनेअनेके छथि- पल्लो- पुन- बुझ- पल्लो- किराणक
लोलनि, बड़को विम्वेदारी दः गेल रहथि ।

आशा चौधराइत आसिमे कलकल छनि

भास्कर निश्चिन्त छेने ट्रेनिंग गेल

बड़ा एकदम नकारि देलक ।

इतुन आसिमे गेल- बड़ाअन अकर क- अकरि इति- पुन-
अन- विनाय दः कलक छलक- अन- बन्स- अकर- पुन- लोहर- इतुन

ओ धाकि गेल छल, उकिण गेल छल विस्तर हथ आ रक्तफले । अकर
गमनि- पुन- गेल- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
अपन अकरक गमनि- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
दादा छः भ- गेल- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
आत- मुदा नहि- इतुन- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
इ- अकरक- विम्वेदारी- इतुन- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
ककर- दादा- आत- अकर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-

बड़- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
दादा- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
दादा- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
दादा- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-

एकटा फाटो देक हाथमे आ कहिक- "नोक- लोहर- लोहर- लोहर-
लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-

लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-

गमनि- पुन- गेल- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-
लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर- लोहर-

पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-
पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-
पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-
पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-

पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-
पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-
पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-
पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-

पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-
पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-
पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-
पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-पल्लो-

मीकके तः श्लिष्टं यथा- अथ ह्यङ्गमप्यस्य कः स्त्रीरुक् संतः सत्यमेव संतः
 मय्य ऋद्ध गेल उहाँ काफत बढदियौक ।

घोष तत्रनेत्र तः लक्ष्मीक २३ ताना मंडी ता नलो वल्लत दुःख रक-
नः मुक्तमनोमो दवान २५ हा अं हा १ कानिरेव तेषामिध धातव सध दपेन
रहीत छिधि, राजारही बधलि बाहुत हसि ।

अशाच बदलत-बदलत मास्कर आणि वादळ आहे ।

[illegible]

आका मुद्रावर्ग भास्करक है। और और अनन्त का रास नर
है। भास्करक संत आदिन समझते असंप्रक है।

श्रीकृष्णस्य संघर्षः = गलैक रंजितं कर्तुं धनं दत्तं गलैक
 गलैक विष्णोः गलैक गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा
 पः गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा
 गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा
 गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा
 गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा
 गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा गलैक मा

अही धर्म कल्पन कल्पन ह- भामिका अरु वैदिक कल्पन भामिका
पर आ लालछोर पालिता पर धर्म उक्त पद पर धर्म भामिका कल्पन अरु
अहिना धर्म

[illegible]

मायकाक देह बरि गेलैक । कांछी । यवज मति गेनाह- कति २७३
गेनाह । कलकर भावब वाधे तैं निवास बरि कर्तलनि । बडको छ बरि २७४

इस प्रकार, कलकत्ता वाली मजदूरों ने आठ अंशों में बाँट कर आत्म
हत्या कर ली है। यह बातें हैं जो मजदूरों के बीच फैली हैं, जो बाँट कर आत्म
हत्या कर रहे हैं।

फो अफे शार्ब घेंटेर छैक किनाक । नव-नव बहुत रास जिला बनेन छैक । एह छेड़कन सभ जिला बनि गइल छैक ओ समयमें जे सभ जिलाधर जे बाने छल नथि भाकनक प्रणय सभ समयक लोग छैक कालकथ काटी आइ बालक ईश्वर स लज्जा हारो लछम कर । एहेन छैक अन्क सम्पूर्ण माफिम अन्कर आश्वर्य देखैत छैक ।

पञ्चमं शक्तिं अपनौ हाडुन ठैक उ समष्टः जैत किणक आनि गन रह्य
न कउन बडका बडक गरी राखधन भोडि स्या थी स्या हाल्ल मुक्तक
उ ॥ ३॥ दुनय जेका मन तर विदेशा पूरव क्षेमिण जेधमि एहि मय्य
उद्धा ॥ ३॥ नरोन ठैक अहं मन ताक ठैक उं सप एह्य एह्य गरी भावकरके
उद्धा ॥ ३॥ नरोन ठैक अहं मन ताक ठैक उं सप एह्य एह्य गरी भावकरके
उद्धा ॥ ३॥ नरोन ठैक अहं मन ताक ठैक उं सप एह्य एह्य गरी भावकरके
उद्धा ॥ ३॥ नरोन ठैक अहं मन ताक ठैक उं सप एह्य एह्य गरी भावकरके

अकर पाणी पाईक बहुत गम गंतवत मम हैक कापोंत कयन बराबर
 मन होत छै जाक मयक परिवर्तन अप देखिक जे चक्रित रहि जात
 छै ५ होत। जे कालमें पादक मन सय वा अकग्रामे बसो पदाक भ
 पाईकी सय, से सय अपन रूप बदलि लेने अछि । एक भोटेक भास्कर
 टंकलक- 'तोहूँ शुरू कउ देखै ई सय ?'

पास्कार्सो एक प्रश्नका अर्थका नहि सत्यक भरिसक सकपका गेलैक ।
 प्र. "क्या कहना है?" को कबले पाठ्य चोप. गुरुजी अपन मंड कोत छावाधन
 नै कांक कहलितपनि इट डब ए कपेस्चन आफ सोसाइटी मैरस- "

[illegible]

जैसे कि जल का रस जल कोकर बड़ विना हस्तु है। पुनः भयान
इस में कोकर यममा को है। अतः यथा निम्न स्थानानुसार गवाक

[illegible]

पान्थक बॉन्डिंग विभाग इन्डियन रीयल एस्टेट एंड डेव. क्लर्क एसोसिएट्स प्रा. लि. बॉम्बे, जिहासी रोड्स, जिला करैव-करैव पंच वर्ष बॉन्ड बाइल ईक. । पान्थक आगिया मिस फिट' बनल रहि जाइत अछि प्रभावितक संजय

पक्षी कोनेत अष्टि आ पंख जाइत जईत इगल जन गकटा लाग्ता ॥
 छैक प्रकृषटम रण एक पक्षी ॥ ३० ॥ अष्टि आ पंख हँ ॥ इन्वेन होइ हँ
 पक्षी ॥ अक्षय ॥ पञ्चरत्न नाम हँ कान पंख ॥ जगिह ॥ पञ्चरत्न ॥
 लईत छैक ।

मुन्नी धौंच वर्षीय कृषक ५५ गेलेक + राजक समुदाय नई रहलनी सत
तकन सीत एक भाकन किछ त चलीन नब न तबन एक भाकन दलन
एक राजा पै धार अत नक नम अत नर जालन नरत न अत नर नर
समानन प्रसन्न नम मुनिक शिखर अत नर नर नर नर नर नर

किरण अत्यंत तीव्र ऊष्मा है। यह न बहुत है। बाह्य में चला जाता है।
 बाह्य में चला जाता है। बाह्य में चला जाता है।

किरक खी कोन दख अउ अभाव कसि अहाँके

विशेष आतिथ्य उदास स्वरमें कहिलकै: "हमरा मन अभागली के हैत जार ।
 धरत जून हठजोई जयल जे नमस्त जेहि सुइहाह ॥" गैल मन गंत-
 मकट्ट ॥" जहाँ मन स्थाने सरल (कमल) के गंतज पैघ आहदा भइल
 अकल भवन लखौत अलि नाक झकड़सँ डोडा छै। जांत लोकर भवन सर मन
 बट जग मल जग स्वामीके लुखी नहि देखि सकली कहिथी अहाँक चहापर
 होय दखुद मन नांग मालु ॥ अहाँ जे जाँहै छी... जे अहाँक योनमे भलि से नहि
 क जेन लो अहाँ सक जैद अलि कपजा ॥ जइल लो अहाँ ओनच्छापूर्वक
 ई बाँह ऊधने बसत छी..." जवैत-जवैत कालज लगलकै किरण ।

भास्कर जाकर पीठम स्नेहनी हाथ फेरित कहलकी, "अहाँ लोकनि हमर
 ब्रह्मचर्य कि अँ काँठा रज्जि छी हमर अहाँ लल गहि सकल छी तब
 तब र लल तँ ५ बसें निकषि आबि सम्भव गहि पेटा ५५ जायब अहाँ त'
 दू-तीन रज्जिक पर जत छी हय, फेर बाँझा ५ धाँचब ज अहाँ अधागनि
 छी बड़ कष्ट घन रम्य अहाँक बात सुनिक, अमंगल गथाक कष्ट हूँ होइ.
 अहाँ समस्त धरि सेह तँ लट्ठी अँल हमर अपन घरम दुबारा घुलत ब्यां
 अहाँ धरि कहिउ जात तँ अँकर धरि तन काय लहि सकब हम ?

ये न करें छाँ हम, तना सब बात यहाँक लल दुखक कारण मऽ
अछि अछि । कोइए एण अछि इमा...

पंथकर आकर भूँहपर हाथ राखि रैत छैक "फेर वैठ बात ! अत्थाय
मनेक जहाँके दुस्तरक अहाँ ईन्सु बाबू गार ओ पुनः हय्यर कंगाम आ
लगा मिन मुग नईके" तुरांतनी गात सौ महा गीधुन । तांसा संग हमहु
एक पुनःके पणक ओइ अत्यन्तागत दुस्तरक कोना अर्थ नहि लागैत छैक
एक काम ओइ पुनः सुला सुँद नाक लगेत छैक कान गेल गात धण्ड
"अहाँ नुरु कर" पाका रिट के देत छैक मन किरण आउ अहाँ शुभ
जन बड तेन दए गेल अमीक नीन पुनरा नीयत कान रहौ। अहाँ गांच सुनबैत
ऊतहाँ घरी-घरी शलि । माठ नै किरण

किरणों और तब तक लगातार "माह की यात्रा प्रति न
त वह तीन कदम चलेगी और एक बार भी नहीं रुकेंगे

“हम सब गण्डे हैं तो उसे जिंदा पाकर भुज्जुन मीन पाली कहलकै।”

असहि रजनि बड़ पारिनी लोखुहें

पेल्याहूँ विरह-मुरख बन्य ।

मुन्नी बोझें बजलैक- ई कोने गीत भलेक भया । अहाँ तऽ ककरा पड़े
हो किरण हैसलैक चटोक गवायसल भयभरि ओकी वसंधी अकरा लऽ दऽ
बिला गेलैक

मुन्नी बागक कागमें मड़क कागुम आदि एत- "नै जई छनि गीत गवाय
भयभरि" तोहो ग नै नै गेलै न खिन्ना कह कहिक न कहै छै किन्ना
किरण दुतागमें ककलक- पमा लऽ जा वैह करधुन गवा बट लिम्बा अनेन
छनि हुनकर ।"

मुन्नी फंग पायस कागमें बावक कोनाप अनेन गन- कन गन हमा
तऽ कहियो नै कहै छै कोना खिस्सल ?

भास्कर मुन्नीक- कतोंनै मुदा ललकै अनेन गनसंध- अपन सस्य
ततक द्यस्त जा कन्दित मऽ गन जसि ओ नै मोर न रहलैक नै एकटा बने छैक
ओकरा पमा चाहिक- खिथन वर्गहलैक- किरण छोक कहै छलैक ।

मुन्नी छतोसै मुहो अलग कहलैक- "कह नै खिस्सल पमा ।"

भास्कर कहऽ ललैक । कठरी बाबाजीक खिस्सल ।

बाबो मऽ जीव रहलैक हथेलीक नै धर बाबाक देहमें सदन पम्पक
आ बागबाक- मर्दने अऊने बाबाजी- क नै थिका हो क थिका कहै जइ
छऽ ? उमरा नै कहै छऽ ?" भास्कर कहने जइत छैक विषय-

मुन्नी मुनि हैत छैक बाकग आपसमें काल कऽ दैत छैक पछऽ
किरण जाग रहल छैक अकरा नमोप नमोप नैत छैक । जनामें ककलैक-
सुनै छैक ओकर ।

- "कनि छल छी ?"

- "नै तऽ ।" किरणक सिसकी बन्द भऽ जइत छैक ।

भास्करक बन्दन शिथिल होमऽ ललैक- "इफतसै कोने अपाव भेल ?
कहियो उमरा ककलहुं अहंन हन / बाजू किरण एत कानु रहै ।

किरण रादगि गंग छलैक- उमरा नहि जा अहाँ ककरा कय न नदे
खिस्सैक, अपन दुखमयंक नहि । मूय ठप्पल- सहाँ हंग नेल हमा- अहंन
सम्बन्धक ओ ठप्पल का आयेग ।

भास्कर हैसलैक- समर तऽ गेल । ओ ठप्पल ओ अहंन कऽसै नै

लल ? हमरा ललकनि छैद भऽ रहल छी ।

किरण हैसलैक- "सुकर बे बूझ बूझी नहि कहलहुं पनीजन कलत्रम
न दऽ- नैत लल गन

भास्करक वंशज बहुत दिनुका दऽ रहल दुःख हँसो पसरे गेलैक
कौ कौ सुख-मनोरथ रहि गेल- कने धुनी तऽ ?

किरण कहलक- किनु कि- बौहक बनन- लखन मऽ गलैक- अकरा
दिल्लक- भास्करक सम्पूर्ण शरीर गमना रहलैक- किरणक सम्पूर्ण शरीर ताल लय
युक्त गमन धिरकि रहल छलैक-

अतंग समोपक धेनकरा वैह उभाला आहने गयी- भास्कर फुसफुसाक-
किरणक कनम कहलक- देखलिये किरण हंगन किछु नै न रहैत छैक- नै तऽ
धक-धक रहलक- नै दूगलक- खाली समपक खोल तरम मुकायल गैत छैक
काने एकटा अहंन- ककलैक- अनायास तथरि जाइत छैक- सम- किछु- अहाँ तऽ
अहंन छी किरण- बालक आहलै नोक-

किरण पुन एकटा उन्मदक आनन्दक संगे लयति गेलैक- अहूँ तऽ
बुधशेमे भयो निर्वन्ध भऽ गेल छी ।"

अतंग शिथिल पमापर ओहि एत गलैक- किरणक- धो धो भूतलि
छल- बागलि तऽ भास्करक- किछुनपर नैमल दल्लक- डा तकां गलैक- धन
किरण रोदन छल

भास्करक पुत्रवर्षी पहिने भास्कर स्वयम् कहलक- हम निर्णय कऽ
पनरि- किरण- गति- किरण- क- ललहुं- अहंन आ यरनामै गहि चरक काक
छो ललक बेना बहुत-किछु छनि ललक अहंन नैक- यऽ नोकरीक रहै गह
नै नै जइत जइत को को छुना जाय- ओहने पतिन इपहाँ एकटा छलैक- दवेक
अहंन को कहै को किरण-

किरण किछु नहि कहलक- मुन- भास्करक- बुझवाम आपनि गहि ललैक
नै ओ ओकर नैत छैक- आ उन्मदित मऽ उलत- क- शिकारत गल छैक- वानी
अहंन- अहंन- अहंन- अहंन- अहंन-

अतंग घेतलैक । भास्कर प्रसन्न छल । ओकरा संगे अपन बड़का रत
नयनक भटा हँलक- अकरा एक इति प्रसन्न- पठना हँलक- जइत पन अल्लहाय
अहंन- अहंन- अहंन- अहंन- अहंन- अहंन- अहंन- अहंन- अहंन- अहंन-

दलके चुन एकटा थाने होगया आ बिबाद नइ ह, सोईह कहल जाय कि एकटा वैष साहसिक इन लगनेक न कहल गइल किमिटेन एह भस्मक के आव लोका अभिषेक सचि रहि छलैक आ बिबाद के सुकल छल

जहिजा चार्ज दऽ किश मऽ रहल छल, किणके" पूति नल्ले अहोके" कोनो अपसंच दऽ नहि भऽ छल अहि किण ?"

किण आरबमसै पुछलकै- कसोक अपसोच

भास्कर आकर मानक धाह लेल कहलकै ई होला सुखक अपसोच हवाही कल, बातप अचन्हुँ अह गत सँ भास्कर लडाके नल्ले

किण पुन जल्दहसै कहलकै हलग लल लऽ गत अहो थैह सभसै गोक स्थाने । जतऽ अहोके अपर होसो से स्थान हपल लेल स्वग

भास्कर कृपलसै कहलकै- अहोके ई ठपकर सोन रहल किण, विरहित मान रहल

किश काका लेल एक प्रतिभानेई कइ मूर्ख भाक हाथ जड़ल कुनक सभके शीख पोजन छलैक ककरी अहिम विदू क निरूपन पच्छक जल नहि । एकाधक को भऽ गेलैक एकर सभके ?

परनाम होरा भैल रीर किण बिह धऽ ललकै- "ठगके" लऽ अविधैक इशप आब भाकर बना पान पे लीत अहि एकक शग अह कोन इहोके डर अहि ? अपन होरा अहि ठगन किएक रहल नेन होयलमे ?

भास्कर कइ मूर्खलसै भूडीलकै आकरा कसके कस किछु दैर कि जइ जतऽ बड़ गोक सोकक भेअवम जतु लेकल इन ललक बन नल्ले कइ जलल फादर मर्की गजक अइत बन जको नमेव होयन अहो निरुपन गहु पे मान लगलैक ओकर १२ लऽ अमने हगने सचि संत कऽ न जलल अमने करी, फादरसै अनुमति लऽकऽ ।

आशी छोड़ो अमल रहैक ओकर डेर देखऽ । एकसरे । मिमहा सभल कहलु शहर गल छलछिन आन्ताके" दखि किणक अहिमे पैर सभक को मरि भऽ उठलैक आशी मोह देखलकै मुदा भास्कर झट्ट दखि ललकै

अ इह गीअर कर नल्लैक आ जानेई कहलकै किश अहोके बड़ अपन छैक जहो गुग ओइ परनाम अहि सकत छै अहो नल पना तरदा रिह करिहुँ दऽ नहि पार लीत समय कुत एम्हए कसच्छ ।"

ओतोक बाजसै पहिने किण कहलकै- "सते अहोके बड़ ठपकार अहि । अह कसमे हिन्कर एकदम मोन रहि नयेत छलनि "

"सम कानक सैह हाल छैक इन अपनक नाम लऽ सकैत छै- "पैष छै अहोने ?"

किण इहोके का कहलकै हमर पाल होला कुंठि आर कयो न नल बल्ले अहो रास पल्लो अह गऽ इहा जहो न प लऽ काज धोमबऽ नल्लल छै किछु विगऽ राज मय गुनो पाय कहि सो पाइऽ लगताह

आनी होललकै किणके मोन न इयै घनेक आकासै कतक नल कनक जइल नल गहन छलैक आनी ओ वचनम छोर पोषाका आकर अह कहोन सन सचि रहल छलैक ।

किछु काल गय भयक बड़ चलबा काम आनी आग्रह कयलकै एक दिन अहो ललक लल हय इहा पामासै धेन म जघन अवस अचन धांका

भास्कर मुड़ो होला जयन गरीकान दलकै जाइत जाइत आशी को जइलकै एन सुनपल्लोको गीत चल अहोके तकर दूख अहि हमरा । जगह जगह छलैक नल ओइ काल न मय न वेह होल छैक पैशो ओ पाव है न इहो मय अहोके किणक काम पुनिमिटीन जाय होइते

भास्कर पाका गल कतै करलकै एकका होल छैक मल्लल पहाडसै छैक न गोक अहोके कसि छैक कनजाग आ ओमत विद्यार्थीके पकीनाइ

अहो कहलकै अहो का दियसै गै छै भास्कर आइ कालिह इहो नल क जलन अहो अह एक मय कालन सुनमे कतक दिन रहैत छैक नाम लिख जाइ छैक आ गीका बागु पाइ होइत रहैत छैक । इन होमियर किणके कय अहि सन लो लहोमे शान आर सुनिमामंटीक हास धनि नल छै म न सन इहि ललकै अहोके लऽ कइ पहर हैव जाइ अल्ले नल्लो मेह दखि लिओक ।

जग बाजसै बड़ कुराब छलैक पहिल दिनमे आनन गुरु धऽ गलेक ओकर लल किछु दय उहो जलल पल दन जाय आकागण रनिम

कमण्टरी सुख पऽ जाइ-

बड़ा जोड़न इंसान हो न कलकरी कुट्टि क मारती का अर्थ है

बड़ी गीता रामायण पढ़ाई है बड़ा, वह न सही न अमरुत क शोफर पर नहि जो... बड़का गो पण्डोको ही-

-माधु किधु चराब हई है, ई केर कौक सिर्न नो

छात्र से अस्वरे रहिरे रे मर... काटिबो लै है ।

कमण्टरीक संग ठाका पिहकाये अधर हैसो बान वनन पाकन कऽ टनक भास्करक जोकर बान मम अपन गुरुक स्वात मन पूर्णकाल लेख छनैक- पूरा विवरणक संग ।

महकर्म प्राध्यापक नाकनिक पतिविया आर सुख छनैक । बड़का अचैत स्तोपाकम वा बाट छोटमे मस्कर मुनि लैत छलैक ।

बड़का इमंज लपक आपल छधि आर एए के लात पति प्राध्यापक तकरो शैव देखबऽ चाहैत छधि इमानाकनिष ।

मृग वर्ग सठन : इमर कोने अर्थ नहि लगेत अछि । फांसो सठन मनुक कलकरी छधि शोफसरमे आबि सजैत अछि ?

-काने पितरिख बाट होतैक तिपारीबो । चकर कोने कपिबान छन होतैक खुब पण्डो अध्यापक बसबा मंस धनि पढ़ाएत अछि

नै यो अनेक बलगइ को छे अहाँ लकरन श्कंसमनत मौरि छेक अखबारमे अनेक हांगमा भेल छैक एका त्यागद्वय मधु विद्या न ललक तऽ बात छैक । प्रोफसर जान कहनधिन

हुनका श्रीवास्तव लुलुआ लंतकनि ब्राक श्कंसमनत मौरि टोने कम क अछि साब कालजम । होय हका न, फमर कलस हई छै मर एए संग पटना विश्वविद्यालयमे रहि छधि इमर लाकनिक पतिर क निनकासै दख अछि ।

भास्कर सपटा सुनिकऽ अनठा दैत छैक कालकक स्थापकक वनन आ ओकर पण ओकरा केन के कहन लगेत छैक बुदी अ बान कन होतैक नहि देखबैत अछि पठिला प्रयमक कटु मनुक ओकर बंद दन छनैक

बुज्जुन सपटा नहि जाइत छल कहल जाय न कहै छल किशोकि नहि आग लगेन मरे अछि-उ ई मर हवात इपहत ज्ञान पऽ अनेक मृग दिनानुदिन ओकरा जा बंदन जाइत छैक भास्करक मानसिक तनाव बंद लगेत छैक

किरण बुज्जुन जाइत छैक एक दिन बहाराका लल जिह केऽकऽ ओकरा अनेक होय न, जाइत छैक भास्करक बंद आरचव जाइत छैक सिमहा साहब विरमक बंद पसिद करे छधि, बेरो बान लैत छधि

किरण अनेक मर बशी पतिष्ठ मर जाइत सछि इपहा दैत छैक उहाँ तऽ बस बंध केऽ निपना न गनहुँ ? दबाय खोजा रखवरि रहि ।

भास्करक आरचव आपो बहि जाइत छैक । किरण रहस्यमयी बनि जाइत छैक : छविमे ओ शोफसु चमक आ ओपर निपटन

आलो ओब जय लगेत छैक बशी बशी काल रुकऽ लगे छै भास्करक संग आकर छोट चहन चलेत छैक अंग्रेजीम बशीकाल किन्तु नहि कूटि अछि म भास्कर ज्ञानमे छति जाइत अछि शोषा पुताक संग किरण एकदम पुति मिथि नन छैक मुनो आपनी अण्ठी कहैत गैत छैक जा राजा नहिजा रस्तलमे हराय आब जाइत छैक ओफर संग एकदम बच्चा बनि जाइत छैक अरुने दिन मरि दुनू अंग्रेजीम बकन बकर शुरू शुरूमे बंद नोक लगलै किमक बंद कटाकन अरुने बजैत छनैक फेर आकरा मधु अति लागल लगलै एम किएक दैमान दैत छैक आलो धनि धनि दिन बशी बशी छति धरि आबऽ जायक नेमका नन छनैक अहंदा गरिकऽ अति जाय नहि कहन छनैक ।

एकदम भास्कर संग हानि होतैक किरण ई तऽ बेन कयलनि भदौक दार नन इनिधनि तऽ अहंदा सार लगलैह एतेक किएक अबे जाइ छधि अहाँक आरती ?

किरणक चमक फोणिगर बंद लामस एतेक भास्करक छोटि लेलकै एतेहुँ मर कऽ चुकल छी अहाँक आलो लल छोट बाव ने मरेव न बाजू न बंद छैक विरा क छधि अरुने तऽ बंद दुख तलनि हुनका

किरण ओकर डीगडैक दारम अधेम ललकै हुनका अपमाह लगलनि मर बंद चैन छति अहाँक मृग लल कुयाँ लहकै छैक एतेक राति धरि इहंदा चैन होत छैक न अधलाह रहि लगे अछि बापन काग आँख निपट पस छनि छै नहि छनि । एहन अबाधि बंदो ।

भास्करक पिपि इहारी छलैक- चुप रह किरण । अहाँ सपना जेना
गइल जा रहल छी अपनसँ अछल लेख काना बासी सल बिचिनि नल जहाँक

किरण बाँहा हाम बनेन रहलैक । अख तऽ हम बनेन करन अछिछ
अलुरि काना ज्ञान अछि हमरा लोकनक । भूख बाँहा छी हम सभ ।

भास्कर मरम पऽ इहलैक । अहाँ मरम हमरा पदऽ दैत छी जिन
हपर में नलब नहि छल । अहाँ बुधियाँ जऽ मुनछ छी पुरा गहि जाने रहलैक
की भऽ जाइ अछि आरती बेरमे ? सपना ज्ञान ईय बहल अहँक ।

किरण उधतसँ कहलकै- हम बहू ते की भ' बह-बह ?

भास्कर मुँह ताकऽ छलैक । किरण स्पष्ट कहलकै- सौँतिका ॥

किरण तोक जोरसँ बिचिअएल भास्कर ते सौँत' ईय मगल अहँक ।
हामर काँउलोयँ आरती दौहल अखलैक, ठेक आ मुनो सों बाँहा अखलैक ।

- 'की भेल भास्कर ?' अखलैक मरमे किरण छलैक ।

किण कनि नहि धोयैक । बाँहा पल भास्कर धोयैक । नहि
आरतियो लग अछि एहन ठेकनापर लब धलैक ।

किरण चुपचाप नाकऽ दीप जालो नलि लेलैक । अखलैक 'किण
धलैक मुदा किण चुपलकै नै फ । जेना जेना जेना छी अखलैक काँउल
तांग बाँहा गहि बाँहा लेलैक । भास्कर चुप छलैक । एत जेना जेना जेना
छलैक । जाणी पोसी पल जल में पार । किरण ५ अहँ छलैक ।

अहँ मुन मेलाक गजक रंग अछि गहि देन छैक । अखलैक
बहल जाइ छैक । अख तऽ साफ कहि देन छैक । अखलैक
हमरु ५ अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।

किरणक काँउल अछलैक । अखलैक अखलैक अखलैक
छैक । अखलैक आरती सौँत' बाँहा छलैक । अखलैक
अखलैक अखलैक अखलैक ।

भास्करक मुँस अँकरी आर कइ देन छैक । अहँ देन कने अछि
हामरमे अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
गलति अहँ दिनेन विपदा पल अछि । अखलैक तऽ अखलैक
नैछी करऽ ?

नहि कचलकै किरण । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक ।

अखलैक किण चुपलकै नहि करलकै । 'को बान छैक । को अहँ पऽ गेल
किरणक' बाँहा नहि जाइ छैक । कनेन कनेन बहल छैक । हमरा एना
५ अहँ एकल । अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
बहल । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।

अखलैक इहलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।

अहँ किण बहल कहलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।

अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।

अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।

अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।
अखलैक । अखलैक । अखलैक । अखलैक ।

हृत्पट्टकत पाम्कज" समालन न चलन लम् ०५८८ नकलतन १८८८ गृह
भौतिक- नापो ने बुराल छलैक ओकर

गन्तुन पञ्च गोन छलैक चलनमधन लण कालेन एक सुधी गलैक
किछु प्राफसर सांजकल ब्लैकक दमनसो विभागसो नन कदमधिन पाम्कज
देखलधिन किरणकें सुधी देखधिन पाम्कज" कोन हज बड़ि छलैक

असमलन गहुँवेत पहुँचैत किरण अघनन २५ एन लन , समकक
दोखयो नहि सकनैक हलनि बड़ सुख होइ ॥ १५ ॥ गहुँके अलनन देखल
बगदापर पुनिकें कागस नन दोसइन किरणकें आलें मान पहनैक

अगतिक प्राडि गेलसो किछु माइस पनेक ओकरा केहु कलन ननइ
महब को अति गेलधन पण्टा चवथ्या ६५ गनेक बड़को बड़का हाकर
अधिक होइ ननधिन पुन किरण नन देखि सकनै अकल अकलन तक छिड़ि
साहबक गहण कर ननलैक ॥ २० ॥ देखि किछु हजल लूसी किछु न कजक हज
कनबा न करव कोहओ टकटवा अपक अमनो जान कहल क्य नहि किछु जेओ

मिना ननब ओकर पेट दणधन दमधिन हलत गहुँ बड़ ॥ सम
कोशिश ५५ रहल छैक । बाँकी समानक हज २

किरणकें (२५) पान पडलैक मिना महबकें हज बड़ कागस नन
को छौ कय हज बड़कें बड़क तेल अकलसई कोहओ उ ओकर बाक" दम

बताहि भेल छी अहाँ ? नन्य अति अखन । ओ आँकळ को करत ?
स्कूल फोन कड दैत छिअनि फादरकें । मोरमे सड अखधिन ।

मोर ? किरणक सोनस कने असा बगलैक । मोरखन अपन बाजई भेट ज
आसोन गज मिना महब ओके मोर रहल छोधन पाम्कज भौध छलैक

बौध लयतैक २५ बाफो पान भौधेक किरण पर नहि कालेक अनेक
जावकवास कडन २५ गेल छलैक झाड़ विनक बाद पाम्कज ने कलनसो देन
न बाजब जना बड़ पैघ नानमज यतानाम हाड । किरण बुझैत छलैक ओकर कय
जे सम्पूर्ण समाज आ मानव समुदायकें जोड, बाहैत छल तकरास सटल पनेक
मे कय मान नहि कयलकें अपन स्रो अकल किरण ककय अकल अखन
विश्वास आ गव छलैक ओके दूधिन किरण छोट बनि गेल छल मे उनेत छल
किरण पुन ओह विदपर अदल छल सानिको मान आकर कलकय आ तेलकन
हावी ५५ गेल छलैक ।

मन क बैसलैक धाकरो । बगडैसँ अखलमे बेहाश पड़ल छैक
किरणक बैकल हागतो ओर कडन आ पुनिके किच्छत आँखिन पुका किछ
न मुन हल छलैक ओ कनेत कनेत बहान छलैक पुन दया लग जायब मा ।
पुका लग जायब

आहो नन बगड लल २५ किरण कानि रहल छलैक मुदा असा जाय नहि
२५ लल छैक धाकरोकें धोतर बल रखन छैक गेहलो नहि दैत छैक

मिना साहबकें समल हल कहलकनि प्राफेसर दम । किरणकें
उनि बड़िक नहि कल छलैक गजल छैक" मोधामे किरणनि दन छलैक पाम्कज
अति उनेत दकडन छलैक छैडुब जिपर चडन छलैक ॥ २५ ॥ निमलब
नहि न लणधनसँ दैत जायत छै ॥ २५ ॥ असा तऽ चोपिस गस कयन छी गखन
साहबक न कर दब ओने अहुँ गेहलस पुन जा लणधनो मम कनमे जे चोरो
द हल छैक आ बाँ ॥ असा असीक लमप किरणक तैक एषलस कडाइ ॥

पाम्कज गहि सुनलकें । निकलि देलकें परीधामे जाइत जाइत धमकी
देलकें ओ छैडुब । पाम्कज तकर परबाहि नहि कयलकें ।

अखणक सम ल प्रसिधस भन कयन छलधिन एकसर नहि बाय देने
कलधन एकरो अफसरकें सग कऽ दलधिन । मुदा बागि कलन गड भन
होइत अकलत अपनलकें किछु मुड सणक कय आ एग बड़क पाम्कजक परमे
एग दऽ ललैक सग लणधन दऽ पडल गलधन आ बड़ो कोल धरि आ
सड़कपर ओहिन छलपलइत रहल । शीघ्रत बड़ निकलि गलैक

मिना ननब चिन्तमे दूब गलाह किछ कहलधिन नहि ककरो पुदा
अकलसै पन मोर गेहल गलाह बड़ो दिस दखलनि आपराधन धिंयंगक
नन दकलस ललकें लोन छलनि किमक दखलधन विदल आनुर
असा छलैक पणधनसँ लणधन बल दकलस दिअ ओकर टकटकी
छलैक । ओहो ओम्हरे टकटको लगकड बैसि पोलाह

पेर हैकमे चोरो बिलब नहि छैक ।

पाम्कज बड़पर अखि गेल अति । होत नहि भेलैक अति । पेटपर बड़का

यहाँ हैक हूँ चोड़ हूँ हैक गजरा है न न न न टा जंजं हूँ
हूँ हैक दुष्ट है। औरक नमय यहाँ जान हैक हूँक एक कृष्ण कृष्ण क
दामर काल अगर्त बेसन हैक दिनहा यहूद हूँ। धर्मचर नर आ गहन
हूँकधिन मुदा अगर्त हो दूक, पुनः न न न न दनकर मुनी सुनै न
हूँक। ओषध अस्पतालये एकन लोक नै हूँक।

आता मम व्यवस्था लोक 'पुनः' वादेंस अलि 'सिंहो महाबळ' एव वा
हृद भेलनि ज हारमं आआत तऽ बिगडुत भासिक । अमन एतन्पर किरक
अमन वाह नोक रहैत पुनः आ दास अमनजस इत्यु कलाह । काय कायक
खतरा नहि जाहैत कलाह । अमन भदि मम कांशिल नऽ रहत कलैक ।

कांशिशः बहुलां लोकं हयमे छलेक न किण्ण गलेक न कालां न एकक
बुट वत गलेक अंशि ताखनमं दनुक पंथिम जखन आशितात कयमे खाइम चबलके
दनु दनु चीपो वैमि गलेक आ ताम्बुनमं अंशिम वैमल छेक एकदुक धाव्णिनिक म्मे इनेत

तर्गत छैक जना मूलतः हिंदू धर्मावलम्बी छैक रंगिता कविता रचित करि
 भेल छै। ओहिना अधिकांश प्रकृति ज्ञानी चर्मा बर छैक। हाथस लेखि
 घांमल छैक। अतिरिक्त निरुपेन्द्रनाथ झा छैक। "नरक" छिटा जे "काल" कहल
 छैक। एम. एम. एम. एम. नै हउत छैक काल। कुनो रंगिता नै छैक। एम. एम.
 देखैत छैक। प्रारंभ। एम. एम. एम. एम. छैक। एम. एम. एम. एम. छैक।

भायकाफ धुँसपै किलु शब्द बरगण नोन रोक नोन होक हन किल
बाजि नोन हाड मुन किलुअं मधर नरि हावत होक किल नै न किल न
नैत अछि नोनन पन किल कन किलब बांछे नर हावत होक नोन हावत न
नोनन आबि जावत होक नन भायकाफ नन म कन हाड किल नन न
कहै होक किल कहै ?

हमारे जीवन में जो सब कुछ है, वह सब कुछ है।
कभी हमें या धर्मार्थ है, किन्तु तब भी हमें यह है, कि हमें
बान् कलुषः इत्यत्र या कथं अंशः। भावार्थः अंशः अंशः
हमारे जीवन में जो सब कुछ है, वह सब कुछ है।
आपकी अंशः अंशः अंशः अंशः अंशः अंशः अंशः
आपकी अंशः अंशः अंशः अंशः अंशः अंशः अंशः

३.३ क्रिष्णः आत्मैः कानः लयन्तेः एतः ३ अ. ३. ३५/३३

१०५. एक वृक्षः सिंहं चित्वा . अन्तर्गतो ह्यो जलम् अश्विनं घनघृतं पादौ दत्तं होमतेक
 १०६. बनसि अर्द्धांशं दण्डं देवः यत्नः सः भागं गतः उचिहः विषं कर्तुम् प्रणा
 १०७. सूत्रं इमम् ह्येति तिष्ठति अर्द्धं दत्तं गते .

आरतांक अर्थात् लक्ष्म नम टधर। लगीत हैक। कहु न पास्कार हम
है। मर्हक लगवे है। किरणो बर्ध।

पास्का अन्न बबबाक हात्ति ब्या फरउ लगैत अछि ।

बड़ मॉस्कोसँ शहर बहगल छैक तय ह'ल नहि ती किण, आरती
इय हागल गेने छै अन्हाय बड़ बंगल छैक आहय दूब रहल छै हय मुदा हागल
नहि छै लहाइ अही रहय कहैक राताक नैना माँके लखन मॉस्को बिमरि
कय मुदा ई भार रहल हुन पर अकिंग बिमरि नहि दै । कहैक ओकरा के
ओकर बाप के लकड़ पाकिरि मरि देने रहैक मुदा अकर बाप बांग आ कदमार
सँ छलैक ओ अन्हाय आ अनोतिसँ लहैक बाँस छलैक लहैक लहैक माल
गलैक मय हलैक नहि ।"

हजूर लखने भावकर । सोस घरघर उठनेक तैया जेना झोकये हांस
किरण आ आहरी ओकरा जगल कामकऽ याहि देखे । चाकैत कलैक पुरा ओ ते
अननके राजाके अभयम कहबे किरण । जाकरा बिस्तरऽ मै दबे । अहूँ हाथ नहि
कानन सई अछरी अई । किरणक संग दनेक राजाक संग ।

इन् एवम् वर वरुनैक- "अन्तर देवैः...आर्त्ता भूय भः नाह आह ।"

फोर सन्तुष्ट गीताक बांच वैह माहक हौसै। सुपुं म, रहन सौ अत्र।
पुन। अस्मिन् नृत्तम पद ५५ गाय। कहै रहबैक अगत रात्रक* पुनीक*
कपन सय सन्तुष्ट* कहबैक...

फर पुराना हुन पर गनैक जुगयो तर्कन बडबहाय लगनैक बाबी तो निम्नरुपे आबि गये बाबी तन्तर निम्नरुपे पुनः नै होख दलियो बाबी निम्नरुपे नये होखै । अगले कठनक अछि किछ कहलक अछि दुदा धकटा बानि तो इत कहत छै । कतरो बाबाजोक दह कालक नै छै जाँडमे चक्कु घण्णरमे घोपा कर छैक नाबरा सभ आ ओकरा २५ गेल छै बाबी ओकरा हाथमे चक्कु संझा छैक य ओहिअ पहाड नै छै आब सभ बाबरी छिहआ जाइ छै राय बाटपर एक एकटा कटो बाबाजो नीलसऽ पहाटीक ।

वर्तमान समय में १५ गोपनीय : रेट सिविल ३५ गोपनीय : भारतीय नावें

किरण देहपर पड़ाह छाकड़ खानेक पाप दान झुलैक राह
अपने संग राजाके लगे अकल समधिग । कान्तलिय देखि भोजन जगदीश
ललाधन मान रहने आह नह ॥ १

उस तबुनंगे दण्डक बड़ लग बैसि पलंगेन उम रागक बैस ललाधन । एक
छाक छूबि प्रार्थना कयलधिग । राजा कान्ड लगल । फादर अकर मोह न रहल तब
कहतधिग— इन्ह काइ चाइल ॥ योर फादर बाब प हान्नी पैर पै फार ह ॥

राजा फादर संग प्रार्थनाक मुद्रा मे बैसि गल । पान कल्लेन मन झुलैक
भास्कर कहने छलैक कान्ध नहि आसतो कान्ध नहि । अन्ह आह— इह
न सैह शीघ्र योर मी दिखोस्त गुह बड़ बंभी फादर ॥

किरण अपन स्वामीक अतीश बड़ाश पहलि छलि ।

इजात काइलोग पैसि हल छनेक

हवन्ने नहि छैक आब ॥ काहंया ने जरि गनेक

रामचन्द्रपुरमे एकटा फूसक घर छैक । चारिठ स्त्री आ दूटा नेमा मी छै
जाइमे सखन मी पा रात छैक हाइ स्त्रियों मी नम छैक । मुने छ
छैक । खिन्ना कहब लग बड़ जेद कोत छैक । किरण अगबने त्रिपल कहे
छैक— कठरी जानबीपला सिन्हा । चोरकें टोकल दैत सैत छैक ।

फटनामे अपन स्कूलमे राजा ईसाक मूर्ति लग पयले छल । देन चान
आपन गण लग के छैक आ मुँद आका । लग बड़ाने दुन छैक । इह
एना सलाहपर के तौकि देने छनि ?

फादर कहै अधिन— सी छैक इन इट मोड़ चाइल ॥ सी छैक अमलैक ईह
राज हू दूध दु टल अस द दूध ॥

हाइ फादर ॥ किहक ?

तन्नाह आगी छैक । ई सिन्हा समेत ननेक

परिशिष्ट

अभिज्ञान

किसे लेखकक दिसते

अभिज्ञान हमर पहिल उपन्यास थिक । 1970 मे 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक प्रकाशित भेल छल आ आइ लगभग आठ वर्षक बाद पुस्तकाकार प्रकाशित भऽ रहल अछि ।

हमरा तब स्नेह ? हमर पहिल पुस्तकाकार प्रकाशित उपन्यास के भूमिकामे हम लिखै छु कहल छौं अ एहि उपन्यासक प्रेरणा हमरा अपन बाल्यसँ मुक्त चिन्मयी भेल अछि । एक ठो भिषगुरीक एक ठो शाप तैक के एक गाम भौंछि गऽय तैको एक तामा चाउर आ नाल गाम मोछि माझय तैको एक्को तामा चाउर । ऐस घनघन बंजाके मुनल एहि चिन्मयीक अथे खगल भिषगुरीक ओ शाप समस्त विप्लवधरणीय नोकरोधन लाकक शाप छलैक । एक सय कमण तैका वैह हान साल मय कमण तैको वैह साल खाली अर्धे नहि लागल भव्य अनुपम भेल । पिलाक मंथबेल किजगीमे आ अपन नोकरोक शरम्भमे जाइयो हांडव अछि ।

आइ दइत पिला नहि जौथ । हमर कथा संग्रह सब घर ठठय पुरान धर मुखस हमर छात्रावस्थामे दत्ताष्टपूर्वक प्रकाशित करीने छलाह । पिला मे हम लिखि चुकल छौं अ ओ हमर समस्त तंखनीय आ व्यक्ति धारण्यक बिन्दु छलाह । ओ आइ नहि लैथि मुदा भाय अछि । वादा जेकाँ हमर रचना धि आ अन्तर्गत रहि थि, यकीन अछि । कुल विनयदने के साँ अदगद होइत अछि हमर कोनो सर्वान प्रकाशनपर से आज ककरा नैन संपद नहि छैक । तै पुस्तकक प्रकाशनक लेखक सोन वटैत अछि वाद । इहो मध्यवर्गीय नोकरोधन लाकक निशिति थि नापो ओ नहि वटैत अछि । ओ मान वटैत हाँथ सनको पोम पाड अनिकर शहयोग अतिथिवाचन रहल ।

पिल्ल

6.3.75

—प्रमत्त कुमार चौधरी

किष्कु लेखकक नाम

काशी विमंगलानं परं इभम त्विच्छादं हृदि जायते तः मन्त्रस्य हतः प्रपादः लिख्यते । अथवा आम् अदं नहि होइ सोइ तौ प्रजायत ।

$$\frac{d}{dt} \left(\frac{1}{2} m v^2 \right) = \mathbf{F} \cdot \mathbf{v}$$

कक्षा बढ़ गयी- १३८। पुनः प्रविष्टि- १३३। अतः कक्षा में ५ छात्र लड़के, ४ छात्र लड़कियाँ सम्मिलित हैं।

मध्यमन्त्र (24.34)

पूर्वमे अहोर्क रचनास्य परिचितं स्यात्, मुदा ज्ञानायकं श्रमार्थं प-
त्रेण त आगन्ताय च यत् नितिरिक्तं दृष्ट्वा एवं कर्मणां प्रत्यक्षं सकलं लो-
केषु श्री ठमरा ज्ञानिकः प्रशस्तिना वीर्यं यच्छेत् अथ भवान् ह दत्तौ विद्वत् क्षमा
होद्युः अहोर्ध्वदि देव जी

श्रीगुरु ५३

हमारे ई ईश्वरों भले वे हम कियेक ने लिखसकई ई १ नकत एहन उपनयम
रहि थ नाथ किहू मैश्वरोंके नकत निन्दी आ उक्त कनकत भोजक कनकत
हैनाक जे नाथ हथगम करे छी ए उक्त व हथ हथगम करे छी ए उक्त व
हथ से बस्तुन दचित ईत

• २५-अप्रैल १९७३ (६.७.७३)

अभिज्ञान में बंधा। यद्युक्त शयनार्थ लोकोत्तरि गच्छति इति ।
जसो मंत्र प्रकटहो अलि तारुमे मानसोय करुण सहानुभूति एकरा अपर उदात्त बना
वतक शक्ति । यहाँ यद्युक्त मोक्षदा लोकोत्तर क लक्ष्य लक्ष्य हो ।
कुन। श्रीमद्भक्त प्रसाद । एक चरणन । कक्षो । श्रीमद्भक्त प्रसाद ।
कक्षक अक्षी रखैत अलि । हमीर रखैत हो ।

शिवकान्त

आपका पत्र मिला। मैंने आपको धन्यवाद दिया। मैंने
आपके पत्र को पढ़ा। मैंने आपको धन्यवाद दिया। मैंने
आपके पत्र को पढ़ा। मैंने आपको धन्यवाद दिया। मैंने
आपके पत्र को पढ़ा। मैंने आपको धन्यवाद दिया। मैंने

इपेन्ट संघो (26.7%)

युगपुरुष

असौचित्य : स्नेहप्रकीर्ण

अथ लक्षणम् । राशे चर्कं ब्रह्म पुस्तकाकारं प्रकाशितं यत् २५ रत्नं जडम् ।

जय जगत चक्रमं यद्यपि देशमे जनक परिवर्तन भवे अस्तु पुरा 'सृगपुराण' के कथ्य जाइये सामयिक नहि अमुक उपन्यासमें कथानकके नहि कथ्यक महत्त्व बहुत छैक आइ कन्दम कांश्लक शासन नहि अछि पान्ता सभमें जहँ तहाँ कथ्यक विकल्प रूपमें सीधे सरकार अछि कन्दम जनता पार्टीक शासन अछि को जांचकांग बल्लाम ओकर शासन छैक कांश्रस दुंधारा विघटित एस घुकंत अछि मुनी सडवः कोना सम्झर आ ठूठ लना खग्वीरोपता आ उदधृतक बाद चलैत अछिअने करैत एखन विधानसभा आ संसद दिहा अग्रसर अछि आ कोना विपक्षको शंकर विश्वविद्यालयक उत्तमत द्विश्री लेन बार-घट चौअहत डंग दुंगपर इच्छित आ अपमानित एस रहल अछि । 'सृगपुराण'क अन्तिम पाँतीम शंकर द्वारा अनुन पाहर कंकवाथ व कार्तिक बाब कुनैक में अकुञ्चित आ प्रसङ्गित भेलैक दग्ग धष्टाचा पहिलो ब्रांजगलीक छिन्नाक छैव अभिनाष अन लेनकैक आ जीवन्तक औचाक्षा बलवती मानैक पुरा परिवर्तनक बाद जे उपलब्ध भेलैक गहन अज्ञान निराशाजनक आ अपमानजनक छैक फेर कोना शंकरक अनधुन पायर फंडेशा लंत विवर होबऽ पड़ैक ।

અનુપૂર્ણ સહયોગથી હોલ બીમબાજીમાં સત્યજીત આપણે સ્થાપિત

पृष्ठ २४५

14-4-78

—प्रधान कृष्ण चौधरी

अधिष्ठित : पाठ्यकीय

दुःखदुःख फलालाक पञ्चाल पुन एक बर अहाँके पड लिखनाक नंत
वचन बसतु वस्तुनक परिच एवक सँ घृणा जाध सनानुभूति अशक
इत्यन करैक सकल बनैत धरिहल बर तथाकथित उच्चवर्ग रतन ऐसन पाव कोन

परिचलितम् = 749

वैधिली उपन्यास नाम गेल अहि साव विन विवेक पाल अ उक वे क
मिठ लहु कोनी उपन्यास साधन न क जेन क्षी लहु वेन जय हयन जेन
उपन्यासक सजलताक सभस पैघ माधवण्ड ।

ज्ञानचन्द

दया. 16-9-7

पुरहिमा महीस जकै जाई काल शरीर प्रकाशित जने क्या मन्हु र्हे
पनि सकैत भौह पदनिता पत्रिकऽ दायोक अंधारऽ अ दुपदुपऽ अ तनु
पकही तएजुक डंग ग कप पलहा भयो आ कान पमहऽ सुस ।

महाराष्ट्र शासन 'सागर'

4 7

उपन्यास छोट होइन्छ किन वहाँ माध्यमक अर्थात् जनताको मुखमा अझै
समानक वर्तमान स्थितिको लागि माथ भन्नु पर्ने जतक पढ्ने दुःख भन्ने छैन
एक उपन्यासमा २ जना प्रपातनयः बन्नुका छन् यहाँको एक जनाको मैथिलीको
सेवा भएर अझै छुट्टा भएर बढि ओर्लन न सक्ने भएर अझै ।

तथापि अत्र 'तदपि'

संख्या, 30-10-71

यथायं स्थिति कान्तज ब्रह्मचरः अ शेषवक नत्र वापयवित्त कृत्य ...
 ए स्वस्व निष्कषक जय दैत आंज

लघुसंस्कृत विश्व

2 3

[illegible]

लंछकः सर्वं यत् कामं स्पष्ट पठे वाक्ये भवति ।

गुणवत् स्थावक गवना गैरम इतिवदके व लोभानैहृषी कथल जः
जेन अति उपकारोपन्यास उरन्यास यात्राक अयुग कताक* पचीने अति
चतुष्ट नृप अधववद्वान्ति अति पतिर उद्यो ओ राजकभक्त तकी शगव आ शैतरम
ईति नरि किदु निक्कालेन उद्यो रजो हुनक कंकल मनुष्य बुझैत छुनि आ शै* आ
उद्यो* न भेवाह धीर राति सूतेक जगह परवन्ति लखक सामाजिक दृष्टि
जीवक उद्यो ।

[illegible]

आत्सोख सरोज झा

F4 4 73

पुष्पपुर नवगुनिया मण्डल (गँधी) गांधी

२४ = १९ अत्यंतक उपर शक्ति अत्यंतक समान वातवर्ग
२५ = २० अत्यंतक उपर शक्ति अत्यंतक समान वातवर्ग

है कि यह एक अति समय है कि और मैं एक चर्चा में मैं
 वह एक एक अति उपर वह एक, यह एक एक के गति में वह एक
 और एक के एक में एक एक एक एक एक एक एक एक एक एक
 एक एक एक एक एक एक एक एक एक एक एक एक एक एक एक

एक प्रभावशाली क्षति : वायुमय विस्फोट परब कुम्भकारण महोदयलोकनिक संतोनी
धिक

इदमचन्द्र ग्रा विनांद

इं लक्षक अन्वयार्थक अपन वर्णोत्पत्तिक लेख भिन्न । संकाय आदर्श
मस्तव्यसालिक कैक जगुन कि रत्ना वदुष्टता जालि । प्रमत्तजो एहि उष्यामान
सूक्ष्म शून्यक बह नीक प्रमाण कयलनि कहि ।

शिविकांन उवा 'गति'

पुनःपुनः कुण्टित युक्ककं प्रगन्तगं शिक, कर्तव्यं परमवृत्तम्
प्रभावित ई तपन्वास पाठकम् एकस्य मन्तईन् वन्यस्य दैत अत्रि

नपेन्द्र दोषी

रतनक नागि लही रुद्र रवेन पल अहि ब्रह्म एकत्र लफट लोडक
रैनाक पाही ।

अप्यन्तः शक्तिः स्या

हमरा लग रहब ?

स्पृति-आभार

हमारा लक्ष्य ? हमारा लक्ष्य औपन्यासिक कृति अधिक पुस्तकाकार
नहीं बल्कि प्रकाशित ५३ तहस आदि मुद्रा परिशिष्ट पूर्व 'अधिराज' (१९७०,
'संस्कृत' 'सहित' ६ धारावाहिक आ मुद्रा ५७ 'मोक्षोत्तम' निहार 'च
रूप-साम-तर्क) प्रकाशित ५३ वकल ठाकि ;

एक प्रकाशन लक्ष्य तब पैक्षित हो अखिल भारतीय अकादमिक आयोग
 ३ को लोक न मंडल प्रिण्टिंगकाएजोको आधार हो हितवि अंतिक प्राणा अग प्राप्तहनसे
 न निवृत्त गत एत एतएन धरादराजो एकरा समुल्लेख. अंशक विचयित रूपे
 अंशक एत कंठिक न समयक मण्डलएत अंशकअंशक एत मकर संशत अति हापुत
 अग अनुन प्रकाशक एत अंशक बिना प्रेसकोपी एतएत नति एत मकर

[illegible]

अब, उपवासक प्रकाशनक दिनमें, 'कधी' भोन यईत अछि 'दुदा' भोन
 'दुद' भोन, जे 'द' पढ़ैत छैत आ 'दु' गार जे 'द' नै जानै लगम एकर
 मञ्जन प्रकाशनमें सहायक भन छथि ।

प्रभास कपूर सीयरी

नवागम्य

प्रकाशकीय

हमसालांकिनि एक नवीन दिशः यस्य दृष्टिः अत्यन्तं साहसं कृतवन्तः अस्ति ।
हमसालांकिनिक इति यथास्मिन् धिकः इति शुद्धस्य सिद्धिः ही तावत् इति ज्ञानसंकेतः
सहयोगकः अस्माकां भविष्यति ।

पैघिली साहित्यिक इगर्ति प्रमुख नाटक तन्त्रमं नैक नैक चरित्रक
अप्रकाशित रहि जावब संछा धिक प्रतियोगारान्ती लेखकक क्षमता इकाकारक
समन्वयक कारणें कुतित मऽ जाइत छैक को एहि दिशाम किछु कार्य आ बढव
जाइयां भयसपर दुबि उगयब धिक प्रति स्थितिम एकर सुधर अपन जेठे म
हमसालकनिक विश्वास अछि एहि विश्वासक आधार लेखक उपयन्त्रकनिक
पैघिलाक प्रति हुकाव अध्ययनशीलता तथा प्राक्कल रहि नगैत अछि आ लेखक
मनोमय आ सुकविपूर्ण साहित्यक जे हांमसै अप्रकाशित कयल जाव तें अंकन बढव
भेटीक ।

इहां कमसे श्री इपास कुमार चौधाराक नवीनतम उपन्यास 'स्वास्थ्य' से हूँ।
 शुभारम्भ कऽ रहि। श्री इपासजीक नाम आधुनिक मैथिली कथा साहित्यमे नवजात
 विद्युत् भऽ रहल अछि। मे हिनका विषयमे किछु कहब अनिवार्यक अधिक एतहाँ
 पहिने दिनक तीन-चार उपन्यास प्रकाशित भऽ समाप्त भऽ चुकल अछि। एहन
 प्रसिद्ध नवतकक शक्ति ओ एतका उपन्यास उत्तरमे अन्तर्गत गच्छे जात। ई
 एहि दिशामे हमालोकनिक प्रथम मात्रा अछि। तँ एहिना चलायन नतरेण कानन
 संग अपनस्तोकनिक संगामे दर्पस्थल हस्त रहल।

को प्रशासकी अपन मूल्यवान कृति बिना काला नामधेयक एककालक नाम
दउ देनाम स दुसक वयाताक भविष्यक धिज एहि ताल हुनका प्रति जनक
आम्बर एकद करव से थोड हरेण ।

एकर मूल प्रेक विज्ञान पण्डित श्री कनिंजय झा जी हुनक धरणा जे प्रकाशन जे गति चलन रहैत ते ई दशे नहि नुस जाइत हुनक ज्ञानविज्ञान संपुर्ण जनजाति प्रकट करब धृष्टता होथैत : एहि कारण जे अग्रज्य माण्डेन जे श्री योगनाथ झा जीसँ प्राप्त भेल अछि लकर कृतज्ञता ज्ञापन करबापु अहं अहम अछि

५. अन्तर्गत आदि सातकोट महत्वा विंग ज्ञाना नहि धिक हुनक
सिक्क लन अमाने छे सुतेछा धिक व्यक्त्यापक छी देवद भाक कथराम
छी अहम मुन्य छी गनक नफ छपि लकन लछे । हुनका प्रति आधा प्रकट
काक कर्तव्य धिक ।

१-क अपवर्णाकृतिकः हायम अछि एकर अपवर्णनः सं निषेधन

राजेन्द्रनाथ झा
हितचक्र इस

स्नेहकीय

[illegible]

यदि हम मान्यता सिद्धि के लिये प्रमाण चाहें तो अतिशय
 १. नाना प्रकार के लोकोपयोगी प्रमाणों का प्रयोग करना
 २. प्रमाणों के लिये प्रमाणों का प्रयोग करना
 ३. प्रमाणों के लिये प्रमाणों का प्रयोग करना
 ४. प्रमाणों के लिये प्रमाणों का प्रयोग करना
 ५. प्रमाणों के लिये प्रमाणों का प्रयोग करना
 ६. प्रमाणों के लिये प्रमाणों का प्रयोग करना
 ७. प्रमाणों के लिये प्रमाणों का प्रयोग करना
 ८. प्रमाणों के लिये प्रमाणों का प्रयोग करना
 ९. प्रमाणों के लिये प्रमाणों का प्रयोग करना
 १०. प्रमाणों के लिये प्रमाणों का प्रयोग करना

अ. एम. ए. अर्थशास्त्रिक विभाग राज. भवन हिस. नवागढ़ प्राचीन गौर
अ. एम. ए. अर्थशास्त्रिक विभाग राज. भवन हिस. नवागढ़ प्राचीन गौर

एकटा स्वचैतनाक स्फुरणक कथा, एकटा न्याय्य । "इतरकाण्ड" कथा निर्धिता मिहिरमे उपलब्ध आ अधिकांश पाठक ओकरा पसिन्द कयने छलैह । "नवरात्र" एकांकी आकाशवाणी, पटनाई प्रसारित भेल छल आ ओकरा ओला आ समीक्षक द्वारा मान्यता भेटल छलैह । एहि दुनू रचनाक मूल कथक" आगू बचने एक टा उपन्यास लिखबाक प्रबल इच्छा छल, जे आइ कतेक वर्षक बाद संभव भऽ सकल अछि । उपन्यास यदि अपनैतिकानिक अपेक्षाक" पूर्ण भऽ सकल तँ हमर सजोष उपलब्धिक सोभार्क" छुबि सकल ।

एहि पुस्तकक प्रकाशन लेल नवयुवक प्रकाशक एजेन्सी आ हिन्दुस्तानी जतक धन्यवाद देल जाइत, थोड होयतनि । वैकिली प्रकाशनक हेतमे ई दुनू गीरे अपन संकल्प आ सामर्थ्यक बल" नव कॉलेजियन स्थापित कऽ सकथि, सैह शुभकामना अछि ।

आदर्शिय कविलेखर भाइ आ भीम भाइक प्रति कृतज्ञता जपनक औपचारिकता करन कृतघ्नता होयत । वस्तुतः ई पुस्तक दुनू नवयुवक प्रकाशक आ एहि दुनू आत्मीय लोकक सद्भावना, कर्नटला आ छत्तारक परिणाम थिक ।

आइ पुस्तक प्रकाशनक तिथिपर बाह्य आ बाह्य फेर एक बेर कोन नईहै छथि । व्यक्ति प्रथम स्थान आइ आ रहि छथि, मुदा रचनाकार प्रभावक लेल हुनूक मृत्यु असम्भव छनि । आदर्शिय बड़का काका छथि- विद्वान, निर्धिमन आ संन्यासी बड़का काका । ई पौधी हुनकें सम्पत्ति आ अर्थ अपन भायक बेटि-पति आ ओकर सभसँ लोकक" जकर छवि आ स्मृति बेर-बेर हमरा कलमक साक्ष्य बनल अछि ।

-प्रभास कुमार चौधरी

अन्तमे

पुराना घरक बड़ोसभ जखन एकाएकी कड़कड़ाय लागल, चरभराकऽ लटकऽ लागल जखन बेराबेरी बारूक, कोदोसथ कोकनि गेल आ होल भऽ गेल बन्धन- कि तखने एकाएक न्यो" थहि गेलै एक नव घरक । न्यो" पढ़लै कि बनिकऽ तैयार । से तेहन जे टकटको लागल रहि गेलै लोकक ओकर गढ़निपर । याह रे । जेहन दिव्य ! जेहन सोहनगर !

कथा-मृगिपर नव घर उठैनिहार प्रभास कुमार चौधरीक कथाकार मुदा

कहिथी नहि बाह्यक बं पुनन घर छसि पड़ै । पुरान घर, अपन पुरान घर- समस्त हस्तान-पतनकें आइनेमे संजोवने पुरान घर, भासाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक परिवर्तनकाल वातवरणमे अन्य लटकऽ बड़ैत घौषण विषमताक लौलास्थिती पुरान घर कयलकर प्रभावकें बड़ प्रिय । अपन पुरान घरक एक-एक कोड़ी-बातीस प्रभावकें धनिष्ठल, एक-एक व्यक्तिसे आभोचता, एक-एक परिचितिसे लागि ।

संवेदनशील एहन जे ककरो हृदयक गहनतम कोहमे उठैत टोसकें लप दऽ ई घर लेलाह । पनखी एहन जे मासूलतै प्रभूला बृक्षल जाषवला घटनाक मूलमे घरको मारिटे ई पहुँच जपल । गिरथी एहन जे कथाकें चुम्बक बना देता ई ! जहाँ देखि लेब कि सटि जायब !

यथ्यवित परिवारक फोटोस्टैंट कोपी थिक प्रभासक कथा- सांसारिक अन्धकार, पारिवारिक कटुता, सर्ग-संघर्ष, सम्बन्धक टूटनकें एतक सशक्त अधिव्यक्ति भेटल, जेसकमे दुर्लभ धनु थिक । समसामयिक बोधकें निर्धिताक सौन्दर्य मारिमे छनि जे स्वरूप ताहू कयलथि अछि प्रथम से नै कोनो देवताक थिक, जे कोनो बालक- ओ थिक एनसेन हमर अहाँक, हुनक । अपन, अपन समाजक संगति-विसंगतिक प्रतिच्छवि देखा देब दिनक कोशाल थिकनि आ दिनक कथाक लयम विरोधल ।

प्रभासक कथा सभसँ विशेषता दिनक उपन्यासो सभमे स्थापित भऽ गेल अछि- आन सभक भऽकऽ । अधिशासक आ युगपुरुष (निधिला-निधिरमे क्रमशः 1970 आ 1971 मे प्रकाशित) तथा हमरा लग रहब ? (1972) जे पढ़लक अछि, से कुछ भेने बिना नहि रहि सकल अछि । एहन कुले लेखकक चारिम उपन्यास थिक स्वराज्य । कहऽ नहि पढ़ल जे एहि उपन्यासमे प्रभासक प्रौढ़ प्रतिभा प्रबोधक भऽ किहु "निर्गन्ध" प्रधान कथक अछि । को "नवरात्र"कें एक नवोन उपन्यास निसा दित यात्राक शुभारम्भ नहि मानल जाय ?

-दीपनाथ

राजा पोखरि मे कतेक मछरी ?

सम्पादकीय

कथा-दिशा अपने अस्तित्वक एक वर्ष (नव नम सँ) पूर करलेक आ दोसर वर्षमे प्रवेश कयने अछि । सितम्बर ३० सँ अप्रैल ८। धरि एकर आठवटा अंक प्रकाशित भेल आ एहि संयुक्तांकमे छौटा अंक सम्मिलित अछि— अंक ८। सँ अक्टूबर ८। धरि । संयुक्तांक जगन्त पास लेल घोषित भेल, मुदा किछु कारणवश एकर प्रकाशनमे बेसी विलम्ब भेल । स्नेही पाठकलोकनिसें एहि अतिरिक्त विलम्बक हेतु हमरालोकनि क्षमाप्रार्थी छौ । घोषणानुसार एहि संयुक्तांकमे एकटा विशेष उपहार देल जा रहल अछि ।

प्रभास कुमार चौधरीक सम्पूर्ण उपन्यास 'राजा पोखरि मे कतेक मछरी ?'क उपहारक संग कथारिराजक पुरान ग्राहक लोकनिसें निवेदन जे नवीन वर्षक शुभक अभिलम्ब पठाबध । मैथिली साहित्य-प्रेमी लोकनिसें निवेदन जे एकर ग्राहक बनथि-बनाबध । मैथिलीक ई एकमात्र कथा पत्रिका अपने अस्तित्व बनैने राखि सकय आ नव-नव उपहारक संग उपस्थित भऽ सकय, तकरा लेल जगन्त मैथिल समाज आ सुधी पाठकक सहयोग किन्तु आवश्यक ।

हमरा लोकनि एक बेर फेर दोहरवैत छौ जे आर्थिक समस्याक संग कोक रचना उपलब्ध रहि भऽ सकयक सम्पत्ति रोडो बेर-बेर पत्रिकाक नियमित प्रकाशनमे बाधक होइत रहल अछि । मैथिलीक नव-पुरान कथकार लोकनिसें अनुरोध जे अपने नवीनतम रचना हमरा सभकेँ उपलब्ध कराबध ।

एहि अंकक उपहार ई सम्पूर्ण उपन्यास 'राजा पोखरि मे कतेक मछरी ?' कहल लागल, से अवश्य लिखी । कथा-रिराजक हेतु सुधी पाठकक सम्पूर्ण मार्ग-दर्शकक काम करत ।

प्रभास कुमार चौधरी

| | |
|----------|---|
| जन्म | विशालपुर, ब्रजप्रदेश |
| शिक्षा | पुणेक लेखन |
| व्यवसाय | बाल लेखन |
| पेशा | अध्यापक, लेखक |
| पुस्तकें | संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी |
| विषय | पद्य, प्रबन्ध, निबंध, उपन्यास |
| पुरस्कार | राष्ट्रीय लेखन लेखन विधा
विशाल विद्यालय, पुणे (प्रबन्ध) १९६६ ई. लेखन विधा में |
| ग्रन्थ | बाल विद्यालय
- बाल विद्यालय १९६६ - ७७
विशाल, पुणे (१९६६) |
| | अध्यापक : एम. एम. विद्यालय
एम. एम. विद्यालय - १९६६
अध्यापक - १९६६
अध्यापक - १९६६
विशाल - १९६६ |
| | अध्यापक : विद्यालय - १९६६
पुणे - १९६६
अध्यापक - १९६६
अध्यापक - १९६६
अध्यापक - १९६६ |
| | विशाल विद्यालय : अध्यापक - १९६६
अध्यापक : अध्यापक, अध्यापक - १९६६
अध्यापक - १९६६
अध्यापक - १९६६ |
| पुस्तकें | विशाल विद्यालय - १९६६
अध्यापक - अध्यापक, अध्यापक - १९६६
अध्यापक - १९६६
अध्यापक - १९६६ |



प्रभास कुमार चौधरी

(02.01.1941-22.02.1998)